हीरे-मोती

सोवियत भूमि की जातियों की लोक-कथाएं

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
[illegible], रानी झांसी रोड, नई दिल्ली -११००५५

हीरे-मोती

सोवियत भूमि की जातियों की लोक-कथाएं

पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस (प्रा.) लिमिटेड
५-ई, रानी झांसी रोड़, नई दिल्ली -110055
e-mail: pph5e@bol.net.in

अक्तूबर, 2010

मूल्य : 200 रुपये

शमीम फ़ैज़ी द्वारा डावरसन्स स्टाइलिश प्रिंटिंग प्रैस, 5 मलिक बिलडिंग,
लक्ष्मी नारायण गली, चूना मण्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 द्वारा मुद्रित और
उन्ही के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस (प्रा.) लिमिटेड, 5-ई, रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली से प्रकाशित।

अनुक्रम

जादुई घोड़ा। रूसी लोक-कथा ९

किसान का बेटा इवान और तीन भयंकर राक्षस। रूसी लोक-कथा . १६

बेमिसाल मुक़ाबला। रूसी लोक-कथा . २७

सुदृकता मटर। उक्रइनी लोक-कथा ३१

ईमानदारी और बेईमानी। उक्रइनी लोक-कथा . . ४५

भेड़िया, कुत्ता और बिल्ला। उक्रइनी लोक-कथा . . . ५३

चतुर किसान और घमंडी जागीरदार। उक्रइनी लोक-कथा . ५७

जादुई बेला। बेलोरूसी लोक-कथा ६१

बिज्जू और लोमड़ी मांद में क्यों रहते हैं। बेलोरूसी लोक-कथा . ६५

बसीली ने अजगर को कैसे जीता। बेलोरूसी लोक-कथा . ६९

पीलीपका। बेलोरूसी लोक-कथा ७३

बूढ़ा और जवान पाला। लिथुआनियाई लोक-कथा . ७८

एक मवाद कैसे घोड़ा बना। लाटवियाई लोक-कथा . ८२

जैसी करनी वैसी भरनी। एस्तोनियाई लोक-कथा . ८६

धन-देव हिस्सी की चक्की। कारेलियाई लोक-कथा ९०

बेटों ने बाप का खजाना कैसे पाया। मोल्दावियाई लोक-कथा ९६

वासिल सुंदर स्वरूप और सूर्य सहोदरा इल्याना। मोल्दावियाई लोक-कथा . . १००

समझदार खरनियार। आज़रबैजानी लोक-कथा . . ११७

कामचोर शाहीवुल्ला। आज़रबैजानी लोक-कथा . . १२२
अनाहत। आर्मीनियाई लोक-कथा १२७
राजा और जुलाहा। आर्मीनियाई लोक-कथा . . १४२
हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना। जार्जियाई लोक-कथा . . १४६
भालू ने पाठ पढ़ाया। जार्जियाई लोक-कथा . . १६४
बबर और ख़रगोश। जार्जियाई लोक-कथा . . . १६६
सोने की कौड़ीवाला अल्तीन-साका। बश्कीरी लोक-कथा . . . १६८
तीरंदाज़ और त्सारकिन-ख़ान। काल्मिक लोक-कथा . . १७८
हीरे-मोती। तुर्कमानी लोक-कथा . . २०६
लालची क़ाज़ी। ताजिक लोक-कथा . . २११
तीन अक़्लमन्द भाई। उज़्बेक लोक-कथा . २१८
सबसे बड़ा कौन? किर्गीज़ लोक-कथा . . . २२४
अल्दार-कोसे और शिगाई-बाई। कज़ाख़ लोक-कथा . २२६
बोरोल्दोई-मेर्गेन और उसका बहादुर बेटा। अल्ताई लोक-कथा . . २३८
दूब-वाला। याकूतियाई लोक-कथा . . २४३
सोने का प्याला। बुर्यात लोक-कथा . . २५१
पवन-राज कोतूरा। नेनेत्स लोक-कथा २५७
लड़की और चन्द्रमा। चुक्ची जाति की लोक-कथा . २६७

प्रकाशकीय

प्रिय पाठको,

हमें विश्वास है कि आपको यह मालूम है कि सोवियत संघ एक विशाल देश है – यह संसार में सबसे बड़ा देश है। पूर्व में अलास्का और पश्चिम में स्कैंडिनेविया इसके पड़ोसी हैं। दक्षिण में यह काकेशिया और पामीर पर्वतमाला तक फैला है और उत्तर में आर्कटिक महासागर तक चला जाता है। और इस विशाल देश का हृदय है मास्को। सुदूर पूर्व में जब खबारोव्स्क नगर में आकाश पर भोर के सूर्य की पहली किरणें फूटती होती हैं, मीन्स्क, कीयेव तथा पश्चिम के अन्य नगरों में सूर्य अस्ताचल की ओर जाता ही होता है। याकूतिया में जब बर्फ़ानी हवाएं चलती होती हैं, तो ताशकंद में मंद समीर के झोंकों में खिले गुलाब झूलते होते हैं और काले सागर के रेतीले तट पर सैलानी लोग सूर्य की सुहानी किरणों में स्नान करते होते हैं।

इस विराट देश में कितनी ही क़ौमें रहती हैं – हर क़ौम की अपनी परंपराएं और रीति-रिवाज, स्वभाव और भाषाएं हैं। उदाहरण के लिए, उज़्बेक भाषा और रूसी या मोल्दाविआई में इतनी ही समानता है, जितनी अरबी की अंग्रेज़ी या चीनी से।

और सोवियत संघ की हर जाति की अपनी लोक-कथाएं हैं।

चुक्ची, नेनेत्स तथा सुदूर उत्तर की अन्य जातियों की लोक-कथाएं हमें बर्फ़ीले टुंड्रा में ले जाती हैं, प्रबल तुषार और सांय-सांय करते बर्फ़ीले अंधड़ों के इलाक़े में, जहां कुत्ते और रेंडियर ही मनुष्य के सबसे अच्छे मित्र हैं। मध्य एशियाई जातियों की लोक-कथाओं में ऊंटों के कारवां मंथर गति से जलते रेगिस्तानों को पार करते हैं और चिर प्यासे खेतों को सिंचित करनेवाली नहरों में बहते पानी का अविराम मर्मर सुनाई देता है। जब हम रूसी लोक-कथाएं पढ़ते हैं, तो और ही दृश्य और बिंब हमारे मानस पटल पर उभरकर आते हैं। इन कथाओं के वीरहृदय तरुण नायक मैदानों और वनों को मुश्की घोड़ों पर

सवार होकर पार करते हैं, जिनमें ग्रीष्म में हरियाली और शीत में बर्फ़ की सफ़ेदी छाई होती है और अभ्रक की खिड़कियोंवाले लकड़ी के महलों में भुवनमोहिनी राजकुमारियां उनकी प्रतीक्षा में पलकें बिछाये बैठी होती हैं।

इन सभी लोक-कथाओं को हमने क्यों हिंदी में प्रकाशित किया? इसलिए कि इन में रस है, कल्पना की उड़ान है, सुखद भविष्य के सपने हैं।

ज़रा किताब खोलिये तो सही, आप अपने आपको जादू की दुनिया में पायेंगे। किसान के बेटे इवान के साथ आप आग उगलनेवाले राक्षसों से तलवारें टकरायेंगे, लुढ़कते मटर के साथ आप पाताल लोक में उतरेंगे और उसके साथ उक़ाब पर सवार होकर धरती पर वापस आयेंगे, मक्कार और बेरहम शाह को मात देनेवाली चतुर ज़रनियार से मिलेंगे, अपनी क़ौम की भलाई के लिए अपने ही बेटे के जीवन को संकट में डालनेवाले अल्ताई पर्वतमाला के साहसी शिकारी बोरोल्दोई-मेर्गेन की सराहना करते झूमने लगेंगे और उस चतुर जुलाहे की त्वरमति पर मुग्ध हो जायेंगे, जिसने बादशाह और उसके आलिम फ़ाज़िल वज़ीरों को समझदारी की एक सीख दी थी।

हमें विश्वास है कि इस पुस्तक के नायकों से परिचित होने के बाद आप उन्हें चाहने लगेंगे और वे आपके अच्छे और विश्वस्त मित्र बन जायेंगे।

जादुई घोड़ा

रूसी लोक-कथा

बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक बूढ़ा रहता था। उसके तीन बेटे थे। दो बड़े बेटे घर के काम-काज की देखभाल करते थे, बड़े उदार और दानी थे। उन्हें सुन्दर कपड़े पहनने का भी बड़ा शौक़ था। मगर इवान जो सबसे छोटा था, उसमें कोई भी गुण नहीं था, निरा बुद्धू था। वह अपना अधिकतर समय अलावघर पर बैठे-बैठे बिता देता और केवल सुमियां इकट्ठी करने के लिए ही बाहर जंगल में जाता।

जब बूढ़े का मरने का वक़्त क़रीब आया तो उसने तीनों बेटों को अपने पास बुलाकर कहा –

"जब मैं मर जाऊं तो तुम लोग लगातार तीन रातों तक जाकर मेरी क़ब्र पर आना और मेरे खाने के लिए कुछ रोटी लाना।"

बूढ़ा मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। पहली रात को सबसे बड़े भाई को क़ब्र पर जाना था, लेकिन वह बड़ा सुस्त था या यों कहिये कि बड़ा डरपोक था और क़ब्र पर जाने से डरता था। इसलिए उसने बुद्धू इवान से कहा –

"अगर तुम आज मेरी जगह पिताजी की क़ब्र पर चले जाओ तो मैं तुम्हें केक ख़रीद दूंगा।"

इवान फ़ौरन राज़ी हो गया। उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की क़ब्र पर जा पहुंचा। वह क़ब्र के पास बैठ गया और आगे घटने वाली घटना का इन्तज़ार करने

लगा। आधी रात होने पर जमीन फट कर अलग हो गयी और बूढ़ा बाप क़ब्र से बाहर आकर बोला –

"कौन है? क्या तुम हो, मेरे बड़े बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

तब इवान ने जवाब दिया –

"यह मैं हूं, पिताजी, आपका बेटा। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

तब पिता ने भर पेट रोटी खायी और अपनी क़ब्र में जा लेटा। इवान घर लौट आया और रास्ते में केवल खुमियां इकट्ठी करने के लिए ही रुका।

जब वह घर आया तो उसके सबसे बड़े भाई ने पूछा –

"पिताजी से भेंट हुई?"

"हां, हुई," इवान ने जवाब दिया।

"उन्होंने रोटी खायी?"

"हां, उन्होंने भर पेट रोटी खायी।"

एक और दिन गुजरा और तब दूसरे भाई की बारी आयी। लेकिन वह भी या तो बेहद सुस्त था या इतना डरता था कि जाना नहीं चाहता था। इसलिए उसने इवान से कहा –

"इवान, अगर तुम मेरी जगह चले जाओ तो मैं तुम्हें नये जूते बना दूंगा।"

"ठीक है," इवान ने कहा, "मैं चला जाऊंगा।"

उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की क़ब्र पर जाकर इन्तजार करने लगा।

आधी रात होने पर जमीन फट कर अलग हो गयी। बूढ़े बाप ने क़ब्र से बाहर आकर पूछा –

"कौन है? क्या तुम हो, मेरे मंझले बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

तब इवान ने जवाब दिया –

"यह मैं हूं, पिताजी, आपका बेटा। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

तब पिता ने डटकर रोटी खायी और अपनी क़ब्र में लौट गया। इवान घर वापस चला आया। रास्ते में उसने फिर खुमियां इकट्ठी कीं। वह घर आया तो मंझले भाई ने पूछा –

"पिताजी ने रोटी खायी?"

"हां, भर पेट खायी।"

तीसरी रात इवान की बारी थी। उसने अपने भाइयों से कहा –

"दो रात से मैं पिताजी की क़ब्र पर जाता रहा हूं। आज तुममें से कोई एक जाये। मैं घर पर रहकर आराम करूंगा।"

"नहीं," भाइयों ने जवाब दिया, "आज भी तुम ही जाओ। तुम तो इसके आदी हो चुके हो।"

"चलो, कोई बात नहीं!" इवान राज़ी हो गया।

उसने कुछ रोटी ली और क़ब्र पर जा पहुंचा। आधी रात होने पर ज़मीन फटी और बूढ़ा बाप क़ब्र से बाहर आकर बोला –

"कौन है? क्या तुम हो, मेरे तीसरे बेटे, इवान? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

तब इवान ने जवाब दिया –

"मैं ही हूं, पिताजी, आपका बेटा इवान। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

पिता ने भर पेट रोटी खायी और उससे कहा –

"केवल तुमने ही मेरे आदेश का पालन किया है, इवान। मेरी क़ब्र पर आते हुए सिर्फ़ तुम ही नहीं डरे। अब तुम ऐसा करना – खुले मैदान में जाकर पुकारना: 'जादुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!' जब घोड़ा तुम्हारे सामने आये तो उसके बायें कान में दाखिल होकर दायें से बाहर आ जाना। तब तुम इतने सुन्दर युवक बन जाओगे कि जैसा पहले कभी किसी ने देखा ही न हो। फिर तुम घोड़े पर सवार होकर, जहां मन चाहे चले जाना।" इतना कह कर पिता ने उसे लगाम दी।

इवान ने वह लगाम ले ली और धन्यवाद दे कर घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने खुमियां इकट्ठी कीं।

वह घर आया तो उसके भाइयों ने पूछा –

"पिताजी से भेंट हुई, इवान?"

"हां, हुई।"

"क्या उन्होंने रोटी खायी?"

"हां, उन्होंने भर पेट रोटी खायी और मुझे क़ब्र पर न आने का आदेश दिया।"

अब हुआ यह कि उन्हीं दिनों ज़ार ने देश के सभी भागों में डौंड़ी पिटवायी। सभी सूरमाओं को राजधानी में इकट्ठे होने के लिए कहा गया।

ज़ार की बेटी अनुपमा ने अपने लिए बारह स्तम्भों पर बलूत के लट्ठों की बारह तहोंवाला एक महल बनवाने का आदेश दिया था। उसने सबसे ऊपर की मंज़िल की

खिड़की में बैठकर उस आदमी की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया था जो अपने घोड़े से खिड़की तक उछल कर उसके होंठों को चूम लेगा। जीतनेवाला चाहे अमीर-कुलीन हो, चाहे ग़रीब-ग़ुरबा, ज़ार अपनी बेटी अनुपमा का विवाह उसी के साथ करेगा और उसे अपना आधा राज्य भी देगा।

यह ख़बर इवान के भाइयों ने भी सुनी। उन्होंने आपस में तय किया कि वे भी अपनी अपनी क़िस्मत आज़माने जायेंगे।

उन्होंने अपने बढ़िया घोड़ों को ख़ूब जई खिलायी और उन्हें अस्तबलों से बाहर लाये। उन्होंने अपनी बढ़िया पोशाकें पहनीं और घुंघराले बाल संवारे। अलावघर पर बैठे हुए इवान ने अपने भाइयों से कहा –

"मुझे भी अपने साथ ले चलो, मेरे भाइयो! मुझे भी क़िस्मत आज़माने का मौक़ा दो।"

"तुम्हें साथ ले चलें? बुद्धू कहीं के! तुम यहीं अलावघर पर बैठे अच्छे लगते हो!" उन्होंने ठहाका लगाया। "अगर तुम हमारे साथ गये तो लोग तुम्हें देखकर हंसेंगे। तुम्हारे लिए तो यही अच्छा है कि जंगलों में जाकर खुमियों की तलाश करो।"

उसके भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए। उन्होंने अपने टोपों के सिरे ऊपर करके सीटी बजायी, सिंहनाद किया और सरपट घोड़े दौड़ाते हुए धूल के बादल में विलीन हो गये। इवान ने पिता की दी हुई लगाम उठायी और खुले मैदान में जा पहुंचा। पिता ने जैसे बताया था, उसने वैसे ही ज़ोर से आवाज़ दी –

"जादुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!"

और लो! एक घोड़ा उसकी तरफ़ तेज़ी से आता हुआ दिखाई दिया। उसके पांव तले की धरती कांपती थी, उसकी नाक से शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे। यह तेज़ घोड़ा इवान के पास आकर रुक गया और कहने लगा –

"हुक्म, मालिक!"

इवान ने घोड़े की गर्दन थपथपायी, उसे लगाम पहनायी और उसके बायें कान में प्रवेश कर बायें से बाहर आ गया। देखते ही देखते वह उषा-बेला के आकाश जैसा सुन्दर युवक बन गया। वह जादुई घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और ज़ार के महल की तरफ़ चल दिया। जादुई घोड़ा अपनी दुम की फटकार के साथ पहाड़ियों को लांघता, घाटियों को फांदता, ठूंठों-पेड़ों को फलांगता हुआ बढ़ता चला गया।

इवान आख़िर ज़ार के महल के आंगन में जा पहुंचा। उस समय महल के इर्द-गिर्द के मैदान लोगों से भरे पड़े थे। वहां ही बारह खम्भों पर बलूत के लट्ठों की बारह

तहोंवाला महल था। उस महल की सबसे ऊपर की मंज़िल की खिड़की में राजकुमारी अनुपमा बैठी थी।

वज़ीर बाहर ओसारे में आया और उसने कहा –

"वीर युवको! तुम में से जो अपने घोड़े पर सवार होकर महल की खिड़की तक उछल कर मेरी बेटी के होंठ चूमेगा, वही उससे शादी करेगा और उसे मैं अपना आधा राज्य भी दूंगा।"

राजकुमारी अनुपमा को पाने की इच्छा रखनेवाले नौजवान, बारी-बारी से घोड़े पर सवार होकर आये, कूदे-फांदे, मगर अफ़सोस! खिड़की उनकी पहुंच से बहुत दूर थी। दूसरे लोगों के साथ इवान के दोनों भाइयों ने भी कोशिश की। वे आधी अंचाई तक भी न पहुंच सके।

अब इवान की बारी आयी। उसने अपना जादुई घोड़ा सरपट दौड़ाया, वह हुंकारते और सिंहनाद करते हुए ऊपर को उछला और दो कम अन्तिम खूंटे तक जा पहुंचा। वह एक बार फिर घोड़े को तेज़ी से दौड़ाता हुआ आया, ऊपर को उछला और इस बार एक कम अन्तिम खूंटे तक पहुंच गया। उसके लिए अब तीसरा और आख़िरी मौक़ा बाक़ी रह गया था। इस बार उसने जादुई घोड़े को बहुत ही तेज़ दौड़ाया। घोड़ा हांफ रहा था और उसके मुंह से झाग निकल रहा था। इवान आग की तेज़ लपट की भांति खिड़की के पास पहुंचा और उसने राजकुमारी अनुपमा के शहद जैसे मीठे होंठ चूम लिये। राजकुमारी ने अपनी मुहर की अंगूठी से उसके माथे पर निशान लगा दिया।

लोग चिल्लाये –

"इसे पकड़ो! इसे रोको!"

लेकिन इवान और उसके घोड़े का कहीं अता-पता ही न था।

वे दोनों तेज़ी से खुले मैदानों में पहुंचे। इवान जादुई घोड़े के बायें कान में दाख़िल होकर बायें से बाहर निकल आया और देखते ही देखते वह पहले जैसा हो गया। जादुई घोड़े को वहीं छोड़ कर वह अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने खुमियां इकट्ठी कीं। वह मकान के भीतर गया, एक चिथड़े से उसने अपना माथा बांध लिया और पहले की भांति अलावघर पर चढ़कर लेट गया।

कुछ देर बाद उसके भाई आये। वे जहां गये थे और उन्होंने जो कुछ देखा था, वह सब बयान किया।

"राजकुमारी को चाहने वाले बहुत थे और एक से एक बढ़-चढ़ कर सुन्दर भी," उन्होंने कहा। "लेकिन उनमें से एक तो बस, कमाल ही का था। वह अपने तूफ़ानी घोड़े

से उछलकर राजकुमारी की खिड़की तक पहुंचा और राजकुमारी के होंठ चूमने में सफल हो गया। हमने उसे आते देखा, मगर जाते नहीं देखा।"

चिमनी के पास अपनी जगह से इवान ने कहा –

"शायद यह मैं था, जिसे तुमने देखा था।"

उसके भाई चीख कर बोले –

"अरे बेवकूफ़, अपनी बकवास बन्द करो! वहीं अलावघर पर बैठकर घुमियां खाओ!"

तब इवान ने खोल दिया राजकुमारी की मुहर के ऊपर बंधा हुआ चिथड़ा। बस, फिर क्या था, तेज रोशनी से सारा घर जगमगा उठा। उसके भाई डरकर चिल्लाये –

"अरे बेवकूफ़, यह तुम क्या कर रहे हो? मकान जला डालोगे!"

अगले रोज जार ने बहुत बड़ी दावत की, जिसमें उसने अपनी सारी प्रजा को बुलाया। उस दावत में जागीरदार और रईस, साधारण लोग, ग़रीब-अमीर, जवान-बूढ़े – सभी बुलाये गये।

इवान के भाई भी दावत में शामिल होने के लिए तैयार हुए। "मुझे भी अपने साथ ले चलो, भाइयो," इवान ने प्रार्थना की।

"क्या?" वे हंसे। "जो भी तुम्हें देखेगा, वही हंसेगा। यहां बैठकर घुमियां खाओ!"

भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर चले गये और इवान उनके पीछे-पीछे पदल ही चल दिया। वह जार के महल में पहुंचा और दूर एक कोने में ही बैठ गया। राजकुमारी अनुपमा मेहमानों से भेंट करने लगी। वह सभी को शराब का एक जाम देती और साथ ही यह देखती कि किसी के माथे पर उसकी मुहर तो नहीं लगी है।

इवान के सिवा वह सभी मेहमानों से मिली। इवान के पास पहुंचते ही राजकुमारी का दिल बैठ गया। इवान के सारे शरीर पर कालिख पुती हुई थी और उसके बाल बिखरे हुए थे।

राजकुमारी अनुपमा ने पूछा –

"तुम कौन हो? कहां से आये हो? तुम्हारे माथे पर चिथड़ा क्यों बंधा हुआ है?"

"मैं गिरकर जख्मी हो गया हूं," इवान ने जवाब दिया।

राजकुमारी ने चिथड़ा खोला तो सारा महल एकदम जगमगा उठा।

"यह मेरी मुहर है!" वह चिल्लायी। "यह रहा मेरा मंगेतर!"

जार इवान के पास आया और उसे देखकर कहने लगा –

"अरे नहीं, राजकुमारी अनुपमा, यह तुम्हारा मंगेतर नहीं हो सकता! यह तो निरा उल्लू है!"

इवान ने ज़ार से कहा –

"मुझे अपना मुंह धोने की इजाज़त दे दीजिये, ज़ार।"

ज़ार ने इजाज़त दे दी। इवान आंगन में पहुंचकर उसी भांति चिल्लाया जैसा कि उसके पिता ने सिखाया था –

"आओ घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!"

और लो! एक घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ उसकी तरफ़ आता दिखाई दिया। उसके पैरों तले की ज़मीन कांप रही थी, उसकी नाक से शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे। इवान उसके बायें कान में दाखिल होकर बायें से बाहर निकल आया और एक बार फिर वह उषा-बेला के आकाश जैसा सुन्दर बन गया। वह कितना सुन्दर था, यह बयान के बाहर है।

महल में जमा सभी लोगों ने जब उसे देखा तो दांतों तले उंगली दबा कर रह गए।

इसके बाद, उन दोनों की शादी हो गयी और ज़ार ने शादी की खुशी में एक बड़ी दावत दी।

किसान का बेटा इवान और तीन भयंकर राक्षस

रूसी लोक-कथा

कभी किसी राज्य में एक बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। उनके तीन बेटे थे। सबसे छोटे का नाम इवान था। वे लोग ज़रा भी कामचोर नहीं थे, सुबह से रात तक मेहनत करते थे, हल चलाते थे और बीज बोते थे।

एक दिन इस राज्य में एक बुरी ख़बर फैली कि एक बहुत ही भयंकर राक्षस देश पर हमला करनेवाला है, वह लोगों को मौत के घाट उतारेगा और सभी नगरों और गांवों को आग की नज़र कर देगा। बूढ़ा-बुढ़िया बहुत दुखी हुए और रोने-धोने लगे। बड़े बेटों ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा –

"आप दुखी न हों! हम उस भयंकर राक्षस से लड़ने जायेंगे और आख़िरी सांस रहते तक उस से लोहा लेंगे। इसलिये कि आपको एकाकीपन न खले हम इवान को आपके पास छोड़े जाते हैं। वह तो वैसे भी लड़ने-भिड़ने के लिये अभी बहुत छोटा है।"

"नहीं, मैं घर में रहना और तुम्हारा इन्तज़ार करना नहीं चाहता। मै भी भयंकर राक्षस से लड़ने जाऊंगा," इवान ने कहा।

बूढ़े-बुढ़िया ने इवान को न तो रोका-टोका और न ही समझाया-बुझाया।

बूढ़े-बुढ़िया ने अपने तीनों बेटों को सफ़र के लिये तैयार किया। तीनों भाइयों ने

भारी-भारी गदाएं लीं, खाने-पीने की चीजों से भरे हुए थैले लटकाये, अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए और चल दिये।

वे बहुत दूर गये या थोड़ी दूर, यह तो राम जाने! आखिर रास्ते में उन्हें एक बुजुर्ग मिला।

"नमस्कार, सूरमाओ!"

"नमस्कार, दादा!"

"किधर जा रहे हैं आप लोग?"

"हम जा रहे हैं भयंकर राक्षस से लड़ने, अपनी मातृभूमि की रक्षा करने।"

"यह तो बड़ा नेक काम है। मगर लड़ने का काम तुम्हारी गदाओं से नहीं चलेगा, इसके लिये तो दमिश्की इस्पात की तलवारें चाहिये।"

"ये तलवारें कहां से हासिल करें, दादा?"

"यह मैं बताता हूं। सूरमाओ, आप बिल्कुल सीधे ही चलते जायें। आखिर एक ऊंचा पहाड़ आयेगा। उस पहाड़ में एक गहरी गुफा है। मगर उसके मुंह पर एक बहुत बड़ी चट्टान रखी हुई है। उस चट्टान को हटाकर गुफा में दाखिल हो जाना और वहां आपको दमिश्की इस्पात की तलवारें मिल जायेंगी।"

तीनों भाइयों ने बुजुर्ग राहगीर को धन्यवाद दिया और जैसे उसने बताया था, सीधे ही बढ़ चले। आखिर क्या देखते हैं कि एक बहुत ऊंचा पहाड़ खड़ा है जिसके एक ओर बहुत बड़ी चट्टान रखी हुई है। भाइयों ने उस चट्टान को हटाया और गुफा में दाखिल हुए। भीतर उन्होंने क्या देखा कि तरह-तरह के हथियार ही हथियार हैं, जिनकी न कोई गिनती है, न शुमार। उन्होंने अपने लिये एक-एक तलवार चुन ली और आगे चल दिये।

"भला हो उस बुजुर्ग का," वे बोले। "तलवार से लड़ाई करना कहीं अधिक आसान होगा!"

वे अपने घोड़े बढ़ाते गये, बढ़ाते गये और आखिर एक गांव में पहुंचे। देखते क्या हैं कि वहां चारों ओर सुनसान है, न कहीं कोई इन्सान है, न इन्सान का नाम-निशान। सभी कुछ जला पड़ा है, खण्डहर ही खण्डहर हैं। बस, एक छोटी-सी झोंपड़ी खड़ी है। तीनों भाई झोंपड़ी में गये। अलावघर पर एक बुढ़िया लेटी हुई कराह रही थी।

"प्रणाम, दादी!" भाई बोले।

"जीते रहो, सूरमाओ! किधर जा रहे हो?"

"हम किशमिशी नदी के रसभरी पुल पर जा रहे हैं, भयंकर राक्षस से लड़ने, अपनी मातृभूमि की रक्षा करने।"

"शाबाश! बहुत नेक काम करने जा रहे हो। बहुत ज़ालिम है वह राक्षस। सभी को लूटता-खसोटता और मारता-काटता है, सब कुछ आग की नज़र कर डालता है। हमारे यहां उसने यही कुछ किया। बस, एक मैं ही ज़िन्दा बची हूं..."

तीनों भाइयों ने बुढ़िया की झोंपड़ी में रात बितायी, तड़के ही उठे और फिर चल दिये अपनी मंज़िल की ओर।

वे किशमिशी नदी और रसभरी पुल पर पहुंचे। तट पर सभी ओर टूटी तलवारें और तीर-कमान पड़े थे, इन्सानी पंजरों के ढेर लगे थे...

भाइयों को एक खाली झोंपड़ी मिल गई और उन्होंने वहीं रात बिताने का फ़ैसला किया।

"भाइयो, मेरी बात सुनो," इवान ने कहा, "हम बहुत ही दूर और एक अजनबी देश में आ गये हैं। अब हमें अपनी आंखें और कान खुले रखने चाहिये। आइये, हम बारी-बारी से पहरा दें ताकि भयंकर राक्षस रसभरी पुल को पार न कर सके।"

पहली रात को सबसे बड़ा भाई पहरा देने के लिये गया। उसने तट पर चक्कर लगाया और किशमिशी नदी के पार नज़र डाली। वहां एकदम सन्नाटा था, न कोई आदमी था न जीव-जन्तु, न कोई आहट थी न भनक। सबसे बड़ा भाई झाड़ियों के नीचे जाकर लेट रहा और तुरंत गहरी नींद में डूबकर ज़ोर से खर्राटे लेने लगा।

इधर इवान झोंपड़ी में लेटा हुआ था – उसकी आंखों में नींद नहीं थी, वह तो ऊंघ भी नहीं पा रहा था। जब आधी रात बीत गई तो उसने दमिश्की इस्पात की तलवार उठाई और किशमिशी नदी की ओर चल दिया।

वहां जाकर उसने देखा कि सबसे बड़ा भाई झाड़ियों के नीचे पड़ा ज़ोरों से खर्राटे ले रहा है। इवान ने उसे जगाया नहीं। वह रसभरी पुल के नीचे छिप गया और वहां खड़े रहकर पहरा देने लगा।

अचानक नदी के पानी में भारी खलबली मच गई और बलूत वृक्षों पर उक़ाब चीखने लगे – छः सिरोंवाला भयंकर राक्षस चला आ रहा था। जैसे ही वह रसभरी पुल के बीचोंबीच पहुंचा, उसका घोड़ा लड़खड़ाने और कंधे पर बैठा हुआ काला कौआ पंख फड़फड़ाने लगा और पीछे-पीछे आते हुए काले कुत्ते के रोंगटे खड़े हो गये।

छः सिरोंवाला भयंकर राक्षस बोला –

"मेरे घोड़े, तू क्यों लड़खड़ा रहा है? काले कौवे, तू क्यों पंख फड़फड़ा रहा है? काले कुत्ते, तेरे रोंगटे क्यों खड़े हो गये हैं? क्या तुम्हें ऐसा लग रहा है कि किसान का बेटा इवान यहीं कहीं है? वह तो अभी पैदा भी नहीं हुआ। अगर पैदा हो भी गया

है, तो मेरे सामने वह राई जितना भी नहीं है! मैं उसे एक हाथ से ऊपर उठाकर दूसरे से मसल दूंगा।"

इतना सुनकर इवान पुल के नीचे से निकला और बोला –

"बहुत बढ़-चढ़कर बातें न कर, दुष्ट राक्षस! अभी तो तूने उजले बाज को तीर का निशाना नहीं बनाया, इसलिये उसके पंख उखाड़ने की बात न कर! तुझे तो यह मालूम नहीं कि मैं कैसा सूरमा हूं, इसलिये तुझे मेरी खिल्ली उड़ाने का कोई हक़ नहीं! आ, जरा अपनी ताक़त आजमा लें। जो जीत जायेगा, वही अपनी डींग हांक लेगा।"

इस तरह वे दोनों भिड़ गये और उनकी तलवारें इतने जोर से टकराईं कि धरती कांपने और गूंजने लगी।

भयंकर राक्षस का पलड़ा हल्का रहा – किसान के बेटे इवान ने तलवार के एक ही वार से उसके तीन सिर काट डाले।

"जरा ठहर जाओ, किसान के बेटे इवान!" भयंकर राक्षस चिल्लाया। "मुझे जरा दम ले लेने दो!"

"दम लेने की बात मत कर, दुष्ट राक्षस! तेरे तीन सिर हैं और मेरा एक। जब तेरा भी एक ही सिर रह जायेगा, तब हम दम लेने की बात सोचेंगे।"

वे फिर से भिड़े, फिर से उनकी तलवारें टकराने लगीं।

किसान के बेटे इवान ने उसके बाक़ी तीन सिर भी काट दिये। फिर उसने उसके शरीर के टुकड़े किये, उन्हें किशमिशी नदी में फेंका, रसभरी पुल के नीचे उसके छः सिर छिपाये और खुद झोंपड़ी में आकर सो रहा।

सुबह को सबसे बड़ा भाई वापस आया। इवान ने उसे देखा तो पूछा –

"कहो भाई, कुछ नजर आया?"

"नहीं भाइयो, मेरे पास तो मक्खी तक भी नहीं फटकी।" उसने जवाब दिया।

इवान यह सुनकर खामोश रहा।

अगले दिन मंझला भाई पहरा देने गया। उसने इधर चक्कर लगाया, उधर चक्कर लगाया, सभी ओर नजर डाली और यह समझ लिया कि सब कुछ ठीक-ठाक है। वह भी झाड़ियों के नीचे जाकर लेट रहा और सो गया।

इवान ने उसपर भी भरोसा नहीं किया। जब आधी रात बीत गई तो उसने कपड़े पहने, अपनी तेज तलवार ली और किशमिशी नदी की ओर चल दिया। वह रसभरी पुल के नीचे छिपकर प्रतीक्षा करने लगा।

अचानक नदी के पानी में भारी खलबली मच गई, बलूत वृक्षों पर उक़ाब चीख़ने लगे – नौ सिरोंवाला भयंकर राक्षस आ रहा था। जैसे ही वह रसभरी पुल पर पहुंचा वैसे ही उसका घोड़ा खड़खड़ाने और उसके कंधे पर बैठा हुआ काला कौआ पंख फड़फड़ाने लगा और घोड़े के पीछे-पीछे आनेवाले काले कुत्ते के रोंगटे खड़े हो गये। राक्षस ने अपना चाबुक ऊपर उठाया और उसे ज़ोर से घोड़े की बग़ल, कौवे के पंखों और कुत्ते के कानों पर सटकारता हुआ बोला –

"मेरे घोड़े, तू क्यों खड़खड़ा रहा है? काले कौवे, तू क्यों पंख फड़फड़ा रहा है? काले कुत्ते, तेरे रोंगटे क्यों खड़े हो गये हैं? क्या तुम्हें ऐसा लग रहा है कि किसान का बेटा इवान यहीं कहीं है? वह तो अभी पैदा भी नहीं हुआ। अगर पैदा हो भी गया है तो मेरे सामने वह राई बराबर है! मैं तो उसे एक उंगली से ही दूसरी दुनिया में भेज दूंगा।"

इतना सुनकर किसान का बेटा इवान उछलकर रसभरी पुल के नीचे से सामने आया और बोला –

"रुक ज़रा, बहुत बढ़-चढ़कर बातें न कर, दुष्ट राक्षस! आ, दो-दो हाथ कर लें और फिर देखेंगे कि कौन किसे दूसरी दुनिया में भेजता है!"

इवान दुष्ट राक्षस पर झपटा और उस पर दमिश्की इस्पात की तेज़ तलवार से उसने एक और फिर दूसरा वार किया और राक्षस के छः सिर काट डाले। राक्षस ने भी ज़ोरदार प्रहार किया और किसान का बेटा इवान घुटनों तक ज़मीन में धंस गया। मगर किसान के बेटे इवान ने रेत से मुट्ठी भरी और दुश्मन की अंगारे-सी दहकती आंखों में झोंक दी। राक्षस जब अपनी आंखों से रेत निकालने और उन्हें साफ़ करने लगा तो इवान ने उसके बाक़ी तीन सिर भी काट डाले। फिर उसने राक्षस की लाश के टुकड़े किये और उन्हें किशमिशी नदी में फेंक दिया। उसने राक्षस के नौ सिरों को रसभरी पुल के नीचे छिपाया, झोंपड़ी में लौटा और बिस्तर पर लेटकर ऐसे सो रहा, मानो कुछ हुआ ही न हो।

सुबह को मंझला भाई घर लौटा।

"कहो भाई, तुम्हें रात को वहां कुछ नज़र आया?" इवान ने पूछा।

"नहीं," उसने जवाब दिया। "कोई मक्खी या मच्छर तक भी मेरे पास नहीं फटका।"

"अगर यही बात है तो चलो मेरे साथ, मेरे भाइयो। मैं तुम्हें मक्खी और मच्छर दिखाता हूं।" इवान ने कहा।

इवान अपने भाइयों को रसभरी पुल के नीचे ले गया और उसने उन्हें दोनों राक्षसों के सिर दिखाये।

"यह देखो," उसने कहा। "रातों को यहां ऐसी मक्खियां और ऐसे मच्छर घूमा करते हैं। तुम्हें मेरे भाइयो, लड़ने-भिड़ने से क्या मतलब, तुम तो घर में आराम से अलावघर पर लेटे रहा करो!"

दोनों भाइयों पर घड़ों पानी पड़ गया।

"हमें तो नींद ने धर दबाया था," वे बोले।

तीसरी रात को खुद इवान पहरा देने के लिये जाने को तैयार हुआ। उसने कहा – "मैं आज बहुत ही भयानक लड़ाई लड़ने जा रहा हूं। मेरे भाइयो, तुम आज रात भर न सोना, मेरी ओर कान लगाये रहना। जैसे ही तुम्हें मेरी सीटी सुनाई दे, वैसे ही मेरे घोड़े को मेरे पास भेज देना और खुद भी भागते हुए मेरी मदद को आ जाना।"

इतना कहकर किसान का बेटा इवान किशमिशी नदी की ओर चला गया और रसभरी पुल के नीचे खड़ा होकर इन्तज़ार करने लगा।

जैसे ही आधी रात गुज़री कि ज़मीन कांपने और हिचकोले खाने लगी, नदी के पानी में ज़ोर की खलबली मच गई, तेज़ हवा सांय-सांय करने लगी और बलूत के वृक्षों पर उक़ाब चिल्लाने लगे। बारह सिरोंवाला भयंकर राक्षस किशमिशी नदी की ओर आ रहा था। उसके बारह के बारह सिर सीटियां बजा रहे थे और समी से आग की लपटें निकल रही थीं। इस राक्षस के घोड़े के बारह पंख थे, उसके बाल तांबे के थे और अयाल और दुम लोहे की। राक्षस जैसे ही रसभरी पुल पर पहुंचा, उसका घोड़ा लड़खड़ाने और उसके कंधे पर बैठा हुआ काला कौआ पंख फड़फड़ाने लगा और पीछे-पीछे आते हुए काले कुत्ते के रोंगटे खड़े हो गये। भयंकर राक्षस ने फ़ौरन घोड़े की बग़ल, काले कौवे के पंखों और कुत्ते के कानों पर चाबुक सटकारा और चिल्लाया –

"मेरे घोड़े, तू क्यों लड़खड़ा रहा है? काले कौवे, तू क्यों पंख फड़फड़ा रहा है? काले कुत्ते, तेरे रोंगटे क्यों खड़े हो गये हैं? क्या तुम्हें ऐसा लग रहा है कि किसान का बेटा इवान यहीं कहीं है? वह तो अभी पैदा भी नहीं हुआ। अगर पैदा हो भी गया है तो मेरे सामने वह राई बराबर ही तो है! मैं तो बस एक बार सीटी बजाऊंगा और उसकी धूल तक भी नहीं मिलेगी।"

इतना सुनकर किसान का बेटा इवान रसभरी पुल के नीचे से निकला।

"दुष्ट राक्षस, बहुत बढ़-चढ़कर बातें न कर। कहीं ऐसा न हो कि फिर शर्म से सिर झुकाना पड़े।"

"ओह, तो तुम हो किसान के बेटे इवान? किसलिये यहां आये हो?"

"दुष्ट राक्षस, मैं आया हूं तुझे देखने, तेरी ताक़त आज़माने।"

"मेरी ताक़त आज़माने! तुम मेरे सामने मक्खी के समान हो!"

किसान के बेटे इवान ने उसे जवाब दिया—

"मैं न तो तुम्हें क़िस्से-कहानियां सुनाने और न तुम से सुनने ही आया हूं। दुष्ट राक्षस, मैं आया हूं तुम्हें मौत के घाट उतारने, भले लोगों को तुमसे निजात दिलाने।"

किसान के बेटे इवान ने अपनी तेज़ तलवार हवा में लहराई और राक्षस के तीन सिर काट डाले। मगर राक्षस ने अपने सिर पकड़ लिये, उनपर अपनी आग उगलती उंगली रगड़ी और उन्हें फिर से गर्दनों पर टिका दिया। वे उसी क्षण ऐसे जम गये मानो कभी काटे ही न गये हों।

इसी बीच इवान की हालत बहुत सस्ता हो गई। राक्षस ने सीटियां बजाकर उसके कान बहरे कर दिये, अपनी आग उगलती जीभों से उसका तन झुलस दिया, उसपर चिंगारियां बरसाईं और उसे धरती में घुटनों तक धंसा दिया।

"किसान के बेटे इवान, शायद तुम कुछ आराम करना चाहोगे?"

"तुम आराम की बात न करो। अपना तो यह उसूल है—लड़ो तो जान हथेली पर रखकर, करो न अपनी चिन्ता रत्ती भर!" इवान ने कहा।

इतना कहकर उसने ज़ोर से सीटी बजाई और अपना दायां दस्ताना ज़ोर से उस झोंपड़ी पर दे मारा जहां उसके भाई थे। दस्ताने ने सभी खिड़कियों के शीशे तोड़ डाले, मगर दोनों भाई गहरी नींद सोये रहे और उन्हें कुछ भी सुनाई न दिया।

किसान के बेटे इवान ने अपनी सारी ताक़त बटोरी और फिर एक बार तलवार का पहले से ज़ोरदार वार किया। उसने राक्षस के छः सिर काट डाले। मगर दुष्ट राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया, उनपर अपनी आग उगलती उंगली रगड़ी और उन्हें गर्दनों पर टिका लिया। वे फिर तेज़ी से ऐसे जम गये मानो काटे ही न गये हों। इसके बाद वह किसान के बेटे इवान पर झपटा और उसे कमर तक ज़मीन में धंसा दिया।

इवान ने महसूस किया कि हालत सस्ता हो रही है। उसने बायां दस्ताना उतारा और झोंपड़ी पर दे मारा। दस्ताना छत तोड़कर नीचे जा गिरा, मगर दोनों भाई सोये ही रहे। उन्हें कुछ भी सुनाई न दिया।

किसान के बेटे इवान ने तीसरी बार अपनी तलवार लहराई और भयानक राक्षस के नौ सिर काट डाले। मगर राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया और उनके ऊपर अपनी आग उगलती उंगली रगड़ी, उन्हें गर्दनों पर टिकाया और वे फिर से वहां जम गये। इसके

बाद वह किसान के बेटे इवान पर झपटा और उसने उसे कंधों तक धरती में धंसा दिया।

मगर इवान ने अपना टोप उतारा और उसे झोंपड़ी पर दे मारा। टोप के लगने से झोंपड़ी हिलने और झूलने लगी और लगभग जमीन से ही जा लगी। तभी जाकर भाइयों की आंख खुली। उन्हें इवान के घोड़े की जोरदार हिनहिनाहट सुनाई दी। वह जिन जंजीरों से जकड़ा हुआ था, उन्हें तोड़ने की कोशिश कर रहा था।

दोनों भाई अस्तबल की ओर भागे। उन्होंने घोड़े को खोल दिया और खुद भी उसके पीछे दौड़ चले।

इवान का घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ अपने मालिक के पास पहुंचा और भयंकर राक्षस पर मुंह-प्रहार करने लगा। भयंकर राक्षस ने सीटी बजाई, सी-सी की और घोड़े पर चिंगारियों की वर्षा कर दी।

किसान का बेटा इवान जमीन में से बाहर निकला और उसने भयंकर राक्षस की आग उगलती हुई उंगली झटपट काट डाली। इसके बाद उसने उसके सिर काटने शुरू किये, यहां तक कि उसका एक भी सिर बाक़ी न रह गया। फिर उसने राक्षस के शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये और उन्हें किशमिशी नदी में फेंक दिया।

इसी समय दोनों बड़े भाई भागते हुए वहां पहुंचे।

"ओह, कैसे लोग हो तुम दोनों!" इवान ने कहा। "तुम्हारी इस नींद के कारण मैं तो अपनी जान से लगभग हाथ धो बैठा था।"

दोनों भाई उसे झोंपड़ी में ले गये। उन्होंने उसे नहलाया-धुलाया, खिलाया-पिलाया और उसके सोने के लिये बिस्तर लगा दिया।

इवान तड़के ही उठा और कपड़े पहनने लगा।

"इतने सवेरे ही तुम क्यों उठ गये?" भाइयों ने पूछा। "ऐसी जोरदार मुठभेड़ के बाद तो तुम्हें आराम करना चाहिये।"

"नहीं," इवान ने कहा, "मुझ से आराम की बात मत करो। किशमिशी नदी के तट पर कहीं मेरी पेटी खो गयी है। मैं उसे ढूंढ़ने जा रहा हूं।"

"उसकी क्या जरूरत है!" भाइयों ने जवाब दिया। "जब हम नगर में जायेंगे, तो तुम वहां नई पेटी खरीद लेना।"

"नहीं, मुझे वह पुरानी पेटी ही चाहिये।"

और इवान अकेला ही किशमिशी नदी की ओर चल दिया। मगर वह पेटी की खोज करने के लिये नहीं रुका। वह रसभरी पुल को लांघकर दूसरे किनारे पर पहुंचा और भयंकर राक्षसों के पत्थर के बने महल में लुके-छिपे जा घुसा। वह एक खुली हुई

खिड़की के पास खड़ा होकर बातचीत सुनने लगा। वह यह जानना चाहता था कि वहां कोई नई साजिश तो नहीं रची जा रही।

उसने भीतर झांका और पाया कि भयंकर राक्षसों की तीनों बीवियां और राक्षसों की बूढ़ी मां बैठी हुई हैं। वे आपस में बातचीत कर रही थीं।

पहले राक्षस की बीवी ने कहा –

"मैं किसान के बेटे इवान से अपने पति का बदला लेकर रहूंगी! वह और उसके भाई जब घर लौटते होंगे तो मैं उनके लिये दिन की गर्मी असह्य बना दूंगी और खुद कुआं बन जाऊंगी। प्यास से बेहाल होकर वे पानी पीने के लिये आयेंगे और पहला घूंट पीते ही मर जायेंगे!"

"यह तुम्हें अच्छी बात सूझी है!" बूढ़ी राक्षसी ने कहा।

दूसरे राक्षस की बीवी बोली –

"मैं उनके आगे-आगे भागकर सेब का पेड़ बन जाऊंगी। उनमें से हरेक सेब खाना चाहेगा, मगर मुंह में डालते ही दूसरी दुनिया में पहुंच जायेगा।"

"तुम्हें भी अच्छी बात सूझी है!" बूढ़ी राक्षसी ने कहा।

तीसरे राक्षस की बीवी बोली –

"और मैं उनकी आंखों में नींद की खुमारी ला दूंगी। मैं भागकर उनके आगे-आगे जाऊंगी और रेशमी तकियों समेत नर्म-नर्म कालीन बन जाऊंगी। तीनों भाई लेटकर आराम करना चाहेंगे और आन की आन में झुलसकर रह जायेंगे!"

"तुमने भी अच्छी तरकीब सोची है," बूढ़ी राक्षसी ने कहा।

"फिर भी अगर तुम तीनों उन्हें मार डालने में नाकाम रहोगी, तो मैं खुद एक अतिकाय सूअरनी बनकर उन तीनों को निगल जाऊंगी।"

किसान का बेटा इवान उनकी बातें सुनने के बाद जल्दी से अपने भाइयों के पास लौट गया।

"मिल गई तुम्हें पेटी?" भाइयों ने उससे पूछा।

"हां, मिल गई।"

"इसके लिये इतना वक़्त बरबाद करने में क्या तुक थी?"

"हां, तुक थी, मेरे भाइयो!"

इसके बाद तीनों भाई सफ़र के लिये तैयार हुए और घर की ओर चल दिये।

अपने घोड़े बढ़ाते हुए उन्होंने मैदान लांघे, चरागाहें पार कीं। गर्मी ऐसी ज़ोरों की थी कि कुछ न पूछिये। उन्होंने अनुभव किया कि अगर वे पानी नहीं पियेंगे, तो उनका

दम निकल जायेगा। उन्होंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई तो उन्हें निकट ही एक कुआं नज़र आया जिसकी सतह पर चांदी का एक ढोल तैर रहा था। दोनों बड़े भाइयों ने इवान से कहा –

"इवान, आओ थोड़ी देर रुककर ठण्डा पानी पियें और अपने घोड़ों को भी पानी पिलायें।"

"मगर कौन जाने, इस कुएं में कैसा पानी है?" इवान ने जवाब दिया।

इतना कहकर वह घोड़े से नीचे कूदा और तलवार निकालकर कुएं पर वार करने लगा। उसके ऐसा करने पर कुएं से भयानक शोर और चीख-पुकार सुनाई दी। अचानक धुंध छा गई, गर्मी का ज़ोर कम हो गया और उनकी प्यास बुझ गई।

"अब देखा तुमने, मेरे भाइयो, कैसा पानी था इस कुएं में," इवान ने कहा।

वे अपने घोड़े बढ़ाते गये, बढ़ाते गये। इसकी तो राम जाने कि समय बहुत गुज़रा या थोड़ा, मगर तभी उन्हें सेबों का एक पेड़ दिखाई दिया जिस पर बड़े-बड़े और लाल-लाल सेब लटके हुए थे।

दोनों बड़े भाई घोड़ों पर से कूद पड़े और सेब तोड़ने ही वाले थे। मगर इवान उनसे भी तेज़ निकला और वह अपनी तलवार निकालकर सेब के पेड़ की जड़ें काटने लगा। सेब का पेड़ चीखने-चिल्लाने और शोर मचाने लगा।

"देखा तुमने, मेरे भाइयो, कैसा था यह सेब का पेड़? इसके सेब हमें मज़ा देने के लिये नहीं थे," इवान ने कहा।

और वे तीनों फिर अपने घोड़ों पर सवार होकर चल दिये।

वे बहुत देर तक घोड़े दौड़ाते रहे और बहुत थक गये। उन्होंने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली तो उन्हें मैदान में नर्म-सा और सुन्दर क़ालीन दिखाई दिया जिस पर रेशमी तकिये लगे हुए थे।

"आओ, क़ालीन पर लेटकर ज़रा सुस्ता लें," दोनों बड़े भाइयों ने कहा।

"नहीं, मेरे भाइयो, तुम इस क़ालीन को नर्म और आरामदेह नहीं पाओगे," इवान ने उनसे कहा।

यह सुनकर दोनों बड़े भाई बहुत बिगड़े।

"तुम कौन होते हो हमें यह बतानेवाले कि हम क्या करें और क्या न करें?" उन्होंने कहा।

मगर इवान ने कुछ भी जवाब न दिया। उसने अपनी पेटी उतारी और क़ालीन पर फेंक दी। वह जलकर राख हो गई।

"तुम्हारा भी यही हाल हुआ होता," इवान ने अपने भाइयों से कहा।

उसने निकट जाकर अपनी तलवार से क्रास्तीन और तकियों के टुकड़े करने शुरू कर दिये। इवान ने उन्हें तार-तार कर दूर फेंक दिया और कहा –

"तुम्हें मुझपर बिगड़ना नहीं चाहिये था, मेरे भाइयो! कारण कि कुआं, सेबों का पेड़ और क्रास्तीन वास्तव में वे नहीं थे जो नजर आते थे। वे तीनों राक्षसों की बीवियां थीं। वे हमारी जान लेना चाहती थीं, मगर उन्हें सफलता नहीं मिली और उल्टे वे अपनी ही जान से हाथ धो बैठीं!"

तीनों भाई घोड़े बढ़ाते गये। उन्होंने लम्बी मंजिल तय की या छोटी, यह तो राम जाने। पर अचानक आकाश एकदम स्याह हो गया, हवा चीखने-चिंघाड़ने और धरती कांपने-कराहने लगी। तभी उन्होंने एक अतिकाय सूअरनी को अपने पीछे भागते आते देखा। उसने अपने बड़े-बड़े अबड़े फाड़े और वह इवान तथा उसके भाइयों को निगल ही जाने वाली थी। मगर ये तीनों भी भोले-भाले नहीं थे। उन्होंने अपने सफ़री थैलों में से एक-एक पुड़ा नमक निकाला और सीधे सूअरनी के खुले हुए मुंह में झोंक दिया।

सूअरनी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने समझा कि किसान का बेटा इवान और उसके दोनों भाई उसके मुंह में आ गये हैं। वह रुककर नमक को चबाने लगी। मगर यह महसूस कर कि वह नमक खा रही है, फिर से उनके पीछे भागी।

वह तेजी से भागी आ रही थी, उसके दांत खड़े थे और वह दांत पीस रही थी। ऐसा लगता था कि वह अब पहुंची कि पहुंची।

यह देखकर इवान ने अपने भाइयों से कहा कि वे अलग-अलग दिशाओं में मुड़ जायें। उनमें से एक दायीं ओर, दूसरा बायीं ओर और खुद इवान सामने की ओर अपना घोड़ा दौड़ाने लगा।

सूअरनी पास आकर रुक गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सबसे पहले किसका पीछा करे।

वह सोचती और अपनी थूथनी इधर-उधर घुमाती हुई देख रही थी कि इसी बीच इवान ने उसे उठाकर अपनी पूरी ताक़त से जमीन पर दे मारा। सूअरनी धूल बनकर धूल में ही मिल गई और धूल हवा में बिखर गई।

इसके बाद इन इलाक़ों में न राक्षस नजर आये और न अजदहे या सांप। लोगों को सदा-सदा के लिये डर से निजात मिल गई।

जहां तक इवान का सवाल है, तो वह अपने भाइयों के साथ अपने माता-पिता के पास लौट आया और वे लोग खूब सुख-चैन से रहने लगे।

बेमिसाल मुक़दमा

रूसी लोक-कथा

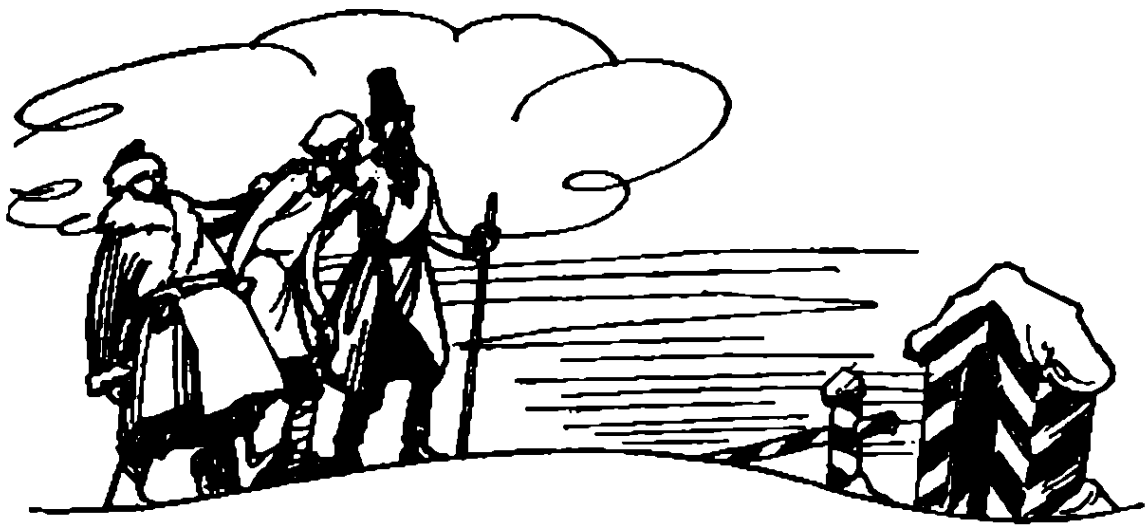

किसी ज़माने में कहीं दो भाई रहते थे। एक ग़रीब था और दूसरा अमीर।

एक दिन क्या हुआ कि ग़रीब का ईंधन चुक गया। अलावघर गर्म करने के लिये उसके पास कुछ नहीं था। उसके झोंपड़े में बहुत ठंड थी।

उसने जंगल में जाकर कुछ लकड़ी काटी, मगर उसे लादकर घर लाने के लिये उसके पास घोड़ा नहीं था।

"मैं अपने भाई के पास जाकर उससे घोड़ा मांग लाता हूं," उसने सोचा।

सो वह अपने भाई के पास गया। अमीर भाई को उसके आने पर कोई ख़ुशी न हुई। वह बोला –

"ख़ैर, इस बार तो तुम घोड़ा ले जा सकते हो। मगर यह ध्यान रखना कि बोझ बहुत ज़्यादा न हो। हां, फिर इस तरह की फ़रमाइशें लेकर मेरे पास मत आना। तुम आज एक बीज मांग रहे हो तो कल दूसरी मांगोगे। अगर यही सिलसिला जारी रहा तो मैं जल्द ही सड़कों पर भीख मांगता नज़र आऊंगा।"

ग़रीब भाई घोड़े को घर ले गया और केवल वहीं जाकर उसे याद आया कि वह घोड़े का साज मांगना तो भूल ही गया।

"अब फिर से भाई के पास जाने में कोई तुक नहीं। वह साज तो देगा ही नहीं," उसने मन ही मन सोचा।

चुनांचे उसने स्लेज को घोड़े की दुम के साथ खूब कसकर बांध दिया और उसे जंगल की ओर हांक ले चला।

लौटते हुए स्लेज एक ठूंठ में अटक गई। ग़रीब आदमी का इस ओर ध्यान नहीं गया और उसने घोड़े को चाबुक मार दिया।

घोड़ा था बड़ा तेज़। वह तेज़ी से आगे की ओर बढ़ा और लीजिये, हुआ यह कि उसकी दुम ही उखड़ गयी!

अमीर भाई ने जब यह देखा कि उसके घोड़े की दुम ग़ायब हो गई है तो वह अपने ग़रीब भाई को भला-बुरा कहने और कोसने लगा।

"तुमने मेरे घोड़े का सत्यानास कर दिया है!" वह चिल्लाया। "यह मत समझो कि मैं तुम्हारा ऐसे ही पिंड छोड़ दूंगा!"

अमीर भाई ने ग़रीब के ख़िलाफ़ मुक़दमा दायर कर दिया।

थोड़ा वक़्त गुज़रा या बहुत, यह तो राम जाने। आख़िर दोनों भाइयों को अदालत में बुलाया गया।

दोनों नगर की ओर चल दिये। वे चलते गये, चलते गये। ग़रीब सोच रहा था –

"ख़ुद तो कभी अदालत का मुंह नहीं देखा, मगर यह कहावत ज़रूर सुनी है – 'सबल सदा निर्बल को पछाड़ता है और मुक़दमे में ग़रीब अमीर से हारता है।' मुझे अवश्य ही अपराधी ठहराया जायेगा।"

इसी समय वे दोनों एक पुल को पार कर रहे थे। पुल की रेलिंग नहीं थी। इसलिये ग़रीब भाई का पांव फिसला और वह नीचे जा गिरा। अब संयोग की बात कि इसी समय एक व्यापारी जमी हुई नदी पर से स्लेज दौड़ाता हुआ अपने पिता को डाक्टर के पास लिये जा रहा था। ग़रीब आदमी सीधा स्लेज में लेटे हुए बीमार बूढ़े पर जा गिरा। बूढ़े का तो उसी क्षण दम निकल गया, पर ग़रीब भाई को ज़रा भी चोट नहीं आई।

व्यापारी ने ग़रीब भाई को पकड़ लिया और ग़ुस्से से उबलते हुए कहा –

"चलो मेरे साथ अदालत में!"

इस तरह वे तीनों, दोनों भाई और व्यापारी, अब एकसाथ नगर की ओर चल दिये।

ग़रीब आदमी का दिल बिल्कुल ही बैठ गया।

"अब तो सज़ा ज़रूर ही मिलेगी," उसने सोचा।

अचानक उसे सड़क पर एक पत्थर पड़ा दिखाई दिया। उसने उसे उठाकर एक चिथड़े में लपेटा और अपने कोट के अन्दर छिपा लिया।

"जहां सत्यानास, वहां सवा सत्यानास," उसने सोचा। "अगर जज ने बेइन्साफ़ी की और मुझे मुजरिम ठहराया तो उसे भी मैं दूसरी दुनिया में पहुंचा दूंगा।"

वे जज के सामने पहुंचे। अब ग़रीब भाई के खिलाफ़ एक नहीं, दो मुक़दमे थे। जज ने मुक़दमे की कार्रवाई शुरू की और पूछ-ताछ करने लगा।

ग़रीब भाई जब-तब जज पर नज़र डालता, चिथड़े में लिपटा हुआ पत्थर निकालता और फुसफुसाता –

"मैं न्याय मांगने आया, पर साथ आज क्या लाया!"

उसने यह एक बार कहा, दूसरी बार कहा और फिर तीसरी बार भी कहा। जज ने यह देखा तो मन ही मन सोचा –

"कहीं यह देहाती मुझे सोने का डला तो नहीं दिखा रहा?"

उसने एक बार फिर देखा तो उसके मन में लालच आ गया।

"अगर यह चांदी ही हो तो भी खासी बड़ी रक़म मेरे हाथ लग जायेगी।"

और उसने फ़ैसला यह सुनाया कि दुम के फिर से उग आने तक दुमकटा घोड़ा ग़रीब भाई के ही पास रहे।

व्यापारी से उसने कहा –

"रही यह बात कि इसने तुम्हारे पिता को मार डाला है, तो यह भी उसी पुल के नीचे बर्फ़ पर खड़ा हो जाये और तुम्हें पुल पर से उसी तरह छलांग लगाकर इसकी हत्या करनी चाहिये।"

बस, मुक़दमा खत्म हो गया। अमीर भाई ने ग़रीब से कहा –

"चलो ऐसे ही सही, तुम मुझे दुमकटा घोड़ा ही दे दो।"

"अरे, नहीं भाई," ग़रीब ने जवाब दिया। "जज ने जो फ़ैसला किया है, वही ठीक है। फिर से दुम उगने तक मैं तुम्हारे घोड़े को अपने ही पास रखूंगा।"

अब अमीर भाई उसे कह-सुनकर राज़ी करने लगा।

"मैं तुम्हें तीस रूबल देने को तैयार हूं, तुम सिर्फ़ मुझे मेरा घोड़ा लौटा दो," उसने कहा।

"चलो, ऐसे ही सही। लाओ रक़म।"

अमीर भाई ने तीस रूबल दे दिये और इस तरह बात खत्म हो गई।

अब व्यापारी भी मिन्नत-समाजत करने लगा –

"सुनो, भाई, मैं तुम्हारा क़ुसूर माफ़ करता हूं। मेरा बाप तो अब किसी तरह से भी वापस आने का नहीं।"

"न, न, अब तो तुम्हें मेरे साथ पुल पर चलना ही होगा। जज के फ़ैसले के मुताबिक़ तुम्हें पुल से मुझ पर कूदना ही होगा।"

"मैं तुम्हारी जान नहीं लेना चाहता। आओ दोस्ती कर लें। मैं तुम्हें एक सौ रूबल देने को तैयार हूं," व्यापारी ने गिड़गिड़ाकर कहा।

ग़रीब आदमी ने व्यापारी से भी एक सौ रूबल ले लिये। वह वहां से जाने ही को था कि जज ने उसे अपने पास बुलाकर कहा –

"अब लाओ, वह दो जिसका तुमने वादा किया था।"

ग़रीब आदमी ने कोट के नीचे से पोटली निकाली, चिथड़ा हटाया और जज को वह पत्थर दिखाया।

"मैंने आपको यही दिखाते हुए यह कहा था, 'मैं न्याय मांगने आया, पर साथ आज क्या लाया!' अगर आप कोई दूसरा फ़ैसला करते तो मैंने इस पत्थर से आपकी जान ले ली होती।"

"शुक्र है मैंने इस देहाती के हक़ में ही फ़ैसला कर दिया, वरना मैं अब ज़िन्दा न होता," जज ने सोचा।

ग़रीब भाई खूब खुशी मनाता और गीत गाता हुआ घर की ओर चल दिया।

लुढ़कता मटर

उक्रइनी लोक-कथा

किसी ज़माने में कहीं एक आदमी रहता था। उसके छः बेटे थे और एक थी बेटी – अल्योन्का। एक दिन क्या हुआ कि बेटे खेत जोतने के लिये गये। उन्होंने अपनी बहन से कहा कि वह खेत में उनके लिये खाना ले आये।

"मुझे यह बता दो कि तुम लोग किस जगह होगे ताकि मैं वहीं पहुंच जाऊं।" बहन ने कहा।

भाइयों ने जवाब दिया –

"हम अपनी झोंपड़ी से उस जगह तक एक हलरेखा बना देंगे जहां हम जोताई करेंगे। हलरेखा के साथ-साथ चलकर तुम हमारे पास पहुंच जाओगी।"

इतना कहकर वे चले गये।

अब हुआ यह कि उसी खेत के पासवाले जंगल में एक अजगर रहता था। उसने आकर भाइयों की बनाई हुई हलरेखा को पाट दिया और अपने घर की ओर ले जानेवाली एक नई हलरेखा बना दी। अल्योन्का अपने भाइयों का खाना लेकर चली तो इसी झूठी हलरेखा के साथ-साथ चलती गई। वह सीधी अजगर के अहाते में जा पहुंची। अजगर ने उसे फ़ौरन पकड़ लिया।

शाम हुई तो भाई घर लौटे। उन्होंने अपनी मां से कहा –

"हम दिन भर हल चलाते रहे। तुम्ने हमारे लिये खाने को कुछ क्यों नहीं भेजा?"

"भेजा कैसे नहीं?" मां ने जवाब दिया। "मैंने तो तुम्हारा खाना देकर अल्योन्का को खेत में भेज दिया था और यही सोच रही थी कि वह तुम लोगों के साथ ही घर लौटेगी। कहीं वह रास्ता तो नहीं भूल गई?"

"हम अभी जाकर उसकी खोज करते हैं," भाइयों ने कहा।

और इस तरह वे छः के छः अजगर की बनाई गई हलरेखा पर चलते हुए उसके अहाते में जा पहुंचे। वे अन्दर गये, उन्होंने इधर-उधर नजर दौड़ाई तो उन्हें अपनी बहन सामने नजर आई।

"मेरे प्यारे भाइयो, अजगर के आने पर मैं तुम्हें कहां छिपाऊंगी? वह तुम्हें हड़प जायेगा!" बहन ने दुखी होते हुए कहा।

वे अभी बात कर ही रहे थे कि अजगर आ धमका।

"आदम बू, आदम बू! एक नहीं अनेक।" अजगर फुंकारा। "हां, बताओ तो भले लोगो, हम दोस्ती करेंगे या लड़ाई?"

"लड़ाई!" वे सभी चिल्लाये।

"तो आओ, लोहे के आंगन में चलें।"

इस तरह वे लोहे के आंगन में गये। मगर लड़ाई ज्यादा देर नहीं चली। अजगर ने उन पर एक ही ऐसा वार किया कि वे सब फ़र्श में धंस गये। अजगर ने उन्हें बाहर निकाला तो उनकी मुश्किल से ही सांस आ-जा रही थी। उसने उन्हें एक गहरे तहखाने में फेंक दिया।

मां-बाप अपने बेटों के लौटने का इन्तजार करते रहे, करते रहे, मगर बेसूद।

एक दिन मां कपड़े धोने के लिये नदी पर गई। उसने इधर-उधर देखा तो मटर के एक छोटे से दाने को अपनी ओर लुढ़कते पाया। उसने उसे उठाकर खा लिया। समय आने पर उनके घर एक बेटा हुआ। मां-बाप ने उसका नाम रखा – लुढ़कता मटर।

लुढ़कता मटर बड़ा होने लगा। वह बढ़ता गया, बढ़ता गया। उम्र में छोटा होने पर भी क़द में बहुत बड़ा और हट्टा-कट्टा हो गया।

एक दिन लुढ़कता मटर और उसका बाप कुआं खोदने लगे। वे खोदते गये, खोदते गये कि उनके बेलचे एक विराट चट्टान से जा टकराये। बाप चट्टान को उठाने में मदद देने के लिये लोगों को बुलाने गया। मगर लोगों के आने के पहले ही लुढ़कते मटर ने उसे उठाकर बाहर फेंक दिया था। लोगों ने आकर देखा तो वे हैरान भी हुए और डरे भी। उन्होंने महसूस किया कि लुढ़कता मटर उन सब से कहीं अधिक ताक़तवर

है। वास्तव में वे इतने डर गये कि उन्होंने लुढ़कते मटर को मार डालने का इरादा कर लिया। मगर लुढ़कते मटर ने चट्टान को हवा में उछाला और फिर हाथों में लोक लिया। उसकी ताक़त का यह करिश्मा देख वे सिर पर पांव रखकर भाग गये।

बाप-बेटा ज़मीन खोदते रहे। वे खोदते रहे, खोदते रहे कि लोहे का एक बहुत बड़ा टुकड़ा उनके हाथ लग गया। लुढ़कते मटर ने उसे बाहर निकालकर छिपा दिया।

एक दिन लुढ़कते मटर ने अपने मां-बाप से पूछा –

"क्या मेरे और भाई-बहन नहीं थे?"

"क्या बतायें तुम्हें, बेटा," उन्होंने जवाब दिया। "तुम्हारी एक बहन और छः भाई थे, मगर ..." तब उन्होंने लुढ़कते मटर को सारा क़िस्सा कह सुनाया।

"मैं उन्हें खोजने जाता हूं," लुढ़कते मटर ने कहा।

मां-बाप ने रोकने के लिये उसकी बहुत मिन्नत-समाजत की।

"तुम मत जाओ बेटे," वे बोले। "तुम्हारे भाई गये थे और वे छः के छः वहीं रह गये। फिर तुम तो हो भी अकेले ही। तुम लौटकर नहीं आ सकोगे।"

"नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता! मैं ज़रूर जाऊंगा। अपने मां जनमे भाई-बहन को ज़रूर छुड़ाकर लाऊंगा!"

उसने लोहे का वह टुकड़ा लिया जो उसे ज़मीन में से मिला था और लुहार के पास गया।

"जितनी भी बड़ी मुमकिन हो, मुझे एक तलवार बना दो," उसने लुहार से कहा।

लुहार ने इतनी बड़ी और ऐसी भारी तलवार बना दी कि कई लोग मिलकर उसे लुहारख़ाने से उठाकर लाये। मगर लुढ़कते मटर ने उसे उठाया, हवा में लहराया और आकाश तक ऊंचा उछाल दिया।

"मैं अब लम्बी नींद सोऊंगा," उसने अपने बाप से कहा। "बारह दिन बाद जब तलवार उड़ती हुई वापस आये तो मुझे जगा देना।"

वह बारह दिन तक सोया रहा। तेरहवें दिन तलवार घूं-घूं की आवाज़ करती हुई नीचे आती दिखाई दी। बाप ने लुढ़कते मटर को जगाया। उसने उठकर अपनी मुट्ठी ऊंची की। तलवार उससे टकराई और दो टुकड़े होकर ज़मीन पर जा गिरी।

"यह तलवार लेकर मैं अपनी बहन और भाइयों की खोज करने नहीं जा सकता," लुढ़कते मटर ने कहा। "मेरे पास कोई दूसरी ही तलवार होनी चाहिये।"

टूटी हुई तलवार लेकर वह फिर लुहार के पास गया।

"इन टुकड़ों से मुझे एक नई तलवार बना दो," उसने कहा। "ऐसी तलवार जो मेरी ताक़त के मुताबिक़ हो!"

लुहार ने पहले से भी बड़ी तलवार बना दी। लुढ़कते मटर ने उसे आकाश तक ऊंचा उछाल दिया और फिर जाकर बारह दिन के लिए सो रहा। तेरहवें दिन तलवार घूं-घूं की आवाज़ करती हुई नीचे आती दिखाई दी तो धरती कांपने लगी। मां-बाप ने लुढ़कते मटर को जगाया। वह फ़ौरन उछलकर खड़ा हुआ। उसने अपनी मुट्ठी ऊपर की, तलवार उससे टकराई, मगर वह टूटी नहीं, केवल ज़रा सी मुड़ी ही।

"हां, इस तलवार को लेकर मैं अपनी बहन और भाइयों की खोज करने जा सकता हूं," लुढ़कते मटर ने कहा। "मां, मेरे लिये कुछ रोटियां सेंक दो और रस्क बना दो। मैं जल्द ही यहां से चल दूंगा।"

उसने रस्कों से थैला भरा, मां-बाप से विदा ली और घर से चल दिया।

अजगर की बनाई गई हलरेखा अब बिल्कुल हल्की-हल्की नज़र आ रही थी। वह उसी पर चलता हुआ एक जंगल में जा पहुंचा। वह चलता गया, चलता गया और आख़िर एक बहुत बड़े अहाते के क़रीब पहुंचा जिसके चारों ओर बाड़ लगी हुई थी। वह अहाते को लांघकर वहां बने हुए आलीशान मकान में गया। वहां उसे अपनी बहन, अल्योन्का, तो मिल गई, मगर अजगर की न तो सूरत नज़र आई और न कहीं उसकी कोई आवाज़ ही सुनाई दी।

"नमस्ते, सुन्दरी!" लुढ़कते मटर ने कहा।

"नमस्ते, सूरमा! तुम यहां क्यों आये हो? अजगर अभी आ जायेगा और तुम्हें हड़प जायेगा।"

"हो सकता है कि न हड़प पाये। यह बताओ कि तुम कौन हो?"

"मैं अपने मां-बाप की इकलौती बेटी हूं और उन्हीं के पास रहती थी। अजगर मुझे उठा लाया। मेरे छः भाइयों ने मुझे आज़ाद कराने की कोशिश की, मगर उन्हें सफलता नहीं मिली।"

"तुम्हारे भाई कहां हैं?"

"अजगर ने उन्हें तहख़ाने में फेंक दिया था। मुझे मालूम नहीं कि वे ज़िन्दा हैं या मर गये।"

"मुमकिन है मैं तुम्हें निजात दिला दूं," लुढ़कते मटर ने कहा।

"यह तुम्हारे बस की बात नहीं है! मेरे भाई भी ऐसा नहीं कर पाये थे। फिर वे तो छः थे और तुम अकेले हो!"

"तो क्या हुआ!" लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

और वह खिड़की के पास बैठकर अजगर का इन्तज़ार करने लगा।

इसी समय अजगर वापस आया और नाक से सूं-सूं करता हुआ बोला–

"आदम बू! आदम बू!"

"बेशक तुम्हें आदम बू आ रही होगी," लुढ़कते मटर ने कहा। "यह रहा आदमज़ाद!"

"अहा, भले मानस! तुम क्या चाहते हो, लड़नः या दोस्ती करना?"

"लड़ना!" लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

"तो आओ, चलें लोहे के आंगन में!"

"चलो!"

वे लोहे के आंगन में गये। वहां अजगर ने कहा–

"पहले तुम वार करो!"

"न, तुम करो!" लुढ़कते मटर ने कहा।

उनकी तलवारें टकराईं। अजगर ने लुढ़कते मटर पर ऐसा ज़ोरदार वार किया कि वह टखनों तक लोहे के ज़मियान में धंस गया। मगर लुढ़कता मटर बाहर निकल आया, उसने अपनी तलवार लहराई और अजगर पर जवाबी वार किया। अब अजगर घुटनों तक फ़र्श में धंस गया। मगर वह बाहर निकल आया और उसने लुढ़कते मटर पर फिर से वार किया तो वह घुटनों तक फ़र्श में धंस गया। मगर लुढ़कता मटर किसी तरह बाहर निकल आया और उसने दूसरा वार किया जिससे अजगर कमर तक फ़र्श में चला गया। लुढ़कते मटर ने तीसरा वार किया और अजगर को वहीं मार डाला।

तब वह तहख़ाने की ओर गया। वह बहुत गहरा और अंधेरा था। उसने अपने भाइयों को बाहर निकाला जो बिल्कुल मुर्दों जैसे हुए पड़े थे। लुढ़कता मटर अपने भाइयों, अल्योन्का और अजगर के घर में जमा सारा सोना-चांदी लेकर वहां से रवाना हो गया। मगर उसने एक बार भी यह नहीं कहा कि वह उनका भाई है।

वे बहुत देर तक चले या थोड़ी देर तक, यह कोई नहीं जानता। आख़िर वे एक नौउम्र बलूत के नीचे आराम करने के लिये बैठ गये। लुढ़कता मटर अपनी मुठभेड़ के बाद इतना थक गया था कि गहरी नींद सो गया। उसके छहों भाइयों ने आपस में सलाह की–

"लोगों को जब यह पता चलेगा कि हम छः होते हुए भी अजगर से नहीं निपट पाये, जबकि इस छोकरे ने अकेले ही उसका काम तमाम कर दिया, तो वे हमारी खिल्ली उड़ायेंगे। इसके अलावा सारे माल-मते का मालिक भी यही होगा।"

वे सलाह-मशविरा करते और सोचते-विचारते रहे। आखिर उन्होंने यह फ़ैसला किया कि लुढ़कता मटर जब तक सोया हुआ है और कुछ महसूस नहीं कर सकता, हमें छाल की रस्सियां बटकर उसे बलूत के साथ बांध देना चाहिये। जंगली जानवर आयेंगे और इसे हड़प जायेंगे। उन्होंने इस फ़ैसले को फ़ौरन अमली शक्ल दी। लुढ़कते मटर को वृक्ष के साथ बांधकर वे चलते बने।

इस बीच लुढ़कता मटर सोया रहा और उसने कुछ भी महसूस नहीं किया। वह एक दिन और एक रात सोया रहा और जब उसकी आंख खुली तो उसने अपने को वृक्ष से बंधा पाया। मगर उसने ज़ोर का एक झटका दिया, बलूत को जड़ समेत उखाड़ लिया और उसे कंधे पर रखकर घर की ओर चल दिया। वह झोंपड़ी के क़रीब पहुंचा तो उसने भाइयों को अपनी मां से यह कहते सुना –

"क्या तुम्हारा कोई और बच्चा भी हुआ था?"

"हां, हुआ था। उसका नाम है लुढ़कता मटर। वह तुम्हें आज़ाद कराने गया था।"

तब भाइयों ने कहा –

"तो वह लुढ़कता मटर ही होगा जिसे हम बलूत के साथ बांध आये हैं! हमें जाकर उसे खोलना चाहिये।"

मगर इसी समय लुढ़कते मटर ने उस बलूत को हवा में लहराया, जिसे वह उठाये हुए था, और इतने ज़ोर से झोंपड़ी पर दे मारा कि वह लगभग ज़मीन से जा लगी।

"अगर तुम ऐसे हो तो यहीं रहो!" वह बोला। "मैं जाता हूं दुनिया का चक्कर लगाने।"

और अपनी तलवार कंधे पर रखकर वह चल दिया।

वह चलता गया, चलता गया। आखिर उसे दो पहाड़ दिखाई दिये, एक दायीं ओर, दूसरा बायीं ओर। उनके बीच एक आदमी अपने हाथ-पैर उनपर टिकाये खड़ा था और उन्हें अलग कर रहा था।

"नमस्ते!"

"नमस्ते!"

"तुम क्या कर रहे हो, भले मानस?"

"रास्ता बनाने के लिये पहाड़ों को हटा रहा हूं।"

"तुम जा कहां रहे हो?"

"जहां मेरी क़िस्मत का सितारा चमक सके।"

"मैं भी वहीं जा रहा हूं! तुम्हारा नाम क्या है?"

"पहाड़ हिलाऊ। तुम्हारा क्या नाम है?"

"लुढ़कता मटर। चलो, इकट्ठे चलें।"

"चलो!"

सो वे इकट्ठे ही चल दिये। वे चलते गये, चलते गये कि उन्हें जंगल में एक आदमी दिखाई दिया। वह बलूत वृक्षों को जड़ से उखाड़ रहा था। ऐसा करने के लिये उसका केवल एक बार ही हाथ हिलाना काफ़ी होता था।

"नमस्ते!" लुढ़कते मटर और पहाड़ हिलाऊ ने कहा।

"नमस्ते!"

"तुम क्या कर रहे हो?"

"वृक्ष उखाड़ रहा हूं ताकि चलने में सुभीता हो।"

"तुम कहां जा रहे हो?"

"जहां मेरी क़िस्मत का सितारा चमक सके।"

"हम भी वहीं जा रहे हैं। क्या नाम है तुम्हारा?"

"बलूत उखाड़। और तुम्हारे क्या नाम हैं?"

"लुढ़कता मटर और पहाड़ हिलाऊ। चलो, हम इकट्ठे चलें!"

"चलो!"

सो वे तीनों इकट्ठे ही चल दिये। वे चलते गये, चलते गये। आख़िर उन्हें नदी-तट पर बहुत ही लम्बी मूंछोंवाला एक आदमी खड़ा दिखाई दिया। वह तो जैसे ही अपनी एक मूंछ को घुमाता वैसे ही नदी का पानी दो हिस्सों में बंट जाता। बीच में से ज़मीन निकल आती जिसपर चलते हुए नदी को पार किया जा सकता था।

"नमस्ते!" इन तीनों ने कहा।

"नमस्ते!"

"भले मानस, तुम क्या कर रहे हो?"

"नदी पार करने के लिये पानी को रोक रहा हूं।"

"तुम कहां जा रहे हो?"

"जहां मेरी क़िस्मत का सितारा चमक सके।"

"हम भी वहीं जा रहे हैं। तुम्हारा क्या नाम है?"

"नदी रोक। और तुम लोगों के क्या नाम हैं?"

"लुढ़कता मटर, पहाड़ हिलाऊ और बलूत उखाड़। चलो, हम इकट्ठे ही चलें।"

"चलो!"

इस तरह वे इकट्ठे ही चल दिये। उनका रास्ता बड़े मज़े से कट रहा था – पहाड़ हिलाऊ रास्ते में पड़नेवाले पहाड़ों को एक तरफ़ हटा देता, बलूत उखाड़ जंगल में से रास्ता बना देता और नदी रोक सामने आनेवाली नदी में से राह बना देता।

चलाचल, चलाचल वे एक जंगल में पहुंचे। वहां उन्हें एक छोटी-सी झोंपड़ी नज़र आई। वे अन्दर गये तो झोंपड़ी को खाली पाया।

"हम रात इसी झोंपड़ी में गुज़ार सकते हैं," लुढ़कते मटर ने कहा।

सो उन्होंने रात झोंपड़ी में बिताई। अगली सुबह को लुढ़कते मटर ने कहा –

"पहाड़ हिलाऊ, तुम यहीं रहकर खाना पकाओ और हम तीनों शिकार को जाते हैं।"

सो वे चले गये। पहाड़ हिलाऊ ने बहुत-सी चीज़ें उबालीं, भूनीं, पकायीं और आराम करने के लिये लेट गया। अचानक दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"दरवाज़ा खोलो!" किसी ने पुकारकर कहा।

"मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूं कि दरवाज़ा खोलूं!" पहाड़ हिलाऊ ने जवाब दिया।

दरवाज़ा खुला और फिर वही आवाज़ सुनाई दी –

"मुझे उठाकर दहलीज़ के पार ले जाओ!"

"बड़े आये धन्ना सेठ! खुद ही लांघ लो दहलीज़।" पहाड़ हिलाऊ ने जवाब दिया।

अचानक एक बहुत ही छोटे-से बूढ़े ने दहलीज़ पार की। उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि वह पांच फ़ुट तक फ़र्श पर घिसटती जाती थी। इस छोटे-से बूढ़े ने पहाड़ हिलाऊ को सामनेवाली जुल्फ़ से पकड़ा और उसे दीवार में लगी एक कील पर लटका दिया। फिर उसने वह सभी कुछ खा लिया जो खाने के लिए तैयार किया गया था, पीने के लिए जो कुछ था, सब पिया और पहाड़ हिलाऊ की पीठ पर से खाल की लम्बी-सी पट्टी उतारकर चलता बना।

कील पर लटका हुआ पहाड़ हिलाऊ दायें-बायें होता और इधर-उधर हिलता-डुलता रहा। आखिर उसने अपने को छुड़ा लिया, मगर जुल्फ़ खोकर। अब वह फिर से खाना पकाने लगा। वह अभी खाना पका ही रहा था कि उसके दोस्त लौट आये।

"अब तक खाना नहीं पका?" उन्होंने हैरान होकर पूछा।

"मुझे नींद आ गई थी और खाना पकाने का ध्यान ही नहीं रहा था," पहाड़ हिलाऊ ने जवाब दिया।

खैर, सबने पेट भर कर खाना खाया और सो रहे। अगली सुबह को लुढ़कते मटर ने कहा –

"बलूत उखाड़, आज तुम घर पर रहो और हम तीनों शिकार पर जायेंगे।"

वे चले गये। बलूत उखाड़ ने बहुत-सी चीजें उबालीं, भूनीं, पकायीं और फिर आराम करने के लिए लेट गया। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।

"दरवाजा खोलो!" किसी ने पुकार कर कहा।

"मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूं कि दरवाजा खोलूं," बलूत उखाड़ ने जवाब दिया।

"मुझे उठाकर दहलीज के पार ले जाओ!" फिर वही आवाज सुनाई दी।

"बड़े आये धन्ना सेठ! खुद ही लांघ लो दहलीज!" बलूत उखाड़ ने जवाब दिया।

इसी समय एक बहुत ही छोटा-सा बूढ़ा झोंपड़ी में आया। उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि पांच फ़ुट तक फ़र्श पर घिसटती आती थी। उसने बलूत उखाड़ को सामनेवाली जुल्फ़ से पकड़ा और कील पर लटका दिया। इसके बाद जो कुछ खाने के लिए था, सब खाया और जो कुछ पीने के लिए था, सब कुछ पी लिया। फिर उसने बलूत उखाड़ की पीठ से खाल की लम्बी-सी पट्टी उतारी और चलता बना।

बलूत उखाड़ हायें-हायें होता, हिलता-डुलता और पानी से बाहर निकली हुई मछली की तरह तड़पता रहा और आखिर वह कील से निकल कर नीचे गिर पड़ा। वह फ़ौरन फिर खाना पकाने के काम में जुट गया।

उसके दोस्त लौटे तो बड़े हैरान हुए।

"अब तक खाना नहीं पका?" उन्होंने पूछा।

"जरा झपकी आ गई थी," उसने जवाब दिया।

मगर पहाड़ हिलाऊ चुप रहा। उसे तो सारी हक़ीक़त मालूम थी।

तीसरे दिन नदी रोक घर पर रहा। उसकी भी वही दुर्गति हुई।

तब सुड़कते मटर ने कहा –

"तुम सभी लोग खाना पकाने में बहुत सुस्त हो! पर खैर, कोई बात नहीं। कल तुम लोग शिकार पर जाओगे और मैं घर पर रहूंगा।"

उन्होंने ऐसा ही किया भी। अगली सुबह को उसके सभी दोस्त शिकार पर गये और सुड़कता मटर झोंपड़ी में रहा। उसने बहुत-सी बढ़िया चीजें उबालीं, पकायीं और भूनीं और फिर लेटकर आराम करने लगा। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।

"दरवाजा खोलो!" कोई चिल्लाया।

"जरा रुको, मैं आ रहा हूं।" सुड़कते मटर ने जवाब दिया।

उसने दरवाजा खोला तो अपने सामने एक बहुत ही छोटे-से बूढ़े को खड़े पाया। उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि पांच फ़ुट तक जमीन पर घिसट रही थी।

"मुझे उठाकर दहलीज के पार ले जाओ!" छोटे-से बूढ़े ने कहा।

लुढ़कते मटर ने बूढ़े को उठाया और उसे झोंपड़ी के अन्दर ले गया। बूढ़ा उसपर झपटने लगा।

"तुम्हें क्या चाहिये?" लुढ़कते मटर ने पूछा।

"तुम्हें अभी पता चल जायेगा कि मुझे क्या चाहिये," छोटे-से बूढ़े ने कहा और लुढ़कते मटर की जुल्फ़ की ओर हाथ बढ़ाया। वह उसे पकड़ ही लेनेवाला था कि लुढ़कते मटर ने चीखकर कहा – "तो, ऐसे हो तुम!" इतना कहकर उसने उसे दाढ़ी से पकड़ लिया।

अब लुढ़कते मटर ने एक कुल्हाड़ा लिया, इस छोटे-से बूढ़े को घसीटकर एक बलूत के पास ले गया, बलूत को दो हिस्सों में चीरा और बूढ़े की दाढ़ी को उसमें ऐसे फंसा दिया कि निकल न पाये।

"चूंकि तुम ने मुझे बालों से पकड़ने की कमीनी हरकत की," उसने छोटे-से बूढ़े से कहा, "इसलिए अब तुम्हें मेरे लौटने तक यहीं बैठे रहना होगा।"

वह झोंपड़ी में लौटा। उसके मित्र शिकार से लौट आये थे।

"खाना तैयार है?" उन्होंने पूछा।

"हां, बहुत देर से," लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

जब वे खाना खा चुके तो लुढ़कते मटर ने कहा –

"मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें बहुत ही अद्भुत नज़ारा दिखाता हूं।"

लुढ़कता मटर उन्हें बलूत के पास ले गया। मगर यह क्या हुआ! वहां न तो बलूत का वृक्ष था और न ही वह छोटा-सा बूढ़ा! वह तो बलूत को जड़ समेत उखाड़कर अपने साथ ले गया था।

तब लुढ़कते मटर ने अपने दोस्तों को सारा क़िस्सा कह सुनाया। दोस्तों ने भी यह माना कि उस छोटे-से बूढ़े ने उन्हें बालों से पकड़कर कील पर टांग दिया था और वह उनकी पीठों से खाल उतार ले गया था।

"अगर वह ऐसा ही है तो चलो, हम चलकर उसकी तलाश करें।" लुढ़कते मटर ने कहा।

छोटा-सा बूढ़ा जब बलूत को घसीट कर ले गया था तो ज़मीन पर वृक्ष के निशान रह गये थे। चारों दोस्त इन्हीं निशानों के साथ-साथ चलते गये।

वे चलते गये, चलते गये और आख़िर एक ऐसी गहरी खोह के पास पहुंचे जिसका तल ही नज़र नहीं आता था।

"पहाड़ हिलाऊ, तुम उतर जाओ इस खोह में!" लुढ़कते मटर ने कहा।

"नहीं, मैं नहीं उतरूंगा।"

"तो तुम उतरो, बलूत उखाड़!"

मगर न तो बलूत उखाड़ और न ही नबी रोक इसके लिए राज़ी हुए।

"अगर यही बात है तो मैं खुद नीचे उतरता हूं!" सुढ़कते मटर ने कहा। "आओ, रस्सा लपेट लें!"

उन्होंने अपने गिर्द रस्सा लपेट लिया और सुढ़कते मटर ने उसका एक सिरा अपने हाथ के गिर्द बांध लिया।

"अब मुझे नीचे उतारो!" उसने कहा।

वे उसे नीचे उतारने लगे। उन्हें इस काम में बहुत ही समय लग गया। कारण कि खोह के तल तक पहुंचना तो मानो दूसरी दुनिया में पहुंचने के बराबर था। आखिर वह नीचे पहुंच ही गया। सुढ़कता मटर इधर-उधर चलने-फिरने और देखने-भालने लगा। आखिर उसे एक बड़ा-सा महल दिखाई दिया। वह महल के अन्दर गया। उसमें हर चीज़ लौ दे रही थी, चमक-दमक रही थी। वह सोने और क़ीमती पत्थरों का बना हुआ था। सुढ़कता मटर एक के बाद एक कमरे को लांघता गया। अचानक उसने एक ऐसी सुन्दर राजकुमारी को अपनी ओर भागते हुए आते देखा कि जिसकी खूबसूरती के बारे में न तो क़लम से लिखा जाये और न ज़बान से कहा जाये।

"ओह, भले मानस, तुम यहां क्यों आये हो?" राजकुमारी ने पूछा।

"मैं लंबी दाढ़ीवाले एक बहुत ही छोटे-से बूढ़े को ढूंढ़ रहा हूं," सुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

"ओह," राजकुमारी ने कहा, "छोटा-सा बूढ़ा बलूत में से अपनी दाढ़ी निकालने की कोशिश कर रहा है। उसके पास मत जाओ। वह तुम्हें मार डालेगा। बहुत लोगों की जान ले चुका है वह!"

"मेरी जान नहीं ले सकेगा वह," सुढ़कते मटर ने कहा। "मैंने ही उसकी दाढ़ी बलूत में फंसाई थी। मगर तुम कौन हो और यहां कैसे हो?"

"मैं राजकुमारी हूं। छोटा-सा बूढ़ा मुझे मेरे घर से उठा लाया है और यहां बन्दी बनाये हुए है।"

"कोई बात नहीं, मैं तुम्हें आज़ाद करा दूंगा। मुझे उस बूढ़े के पास ले चलो।"

राजकुमारी उसे छोटे-से बूढ़े के पास ले गई। सुढ़कते मटर ने देखा कि राजकुमारी ने सच ही कहा था। बूढ़ा वहां बैठा था और उसने अपनी दाढ़ी बलूत में से निकाल ली थी। सुढ़कते मटर को देखकर वह गुस्से से चिल्लाया –

"किसलिये तुम यहां आये हो? लड़ने या दोस्ती करने?"

"मैं तुम से दोस्ती नहीं करना चाहता," लुढ़कते मटर ने कहा। "लड़ने आया हूं।"

सो उनकी तलवारें टकराईं। वे खूब ज़ोर-शोर से और देर तक एक दूसरे पर वार करते रहे। आखिर लुढ़कते मटर का एक भरपूर वार पड़ा और उसकी तलवार बूढ़े के तन के आरपार हो गई। वह वहीं ढेर हो गया।

तब लुढ़कते मटर और राजकुमारी ने सारा सोना और हीरे-मोती समेटे और उस खोह के मुंह की ओर चल दिये जहां से लुढ़कता मटर नीचे उतरा था।

वे खोह के मुंह के पास पहुंचे तो लुढ़कते मटर ने अपने दोस्तों को पुकार कर पूछा –

"मेरे भाइयो, तुम अपनी जगह पर हो?"

"हां, अपनी जगह पर ही हैं!" दोस्तों ने जवाब दिया।

तब लुढ़कते मटर ने एक बोरी रस्से के साथ बांधी और अपने दोस्तों से कहा कि वे उसे ऊपर खींच लें।

"यह तुम्हारे लिये है!" उसने पुकार कर कहा।

दोस्तों ने बोरी ऊपर खींच ली और फिर से रस्सा नीचे लटका दिया। लुढ़कते मटर ने दूसरी बोरी बांध दी।

"यह भी तुम्हारे लिये है!" उसने फिर पुकार कर कहा।

इसी तरह उसने तीसरी बोरी भी उन्हें दे दी। उस छोटे-से बूढ़े का जो भी माल-मता उसके हाथ लगा था, वह सब कुछ उसने उन्हें दे दिया।

इसके बाद उसने राजकुमारी को रस्से के साथ बांधा।

"यह मेरी है!" उसने चिल्लाकर कहा।

तीनों दोस्तों ने राजकुमारी को ऊपर खींच लिया। केवल लुढ़कता मटर ही नीचे रह गया। वे अब सलाह करने लगे।

"उसे ऊपर खींचने की हमें क्या ज़रूरत पड़ी है? अगर हम उसे वहीं रहने दें तो राजकुमारी भी हमारे ही हाथ लग जायेगी। आओ, उसे थोड़ा-सा ऊपर खींचकर फिर छोड़ दें। वह गिरकर दूसरी दुनिया में पहुंच जायेगा।"

मगर लुढ़कते मटर ने उनके इरादे को भांप लिया। रस्से के साथ एक बड़ा-सा पत्थर बांधकर वह चिल्लाया –

"अब मुझे ऊपर खींच लो!"

दोस्तों ने रस्से को थोड़ा-सा ऊपर खींचा और फिर छोड़ दिया। पत्थर धड़ाम से नीचे आ गिरा।

"तो ऐसे हैं मेरे दोस्त!" लुढ़कते मटर ने अपने मन में कहा। और वह खोह के नीचे की दुनिया का चक्कर लगाने चल दिया। वह चलता गया, चलता गया। अचानक आकाश में भारी घटा घिर आई, मूसलधार बारिश होने लगी और ओले गिरने लगे। लुढ़कते मटर ने एक बलूत के नीचे पनाह ली। अचानक उसे वृक्ष के ऊपर बने हुए घोंसले से उक़ाब के बच्चों की चीं-चीं सुनाई दी। लुढ़कता मटर वृक्ष के ऊपर चढ़ गया और उसने उक़ाब के बच्चों को अपनी गर्म जाकेट से ढक दिया। थोड़ी देर बाद बारिश बन्द हो गई तो इन बच्चों का बाप, एक बड़ा-सा उक़ाब घोंसले में आया। उसने देखा कि बच्चे गर्म जाकेट से ढके हुए हैं। उसने उनसे पूछा –

"किसने तुम्हें ढका है, मेरे बच्चो?"

और बच्चों ने जवाब दिया –

"अगर आप उसे न खाने का वचन दें, तो हम बतायें।"

"तुम चिन्ता नहीं करो। नहीं खाऊंगा।"

"वृक्ष के नीचे बैठे हुए उस आदमी को देख रहे हैं न? उसी ने हमें ढका था।"

इतना सुनकर उक़ाब लुढ़कते मटर के पास गया।

"जो चाहो मांग लो। मैं तुम्हारी हर मनोकामना पूरी करूंगा," उसने कहा। "पहली बार ऐसा हुआ है कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे बच्चे बारिश में बहे नहीं हैं।"

"मुझे मेरी दुनिया में पहुंचा दो," लुढ़कते मटर ने कहा।

"खासा मुश्किल काम करने को कहा है तुमने मुझे," उक़ाब ने जवाब दिया। "मगर हो ही क्या सकता है! तुमने जो कहा है, मैं उसे पूरा करने की कोशिश करूंगा। हम अपने साथ छः पीपे मांस के और छः पीपे पानी के ले लेते हैं। जब भी मैं अपना सिर दायीं ओर करूं, तुम मेरे मुंह में मांस का एक टुकड़ा डाल देना और जब मैं अपना सिर बायीं ओर घुमाऊं तो मुझे पानी पिला देना। जैसा मैंने कहा है अगर तुम वैसा ही नहीं करोगे तो मैं कभी वहां तक नहीं पहुंच पाऊंगा, रास्ते में ही जमीन पर गिर जाऊंगा।"

उन्होंने मांस से भरे छः पीपे लिये और छः पीपे पानी से भरे हुए। लुढ़कता मटर उक़ाब की पीठ पर सवार हो गया और वे उड़ चले! वे उड़ते रहे, उड़ते रहे। उक़ाब ने जब-जब अपना सिर दायीं ओर घुमाया, लुढ़कते मटर ने तब-तब उसके मुंह में मांस का टुकड़ा डाल दिया और जब उसने बायीं ओर को सिर घुमाया तो उसे पानी पिला दिया।

बहुत वक़्त गुज़र गया, मगर वे अभी भी उड़ते जा रहे थे। इन्सानों की दुनिया में पहुंचने के लिए अब थोड़ा ही फ़ासला बाक़ी रह गया था। उक़ाब ने मांस के लिये दायीं ओर सिर घुमाया, मगर अब मांस का एक भी टुकड़ा बाक़ी नहीं बचा था। इसलिए लुढ़कते मटर ने अपनी टांग का एक टुकड़ा काटा और उक़ाब के मुंह में डाल दिया। इस तरह वे धरती पर पहुंच गये। तब उक़ाब ने पूछा –

"तुमने मुझे अभी क्या खाने को दिया था? यह तो बहुत मज़ेदार था।"

"अपने मांस का टुकड़ा," अपनी टांग की ओर इशारा करते हुए लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

तब उक़ाब ने मांस का वह टुकड़ा चूक दिया। वह दूर तक उड़कर जादुई पानी लाया। जैसे ही उन्होंने मांस के काटे हुए टुकड़े को उस जगह पर टिकाकर थोड़ा-सा जादुई पानी छिड़का वैसे ही टांग फिर से भली-चंगी हो गई।

इसके बाद उक़ाब वापस अपने घर चला गया और लुढ़कता मटर अपने तीनों दोस्तों की खोज में चल पड़ा।

तीनों दोस्त राजकुमारी के पिता के महल में जा पहुंचे थे और वहां रहते हुए आपस में लड़ा-झगड़ा करते थे। उनमें से प्रत्येक राजकुमारी से शादी करना चाहता था, दूसरे को सौंपने को तैयार नहीं था।

लुढ़कते मटर ने उन्हें महल में ही पाया। उसे देखते ही उन सब का तो दम निकल गया। उन्होंने सोचा कि वह उनकी जान ले लेगा। मगर लुढ़कते मटर ने कहा –

"जब मेरे सगे भाइयों ने ही मुझे धोखा दिया था तो मुझे तुम से तो उम्मीद ही क्या हो सकती थी! तुम्हें माफ़ करने के सिवा कोई चारा नहीं है।"

उसने उन्हें माफ़ कर दिया और खुद राजकुमारी से शादी कर ली। वह अब तक उसके साथ प्यार-मुहब्बत और हंसी-खुशी की ज़िन्दगी बसर कर रहा है।

ईमानदारी और बेईमानी

उक्रइनी लोक-कथा

किसी समय का ज़िक्र है कि कहीं दो भाई रहते थे। उनमें से एक अमीर था और दूसरा ग़रीब। एक बार वे इकट्ठे हुए और आपस में बातचीत करने लगे। ग़रीब भाई ने कहा –

"बेशक ज़िन्दगी बहुत कड़वी है फिर भी बेईमानी की तुलना में ईमानदारी की ज़िन्दगी बसर करना कहीं बेहतर है।"

"वाह, क्या बात कही है!" अमीर भाई चिल्लाया। "अब दुनिया में ईमानदारी नाम की कोई चीज़ बाक़ी ही नहीं रही, सिर्फ़ बेईमानी ही बेईमानी है। ईमानदारी से तुम्हारा कुछ भला नहीं होगा।"

मगर ग़रीब भाई अपनी बात पर डटा रहा।

"नहीं भाई," उसने कहा, "मैं तो यही समझता हूं कि ईमानदार होना ही बेहतर है।"

"अगर ऐसी ही बात है तो आओ, शर्त हो जाये," अमीर भाई ने कहा। "हमें जो तीन आदमी सबसे पहले मिलेंगे, हम उन्हीं से यह पूछेंगे कि उनकी इस बारे में क्या राय है। अगर वे कहेंगे कि तुम ठीक कहते हो तो मेरे पास जो कुछ है, वह सब तुम्हारा

हो जायेगा। अगर वे यह कहेंगे कि मैं ठीक कहता हूं तो जो कुछ तुम्हारे पास है, वह सब मैं ले लूंगा।"

"मुझे मंजूर है!" ग़रीब भाई राज़ी हो गया।

वे सड़क पर चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और आख़िर एक आदमी से उनकी मुलाक़ात हुई जो उस जगह से लौट रहा था जहां उसने फ़सल के मौसम में लगातार कड़ी मेहनत की थी।

"नमस्ते, भले मानस!" उसके पास आकर उन दोनों भाइयों ने कहा।

"नमस्ते!"

"हम तुम से कुछ पूछना चाहते हैं।"

"पूछो!"

"दुनिया में ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताना बेहतर है या बेईमानी की?"

"भले लोगो, आज की दुनिया में ईमानदारी है ही कहां!" उस आदमी ने जवाब दिया। "अब मुझे ही ले लो। मैंने हर दिन बहुत बहुत देर तक और कड़ी मेहनत से काम किया, मगर कमाया लगभग कुछ भी नहीं। मेरी ज़रा-सी कमाई का कुछ हिस्सा भी मालिक ने हड़प लिया। यह है ईमानदारी का नतीजा! ईमानदारी से बेईमानी कहीं अच्छी है!"

"देखा तुमने? क्या कहा था मैंने तुम से, भाई?" अमीर भाई ने कहा। "मेरी बात सही है और तुम्हारी ग़लत।"

ग़रीब भाई को बड़ा दुःख हुआ, मगर करता तो क्या! वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और आख़िर उन्हें एक व्यापारी मिला।

"नमस्ते, हुज़ूर!" दोनों भाइयों ने कहा।

"नमस्ते!"

"हम आप से कुछ पूछना चाहते हैं।"

"पूछो!"

"दुनिया में ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताना बेहतर है या बेईमानी की?"

"अरे, वाह रे भोले लोगो! ईमानदारी की ज़िन्दगी में क्या रखा है! अगर कोई माल बेचना हो तो सौ बार झूठ बोलने की ज़रूरत पड़ती है, छल-कपट करना पड़ता है। ऐसा न करने का मतलब होगा कुछ भी न बेच पाना।"

इतना कहकर वह अपने रास्ते चल दिया।

"देखा तुमने, दूसरी बार भी मेरी ही बात सही निकली है।"

ग़रीब आदमी का दिल और भी बैठ गया। मगर वह करता भी तो क्या! चुनांचे वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और आख़िर एक ज़मींदार से उनकी मुलाक़ात हुई।

"नमस्ते, श्रीमान जी!" दोनों भाइयों ने कहा।

"नमस्ते!"

"हम आप से कुछ पूछना चाहते हैं।"

"पूछो!"

"दुनिया में ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताना बेहतर है या बेईमानी की?"

"अरे, वाह रे भले मानसो! आज की दुनिया में ईमानदारी है ही कहां! अगर मैं ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताता तो मेरे ये ठाठ-बाठ..." अपनी बात पूरी किये बिना ही ज़मींदार ने अपना घोड़ा आगे बढ़ा दिया।

"हां, तो मेरे भाई! चलो, अब घर चलें। जो कुछ तुम्हारे पास है, वह अब तुम मेरे हवाले कर दो!"

ग़रीब आदमी अपने घर की ओर चला आ रहा था, मन ही मन बहुत दुखी होता हुआ। उसकी जो थोड़ी-सी जमा-पूंजी थी, वह अमीर भाई ने ले ली और केवल झोंपड़ी ही उसके पास रहने दी।

"तुम फ़िलहाल यहां रह सकते हो," उसने कहा। "अभी मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। मगर जल्द ही तुम्हें अपने रहने के लिए कोई दूसरी जगह तलाश करनी होगी।"

ग़रीब आदमी परिवार के साथ झोंपड़ी में बैठा हुआ था। उनके पास खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा तक नहीं था। वह कहीं जाकर कुछ कमा भी नहीं सकता था, क्योंकि उस साल फ़सल ही नहीं हुई थी। ग़रीब आदमी ने अपने को वश में किया, मगर बच्चे भूख से रोने-चिल्लाने लगे। तब ग़रीब आदमी ने एक बोरी ली और आटा मांगने के लिए अपने भाई के पास गया।

"भाई, मुझे कुछ आटा या अनाज दे दो," उसने कहा। "घर में खाने के लिए कुछ नहीं है और बच्चों का भूख के मारे बुरा हाल है।"

अमीर भाई ने कहा—

"मैं तुम्हें आटा दे सकता हूं, पर इसके लिए तुम्हें अपनी एक आंख निकलवानी होगी।"

ग़रीब आदमी ने कुछ देर सोच-विचार किया, मगर इसके सिवा चारा ही क्या था।

"मुझे मंजूर है," उसने कहा। "निकाल लो मेरी आंख, भगवान तुम्हारा भला करे। मगर ईसा मसीह के नाम पर मुझे कुछ आटा अवश्य दे दो।"

चुनांचे अमीर ने ग़रीब भाई की एक आंख निकाल ली और उसे सड़ा हुआ कुछ आटा दे दिया। ग़रीब आदमी आटा लेकर घर लौटा। उसकी बीवी की जैसे ही अपने पति पर नज़र पड़ी वैसे ही वह कलेजा थामकर रह गई।

"यह तुम्हें क्या हुआ है? तुम्हारी एक आंख कहां गई?"

"भाई ने निकाल ली," उसने जवाब दिया।

ग़रीब आदमी ने अपनी पत्नी को सारा क़िस्सा कह सुनाया। वे रोये-धोये, चीखे-चिल्लाये, मगर फिर उसी आटे से पेट की आग बुझाने लगे।

एक सप्ताह या शायद इससे कुछ अधिक समय बीता और वह आटा खत्म हो गया। ग़रीब आदमी ने फिर से बोरी उठाई और अपने भाई के पास पहुंचा।

"मेरे भाई, प्यारे भाई, मुझे कुछ आटा और दे दो," वह बोला। "जो आटा तुमने कुछ दिन पहले दिया था वह तो खत्म हो गया।"

"अगर दूसरी आंख निकाल लेने दोगे तो आटा दे दूंगा," अमीर भाई ने जवाब दिया।

"दोनों आंखें गंवाकर मैं इस दुनिया में कैसे रहूंगा, मेरे भाई! मेरी एक आंख तो तुम निकाल ही चुके हो! रहम करो, अंधा किये बिना ही मुझे कुछ आटा दे दो।"

"नहीं, मैं मुफ़्त आटा नहीं दूंगा," उसने जवाब दिया। "एक आंख और निकाल लेने दो, तभी दूंगा।"

ग़रीब आदमी करता भी तो क्या!

"निकाल लो, भगवान तुम्हारा भला करे," उसने कहा।

चुनांचे अमीर भाई ने चाकू लिया, अपने ग़रीब भाई की दूसरी आंख भी निकाल ली और उसकी बोरी आटे से भर दी। ग़रीब आदमी बोरी उठाकर घर की ओर चल दिया।

वह जगह जगह ठोकर खाता, रास्ता टटोलता और एक के बाद एक बाड़ से टकराता बड़ी मुश्किल से आटा लिये हुए घर पहुंचा। उसकी बीवी ने उसे देखा तो सिर पीटकर रह गई।

"अरे बदक़िस्मत आदमी, आंखों के बिना तुम इस दुनिया में कैसे रहोगे!" वह चिल्लाई। "शायद हमें किसी और जगह से कुछ आटा मिल जाता, मगर अब..."

बेचारी औरत ऐसे ज़ार-ज़ार रोई कि उसके मुंह से एक शब्द भी न फूट सका।

अंधा बोला –

"रोओ मत, बीवी! दुनिया में मैं अकेला ही अंधा नहीं हूं। मुझ जैसे और भी बहुतेरे हैं। वे भी आंखों के बिना काम चला लेते हैं।"

मगर एक बोरी आटा तो परिवार के लिए बहुत नहीं होता। वह जल्द ही खत्म हो गया।

"बीवी, मैं अपने भाई के पास अब नहीं जाऊंगा," अंधे ने कहा। "मुझे गांव के बाहर सड़क के किनारे वाले चिनार के नीचे दिन भर के लिए पहुंचा दो। शाम को आकर तुम मुझे घर लिवा लाना। उस रास्ते से बहुत-से बटोही और घुड़सवार गुजरते हैं। कोई न कोई मुझे जरूर रोटी का एकाध टुकड़ा दे देगा।"

अंधे की बीवी उसे वहां ले गई जहां उसने कहा था। वह उसे चिनार के नीचे बिठाकर घर वापस आ गई।

अंधा वहां बैठा रहा। किसी राहगीर ने उसे एक पैसा दिया, तो किसी ने दो। शाम होने को थी, मगर उसकी बीवी को आने में देर हो गयी। अंधा थक गया था, इसलिए वह अकेला ही घर की ओर चल दिया। वह गलत दिशा में मुड़ गया और घर पहुंचने के बजाय तथा यह जाने बिना ही कि किधर जा रहा है, आगे ही आगे चलता गया। अचानक उसे अपने सभी ओर वृक्षों की सर-सर, मर-मर सुनाई दी। अंधे को यह समझने में देर न लगी कि वह किसी जंगल में पहुंच गया है और उसे यहीं रात बितानी होगी। मगर इस डर से कि कहीं जंगली जानवर उसे न खा जायें, वह जैसे-तैसे एक वृक्ष पर चढ़ गया और वहां निश्चल-सा बैठ रहा।

आधी रात हुई तो अचानक इसी जगह और इसी वृक्ष के नीचे भूत-प्रेत उड़ते हुए आये। उनके सरदार ने पूछना शुरू किया कि वे क्या कुछ करते रहे हैं।

"मैंने दो बोरी आटे के लिए एक भाई को अंधा करवा दिया है," एक भूत ने कहा।

"तुमने अच्छा किया, मगर बहुत अच्छा नहीं," भूत-प्रेतों के सरदार ने कहा।

"वह कैसे?"

"वह ऐसे कि अंधा ज्यों ही इस वृक्ष के नीचे पड़ी हुई ओस आंखों पर मलेगा, वैसे ही उसकी आंखों की रोशनी लौट आयेगी।"

"मगर यह तो न किसी ने सुना है और न कोई जानता ही है। इसलिये वह अंधा ही रहेगा।"

भूत-प्रेतों के सरदार ने अब दूसरे प्रेत से पूछा कि उसने क्या कारगुजारी की है।

"मैंने एक गांव का सारा पानी सुखा दिया है। वहां पानी की एक बूंद तक बाक़ी नहीं रही। इसलिये अब वहां के लोगों को चालीस कोस की दूरी से पानी लाना पड़ता है और बहुत से लोग रास्ते में ही ढेर हो जाते हैं," दूसरे प्रेत ने जवाब दिया।

"तुमने अच्छा किया, मगर बहुत अच्छा नहीं।"

"सो कैसे?"

"वह ऐसे कि अगर गांव के सबसे पासवाले नगर में पड़ी बड़ी चट्टान को हटा दिया जाये तो उसके नीचे से सभी की ज़रूरतें पूरी करने के लिए काफ़ी पानी मिलने लगेगा।"

"मगर यह तो न किसी ने सुना है और न कोई जानता ही है। इसलिये पानी चट्टान के नीचे ही रहेगा।"

"और तुमने क्या किया है?" सरदार ने तीसरे भूत से पूछा।

"मैंने एक राज्य के राजा की इकलौती बेटी को अंधा कर दिया है। हकीम-वैद्यों के किये कुछ न होगा।"

"तुमने अच्छा किया, मगर बहुत अच्छा नहीं।"

"सो कैसे?"

"वह ऐसे कि अगर इस वृक्ष के नीचे पड़ी हुई ओस उसकी आंखों पर मल दी जाये तो उनकी रोशनी लौट आयेगी।"

"मगर यह तो न किसी ने सुना है और न कोई जानता ही है। इसलिये वह अंधी ही रहेगी।"

वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ अंधा सारी बातें सुन रहा था। जैसे ही भूत-प्रेत उड़े वैसे ही वह वृक्ष से नीचे उतरा। उसने अपनी आंखों पर ओस मली। फ़ौरन ही उसे नज़र आने लगा। तब उसने सोचा – "अच्छा अब चलकर लोगों की मदद करता हूं।" उसने उस प्याले में ओस इकट्ठी की जो उसके पास था और वहां से चल दिया।

वह उस गांव के निकट पहुंचा जहां पानी नहीं था। उसने देखा कि एक बुढ़िया बहंगी पर दो बाल्टियां लटकाये चली जा रही है। उसने बुढ़िया को नमस्कार किया और कहा –

"दादी, मुझे ज़रा सा पानी पिला दो!"

"अरे, बेटे! यह पानी मैं लगभग चालीस कोस से ला रही हूं। आधा तो रास्ते में ही गिर गया। फिर मेरा तो परिवार भी बहुत बड़ा है। पानी के बिना उसका बुरा हाल हो जायेगा।"

"तुम्हारे गांव में मेरे पहुंचते ही सब के लिए काफ़ी पानी हो जायेगा।"

बुढ़िया ने उसे पानी पिलाया। अब उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह अल्वी-अल्वी गांव पहुंची और उसने लोगों से इस आदमी की चर्चा की। किसी को विश्वास हुआ और किसी को नहीं, मगर सभी उसके स्वागत को आये। उन्होंने सिर झुकाकर उसे नमस्कार किया और कहा –

"दयालु और भले आदमी, हमें जालिम मौत के पंजे से छुटकारा दिलाओ!"

"अच्छी बात है," उसने जवाब दिया। "पर तुम लोग मेरी मदद करो। मुझे अपने पासवाले नगर में ले चलो।"

वे उसे वहां ले आये। अब वह उस चट्टान को खोजने लगा। वह खोजता रहा, खोजता रहा और आखिर वह चट्टान मिल गई। सब ने मिलकर उसे हटाया। चट्टान के हटते ही उसके नीचे से पानी की धारा फूट निकली। इतना पानी निकला, इतना पानी निकला कि सभी ताल-तलैयां, सभी नद-नाले किनारों तक भर गये। लोग बहुत खुश हुए, उन्होंने इस व्यक्ति को बहुत बहुत धन्यवाद दिया, बहुत-सा रुपया और ढेरों उपहार भेंट किये।

अब यह व्यक्ति घोड़े पर सवार होकर चल दिया। वह घोड़े को बढ़ाता और राहगीरों से उस राज्य का रास्ता पूछता चला गया जिसके राजा की बेटी अंधी हो गई थी। उसे बहुत वक़्त लगा या घोड़ा यह तो राम जाने, पर आखिर वह वहां पहुंच गया।

राजा के महल के बरखाने पर जाकर उसने नौकरों से कहा –

"मैंने सुना है कि आपके राजा की बेटी सख्त बीमार है। शायद मैं उसका इलाज कर सकता हूं।"

"अरे, तुम क्या इलाज करोगे उसका! यहां बड़े-बड़े हकीम-वैद्यों के किये भी कुछ न हुआ। तुम भला क्या करोगे।"

"फिर भी आप लोग राजा को खबर तो कर दें!"

वे राजा को खबर देना नहीं चाहते थे, मगर यह व्यक्ति जिद करता गया, जिद करता गया। आखिर कोई चारा न देख कर वे मान गये। राजा ने उसे फ़ौरन महल में बुलवाया –

"तुम मेरी बेटी का इलाज कर सकते हो?" राजा ने पूछा।

"हां, कर सकता हूं।" उसने जवाब दिया।

"अगर तुम उसे भला-चंगा कर दोगे तो मैं तुम्हें मुंह मांगा इनाम दूंगा।"

इस भले मानस को राजकुमारी के कमरे में पहुंचाया गया। उसने वह ओस राजकुमारी की आंखों पर मली जो अपने साथ लाया था। राजकुमारी को फिर से

नज़र आने लगा। तब राजा को कितनी खुशी हुई यह बयान से बाहर है। उसने इस व्यक्ति को इतनी दौलत दी कि उसे घर ले जाने के लिए घोड़ा-गाड़ियों की ज़रूरत पड़ी।

इसी बीच उसकी पत्नी दुख-सागर में गोते खाती रही, रोती-तड़पती रही। उसे पति का कुछ अता-पता नहीं था। वह सोचती कि उसका पति अब इस दुनिया में नहीं रहा। अचानक वह घर आ पहुंचा और खिड़की को खटखटाते हुए चिल्लाया –

"बीवी, दरवाज़ा खोलो!"

उसने पति की आवाज़ पहचान ली और बहुत खुश हुई। उसने भागकर दरवाज़ा खोला और उसे झोंपड़ी के अन्दर ले गई। वह तो यही समझती थी कि उसका पति अंधा है।

"ज़रा रोशनी करो!" वह बोला।

उसने रोशनी की। वह पति की ओर देखते ही खुशी से ताली बजाकर चिल्लाई –

"तुम्हारी नज़र लौट आई! भगवान तुम्हारा भला हो! यह सब कैसे हुआ? बताओ तो!"

"ज़रा ठहरो बीवी, पहले धन-दौलत अन्दर ले आयें।"

वे ढेरों ढेर दौलत अन्दर ले आये। अमीर भाई की दौलत अब इसके मुक़ाबले में थी ही क्या!

चुनांचे वे बहुत अमीर होकर खूब मजे की ज़िन्दगी बिताने लगे। अमीर भाई को भी इसकी खबर मिली तो भागा हुआ आया –

"भाई, यह सब कैसे हुआ कि तुम्हारी नज़र लौट आई और तुम ऐसे धनी भी हो गये?"

इस भाई ने कुछ भी नहीं छिपाया और सारा क़िस्सा कह सुनाया।

अमीर भाई ने अब और भी अधिक अमीर होना चाहा। जैसे ही रात हुई वैसे ही वह भागता हुआ चुपके-चुपके उस जंगल में जा पहुंचा और उसी वृक्ष पर चढ़कर बैठ रहा। अचानक आधी रात को सभी भूत-प्रेत और उनका सरदार उड़ते हुए इसी वृक्ष के नीचे इकट्ठे हुए। भूत-प्रेत बोले –

"यह क्या क़िस्सा है! न तो कभी किसी ने इनके बारे में सुना था और न ही कोई जानता था और फिर भी अंधा भाई आंखोंवाला हो गया है, चट्टान के नीचे से पानी बह निकला है और राजकुमारी भली-चंगी हो गई है। कहीं किसी ने चोरी-चोरी हमारी बातें तो नहीं सुनी हैं? आओ, उसे ढूंढें!"

वे तलाश करने लगे। उसी वृक्ष पर चढ़े तो वहां अमीर भाई को बैठे पाया। उन्होंने उसे पकड़ कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

भेड़िया, कुत्ता और बिल्ला

उक्रइनी लोक-कथा

किसी समय कहीं एक किसान रहता था। उसके पास एक कुत्ता था। जब तक वह जवान था अपने मालिक के घर की रखवाली करता रहा। लेकिन जब बूढ़ा हो गया तो मालिक ने उसे भगा दिया। कुत्ता मैदानों में घूमता, चूहे और अन्य जो भी छोटे-मोटे जानवर हत्थे चढ़ जाते, उन्हें पकड़ता और खा लेता।

एक रात को उसने एक भेड़िये को अपनी ओर आते देखा।

"कहो भाई कुत्ते, क्या हालचाल है?"

कुत्ते ने शिष्टतापूर्वक जवाब दिया कि खुदा का शुक्र है। तब भेड़िये ने पूछा—

"किधर जा रहे हो?"

"जब मैं जवान था," कुत्ते ने बताया, "मेरा मालिक मुझको बहुत चाहता था। मैं उसके घर की रखवाली जो करता था। मगर जब मैं बूढ़ा हो गया तो उसने मुझे घर से निकाल दिया।"

"ख़ैर कोई बात नहीं, कुत्ते! तुम्हें भूख लगी होगी?"

"हां, भूख तो लगी है," कुत्ते ने जवाब दिया।

"तो चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें भर पेट खिलाऊंगा।"

चुनांचे कुत्ता भेड़िये के साथ चल दिया। वे एक मैदान में से जा रहे थे। भेड़िये ने चरागाह में भेड़ों का एक रेवड़ देखा तो कुत्ते से बोला—

"जरा जाकर देखो कि चरागाह में कौन-से जानवर चर रहे हैं।"

कुत्ते ने जाकर देखा और झटपट आकर बोला –

"भेड़ें हैं।"

"भाड़ में जायें कम्बख्त भेड़ें! उन्हें खाने से दांतों में ऊन ही ऊन चिपक जायेगा और पेट रहेंगे खाली के खाली! चलो, आगे चलें कुत्ते!"

सो वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और तब भेड़िये को मैदान में कलहंसों का एक झुण्ड दिखाई दिया।

भेड़िये ने कुत्ते से कहा –

"जरा जाकर देखो तो कि चरागाह में वे कौन-से जानवर हैं।"

कुत्ते ने जाकर देखा और झटपट आकर बोला –

"कलहंस हैं।"

"भाड़ में जायें कम्बख्त कलहंस! अगर हम उन्हें खायेंगे तो हमारे दांतों में पंख ही पंख चिपक जायेंगे और पेट रहेंगे खाली के खाली!"

चुनांचे वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और तब भेड़िये को चरागाह में एक घोड़ा नजर आया। उसने कुत्ते से कहा –

"जरा जाकर देखो कि चरागाह में वह कौन-सा जानवर चर रहा है।"

कुत्ता गया और झटपट आकर बोला –

"घोड़ा है।"

"इसे हम खायेंगे!" भेड़िये ने कहा।

सो वे घोड़े की ओर दौड़े। भेड़िये ने जमीन पर अपने पंजे रगड़े और दांत टिकटिकाये ताकि वह पूरी तरह आम बबूला हो जाये।

तब उसने कुत्ते से कहा –

"कुत्ते, यह बताओ कि क्या मेरी दुम जोर से हिल रही है?"

कुत्ते ने देखा और कहा कि वास्तव में ही जोर से हिल रही है।

"और अब यह बताओ कि मेरी आंखें अंगारा हो गईं या नहीं?"

"हो गई हैं," कुत्ते ने जवाब दिया।

तब भेड़िया झपटा और उसने घोड़े को अचानक से पकड़कर जमीन पर नीचे गिरा दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। भेड़िये और कुत्ते ने घोड़े के मांस को मजे ले-लेकर खाना शुरू किया। भेड़िया जवान था और उसने जल्द ही अपना पेट भर लिया। मगर कुत्ता तो बूढ़ा था, इसलिए दांतों से काटता रहा, काटता रहा और फिर भी बहुत

ही कम खा पाया। तभी दूसरे कुत्ते दौड़ते हुए यहां आ पहुंचे और उन्होंने इस बूढ़े कुत्ते को दूर भगा दिया।

कुत्ता फिर से आगे चल दिया। तब उसने अपने ही जैसा एक बूढ़ा बिल्ला अपनी तरफ़ आते देखा। बिल्ला चूहों की तलाश में मैदान में घूम रहा था।

"कहो भाई बिल्ले, क्या हाल-चाल है?" कुत्ते ने कहा। "किधर जा रहे हो?"

"जिधर भी रास्ता ले जाये। अब मैं जवान था तो चूहे पकड़कर अपने मालिक की सेवा करता था। अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूं, मेरी फुर्ती जाती रही और नज़र कमज़ोर हो गई तो मालिक ने मुझे खिलाना-पिलाना बन्द कर दिया और घर से निकाल बाहर किया। अब मैं दुनिया की खाक छानता फिर रहा हूं।"

"तो मेरे साथ चलो, भाई बिल्ले," कुत्ते ने कहा। "मैं तुम्हें भर पेट खाने को दूंगा।"

कुत्ते ने वही कुछ करने की ठान ली थी जो भेड़िये ने किया था।

चुगांचे कुत्ता और बिल्ला एक साथ चल दिये।

वे चलते गये, चलते गये और तब कुत्ते को चरागाह में भेड़ों का रेवड़ नज़र आया। उसने बिल्ले से कहा –

"भाई, ज़रा आकर देखो कि चरागाह में वे कौन-से जानवर हैं।"

बिल्ला गया, उसने देखा और झटपट आकर बताया –

"भेड़ें हैं।"

"भाड़ में जायें कम्बख्त भेड़ें! हम अगर उन्हें खायेंगे तो दांतों में ऊन ही ऊन चिपक जायेगा और पेट रहेंगे खाली के खाली। आओ, आगे चलें!"

सो वे आगे चल दिये। चलते गये, चलते गये और तब कुत्ते को मैदान में कलहंसों का एक झुण्ड दिखाई दिया।

उसने बिल्ले से कहा –

"भाई, ज़रा भागकर जाओ और देखकर आओ कि मैदान में वे कौन-से जानवर हैं!"

बिल्ला गया और उसने झटपट आकर बताया –

"कलहंस हैं।"

"भाड़ में जायें कम्बख्त कलहंस। उन्हें खाने से हमारे दांतों में पंख ही पंख चिपक जायेंगे और पेट रहेंगे खाली के खाली।

सो वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और तब कुत्ते को चरागाह में एक घोड़ा दिखाई दिया। उसने बिल्ले से कहा –

"भाई बिल्ले, जरा भागकर जाओ और देखकर आओ कि चरागाह में वह कौन-सा जानवर चर रहा है।"

बिल्ला गया और उसने झटपट आकर बताया –

"घोड़ा है।"

"तो हम इसे मारेंगे, पेट भर कर खायेंगे और कुछ बचा भी पायेंगे।"

चुनांचे कुत्ते ने जमीन पर अपने पंजे रगड़ने और दांत तेज करने शुरू किये ताकि वह आग-बबूला हो जाये।

तब उसने बिल्ले से कहा –

"भाई बिल्ले, जरा देखो तो कि मेरी पूंछ जोर से हिल रही है?"

"नहीं," बिल्ले ने जवाब दिया। "जोर से नहीं हिल रही।"

वह फिर से जमीन पर अपने पंजे रगड़ने लगा ताकि सचमुच ही बहुत गुस्से में आ जाये।

उसने फिर बिल्ले से कहा –

"भाई बिल्ले, अब मेरी दुम जोर से हिल रही है न? कहना कि जोर से हिल रही है!"

बिल्ले ने देखा और कहा –

"हां, बहुत ही जरा सी।"

"अब देखते जाना, हम जल्द ही घोड़े को घर बनायेंगे।" कुत्ते ने कहा।

और वह फिर से जमीन पर पंजे रगड़ने लगा।

"भाई बिल्ले, जरा देखो तो मेरी आंखें लाल लाल हो गई?" उसने कुछ देर बाद कहा।

"नहीं तो," बिल्ले ने जवाब दिया।

"यह झूठ है! तुम्हें यही कहना चाहिए कि अंगारा हो गई हैं।"

"खैर, अगर तुम ऐसा ही चाहते हो तो मैं कह सकता हूं कि हो गई हैं," बिल्ले ने कहा।

तब कुत्ता लाल-पीला होता हुआ घोड़े पर झपटा। मगर घोड़े ने दुलत्ती चलाई और उसकी लात कुत्ते के सिर पर आकर लगी। कुत्ता जमीन पर गिर गया और उसकी आंखें बाहर निकल आईं। बिल्ला भागकर उसके पास गया और बोला –

"आह, भाई कुत्ते, अब तुम्हारी आंखें सचमुच अंगारों जैसी हो गई हैं!"

चतुर किसान और घमंडी जागीरदार

उक्रइनी लोक-कथा

कभी किसी ज़माने में कहीं एक जागीरदार रहता था, बड़ा ही अमीर और बड़ा ही घमंडी। कुछ इने-गिने लोगों से ही वह कोई वास्ता रखता था। जहां तक किसानों का सवाल था, उन्हें तो बिल्कुल ही खातिर में न लाता – उनसे उसे मिट्टी की बू जो आती थी। उसने अपने नौकरों को हुक्म दे रखा था कि अगर वे लोग नज़दीक आने की हिमाक़त करें, तो उन्हें दूर भगा दिया जाये।

एक दिन किसान इकट्ठे होकर जागीरदार के बारे में चर्चा करने लगे।

"मैंने जागीरदार साहब को बहुत नज़दीक से देखा है, खेत में मेरी उनसे मुलाक़ात हुई थी," एक ने कहा।

"मैंने कल बाड़ के ऊपर से झांका तो जागीरदार साहब को बरामदे में कॉफ़ी पीते पाया।"

तभी एक और किसान उनके पास आया जो सबसे अधिक ग़रीब था। उनकी बातें सुनकर वह हंसने लगा।

"यह भी कौन-सी बड़ी बात है! बाड़ के ऊपर से तो कोई भी जागीरदार को देख सकता है। मैं तो अगर चाहूं तो उसके साथ खाना भी खा सकता हूं!"

"अरे हटाओ भी!" पहले दोनों किसान बोले। "जैसे ही वह तुम्हें देखेगा, वैसे ही कान पकड़ कर बाहर निकालने का हुक्म दे देगा। वह तो तुम्हें घर के पास भी नहीं फटकने देगा।"

पहले दोनों किसान इस तीसरे किसान की खिल्ली उड़ाने और उस पर फब्तियां कसने लगे।

"यों ही डींग हांकते हो!" वे बोले।

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है!"

"अच्छा, अगर ऐसी बात है तो हो जाये शर्त। अगर तुम जागीरदार साहब के साथ खाना खा लोगे तो हम तुम्हें गेहूं की तीन बोरियां और बैलों की जोड़ी देंगे। अगर तुम ऐसा नहीं कर पाओगे, तो तुम्हें हमारा कहा करना होगा।"

"मंजूर है।"

यह किसान जागीरदार के अहाते में पहुंचा। जागीरदार के नौकर-चाकरों ने जैसे ही उसे देखा वे भागकर घर से बाहर आये और लगे उसे वहां से खदेड़ने।

"जरा रुको," किसान बोला। "मैं जागीरदार साहब के लिए एक खुशखबरी लेकर आया हूं।"

"क्या खुशखबरी लाये हो?"

"और किसी को नहीं, केवल जागीरदार साहब को बताऊंगा।"

चुनांचे जागीरदार साहब के नौकर अपने मालिक के पास गये और जो कुछ किसान ने कहा था, वह कह सुनाया।

जागीरदार को जिज्ञासा हुई। कारण कि किसान कुछ मांगने नहीं, बल्कि देने आया था। हो सकता है कि वह कोई बड़े काम की बात बताना चाहता हो...

"उसे अन्दर ले आओ!" उसने नौकरों से कहा।

नौकरों ने किसान को अन्दर भेज दिया। जागीरदार ने बाहर आकर उससे पूछा –

"क्या खबर लाये हो?"

किसान ने नौकरों की ओर देखा।

"हुजूर, मैं आप से एकान्त में बात करना चाहता हूं," उसने कहा।

अब जागीरदार की जिज्ञासा चरम बिन्दु पर जा पहुंची – जाने क्या कहना चाहता है किसान? उसने नौकरों से जाने को कहा।

जैसे ही वे दोनों अकेले रह गये वैसे ही किसान ने धीरे से कहा –

"श्रीमान जी, मुझे यह बताने की कृपा करें कि घोड़े के सिर के बराबर सोने के डले की क्या कीमत होगी?"

"तुम यह किसलिए जानना चाहते हो?" जागीरदार ने कहा।

"इसका भी कारण है।"

जागीरदार की आंखें चमक उठीं और उत्तेजना से उसके हाथ कांपने लगे।

"यों ही तो यह मुझ से ऐसा प्रश्न नहीं पूछ रहा," उसने मन ही मन सोचा। "ज़रूर कहीं कोई खज़ाना उसके हाथ लग गया है।"

जागीरदार ने किसान से बात निकलवाने की कोशिश की।

"भले मानस, ज़रा यह तो बताओ कि तुम किसलिए यह जानना चाहते हो?" उसने फिर पूछा।

किसान ने आह भर कर कहा –

"अगर आप नहीं बताना चाहते, तो न सही। अच्छा तो मैं अब चलता हूं, जाकर खाना खाना है।"

जागीरदार अब अपना घमंड भूल गया। वह लालच से बुरी तरह कांपने लगा था।

"मैं इस किसान को उल्लू बनाकर इससे सोना निकलवा लूंगा," उसने मन ही मन सोचा। फिर वह किसान से बोला – "सुनो तो भले मानस, तुम्हें घर जाने की ऐसी क्या जल्दी है? अगर तुम्हें भूख लगी है तो तुम यहीं मेरे साथ खाना खा सकते हो।"

इतना कहकर उसने अपने नौकरों को आवाज़ दी –

"ऐ नौकरो, जल्दी से खाना लगाओ। शराब रखना मत भूलना!"

नौकरों ने झटपट मेज़ लगा दी, शराब और खाने की चीज़ें लाकर रख दीं। जागीरदार किसान की ओर कभी एक और कभी दूसरी चीज़ बढ़ाता हुआ कहने लगा –

"भले मानस, खूब खाओ-पियो! ज़रा भी तकल्लुफ़ न करो!"

किसान खाता और पीता रहा। जागीरदार उसकी तश्तरी में खाने की चीज़ें रखता जाता था, उसका जाम भरता जाता था।

किसान ने जब खूब पेट भर कर खा लिया तो जागीरदार ने कहा –

"अच्छा, अब तुम जाओ और घोड़े के सिर के बराबर सोने का डला ले आओ! तुम्हारी बनिस्बत वह मेरे कहीं ज्यादा अच्छी तरह काम आयेगा। तुम्हें इनाम में एक रूबल दूंगा।"

"नहीं श्रीमान जी, मैं वह सोने का डला नहीं लाऊंगा!"

"वह क्यों?"

"क्योंकि वह तो मेरे पास है ही नहीं।"

"है ही नहीं?! तो तुम उसकी क़ीमत क्यों पूछ रहे थे?"

"बस, जिज्ञासावश!"

जागीरदार अब आग-बबूला हो उठा। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा और वह पैर पटकने लगा।

"निकल यहां से उल्लू कहीं के!" वह चिल्लाया।

किसान ने जवाब दिया—

"श्रीमान जी, मैं ऐसा उल्लू नहीं हूं, जैसा आप समझते हैं। आपके यहां मैंने बढ़िया दावत का मजा लिया है और शर्त में गेहूं की तीनों बोरियां और गोल सींगोंवाले बैलों की एक जोड़ी जीती है। ऐसा करना किसी उल्लू के बस की बात नहीं!"

इतना कहकर वह चलता बना।

जादुई बेला

बेलोरूसी लोक-कथा

कभी किसी जगह एक संगीतज्ञ रहता था। वह बचपन से ही बांसुरी बजाने लगा था। बैल चराते हुए वह कोई सरकंडा तोड़ लेता, उसकी बांसुरी बनाता और बजाने लगता। बैल घास चरना बन्द कर देते, कान खड़े कर लेते और बहुत ध्यान से बांसुरी की धुन सुनने लगते। उसकी बांसुरी को सुनकर जंगल के पक्षी चहचहाना भूल जाते और झरबेरों के मेंढक तक भी अपना टर्र-टर्र का राग बन्द कर देते।

रात को वह घोड़े चराने जाता – चरागाह में बड़ा ही मजा आता। लड़के-लड़कियां गाते, हंसी-मजाक करते। जवानी के दिन जो ठहरे! रात होती प्यारी और गर्म-गर्म, जमीन से भाप निकलती होती। सौन्दर्य का राज्य होता।

ऐसे में यह संगीतज्ञ अपनी बांसुरी पर कोई तान छेड़ देता। लड़के-लड़कियां आन की आन में चुप हो जाते मानो किसी ने उन्हें ऐसा करने का आदेश दे दिया हो। तब प्रत्येक को ऐसा लगता जैसे किसी ने उनके दिल पर कोई मरहम-सा रख दिया हो, मानो किसी अव्यक्त शक्ति ने उनका मन जकड़ लिया हो और वह उन्हें निर्मल नीलाकाश में सितारों की ओर खींचे लिए जा रही हो।

रात के चरवाहे बांसुरी की तान सुनते तो न हिलते न डुलते। उनको अपने थके-हारे अंगों और भूखे पेटों की सुध-बुध न रहती।

वे बैठे हुए सुनते रहते।

हरेक यही चाहता कि वह उम्र भर इसी तरह बैठा रह कर इस प्यारी धुन को सुनता रहे।

बांसुरी की धुन बन्द हो जाती, मगर कोई भी अपनी जगह से न हिलता-डुलता। उन्हें डर लगता कि कहीं उनके हिलने-डुलने से वह जादुई आवाज़ डर-सहम न जाये जो झुरमुटों और जंगलों में से बुलबुल के मधुर तराने की तरह गूंजती हुई दूर आकाश को छू लेती है।

बांसुरी फिर से बज उठती, इस बार कोई दर्दीली तान छेड़ती हुई। सभी के मन में उदासी घर कर लेती... काफ़ी रात गये किसान, औरतें और मर्द अपने मालिक के खेतों से वापस लौटते, इस मधुर तान को सुनते, वहीं ठिठक जाते और इसे सुनते रहते। इसे सुनते हुए उनकी अपनी ज़िन्दगी उनके सामने तस्वीर बन कर खड़ी हो जाती – उनकी ग़रीबी और दुख-मुसीबतें, ज़ालिम जागीरदार और क़ाज़ी तथा जागीरदार के कारिन्दे उनकी आंखों के सामने उभरने लगते। उनका मन इतना भारी हो जाता कि वे ऊंचे-ऊंचे विलाप करके अपना मन हल्का करना चाहते मानो किसी सगे-सम्बन्धी की मृत्यु हो गई हो या बेटे को लाम पर भेजा जा रहा हो।

मगर तभी बर्बरी धुन खुशी की तान में बदल जाती। सुननेवाले अपनी दरांतियां, हेंगे और कांटे फेंक देते, कमर पर हाथ रखते और लगते नाचने।

धरती पर नाचते मर्द और औरतें, घोड़े और पेड़-पौधे और आकाश में नृत्य करते सितारे और बादल। सारी दुनिया ही नाचती और खुशी मनाती।

ऐसी थी बांसुरी बजानेवाले की जादुई ताक़त। वह लोगों के दिलों को मनमाने नाच नचवा सकता था।

संगीतज्ञ जब बड़ा हो गया तो उसने अपने लिए एक बेला बना लिया और उसे बजाता हुआ दुनिया का चक्कर लगाने लगा। वह जहां भी जाता, बेला बजाता, लोग उसको खिलाते-पिलाते, सबसे प्यारे अतिथि की तरह उसका आदर-सत्कार करते और चलते समय उसे कुछ तोहफ़े भी देते।

संगीतज्ञ बहुत अर्से तक इसी तरह दुनिया में घूमता रहा। भले लोग उसका संगीत सुनकर झूम उठते और ज़ालिम जागीरदारों को जैसे सांप सूंघ जाता। वह जहां भी जाता वहीं भू-दास जागीरदारों का हुक्म बजाना बन्द कर देते। इसलिए संगीतज्ञ जागीरदारों की आंखों में कांटा बनकर खटकने लगा।

चुनांचे जागीरदारों ने उसे इस दुनिया से चलता कर देने का इरादा बना लिया। उन्होंने कभी एक आदमी को और कभी दूसरे को संगीतज्ञ की हत्या करने या उसे डुबो

देने के लिए राज़ी करने की कोशिश की। मगर उन्हें ऐसा कोई आदमी न मिला। साधारण लोग उसे प्यार करते थे और घुमाइते डरते थे। वे उसे जादूगर समझते थे।

तब जागीरदारों ने पिशाचों से सांठ-गांठ की। यह तो सर्वविदित है कि पिशाच और जागीरदार तो एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होते हैं।

एक दिन संगीतज्ञ जंगल में से जा रहा था। पिशाचों ने उसे खा जाने के लिए बारह भूखे भेड़िये भेज दिये। भेड़िये उसका रास्ता रोककर खड़े हो गये और उसे अपने दांत दिखाने लगे। उनकी आंखें अंगारों की तरह दहक रही थीं। संगीतज्ञ के हाथों में तो कोई हथियार नहीं था, बस डिब्बे में बन्द बेला ही था। "तो अब आखिरी घड़ी आ पहुंची," उसने मन ही मन सोचा।

संगीतज्ञ ने डिब्बे में से बेला निकाला ताकि मौत से पहले उसे एक बार फिर बजा ले। वह वृक्ष के तने के साथ टेक लगाकर खड़ा हो गया और उसने तारों पर कमान फेरी।

बेला एक जीवित प्राणी के समान गा उठा और सारे जंगल में स्वर-लहरियां गूंज उठीं। झाड़ियों और वृक्षों ने दम साध लिया, पत्तों ने हिलना-डुलना बन्द कर दिया। और भेड़िये आश्चर्य से मुंह बाये जहां के तहां खड़े रह गये। वे कान लगाकर संगीत सुनने लगे और उन्हें अपनी पेट की आग की सुध ही न रही।

संगीतज्ञ ने जब धुन बजाना बंद किया तो भेड़िये मानो उनींदे-से जंगल में बहुत दूर चले गये।

संगीतज्ञ आगे चल दिया। सूर्य जंगल में छिप चुका था, केवल वृक्षों की चोटियां ही ऐसे चमक रही थीं मानो किसी ने उन पर सोना मढ़ दिया हो। ऐसा गहरा सन्नाटा था कि पत्ता भी हिले तो उसकी सरसराहट सुनाई दे।

संगीतज्ञ नदी-तट पर बैठ गया, उसने बेला निकाला और बजाने लगा। इतना बढ़िया बेला बजाया उसने कि धरती और आकाश ने कान लगा दिये। वे तो मानो सदा-सदा के लिए इस संगीत को सुनने को तैयार थे। तभी उसने नृत्य की प्यारी-सी पोल्का धुन बजानी शुरू की। इर्दगिर्द सभी कुछ मानो नाचने लगा। जाड़े में बर्फ़ के तूफ़ान की भांति सितारे तेज़ी से घूमने लगे, आकाश में बादल तैरने लगे और मछलियों ने नदी में वह ऊधम मचाया कि नदी पतीले में उबलते हुए पानी की तरह बुदबुद-बुदबुद करने लगी।

जल-देवता भी अपने को वश में न रख पाया और लगा नाचने। ऐसे चक्कर लगाये उसने कि पानी किनारे तोड़ बह चला। पिशाच डर गये और नदी की गहराइयों से निकल भागे। वे सभी गुस्से से लाल-पीले हो रहे थे, दांत पीसते थे मगर संगीतज्ञ का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे।

तभी संगीतज्ञ ने देखा कि जल-देवता लोगों पर मुसीबत बरपा कर रहा है, खेतों और बगीचों में जल-थल एक कर रहा है। उसने बेला बजाना बन्द किया, उसे डिब्बे में रखा और आगे चल दिया।

वह चलता गया, चलता गया और अचानक दो युवा जागीरदार दौड़ते हुए उसकी ओर आये।

"हमारे यहां आज बॉल-नृत्य है," वे बोले। "तुम यहां बेला बजाओ, हम तुम्हें इसके लिए खासी बढ़िया रक़म देंगे।"

संगीतज्ञ सोचने लगा। काली रात घिर आई थी, सोने के लिए कहीं कोई ठिकाना नहीं था और जेब भी खाली थी।

"अच्छी बात है," उसने कहा। "बजा दूंगा बेला!"

युवा जागीरदार बेलावादक को महल में ले गये। वहां अनगिनत युवा जागीरदार और जागीरदारिनें जमा थीं। मेज़ पर एक बड़ा-सा और गहरा प्याला रखा हुआ था। जागीरदार और जागीरदारिनें दौड़कर बारी-बारी से उसकी तरफ़ जाते, उसमें उंगली डुबोकर आंखों पर लगाते।

संगीतज्ञ भी प्याले के पास गया। उसने भी उंगली डुबोकर आंखों पर लगाई। ऐसा करते ही उसे यह दिखाई दिया कि वहां जागीरदार और जागीरदारिनें नहीं, बल्कि शैतान और चुड़ैलें जमा हैं, वहां महल नहीं, जहन्नुम है।

"ओह, तो यह बात है!" संगीतज्ञ ने सोचा। "कैसे बढ़िया बॉल-नृत्य के लिए मुझे बुलाकर लाये हैं! खैर, कोई बात नहीं, अभी तुम्हारे लिए धुन बजाता हूं।"

चुनांचे उसने अपने बेले को सुर किया और उसके सजीव तारों पर कमान फेरी। उसके इर्दगिर्द का जहन्नुम धूल-मिट्टी होकर रह गया और चुड़ैलें तथा शैतान न जाने कहां ग़ायब हो गये और फिर कभी नज़र न आये।

बिज्जू और लोमड़ी मांद में क्यों रहते हैं

बेलोरूसी लोक-कथा

कहते हैं कि कभी ऐसा वक़्त भी था जब चरिन्दों और चौपायों के पूंछें नहीं थीं। सिर्फ़ चरिन्दों के महाराजा बबर के ही पूंछ थी।

पूंछों के बिना जानवरों का बुरा हाल रहता था। जाड़ा तो वे जैसे-तैसे गुज़ार लेते, मगर गर्मियों में मक्खियों और कीड़ों के कारण उनका नाक में दम रहता। उनसे पिंड छुड़ाते तो कैसे? गोमक्खियां और घुड़मक्खियां बहुत-से जानवरों की तो जान तक ले लेतीं। वे चाहे चीखते-चिल्लाते रहते, मगर सब बेसूद ही जाता।

चरिन्दों और चौपायों के महाराजा बबर को उनकी इस मुसीबत का पता चला। उसने यह आदेश दिया कि सभी चरिन्दे उसके पास आकर पूंछें ले जायें।

महाराजा के दूत चरिन्दों को बुलाने के लिए सभी दिशाओं में दौड़ पड़े। उन्होंने हवा की चाल से आकर तुरहियां बजाकर और ढौंड़ी पीट-पीटकर मुनादी की। उन्होंने भेड़िये को देखा तो उसे महाराजा का हुक्म सुनाया, सांड और बिज्जू को देखा तो उन्हें भी महाराजा का आदेश बताया। लोमड़ी, मार्टेन, खरगोश, सांभर और जंगली सूअर – सभी को ज़रूरी सूचना पहुंचा दी गई।

केवल भालू ही बाक़ी रह गया। हरकारे उसे देर तक ढूंढ़ते रहे और आख़िर उसे मांद में गहरी नींद सोया हुआ पाया। उन्होंने उसे झकझोरा, जगाया और कहा कि वह पूंछ लेने के लिए जल्दी से जाये।

मगर भालू और जल्दी करे, ऐसा तो कभी नहीं हुआ! वह मजे-मजे चलता गया, ढीली-ढाली चाल से, सभी ओर देखता और शहद की गंध पाता हुआ। अचानक उसने अपने सामने लाइम वृक्ष के खोखले तने में मधुमक्खियों का छत्ता देखा। उसने सोचा – "महाराजा के महल तक पहुंचने का रास्ता तो बहुत लम्बा है। मुझे कुछ खा-पीकर ताक़त जुटा लेनी चाहिए!"

भालू वृक्ष पर चढ़ गया। उसने देखा कि कोटर में शहद ही शहद भरा पड़ा है। उसने खुश होते हुए गुर्र-गुर्र की और लगा शहद समेटने और मुंह भरने। जब पूरी तरह जी भर गया तो उसने अपने पर नज़र डाली। उसने पाया कि उसकी खाल शहद से बुरी तरह चिपचिपी हो गयी है और उस पर जहां-तहां छत्ते के टुकड़े चिपक गये हैं।

"ऐसी सूरत लेकर मैं महाराजा के सामने भला कैसे जा सकता हूं?" उसने सोचा।

चुनांचे भालू नदी की ओर चल दिया। वहां उसने अपनी खाल को अच्छी तरह धोया और फिर उसे सुखाने के लिए पहाड़ी पर जाकर लेट रहा। धूप बहुत ही प्यारी-प्यारी थी। भालू को पता भी न चला कि कैसे वह मीठी नींद में खर्राटे लेने लगा।

इसी बीच जानवर महाराजा के महल में जमा होने लगे। सबसे पहले आई लोमड़ी। उसने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली तो उसे महल के सामने पूंछों का ढेर नज़र आया। उनमें लम्बी पूंछें भी थीं और छोटी भी, घने बालोंवाली और बिना बालों की भी।

लोमड़ी ने महाराजा बबर को प्रणाम किया।

"हे महाप्रतापी महाराजाधिराज!" लोमड़ी ने कहा। "मैंने ही सबसे पहले आपके हुक्म की तामील की है। इसलिए मैं आप से प्रार्थना करती हूं कि आप मुझे अपनी मनपसन्द पूंछ चुन लेने दें।"

महाराजा की बला से, वह कोई भी पूंछ क्यों न चुन ले!

"ठीक है," उसने कहा। "तुम जो भी चाहो, वह पूंछ चुन सकती हो।"

लोमड़ी ने पूंछों के सारे ढेर को उलट-पलट कर देखा और सबसे लम्बी और घने बालोंवाली पूंछ चुनकर झटपट वहां से चलती बनी ताकि कहीं महाराजा का इरादा न बदल जाये।

लोमड़ी के बाद गिलहरी फुदकती हुई आई। उसने अपने लिए जो पूंछ चुनी वह लोमड़ी की पूंछ के समान ही बढ़िया, मगर छोटी थी। गिलहरी के बाद मार्टेन आया और वह भी बहुत खूबसूरत और घने बालोंवाली पूंछ लेकर चलता बना।

सांभर ने सबसे लम्बी पूंछ चुनी जिसके सिरे पर बालों का मोटा-सा गुच्छा था।

उसने ऐसा इसलिए किया कि गोमक्खियों और घुड़मक्खियों को उड़ा सके। बिज्जू ने चौड़ी और मोटी-सी पूंछ झपट ली।

घोड़े ने ऐसी पूंछ चुनी जिसमें बाल ही बाल थे। उसने वह पूंछ लगाई और अगल-बगल फटकारी।

यह देखकर कि पूंछ बढ़िया काम करती है और अब मक्खियों की शामत आ जावेगी, घोड़ा खुशी से हिनहिना उठा और चरागाह की ओर सरपट भाग गया।

सबसे बाद में खरगोश दौड़ता हुआ आया।

"तुम अब तक कहां रहे?" महाराजा ने पूछा। "मेरे पास तो अब छोटी-सी ही पूंछ बाक़ी रह गई है।"

"मेरे लिये तो यही काफ़ी है, धन्यवाद," खरगोश ने खुश होकर कहा। "वास्तव में तो यही स्यादा अच्छी है। भेड़िये या कुत्ते से बचकर भागते समय यह मेरे लिए मुश्किल पैदा नहीं करेगी।"

खरगोश ने यह छोटी-सी पूंछ ठीक जगह पर लगा ली, पहले एक और फिर दूसरी छलांग लगाई और बहुत ही खुश होता हुआ घर की ओर भाग गया।

जानवरों का महाराजा सारी पूंछें बांट चुका था। अब वह जाकर चैन से सो रहा।

जहां तक भालू का सम्बन्ध है, तो शाम होने पर ही उसकी नींद टूटी। फ़ौरन याद आया कि उसे तो पूंछ लेने के लिए जल्दी से महाराजा के महल में पहुंचना था। उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई तो देखा कि सूरज जंगल के पीछे नीचे-नीचे होता हुआ छिपता जा रहा है। अब वह हाथों-पैरों के बल लगा तेज़ी से दौड़ने। बेचारा ऐसे दौड़ा, ऐसे दौड़ा कि जल्द ही पसीने से तर-ब-तर हो गया। वह महाराजा बबर के महल में पहुंचा तो वहां न तो उसे कोई पूंछ दिखाई दी और न कोई जानवर ही... "अब क्या करूं?" भालू सोचने लगा। "सभी पूंछोंवाले होंगे, केवल मैं ही पूंछ के बिना..."

चुनांचे भालू अपने जंगल की ओर वापस चल दिया, ग़ुस्से से उबलता हुआ। वह धीरे-धीरे वापस चला जा रहा था कि एक ठूंठ पर उसे बिज्जू बैठा दिखाई दिया। वह इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ अपनी खूबसूरत पूंछ को देख देखकर निहाल हो रहा था।

"सुनो तो बिज्जू," भालू बोला, "तुम्हें क्या ज़रूरत है इस पूंछ की? तुम इसे मुझे दे दो!"

"वाह, चाचा भालू, यह भी तुम ने खूब कही!" बिज्जू ने हैरान होते हुए कहा। "ऐसी खूबसूरत पूंछ भला कौन देना चाहेगा?"

"अगर तुम खुशी से नहीं दोगे तो मैं ज़बर्दस्ती ले लूंगा।" भालू ग़ुस्से से गुर्राया और उसने अपना भारी-भरकम पंजा बिज्जू की पूंछ पर रख दिया।

"मुंह धो रखो!" बिज्जू चिल्लाया और पूरा ज़ोर लगाकर भालू की गिरफ़्त से बच निकला और सिर पर पैर रखकर भाग चला।

भालू ने देखा कि उसके पंजे के साथ बिज्जू की कुछ फ़र और पूंछ का सिरा चिपका रह गया है। उसने फ़र तो फेंक दी और दुम के सिरे को लगाकर कोटर में काफ़ी बचे शहद को खत्म करने चल दिया।

बिज्जू का तो डर के मारे ऐसा बुरा हाल था कि बयान से बाहर। वह कहीं भी क्यों न छिपा रहता, उसे हर दम ऐसा ही लगता कि भालू आया कि आया और वह उसकी बची-बचायी पूंछ छीन ले जायेगा। इसलिये उसने ज़मीन के अन्दर बड़ा-सा बिल बना लिया और वहीं रहने लगा। उसकी पीठ का घाव भर गया और उसकी जगह काली-सी धारी रह गई। तब से अब तक इस धारी का रंग हल्का नहीं हुआ।

एक बार लोमड़ी कहीं भागी जा रही थी। अचानक उसे बिल नज़र आया। उसके भीतर से किसी के खोरदार खर्राटे सुनाई दे रहे थे मानो कोई खूब पीकर सो रहा हो। लोमड़ी बिल के अन्दर घुस गई। वहां उसने बिज्जू को सोये हुए देखा।

"अरे पड़ोसी, यह क्या मामला है? क्या धरती पर तुम्हारे लिये जगह नाकाफ़ी है कि ज़मीन के नीचे आ घुसे हो?" लोमड़ी ने हैरान होकर पूछा।

"हां, प्यारी लोमड़ी," बिज्जू ने गहरी सांस ली, "तुमने ठीक ही कहा है, मेरे लिये जगह नाकाफ़ी है। अगर खाने की खोज न करनी होती तो मैं रात को भी यहां से बाहर न निकलता।"

बिज्जू ने लोमड़ी को सारा क़िस्सा कह सुनाया कि क्यों उसके लिए धरती पर जगह नाकाफ़ी है। "अरे," लोमड़ी ने सोचा। "अगर भालू ने बिज्जू की पूंछ छीन लेने की कोशिश की, तो मेरी पूंछ तो उससे सौ गुना ज्यादा खूबसूरत है..."

चुनांचे वह ऐसी जगह की तलाश में दौड़ी जहां भालू से अपने को बचा सके। वह रात भर इधर-उधर दौड़ती रही, मगर कहीं भी उसे छिपने का ठिकाना न मिला। आख़िर सुबह होते-होते वह बिज्जू के समान ही एक बिल बनाकर उसमें घुस गई, उसने घने बालोंवाली पूंछ अपने गिर्द लपेटी और चैन की नींद सो रही।

तभी से बिज्जू और लोमड़ी बिल में ही रहते चले आ रहे हैं और भालू पूंछ के नाम पर एक फुंदना-सा लगाये हुए ही घूम रहा है।

बसीली ने अजगर को कैसे जीता

बेलोरूसी लोक-कथा

ऐसा कभी हुआ या नहीं, यह सच है या झूठ – आइये, इस फेर में न पड़कर वह सुनें जो इस कहानी में कहा गया है।

तो कहानी यह है।

कभी, किसी देश में एक बहुत ही भयानक अजगर कहीं से आ गया। उसने अंगस के बीच एक पहाड़ के दामन में एक गहरी-सी खोह बना ली और आराम करने के लिए लेट गया।

उसने बहुत देर तक आराम किया या थोड़ी देर, यह तो राम जाने। मगर जैसे ही वह उठा, वैसे ही सब को सुनाते हुए चिल्लाया –

"सुनो लोगो, पुरुषो और नारियो, बूढ़ो और जवानो! तुम में से प्रत्येक हर दिन मेरे लिये कोई न कोई भेंट लेकर आये – कोई गाय, कोई भेड़ या कोई सूअर! जो कोई ऐसा करेगा, वह जिन्दा रहेगा और जो ऐसा नहीं करेगा, मैं उसे खा जाऊंगा!"

लोग डर-सहम गये और वे अजगर के पास भेंटें ले-लेकर आने लगे। यह सिलसिला काफ़ी अर्से तक चलता रहा। आखिर वह दिन आया जब उनके पास ले जाने के लिये कुछ भी बाक़ी न रहा। उनकी हालत बिल्कुल खस्ता हो गई। मगर अजगर ऐसा था कि भेंट पाये बिना एक दिन भी न रह सकता था। तब वह कभी एक और कभी दूसरे गांव में उड़-उड़कर आने और लोगों को पकड़कर अपनी खोह में ले जाने लगा।

लोग बदहवास-से घूमते चार-चार रोते, जान बचाने की फ़िक्र करते, मगर अजगर से बचने का कोई उपाय न ढूंढ़ पाते।

इसी समय बसीली नाम का एक व्यक्ति इस देश में आ पहुंचा। उसने देखा कि लोग मुंह लटकाये और परेशानहाल घूम रहे हैं, हाथ मलते और आंसू बहाते हैं।

"क्या मुसीबत आ गई है तुम लोगों पर?" उसने पूछा। "तुम सभी इस तरह फूट-फूटकर क्यों रो रहे हो?"

लोगों ने उसे अपनी दर्दभरी कहानी कह सुनाई।

"शान्त हो जाओ," बसीली ने उन्हें तसल्ली दी। "मैं तुम्हें अजगर से बचाने की कोशिश करूंगा।"

वह एक मोटा-सा सोंटा लेकर उस जंगल में जा पहुंचा जहां अजगर रहता था। अजगर ने उसे देखा तो अपनी हरी हरी आंखों को इधर-उधर घुमाते हुए पूछा –

"तुम यह सोंटा लिये हुए यहां किसलिये आये हो?"

"तुम्हारी पिटाई करने," बसीली ने कहा।

"अरे वाह!" अजगर ने हैरान होकर कहा। "बेहतर यही है कि सिर पर पैर रखकर यहां से भाग जाओ वरना बाद में पछताओगे। मैं जैसे ही फूंक मारूंगा वैसे ही तुम अपने पैरों पर खड़े नहीं रह सकोगे, उड़कर तीन कोस दूर जा गिरोगे।"

बसीली हंसकर बोला –

"बहुत बढ़-चढ़कर बातें न कर रे, काकभगोड़े। बहुत देखे हैं मैंने तेरे जैसे! देखेंगे कि कौन हम दोनों में से ज्यादा जोर से फूंक मारता है। अच्छा, मार तो फूंक।"

अजगर ने इतने जोर से फूंक मारी कि वृक्षों के पत्ते झड़कर नीचे गिर गये और बसीली घुटनों के बल बैठ पड़ा। उठकर खड़े होते हुए वह बोला –

"अरे, यह तो कुछ भी नहीं! यह भी कोई फूंक मारना हुआ? इससे तो मुर्गियों को भी हंसी आ सकती है। लो, अब मैं फूंक मारता हूं। हां, मगर तुम अपनी आंखों पर पट्टी बांध लो वरना तुम्हारी पुतलियां निकलकर बाहर आ गिरेंगी।"

अजगर ने आंखों पर रूमाल बांध लिया। बसीली उसके पास गया और उसने अपना सोंटा घुमाकर इतने जोर से अजगर के सिर पर मारा कि उसकी आंखों से चिंगारियां फूट निकलीं।

"क्या तुम सचमुच ही मुझसे ताकतवर हो?" अजगर बोला। "अच्छा, आओ हम एक और चीज आजमाकर देखें। देखें तो कि हम दोनों में से कौन जल्दी पत्थर तोड़ सकता है?"

अजगर ने एक सौ पूड की चट्टान उठाई और उसे पंजों से ऐसे दबाया कि वह चूर-चूर हो गई और धूल का बादल ऊपर उठ गया।

"इसमें तो अचंभे की कोई बात नहीं है," वसीली ने हंसकर कहा। "तुम इसे ऐसे दबाओ कि चट्टान में से पानी निकल आये।"

अजगर डर गया। उसे लगा कि वसीली सचमुच ही उससे ताक़तवर है। उसने वसीली के लोटे की ओर देखा और बोला –

"जो चाहो मांग लो। मैं तुम्हें मुंहमांगी चीज दूंगा।"

"मुझे कुछ भी नहीं चाहिए," वसीली ने जवाब दिया। "मेरा घर भरा-पूरा है। तुम से कहीं ज्यादा धन-दौलत है मेरे पास।"

"अरे, रहने दो!" अजगर ने विश्वास नहीं किया।

"विश्वास नहीं करते तो चलो, चलकर देख लो।"

वे एक छकड़े पर सवार होकर चल दिये।

इसी समय अजगर को भूख सताने लगी। उसने जंगल के छोर पर बैलों का एक झुंड देखा और वसीली से बोला –

"जाकर एक बैल पकड़ लाओ, हल्का-सा नाश्ता हो जायेगा।"

वसीली जंगल में आकर लाइम वृक्षों की छाल उतारने लगा। अजगर इन्तज़ार करता रहा, करता रहा और आखिर उसे खोजने के लिए खुद जंगल में पहुंचा।

"इतनी देर क्यों लगा दी तुम ने?"

"छाल उतार रहा हूं।"

"इसका क्या करोगे?"

"रस्सी बटूंगा ताकि खाने के लिए पांच बैल एक बार ही पकड़ लूं।"

"हमें पांच बैलों का क्या करना है? हमारे लिये तो एक ही काफ़ी है।"

अजगर ने एक बैल को गर्दन से पकड़ा और उसे छकड़े के पास खींच ले गया।

"अब जाओ और इस बैल को भूनने के लिए थोड़ी लकड़ी ले आओ," अजगर ने वसीली से कहा।

वसीली जंगल में आकर बलूत के नीचे बैठ गया, उसने एक सिगरेट बनाई और इत्मीनान से कश लगाने लगा।

अजगर ने बहुत देर तक इन्तज़ार किया और जब सब्र का प्याला छलक उठा तो वसीली को खोजने गया।

"इतनी देर क्यों लगा दी?" उसने पूछा।

"मैं तो बलूत के कोई दसेक वृक्ष गिरा लेना चाहता हूं। इसीलिए उनमें से सबसे मोटे वृक्ष चुन रहा हूं।"

"दस बलूतों का हमें क्या करना है? हमारे लिये तो एक ही काफ़ी है," अजगर ने सबसे मोटे बलूत को नीचे गिरा लिया।

अजगर ने बैल को भूना और वसीली को साथ देने के लिये निमन्त्रित किया।

"तुम खुद ही खाओ," वसीली ने कहा। "मैं तो घर जाकर ही खाऊंगा। मेरा क्या बनेगा एक बैल से! मेरे लिए तो वह ऊंट के मुंह में जीरे के बराबर ही रहेगा!"

अजगर ने बैल को खाने के बाद होंठ चाटे। वे छकड़ा बढ़ाते गये और जल्द ही वसीली के घर के क़रीब जा पहुंचे। बच्चों ने अपने पिता को दूर से आते देखा तो खुशी से चिल्लाये –

"पिताजी आ रहे हैं! पिताजी आ रहे हैं!"

मगर अजगर नहीं समझ पाया कि बच्चे क्या चिल्ला रहे हैं। इसलिये उसने पूछा –

"क्या चिल्ला रहे हैं बच्चे?"

"वे खुश हैं कि मैं तुम्हें उनके खाने के लिए घर लिये जा रहा हूं। उन्हें बहुत भूख लगी है।"

इस समय तक अजगर बहुत भयभीत हो चुका था। इसलिए वह छकड़े से कूदा और सिर पर पैर रखकर भागा। मगर वह रास्ता भूल गया और दलदल में जा फंसा। दलदल इतनी गहरी थी, इतनी गहरी थी कि उसके तल का कहीं अता-पता न था। अजगर इसमें धंसता गया, धंसता गया और उसी में डूब गया। ऐसे उसका अन्त हुआ।

पीलीप्का

बेलोरूसी लोक-कथा

किसी जमाने में कहीं एक पति-पत्नी रहते थे। उनका कोई बच्चा नहीं था। पत्नी हर समय दुखी होकर कहती रहती – "पालने में किसे झुलाऊं, किसको लाड़ लड़ाऊं, गोद खिलाऊं?"

पति एक दिन जंगल में गया और किसी वृक्ष से एक कुन्दा काटकर पत्नी के पास लाया और बोला –

"लो, इसे पालने में झुलाओ।"

पत्नी ने कुन्दे को पालने में रखा और लगी उसे झुलाने और लोरी गाने –

"पालने में लाल मेरे झूलो, मोरे बदन और काली आंखोंवाले बनकर फूलो-फलो!"

उसने एक दिन पालना झुलाया, दूसरे दिन झुलाया और तीसरे दिन उसमें एक नन्हा-सा बेटा लेटा हुआ पाया!

पति-पत्नी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने बेटे का नाम पीलीप्का रखा और बड़े प्यार से उसका पालन-पोषण करने लगे। पीलीप्का जब बड़ा हो गया तो उसने अपने पिता से कहा –

"पिताजी, मुझे सोने की नाव और चांदी के चप्पू बना दो। मैं मछलियां पकड़ने के लिए जाना चाहता हूं।"

पिता ने उसे सोने की नाव और चांदी के चप्पू बना दिये और मछलियां पकड़ने के लिए झील पर भेज दिया।

और बेटा जो मछलियां पकड़ने लगा तो खूब ज़ोर-शोर से। वह दिन को मछलियां पकड़ता और रात को भी। वह तो घर भी न लौटता। मछलियां भी उसके कांटे में खूब ही फंसतीं! मां खुद उसके लिये खाना लेकर आती। वह झील के तट पर आकर पुकारती –

"प्यारे बेटे पीलीपका, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!"

पीलीपका तट पर आता, पकड़ी हुई मछलियों को तट पर गिराता, कचौड़ियां-समोसे खाता और फिर झील के बीच में लौट जाता।

अब चुड़ैल बाबा-यागा हड्डीसे पैरोंवाली, हर दिन ही यह सुन पाती कि कैसे पीलीपका की मां है उसे बुलाती।

उसने उसे मौत के घाट उतारने की सोची। उसने बोरी और कुरेदनी ली, झील पर आई और चिल्लाई –

"प्यारे बेटे पीलीपका, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!"

पीलीपका ने सोचा कि उसकी मां बुला रही है और वह छप्पू चलाता हुआ तट की ओर बढ़ आया। बाबा-यागा ने कुरेदनी में उसकी नाव को फंसाया, तट पर घसीटा और पीलीपका को पकड़ कर बोरी में बन्द कर लिया।

"अहा!" वह चिल्लाई। "अब तू मछलियां नहीं पकड़ पायेगा।"

बोरी को कंधे पर लादकर वह उसे जंगल के झुरमुट में ले गई। मगर घर उसका बहुत दूर था, वह अल्द ही थक गई, आराम करने के लिये बैठी तो उसकी आंख लग गई। पीलीपका बोरी से बाहर निकला, उसने उसमें भारी पत्थर भर दिये और फिर से झील पर चला गया।

बाबा-यागा जब जागी तो उसने बोरी उठाई और आहें भरती और कराहती हुई उसे घर ले गई। वह उसे घर लाई और अपनी बेटी से बोली –

"मेरे खाने के लिए इस मछुए को भून दे!"

उस ने बोरी को फ़र्श पर झाड़ा, मगर उसमें से तो केवल पत्थर ही निकलकर बाहर गिरे।

बाबा-यागा आग-बबूला हो उठी।

"अभी मजा चखाती हूं तुझे, मुझे धोखा देने का!" वह ज़ोर से चिल्लाई और भागती हुई फिर झील पर पहुंची। उसने पीलीपका को पुकारा –

"प्यारे बेटे पीलीपका, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!"

पीलीपका ने यह सुना तो जवाब दिया –

"मैं तुम्हें जानता हूं, पहचानता हूं। तुम मेरी मां नहीं, बाबा-यागा हो। मेरी मां की आवाज तो बहुत बारीक है।"

बाबा-यागा पुकारती रही, पुकारती रही, मगर पीलीप्का ने कान नहीं दिया।

"खैर, कोई बात नहीं," बाबा-यागा ने अपने आपसे कहा। "मैं अपनी आवाज को बारीक कर लूंगी।"

वह भागती हुई सुहार के पास गई।

"सुहार, सुहार, मेरी जबान को नुकीली और पतली कर दो," उसने कहा।

"अच्छी बात है," सुहार ने जवाब दिया, "इसे मेरी निहाई पर रख दो," और सुहार अपना हथौड़ा लेकर उसे धमाधम पीटने लगा, यहां तक कि वह बिल्कुल पतली हो गई।

इसके बाद वह फिर झील पर गई और बारीक-सी आवाज में उसने पीलीप्का को आवाज लगाई –

"प्यारे बेटे पीलीप्का, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!"

पीलीप्का ने यह आवाज सुनी तो सोचा कि मां उसे बुला रही है। वह नाव को तट की ओर ले आया। बाबा-यागा ने उसे पकड़कर बोरी में बन्द कर लिया।

"अब दे तू मुझे धोखा!" बाबा-यागा खुशी से चिल्लाई। उसने रास्ते में कहीं भी सांस न ली और सीधे उसे घर ले गई। बोरी को झटककर उसने पीलीप्का को बाहर निकाला और अपनी बेटी से कहा –

"यह रहा वह धोखेबाज! भट्ठी जलाकर इसे खाने के लिए भून लो।"

इतना कहकर वह खुद कहीं बाहर चली गई।

बेटी ने भट्ठी जलाई। वह एक फावड़ा लाई और बोली –

"फावड़े पर लेट जाओ। मैं तुम्हें भट्ठी में भूनूंगी।"

पीलीप्का अपनी टांगें ऊपर को करके फावड़े पर लेट गया।

"ऐसे नहीं!" बाबा-यागा की बेटी चिल्लाई। "अगर तुम टांगें ऊपर को किये रहोगे, तो मैं तुम्हें भट्ठी में नहीं झोंक पाऊंगी।"

पीलीप्का ने टांगें नीचे लटका लीं।

"ऐसे नहीं!" बाबा-यागा की बेटी फिर चिल्लाई।

"तो कैसे लेटूं?" पीलीप्का ने पूछा। "खुद लेट कर दिखाओ!"

"निरे उल्लू हो तुम तो!" बाबा-यागा की बेटी बोली। "देखो, ऐसे लेटा जाता है!"

इतना कहकर वह फावड़े पर लेट गई। पीलीप्का ने फावड़ा उठाया और उसे जलती हुई भट्ठी में झोंक दिया। इसके बाद उसने भट्ठी बन्द की और बाबा-यागा का ऊखल उसके मुंह के सामने रख दिया ताकि उसकी बेटी कूदकर बाहर न निकल सके।

वह भागकर झोंपड़ी से बाहर निकला तो बाबा-यागा को सामने से आते देखा। पीलीप्का एक ऊंचे और घने वृक्ष पर चढ़कर शाखाओं के बीच छिप गया।

बाबा-यागा झोंपड़ी में आई, उसने इधर-उधर सूंघा-सांघी की तो उसे भुने हुए मांस की गन्ध आई। उसने भुने हुए तन को बाहर निकाला, मांस खाया और हड्डियों को आंगन में फेंककर उनपर लोटने और कहने लगी –

"हड्डियों पर मैं लेटूंगी, मैं लोटूंगी मैं लोटूंगी। मैंने पीलीप्का का मांस खाया है, उसका लहू पिया है।"

पीलीप्का ने वृक्ष पर से जवाब दिया –

"इन हड्डियों पर तुम लेटो-लेटो, बेशक लोटो-लुढ़को। तुमने अपनी बेटी का मांस खाया है, उसका लहू पिया है।"

बाबा-यागा ने पीलीप्का के शब्द सुने तो गुस्से से लाल-पीली हो उठी। वह भागकर वृक्ष के पास गई और उसे दांतों से काटने लगी। वह काटती रही, काटती रही, उसके सारे दांत टूट गये, मगर वृक्ष जहां का तहां खड़ा रहा, हमेशा की तरह तना हुआ और मजबूत।

बाबा-यागा भागी भागी गई लुहार के पास।

"लुहार, लुहार," वह चिल्लाई, "मुझे एक इस्पाती कुल्हाड़ा बना दो! अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हारे बच्चे खा जाऊंगी।"

लुहार डर गया और उसने कुल्हाड़ा बना दिया।

बाबा-यागा कुल्हाड़ा लेकर वृक्ष की ओर भागी और उसे काटने लगी।

पीलीप्का बोला –

"कुल्हाड़े, वृक्ष पर नहीं, पत्थर पर पड़!"

बाबा-यागा ने कहा –

"कुल्हाड़े, पत्थर पर नहीं, वृक्ष पर पड़!"

पीलीप्का ने दोहराया –

"कुल्हाड़े, वृक्ष पर नहीं, पत्थर पर पड़!"

अब कुल्हाड़ा अचानक एक पत्थर से टकराया, बिल्कुल मुड़ गया और कुन्द हो गया।

बाबा-यागा गुस्से से चिल्लाई, उसने कुल्हाड़ा उठाया और उसे तेज करने के लिए लुहार के पास लौटी।

पीलीपका ने इधर-उधर नजर डाली तो पाया कि वृक्ष एक ओर को झुकने लगा है। बाबा-यागा ने उसे लगभग काट डाला था। चुनांचे इससे पहले कि देर हो जाये, उसे अपनी जान बचाने के लिए झटपट कुछ न कुछ करना था।

इसी समय हंसों का एक झुंड उड़ता हुआ उसके ऊपर से गुजरा! उसने पुकार कर कहा –

"हंसो, हंसो, शोर न मचाओ, एक-एक अपना पंख गिराओ। उड़कर माता-पिता तक जाऊं, फिर मैं इसका एहसान चुकाऊं!"

हंसों ने एक-एक पंख गिरा दिया और पीलीपका ने उन सबको जोड़ कर आधा पंख बना लिया।

तभी हंसों का दूसरा झुण्ड उड़ता हुआ आया। पीलीपका ने पुकारकर उनसे भी कहा –

"हंसो, हंसो, शोर न मचाओ, एक-एक अपना पंख गिराओ! उड़कर माता-पिता तक जाऊं, फिर मैं इसका एहसान चुकाऊं!"

दूसरे झुण्ड के हंसों ने भी एक-एक पंख गिरा दिया।

इसके बाद हंसों का तीसरा और फिर चौथा झुण्ड आया। सभी हंस अपना एक-एक पंख गिराते गये।

पीलीपका ने अपने लिये पंखों की एक जोड़ी बनाई और हंसों के पीछे-पीछे उड़ चला।

तभी बाबा-यागा लुहारखाने से भागती हुई आई और वृक्ष को फिर से काटने लगी। उसने इतने जोर से कुल्हाड़ा चलाया कि उसके परखचे उड़ने लगे।

वह काटती गई, काटती गई और वृक्ष चर्र-र्र-र्र करता हुआ उसके ऊपर आ गिरा और वह वहीं की वहीं ढेर हो गई।

पीलीपका हंसों के साथ उड़ता हुआ घर पहुंचा। मां-बाप ने उसे देखा तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने झटपट मेज पर तरह-तरह के खाने सजाये और उसे खिलाने-पिलाने लगे।

हंसों को उन्होंने जई खिलाई, बस खत्म कहानी भाई।

वन-देव हिस्सी की चक्की

कारेलियाई लोक-कथा

किसी ज़माने में कहीं दो भाई रहते थे, एक ग़रीब था, दूसरा अमीर। अमीर भाई अपने पड़ोसियों के साथ तो बहुत अच्छी तरह से पेश आता, उनकी मदद करने को तैयार रहता, मगर अपने भाई के साथ ऐसा बर्ताव करता मानो उसे जानता ही न हो। उसे डर रहता कि वह उस से कहीं कुछ मांगने न आ जाये।

ग़रीब भाई तो खुद भी कभी उस के पास कुछ मांगने के लिए नहीं आया था। मगर एक बार क्या हुआ कि कोई त्योहार आ गया। ग़रीब के घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। ग़रीब की बीवी अपने पति से बोली –

"हम त्योहार कैसे मनायेंगे? जाकर अपने भाई से कुछ मांस मांग लाओ। मैंने कल उसे जानवर काटते देखा था।"

ग़रीब भाई अपने अमीर भाई के पास जाना नहीं चाहता था और उसने अपनी बीवी से भी यही कहा। मगर इसके सिवा कोई चारा भी तो नहीं था।

सो वह अपने धनी भाई के पास आकर बोला –

"भाई, थोड़ा-सा मांस उधार दे दो। त्योहार के दिन हमारे घर में कुछ भी तो नहीं है।"

अमीर भाई ने जानवर का खुर उसकी ओर फेंकते हुए चिल्लाकर कहा –

"लो, लो इसे और जाओ हिस्सी के पास!"

ग़रीब अपने अमीर भाई के घर से निकला और मन ही मन सोचने लगा –

"उसने तो छुर मुझे नहीं, वन-देव हिस्सी के लिए दिया है। सो, मैं उसे ही दे आता हूं।"

और वह वन की ओर चल दिया।

वह बहुत देर तक जंगल में चलता रहा या थोड़ी देर तक, यह तो राम जाने। पर चलते-चलते उसकी कुछ लकड़हारों से मुलाक़ात हुई।

"तुम कहां जा रहे हो?" लकड़हारों ने पूछा।

"वन-देव हिस्सी के पास, उसे यह छुर देने," ग़रीब आदमी ने जवाब दिया। "तुम लोग बता सकते हो कि उसकी झोंपड़ी कहां है?"

लकड़हारों ने जवाब दिया –

"तुम नाक की सीध में चलते जाओ, रास्ते से बिल्कुल नहीं भटकना। इस तरह तुम उसकी झोंपड़ी तक पहुंच जाओगे। मगर बहुत ध्यान से हमारी एक बात सुनो। हिस्सी अगर छुर के बदले में चांदी देना चाहे, तो मत लेना। अगर वह सोना दे, तो उससे भी इन्कार कर देना। तुम तो उससे केवल चक्की ही मांगना।"

ग़रीब आदमी ने इस नसीहत के लिए लकड़हारों को धन्यवाद दिया, उन्हें नमस्कार किया और अपनी राह बढ़ चला।

वह बहुत दूर चला या थोड़ी दूर, यह तो राम जाने, पर आख़िर उसे एक झोंपड़ी नज़र आई। वह अन्दर गया तो उसने क्या देखा कि स्वयं हिस्सी वहां विराजमान है।

हिस्सी ने उसकी ओर देखा और बोला –

"लोग अक्सर उपहार लेकर आने के वादे करते हैं, मगर बहुत कम ही उन्हें पूरा करते हैं। तुम क्या लेकर आये हो?"

"यह छुर।"

हिस्सी की ख़ुशी का पारावार न रहा।

"तीस बरस हो गये मुझे मांस खाये हुए," उसने कहा। "जल्दी से दो मुझे छुर।"

वन-देव ने छुर लेकर खाया।

"तो अब तुम्हें इसके बदले में कुछ देना भी चाहिए," उसने कहा। "बहुत लोगे क्या इस छुर की क़ीमत? अच्छा, यह लो दो मुट्ठी भर चांदी।"

"मुझे चांदी नहीं चाहिए," ग़रीब ने कहा।

तब हिस्सी ने सोना निकाला और उसे दो मुट्ठी भर सोना देना चाहा।

"मुझे सोना भी नहीं चाहिए," ग़रीब आदमी ने कहा।

"तब तुम्हें क्या चाहिए?"

"तुम्हारी चक्की।"

"नहीं, मैं तुम्हें यह चक्की नहीं दे सकता," हिस्सी बोला। "धन-दौलत जितनी चाहो, ले लो।"

मगर ग़रीब आदमी दौलत लेने के लिए राज़ी न हुआ और चक्की लेने की ही रट लगाये रहा।

"अब जब मैं खुर खा ही चुका हूं तो उसकी क़ीमत भी अदा करनी ही होगी," वन-देव बोला। "चलो, ऐसा ही सही। तुम ले जाओ मेरी चक्की। मगर यह जानते हो कि इसका करोगे क्या?"

"नहीं, मैं तो नहीं जानता। बता दीजिये।"

"देखो, यह कोई साधारण चक्की नहीं है। यह तुम्हें मुंहमांगी चीज़ दे सकती है। तुम्हें केवल इतना ही कहना चाहिए–'पीसो, मेरी चक्की!' और जब यह चाहो कि वह अपना काम बन्द कर दे तो कहो–'बस, मेरे लिए काफ़ी है!' तब वह रुक जायेगी। अच्छा, तुम अब जाओ!"

ग़रीब आदमी ने हिस्सी को धन्यवाद दिया और घर की ओर रवाना हो गया।

वह बहुत देर तक जंगल में चलता रहा। रात घिर आई, मूसलधार बारिश होने लगी, हवा उसके कानों में सीटियां बजाती रही और वृक्षों की शाखायें उसके चेहरे पर आकर लगती रहीं। जब वह घर लौटा तो सुबह हो चुकी थी।

"तुम सारा दिन और सारी रात कहां ग़ायब रहे?" उसकी बीवी ने पूछा। "मैं तो यह सोचने लगी थी कि अब तुम कभी लौट कर नहीं आओगे।"

"खुद वन-देव हिस्सी के घर होकर आया हूं," ग़रीब आदमी ने जवाब दिया। "देखो तो मैं उससे क्या उपहार लेकर आया हूं!"

इतना कहकर उसने थैले में से चक्की निकाली।

"पीसो, मेरी चक्की!" उसने कहा। "आज त्योहार के मौक़े पर हमें खाने के लिए बढ़िया-बढ़िया चीज़ें दो।"

चक्की लगी घूमने। मेज़ पर आटे, अनाज, चीनी, मांस और मछली, यानी जो कुछ भी आदमी चाह सकता है, वे सभी चीज़ें जमा होने लगीं। ग़रीब आदमी की बीवी बोरियां और झोले ले आई और उसने उन्हें ठसाठस भर लिया। तब चक्की पर उंगली मारते हुए ग़रीब आदमी ने कहा–"बस, मेरे लिए काफ़ी है!" चक्की फ़ौरन रुक गई।

ग़रीब आदमी के परिवार ने भी गांव के दूसरे लोगों के समान ही मजे से त्योहार मनाया। उस दिन से इनकी जिन्दगी बेहतर होने लगी। उसकी बीवी और बच्चों के लिए बढ़िया कपड़े और जूते हो गये और उन्हें किसी चीज की जरूरत नहीं रही।

एक दिन ग़रीब आदमी ने चक्की से कहा कि वह उसके घोड़े के लिए बहुत-सी जई पीस दे। चक्की ने ऐसा कर दिया। उसका घोड़ा घर के पास खड़ा होकर जई खाने लगा।

इसी समय अमीर भाई ने अपने नौकर को कहा कि वह घोड़ों को झील पर ले जाकर पानी पिला लाये।

नौकर घोड़ों को झील की ओर ले चला। मगर जब वे ग़रीब भाई के घर के पास से गुजरे तो घोड़े रुक गये और ग़रीब आदमी के घोड़े के साथ जई खाने लगे।

अमीर भाई ने अपने घर से यह देखा तो बाहर ओसारे में आकर चिल्लाया –

"ए नौकर! घोड़ों को वापस ले आओ! वे वहां कूड़ा-करकट खा रहे हैं!"

नौकर उन्हें वापस ले गया।

"मालिक, घोड़े वहां कूड़ा-करकट नहीं, बल्कि बढ़िया जई खा रहे थे," नौकर ने कहा। "आपके भाई के पास जई और बाकी सभी चीजें भी ढेरों ढेर हैं।"

अब अमीर भाई को जिज्ञासा हुई।

"मैं अभी जाकर देखता हूं कि मेरा भाई यकायक कैसे अमीर हो गया। यह कैसे हुआ?" वह बोला और अपने भाई के पास गया।

"तुम यकायक अमीर कैसे हो गये?" उसने पूछा। "यह सभी दौलत कहां से आ गई?"

ग़रीब भाई ने उसे सारा हाल सच-सच कह सुनाया।

"हिस्सी ने मेरी मदद की है," उसने कहा।

"क्या मतलब?" अमीर भाई ने पूछा।

"वही जो मैं कह रहा हूं। तुमने त्योहार के मौक़े पर जानवर का खुर देकर कहा था कि जाओ हिस्सी के पास। मैंने ऐसा ही किया। मैंने हिस्सी को खुर दे दिया और उसने बदले में मुझे यह अद्भुत चक्की दी। यही चक्की मुझे मुंहमांगी चीजें देती है।"

"मुझे दिखाओ तो यह चक्की!"

"अच्छी बात है।"

ग़रीब भाई ने अपनी चक्की को हुक्म दिया कि वह उन्हें खाने की सभी तरह की बढ़िया चीजें जुटा दे। चक्की फ़ौरन घूमने लगी और मेज पर कचौड़ियों, तरह-तरह के भुने हुए मांसों और अन्य बढ़िया चीजों के ढेर लग गये।

मारे अचम्भे के अमीर भाई की आंखें फटी की फटी रह गईं।

"चक्की मुझे बेच दो," अमीर भाई ने गिड़गिड़ाकर कहा।

"नहीं, मैं नहीं बेचूंगा। खुद मुझे इसकी जरूरत है।"

मगर अमीर भाई ने फिर कहा –

"तुम चाहे जितनी भी क़ीमत ले लो, मगर इसे मेरे हाथों बेच दो।"

"नहीं, मैं नहीं बेचूंगा।"

अमीर भाई ने जब यह महसूस किया कि ग़रीब भाई किसी तरह भी मानने को तैयार नहीं है, तो उसने दूसरी चाल चली।

"अरे, बड़े ही कृतघ्न हो तुम! ज़रा बताओ तो कि तुम्हें खुर किसने दिया था?"

"तुम ने।"

"और अब यह चक्की मुझे देते हुए अपना दिल छोटा करते हो! अच्छा, अगर बेचना नहीं चाहते तो कुछ समय के लिए इसे उधार ही दे दो।"

ग़रीब भाई ने इस पर सोच-विचार किया।

"चलो, ऐसा ही सही," उसने कहा। "तुम कुछ समय के लिए इसे ले सकते हो।"

अमीर भाई की तो बाछें खिल गईं। उसने चक्की उठाई और घर को भाग चला। उसने तो यह तक न पूछा कि जब इसे बन्द करना हो तो क्या किया जाये।

अगली सुबह को वह चक्की लेकर जहाज़ में जा सवार हुआ।

"आजकल मछली नमकीन बनाई जा रही है," उसने सोचा, "इसलिये नमक महंगा है। मैं नमक का व्यापार करके मालामाल हो जाऊंगा।"

समुद्र में काफ़ी दूर जाकर उसने चक्की से कहा –

"पीसो, मेरी चक्की! मुझे नमक दो, जितना अधिक, उतना ही बेहतर।"

चक्की ने घूमना शुरू किया और उससे बहुत ही साफ़ और सफ़ेद नमक निकलने लगा।

अमीर आदमी खुशी से मतवाला होता हुआ नमक को देखने और अपने मुनाफ़े का अनुमान लगाने लगा। इतना अधिक नमक जमा हो गया था कि उसे चक्की को बन्द कर देना चाहिए था, मगर वह तो जब-तब यही दोहराता रहा –

"पीसो, मेरी चक्की, पीसो! रुको नहीं!"

नमक का वज़न इतना अधिक हो गया था कि जहाज़ पानी में नीचे ही नीचे धंसता जाता था। मगर अमीर आदमी के तो मानो होश-हवास ही ठिकाने न रहे थे। वह

लगातार यही दोहराता जा रहा था –

"पीसो, मेरी चक्की, पीसो!"

इसी बीच पानी जहाज के दोनों ओर चढ़ आया था और उसकी यह हालत हो गई थी कि डूबा, बस डूबा। अब अमीर भाई की अक़्ल ठिकाने आई।

"पीसना बन्द करो, चक्की!" वह चिल्लाया।

मगर चक्की पहले की तरह ही घूमती गई।

"पीसना बन्द करो, चक्की! पीसना बन्द करो!" अमीर आदमी फिर चिल्लाया, मगर चक्की लगातार घूमती ही गई।

अमीर भाई ने चक्की को उठाकर समुद्र में फेंक देना चाहा, मगर वह ऐसा न कर पाया। चक्की तो मानो डेक के साथ चिपक गई थी। "बचाओ!" अमीर भाई चिल्लाया। "मुझे बचाओ!"

मगर वहां तो कोई भी ऐसा नहीं था जो उसे बचाता, उसकी मदद को आता।

जहाज डूब गया और अमीर भाई समुद्र के गहरे तल में पहुंच गया।

और चक्की का क्या हुआ? सुनने में आया है कि समुद्र-तल में भी वह लगातार घूमती जा रही है और नमक बनाती जा रही है। मानें या न मानें, यही कारण है कि समुद्र का पानी खारा है।

बेटों ने बाप का खज़ाना कैसे पाया

मोल्दावियाई लोक-कथा

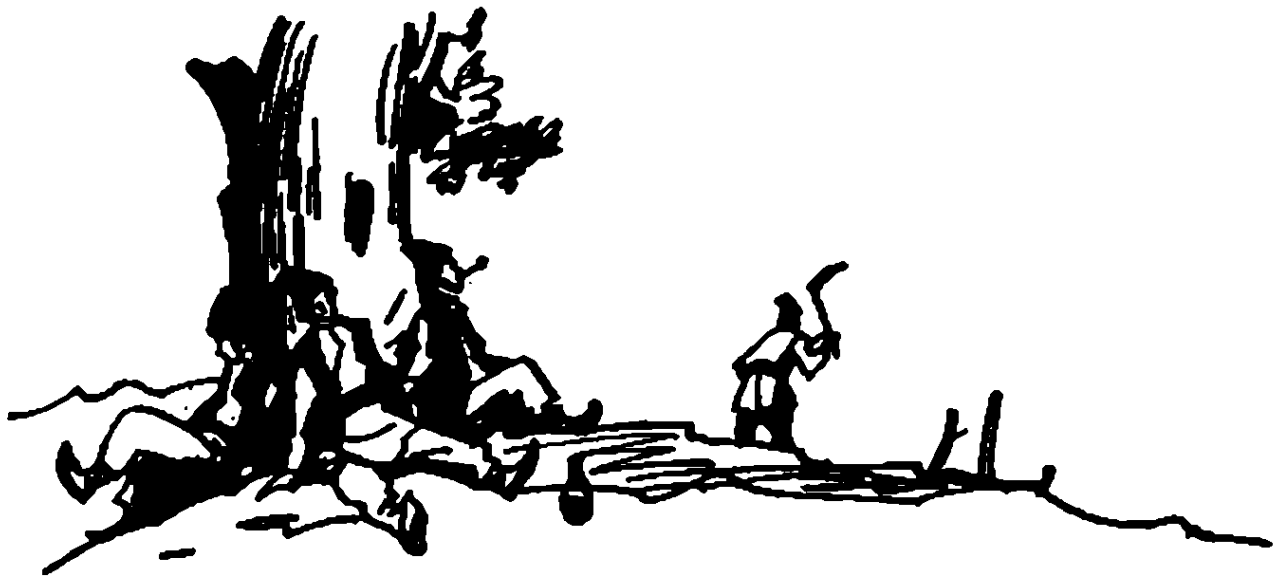

एक बार का ज़िक्र है कि कहीं एक आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। वह बड़ा ही मेहनती व्यक्ति था। वह कभी काम से जी न चुराता और सुबह से शाम तक कड़ा श्रम करता। थकान का तो वह नाम ही नहीं जानता था और हर चीज़ बढ़िया ढंग से और ठीक वक़्त पर करता।

रही बेटों की बात, तो वे तीनों लम्बे-तड़ंगे, हट्टे-कट्टे और सुन्दर-सुघड़ जवान थे, मगर काम से जी चुराते थे।

बाप खेत, बगीचे और घर में काम करता, मगर बेटे वृक्षों की छाया में निकम्मे बैठे रहकर गप-शप करते या नदी पर मछलियां पकड़ने चले जाते।

"तुम लोग कभी काम क्यों नहीं करते? अपने पिता का हाथ क्यों नहीं बंटाते?" उनके पड़ोसी पूछते।

"हमें काम करने की क्या पड़ी है!" बेटे जवाब देते। "पिताजी हमारा खूब ध्यान रखते हैं, खुद ही सारा काम-काज निपटा लेते हैं।"

इसी तरह साल के बाद साल गुज़रता गया।

बेटे पूरी तरह जवान हो गये और पिता बुढ़ा गया, क्षीणकाय हो गया। उसमें पहले की भांति काम करने की ताक़त न रही। घर के इर्दगिर्द जो बगीचा था, उसका

बुरा हाल हो गया और खेतों में झाड़-झंखाड़ नजर आने लगे। बेटों ने यह सब कुछ देखा, मगर काम करने को तैयार न हुए।

"बेटो, तुम निकम्मे क्यों बैठे रहते हो?" पिता उनसे कहता। "मैं जब जवान था तो मैंने काम किया और अब तुम्हारी बारी है।"

"काम करने के लिए तो सारी उम्र पड़ी है," बेटे जवाब देते।

बूढ़े आदमी को इस बात से बहुत ही दुख होता कि उसके बेटे ऐसे कामचोर हैं। वह इसी ग़म में घुल-घुलकर बीमार पड़ गया और उसने चारपाई पकड़ ली।

अब तक परिवार पर बहुत ही ग़रीबी आ गई थी। बगीचे में बिछुआ और दूसरी झाड़ियां इतनी ऊंची-ऊंची हो गई थीं कि उनमें से घर भी बड़ी मुश्किल से नजर आता था।

एक दिन बूढ़े ने बेटों को अपने पास बुलाकर कहा –

"बेटो, अब मेरी आखिरी घड़ी नजदीक आ गई है। मेरे बिना अब तुम कैसे जिन्दगी गुजारोगे? तुम्हें काम करना न तो पसन्द ही है और न तुम उसका ढंग ही जानते हो।" दुख से बेटों के दिल भर आये और वे रोने लगे।

"पिताजी, मरने से पहले हम से कुछ कहिये, हमें कोई आखिरी नसीहत दीजिये," सबसे बड़े बेटे ने प्रार्थना की।

"अच्छी बात है," पिता ने कहा। "मैं तुम्हें एक राज बताता हूं। तुम्हें यह तो मालूम ही है कि तुम्हारी दिवंगता मां और मैं हमेशा कड़ी मेहनत करते रहे हैं। अनेक वर्षों तक थोड़ी-थोड़ी रक़म बचाकर हमने तुम लोगों के लिए कुछ पूंजी जोड़ी है – सोने से भरा हुआ बर्तन। उस बर्तन को मैंने घर के आसपास ही कहीं गाड़ दिया है, पर मुझे याद नहीं कि कहां। तुम उस खजाने को ढूंढ़ लो और तब तुम्हें ग़रीबी का कभी मुंह नहीं देखना पड़ेगा, तुम्हें किसी तरह के अभावों का शिकार नहीं होना पड़ेगा।"

इतना कहकर उसने अपने बेटों से विदा ली और इस दुनिया से कूच कर गया।

बेटों ने बाप को दफ़नाया, उसका मातम मनाया। कुछ दिन बाद सबसे बड़े बेटे ने कहा –

"भाइयो, हम इस हद तक ग़रीब हो गये हैं कि हमारे पास रोटी खरीदने तक के पैसे नहीं रहे। याद है न, मरने से पहले पिताजी ने क्या कहा था? आओ, हम सोने से भरे हुए बर्तन की तलाश करें।"

भाइयों ने अपने फावड़े लिये और घर के क़रीब ही छोटे-छोटे गढ़े खोदने लगे। वे खोदते रहे, खोदते रहे, मगर सोने से भरा हुआ बर्तन उन्हें नहीं मिला।

तब मंझला भाई बोला –

"भाइयो! अगर हम इसी तरह से खोदेंगे, तो पिताजी का छोड़ा हुआ खजाना कभी नहीं ढूंढ़ पायेंगे। आओ, अपने घर के इर्दगिर्द की सारी जमीन खोद डालें!"

भाई राजी हो गये। उन्होंने फिर से अपने फावड़े उठाये और सारी जमीन खोद डाली, मगर सोने से भरा हुआ बर्तन फिर भी नहीं मिला।

"ए भाइयो, आओ हम इस सारी जमीन को एक बार फिर खोदें, पहले से ज्यादा गहरी!" सबसे छोटे भाई ने कहा। "बहुत मुमकिन है कि पिताजी ने सोने से भरा हुआ बर्तन बहुत गहरा दबा दिया हो।"

भाई मान गये। वे पिता के खजाने को खोजने के लिए बहुत ही उत्सुक जो थे!

उन्होंने फिर से खुदाई शुरू की।

बड़ा भाई खोदता जा रहा था, खोदता जा रहा था कि अचानक उसका फावड़ा किसी बड़ी और सख्त-सी चीज से जा टकराया। उसका दिल धड़क उठा, वह खुशी से चहक उठा और उसने अपने भाइयों को आवाज दी –

"जल्दी से यहां आओ! मुझे पिताजी का खजाना मिल गया है!"

मंझला और छोटा भाई भाग कर उसके पास गये, उसकी मदद करने लगे।

वे पसीना बहाते रहे, बहाते रहे। आखिर जमीन में से सोने से भरा हुआ बर्तन नहीं, एक भारी पत्थर निकला।

उन्हें बहुत दुख हुआ। वे बोले –

"इस पत्थर का क्या किया जाये? इसे यहीं छोड़ने में तो कोई तुक नहीं! इसे ले जाकर कहीं में फेंक देते हैं!"

उन्होंने ऐसा ही किया। पत्थर को फेंककर वे फिर से जमीन की खुदाई करने लगे। वे दिन भर काम करते रहे, उन्हें खाने-पीने और आराम करने की भी सुध-बुध न रही। उन्होंने सारी जमीन एक बार फिर से खोद डाली। जमीन तो बहुत बढ़िया और नर्म-नर्म हो गई, मगर सोने से भरा हुआ बर्तन उन्हें फिर भी नहीं मिला।

"हां तो, भाइयो," सबसे बड़े भाई ने कहा, "अब जब हमने जमीन खोद ही डाली है तो इसे यों ही छोड़ देना तो ठीक न होगा। आओ, यहां अंगूर के पौधे ही लगा दें!"

"यह तो अच्छा खयाल है," दोनों छोटे भाइयों ने सहमति प्रकट की। "इस तरह कम से कम हमारी मेहनत तो बेकार नहीं जायेगी।"

चुनांचे उन्होंने वहां अंगूर के पौधे लगा दिये और उनकी खूब देखभाल करने लगे।

कुछ अरसा बीता तो वहां अंगूरों का एक बढ़िया और बड़ा-सा बगीचा बन गया जिसमें पके हुए मीठे अंगूरों के गुच्छे नज़र आने लगे।

भाइयों ने ढेरों ढेर अंगूर बटोरे। ज़रूरत के अंगूर अपने पास रखकर उन्होंने उनका बड़ा हिस्सा बेच दिया और काफ़ी रक़म कमाई।

तब बड़े भाई ने कहा –

"हमने बेकार ही ज़मीन नहीं खोदी। हमें उसमें से वह ख़ज़ाना मिल गया है जिसकी मरने से पहले पिताजी ने हमसे चर्चा की थी।"

बासिल सुंदर स्वरूप और सूर्य सहोदरा इल्याना

मोल्दावियाई लोक-कथा

हक़ीक़त तो हक़ीक़त है,
कहानी तो कहानी है।
हक़ीक़त की कहानी ही
हमें तो अब सुनानी है।।

किसी ज़माने में कहीं एक आदमी अपनी बीवी के साथ रहता था। उनकी एक बेटी थी, सुबह की भांति सुन्दर और प्यारी। वह चुस्त भी बहुत थी और हाथों से काम करने में भी ऐसी तेज़ जैसे वसन्ती हवा। जिस किसी ने भी उसके हाथों की फुर्ती, आंखों की चमक और गुलाब की तरह खिले हुए गाल देखे, उसी के मन पर जीवन भर के लिए उसकी छाप अंकित हो गई। उसे देखते ही जवानों के दिल धड़कने लगते।

एक सुहाने दिन यह सुन्दरी दो घड़े लेकर पानी लाने के लिए कुएं पर गई। जब घड़े भर गये तो उसका मन हुआ कि कुछ देर कुएं के पास बैठे। वहां बैठे-बैठे उसने कुएं में झांककर देखा और वहां उसे बासिल का पौधा उगा हुआ दिखाई दिया। उसने न कुछ सोचा, न विचारा और पौधे को तोड़कर सूंघा। उसकी गंध से ही वह गर्भवती हो गई।

लड़की के माता-पिता को जब इस बात का पता चला तो वे उसे डांटने-फटकारने और भला-बुरा कहने लगे। दुनिया अब उसके लिए प्यारी जगह न रही। लड़की ने फ़ैसला किया कि वह घर से भाग जायेगी। मगर कहां? जहां भी उसके पैर ले जायें।

उसने चुपचाप तैयारी की और चोरी-चोरी घर से भाग निकली। कुछ ही समय बाद उसका कहीं कोई अता-पता और नाम-निशान बाक़ी न रहा।

चोट खाया हुआ दिल और उस में दहशत लिए वह कहीं भी रुके बिना चलते-चलते एक घने जंगल में पहुंची। वहां उसे एक गुफा नज़र आई। उसने सोचा कि मैं वहां थोड़ा आराम करूंगी। उसने भीतर क़दम रखा ही था कि उसे अपनी ओर एक बहुत ही बूढ़ा व्यक्ति आता दिखाई दिया, खांसता और आहें भरता हुआ। उसका कूबड़ निकला हुआ था, टांगें टेढ़ी-मेढ़ी थीं, घुटनों को छूती हुई थी दाढ़ी, कंधों तक पहुंच रही थीं मूंछें और एड़ियों को छू रहे थे बाल।

"तुम कौन हो और यहां कैसे आई हो?" बूढ़े ने अपनी घनी बरौनियों को, जो उसकी आंखों को पूरी तरह ढके हुए थीं, बैसाखी से ऊपर उठाते पूछा।

लड़की बूढ़े का सवाल सुनकर सिसकने और रोने लगी। आख़िर उसने उसे सारा क़िस्सा कह सुनाया और बताया कि वह उसकी गुफा में कैसे पहुंची है।

बूढ़े ने चुपचाप उसकी दास्तान सुनी। उसने लड़की को पत्थर की बेंच पर बिठाया और उसे तसल्ली दी।

सूरज की तन झुलसाती गर्मी के बाद जैसे बरसात से धरती को ठंडक मिलती है, वैसे ही दुख-मुसीबत के दिनों में नौजवानों के लिए बुज़ुर्गों के शब्द मरहम का काम करते हैं। बूढ़े के सहानुभूति भरे शब्दों से लड़की को चैन मिला और वह कुछ समय तक उसकी गुफा में रहने को राज़ी हो गई।

इस तरह वे दोनों एक साथ रहने लगे। लड़की का दुख-दर्द कम हो गया और बूढ़े को बुढ़ापे का सहारा मिल गया।

हर सुबह को तीन बकरियां गुफा में आतीं। बूढ़ा उन्हें दुह लेता। वे दोनों दूध पीते और सन्तुष्ट हो जाते।

वक़्त तेज़ी से गुज़रता गया। आख़िर लड़की ने एक बच्चे को जन्म दिया, ऐसा मोटा, गुदगुदा और प्यारा था वह कि उसे देखकर सूरज भी मुस्करा दिया। और बूढ़ा, उसकी ख़ुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था! उसके पैर तो मानो बरबस नाचने लगे, उसे अपने दिल में जवानी की सी उमंग महसूस हुई।

बच्चे के जन्म लेते ही उन्होंने उसे सुबह की ओस से नहलाया ताकि उस पर किसी की बुरी नज़र का असर न हो। उन्होंने चलती हुई मशाल और इस्पाती तलवार उसके ऊपर से वारी ताकि दुख-मुसीबतों में उसका बाल भी बांका न हो और वह हमेशा सूरज की तरह निर्मल और चमकता रहे। तब मां ने उसे वीर और दिलेर बनाने के लिए जादू-

टोना किया। बूढ़े ने गुफा के अन्धेरे कोनों को टटोला और वहां से एक तलवार और भारी डंडा निकाला। ये उसके जवानी के दिनों की बची-बचायी निशानियां थीं। उसने ये दोनों चीजें बच्चे को भेंट कर दीं ताकि वे उसके काम आयें।

नामकरण के समय खाया-पिया बहुत कम गया, मगर हंसी-खुशी ने इसकी कमी पूरी कर दी। उन्होंने बच्चे के स्वास्थ्य और सुख-सौभाग्य की मंगल कामना की। बूढ़े ने लड़के का नाम बासिल रखा। यह वही पौधा था जो उसकी मां ने कुएं पर तोड़ा था। मां ने इस नाम के साथ फ़्रेट फ़्लूमोस यानी सुंदर स्वरूप जोड़ दिया। उसे अपना प्यारा बेटा बहुत ही सुंदर प्रतीत हुआ।

वक़्त उड़ता चला गया। बूढ़ा परलोक सिधार गया और लड़का बड़ा हो गया। वह अब शिकार पर जाता और मां की मनचाही चीजें लेकर आता। जैसे-जैसे वह और बड़ा होता गया वैसे-वैसे मां की जिन्दगी में खुशियां बढ़ती गईं। कारण कि बेटा अपने शब्दों से भी और कामों से भी उसे खुशी देता, उसका मन बहलाता।

बासिल सुन्दर स्वरूप जब मर्द हो गया तो घर से बहुत दूर, बलूतों के झुण्डों और घने जंगलों में शिकार के लिए जाने लगा। वह इतनी दूर तक जाता कि मज़र उसे मुश्किल से ही देख पाती।

एक दिन बासिल किसी घाटी के सिरे पर जा पहुंचा। जब उसने दूरी पर नज़र दौड़ाई तो उसे एक बहुत बड़ी हरी-हरी झील दिखाई दी जिसमें सूरज तैर रहा था। मगर जब वह निकट पहुंचा तो उसने पाया कि वह झील नहीं, सोने और मोतियों का महल है जो असीम घने जंगल के बीच खड़ा हुआ चमक रहा है।

उसने अपनी जिन्दगी में कभी ऐसा दिलकश नज़ारा नहीं देखा था। उसने अपनी तलवार और डंडे को ठीक से कसा और महल की ओर चल दिया। उसे बहुत दूर नहीं जाना पड़ा और अल्प ही वह वहां पहुंच गया। महल की खिड़कियां और दरवाज़े खुले पड़े थे, मगर न तो महल में और न उसके आसपास ही कहीं कोई आदमी नज़र आ रहा था। सुन्दर बासिल ने एक के बाद एक कमरे का और ऐसे सारे महल का चक्कर लगाया। वह आंगन में आया और उसने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली, मगर उसे कहीं कोई आदमी दिखाई न दिया। तब अचानक उसे भारी घूं-घूं और भन-भन तथा शाखाओं के चटखने की आवाज़ सुनाई दी। और लो! उसे जंगल की ओर से सात भयानक अजगर आते दिखाई दिये। उनमें से प्रत्येक के –

गधे के से खुर थे
बकरी का सा सिर था
भेड़िये के से जबड़े थे
आंखों में ज़हर था।

वे छलांगें-सी लगाते हुए चल रहे थे और अपने कंधों पर तीन आदमियों को उठाये ला रहे थे जिनके हाथ-पैर बंधे थे। वे सभी एकसाथ महल में घुसे, उन्होंने एक बहुत बड़े कड़ाहे के नीचे आग जलाई और जब पानी उबलने लगा तो अपने एक क़ैदी को उसमें फेंक दिया। उन्होंने उसे उबाला और झटपट खा गये, हड्डियां तक भी बाक़ी नहीं छोड़ीं। फिर उन्होंने बाक़ी दो के साथ भी यही कुछ किया। ऐसे जल्दी-जल्दी और बेताबी से उन्होंने उन्हें खाया कि उनके जबड़ों की चपर-चपर सुनाई दे रही थी।

बासिल दरवाज़े के पीछे छिपा हुआ उन्हें देख रहा था। उसने जो दृश्य देखा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। भयानक अजगर तीनों आदमियों की आख़िरी बोटी तक हड़प गये थे। तभी उनमें से एक मुड़ा और उसकी बासिल पर नज़र पड़ी। वह तो ऐसे उछल पड़ा मानो बिच्छू ने उसे डंक मार दिया हो।

"सभी भागकर आंगन में चलो! वहां एक और भी है जो कड़ाहे में जाने का इन्तज़ार कर रहा है!"

इतना सुनकर सभी अजगर उछले और दरवाज़े की तरफ़ दौड़े। मगर बासिल ने तभी म्यान से तलवार निकाल ली और जो भी अजगर दहलीज़ को पार करता, वह झट से उसी के सिर को धड़ से अलग कर देता। उनके सिर मोमी के फल्लों की तरह फ़र्श पर लुढ़कने लगे। इस तरह बासिल ने छः अजगरों का सफ़ाया कर दिया। मगर सातवें अजगर के सामने उसकी दाल न गली। उसकी चौड़ी तलवार बिल्कुल बेकार रही। उसने तलवार की तेज़ धार वाली तरफ़ से अजगर की गर्दन पर वार किया, तलवार की उल्टी तरफ़ से सिर पर ज़ोर की चोट की और तलवार को उसके बिल के आर-पार करने की कोशिश की, मगर सब बेसूद! तब बासिल ने न सोचा, न विचारा और अपना भारी डंडा निकालकर सिर के ऊपर घुमाया और अजगर की कनपटी पर इस ज़ोर से दे मारा कि उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। अजगर बुरी तरह से बल खाता और दर्द से तिलमिलाता हुआ पीछे हटने लगा। हर क़दम पर उसका सिर दीवारों से जा टकराता। आख़िर वह महल के अन्तिम कमरे में जा पहुंचा। वहां उसने फ़र्श पर का एक चोर-दरवाज़ा खोला और काई तथा मकड़ियों के जालों से ढके हुए ज़ीने से नीचे

लुढ़क चला। बासिल भी उसके पीछे-पीछे गया। उन्होंने लोहे के बारह दरवाजे पार किये और आखिर तल में पहुंच गये। अजगर दीवार के साथ चिपक गया, उसकी आंखें इधर-उधर घूम रही थीं, वह दांत बाहर निकाले हुए था और ऐसे लगता था कि डर के मारे उसका दिल निकलकर बाहर आ गिरेगा।

मगर बासिल ने उसके साथ कुछ नहीं किया। उसने दरवाजा बन्द किया, सांकलें चढ़ाईं, ताला लगाया और सीढ़ियों से ऊपर लौट आया। उसने लौटते हुए बारह के बारह दरवाजे बन्द कर दिये, आखिरी दरवाजे में ताला लगाया और चाबी अपने कोट की जेब में रख ली। इसके बाद यह सोचकर खुश होता हुआ कि मैंने बड़ा नेक काम किया है, घर की ओर चल दिया।

बहुत ही खुश होता हुआ वह गुफा में लौटा और उसने अपनी मां से कहा—

"मां, मैंने एक बहुत बड़ा और सुन्दर महल ढूंढ़ लिया है। अब हम उसी में रहेंगे।"

मां की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। मां-बेटा गुफा से निकलकर सोने और मोतियों के महल में आ पहुंचे और वहीं रहने लगे।

बासिल ने कहा—

"यह सारा महल हमारा है। मगर कभी भूलकर भी आखिरी कमरे का दरवाजा मत खोलना, क्योंकि एक आखिरी अजगर अब भी वहां बन्द है।"

"तुम मुझ पर पूरा भरोसा कर सकते हो, मेरे बेटे," मां ने जवाब दिया। "उस कम्बख्त ने तुम्हें खाने की कोशिश की थी, इसलिए मैं जानती हूं कि मुझे उस दरवाजे का ताला क्यों बन्द रखना चाहिये।"

मां ने चाबी लेकर उसे एक रूमाल में लपेटा, रूमाल को दस गांठें लगायीं और उसे कहीं इतनी दूर छिपाकर रख दिया कि सदियों तक ढूंढ़ते रहने पर भी वह किसी के हाथ न लगे।

अब मानो कल्पवृक्ष से मां-बेटे को जीवन के सभी वरदान, सभी नेमतें मिलने लगीं। महल शानदार था, इर्दगिर्द का प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम और शिकार मन माना।

उन्होंने इस तरह एक-दो नहीं, बल्कि हंसी-खुशी के बहुत-से वर्ष बिताये। मगर जिस तरह बसन्त अपने साथ अचानक प्यारी-प्यारी गर्मी लेकर आता है, इसी भांति धरती पर बहुत-से आकस्मिक तूफ़ान भी आते हैं जो हर चीज को तबाह-बरबाद कर देना चाहते हैं।

सातों अजगर एक अन्य राज्य से यहां आकर बसे थे। उनकी धाय थी क्लोआन्सा चुड़ैल, जिसकी सूरत थी मानो तारकोल सनी, उसका दिल था बिल्कुल काला, एक

नजर में दुनिया को झुलसानेवाला। क्लोआन्त्सा अजगरों के वापस आने का इन्तजार करती रही। वे आम तौर पर कुछ समय के बाद अपनी धाय से मिलने जाते थे। मगर जब वे बहुत समय तक उसके पास नहीं गये तो उसके मन को तरह-तरह की आशंकाओं और चिन्ताओं ने आ घेरा। वह बुरी तरह परेशान हो उठी। वह आग में झुलसते हुए सांप की तरह बेचैन हो उठी और पागलों की तरह भागती हुई यह जानने के लिए महल में पहुंची कि मामला क्या है।

जब उसे पता चला कि अजगरों के साथ क्या बीती है तो उसने सिर थाम लिया और कुछ देर तक तड़पती-कराहती और दुखी होती रही। तब वह गुस्से से लाल-पीली होकर बासिल की मां पर झपटी, उसे चाबी देने के लिए मजबूर किया और जिस कोठरी में अजगर बन्द पड़ा रहा था, उसे वहां धकेल दिया। उसने अजगर को मुक्त किया और उसे अपने पीछे-पीछे आने को कहा। उसने बाहर जाते हुए बारह के बारह दरवाजे बन्द किये और उनमें ताले लगा दिये।

क्लोआन्त्सा और अजगर ने बैठकर सलाह की कि वे बासिल से कैसे बदला लें, उसे कैसे मौत के घाट उतारें।

"तुम्हें उसे लड़ाई की चुनौती देनी चाहिए," जादूगरनी ने अजगर से कहा।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, मुझे डर लगता है। ताकत में वह मुझ से कहीं बढ़-चढ़कर है। मैं तो यही समझता हूं कि उसकी नजर पड़ने से पहले ही हमें यहां से भाग जाना चाहिए वरना हमारा बुरा हाल होगा।"

"अगर ऐसी ही बात है तो तुम मुझ पर विश्वास करो," क्लोआन्त्सा ने कहा। "मैं उसकी ऐसी हालत कर दूंगी कि वह खुशी से सांप के बिल में आ घुसेगा, खुद अपनी मौत ढूंढ़ता फिरेगा।"

इतना कहकर उसने अजगर को छिपा दिया और खुद लट्टू की तरह घूमने लगी। इस तरह उसने बासिल की मां का रूप धारण कर लिया। उसने सख्त बीमार होने का ढोंग किया और ऐसा नाटक रचा कि मानो दर्द के मारे उसकी जान निकली जा रही है। वह अब बासिल के लौटने का इन्तजार करने लगी।

एक दिन गुजरा और फिर दूसरा। बासिल शिकार से लौटा। जैसे ही उसने बहलीज सांधी वैसे ही क्लोआन्त्सा आहें भरने और कराहने लगी।

"मेरे बेटे, मेरे प्यारे बेटे, बहुत बुरा हाल है मेरा। तुम तो ऐसे गये कि जल्दी से लौट कर मेरी सुध भी नहीं ली। इधर मैं सख्त बीमार पड़ गई और कोई मेरी सुध-सार लेनेवाला यहां नहीं था। आह, अगर कहीं से पक्षी के दूध की बूंद मिल जाये,

केवल एक बूंद ही, तो मेरी बीमारी फ़ौरन दूर हो जाये और मैं फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊं।"

बासिल ने बहुत दुखी होते हुए मां की बीमारी का हाल सुना। उसने एक बर्तन लिया और मां रूपी क्लोआन्त्सा से यह कहकर कि मैं जल्द ही लौट आऊंगा, पक्षी के दूध की खोज में चल दिया।

वह चलता गया, दर कूच दर मंजिल, लांघ गया पहाड़ों और घाटियों को और आखिर एक महल के पास पहुंचा जिसके इर्दगिर्द ऊंची बाड़ थी। उसने फाटक पर दस्तक दी। अन्दर से एक लड़की ने कहा –

"अगर तुम भले आदमी हो, तो अन्दर आ जाओ, अगर बुरे हो, तो अपनी राह लो वरना मेरे कुत्ते तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

"सुन्दरी, एक भला आदमी ही आपके फाटक पर खड़ा है," बासिल सुंदर स्वरूप ने जवाब दिया।

बासिल के सामने फाटक खुल गया और उसे एक बढ़िया मकान नजर आया। मकान के दरवाजे और खिड़कियां खुली थीं।

"नमस्ते," उसने अन्दर दाखिल होते हुए कहा।

"नमस्ते," लड़की ने जवाब दिया। ओह, कितनी प्यारी थी वह लड़की! उसके रूप के सामने सूरज, चांद और उषा की उजली किरणें भी हेच थीं।

लड़की के सम्मुख सिर झुकाते हुए बासिल ने कहा –

"मैं बहुत लम्बा रास्ता तय करके आया हूं और इतना ही लम्बा रास्ता अभी मुझे और तय करना है। क्या मैं यहां एक रात गुजार सकता हूं?"

"बड़ी खुशी से," लड़की ने जवाब दिया। वह दयालु और अतिथिसत्कारी लड़की थी। उसने उसे खरीदार कालीन पर बिठाया और सभी तरह के बढ़िया खाने मेज पर लगाये।

मेज पर बैठे और खाते-पीते हुए वे बातचीत करते रहे। तब बासिल सुन्दर स्वरूप ने लड़की को बताया कि मैं किसलिए घर से इतनी दूर आया हूं। उसने पूछा –

"आप नहीं जानतीं कि पक्षी का दूध मैं कहां पा सकता हूं?"

"मैंने तो अपने जीवन में ऐसी खुराक और ऐसे इलाज की कभी चर्चा भी नहीं सुनी," लड़की ने जवाब दिया। "पर चूंकि तुम एक भले आदमी हो, इसलिए मैं यह जानने की कोशिश करूंगी जो तुम जानना चाहते हो। कुछ देर बाद मैं अपने भाई तेजस्वी सूर्य के पास जाऊंगी और उससे इसके बारे में पूछूंगी। अगर और कोई नहीं, तो वह यह अवश्य जानता है कि कौन कौन-सी चीजें दुनिया में कहां मिलती हैं।"

इस तरह सूरज की बहन इल्याना कोसिन्चाना से बासिल सुन्दर स्वरूप की भेंट हुई।

कुछ देर बाद जब इल्याना के थके-हारे मेहमान को नींद ने घर दबाया और वह गहरी नींद सो गया तो वह अपने भाई सूर्य के पास गई। उसने भाई से पूछा कि क्या उसे मालूम है कि पक्षी का दूध किस जगह मिल सकता है।

"बहुत दूर, बहुत ही दूर जाना होगा इसके लिए, प्यारी बहन। रास्ते में कई सप्ताह लग जायेंगे। लगातार पूरब की ओर चलते जाना चाहिए, तांबे के पहाड़ के परे तक। मगर दुध हासिल करना फिर भी मुमकिन नहीं, क्योंकि वह पक्षी वास्तव में एक अभूतपूर्व राक्षस है। उसका हर पंख बादल के समान बड़ा है और जो कोई भी उसे अपने आस-पास मिल जाता है, वह उसे उठाकर अपने घोंसले में ले जाता है और उसके बच्चे उस व्यक्ति के टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं।"

डर और दुख ने इल्याना के मन को दबोच लिया। वह जानती थी कि बासिल का अब क्या अन्त होनेवाला है। वह तो सीधे मौत के मुंह में पहुंच जायेगा। उसने तय कर लिया कि वह उसकी मदद करेगी। अगली सुबह को वह अपने अस्तबल से बारह पंखोंवाला घोड़ा निकाल लाई और बासिल को पेश करते हुए बोली –

"नेक नौजवान, तुम यह घोड़ा ले लो। यह तुम्हारे काम आयेगा और तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मगर बेशक किस्मत तुम्हारा साथ दे या न दे, तुम लौटते हुए मेरे घर पर जरूर ठहरना।"

सुन्दर बासिल का तो मन हुआ कि वह इस रूपवती और दयालु लड़की के होठों पर अपना दिल निकालकर रख दे। उसने बहुत स्नेह से उसे धन्यवाद दिया, घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया।

वह घोड़े पर चढ़ दूर चला।
पर्वत क्या रोकें राह भला!
लांघा खेतों-खलिहानों को।
नदियों औ' मैदानों को॥

आखिर उसे दूरी पर तांबे की दीवार-सी दिखाई दी। वह जैसे-जैसे नजदीक आता गया, दीवार अधिकाधिक ऊंची होती गई और आखिर एक पहाड़ी और फिर एक बहुत बड़े पहाड़ में बदल गई। जब वह तांबे के पहाड़ के दामन में पहुंचा तो देखा कि उसकी

चोटी आकाश को सहारा दिये हुए है। इतने ऊंचे पहाड़ तो वास्तव में ही इने-गिने हैं! बासिल ने उसे बहुत ग़ौर से देखा, नीचे से ऊपर तक उसने उसका जायज़ा लिया और तभी उसे काले बादल जैसे बड़े-बड़े पंखोंवाला एक अतिकाय पक्षी बैठा दिखाई दिया। यह पक्षी आकाश में चक्कर काटता उड़ता रहा, उड़ता रहा, फिर एक दिशा को मुड़ा और आंखों से ओझल हो गया।

बासिल ने घोड़े की लगामें कसीं और उसे पहाड़ पर दौड़ाना शुरू किया। घोड़े के सुम ठपाठप बज उठे। वह एक के बाद एक चट्टान को लांघता हुआ बासिल सुन्दर स्वरूप को सबसे ऊंची चोटी पर ले गया। बासिल ने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली तो उसे एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। तांबे के घोंसलों में राक्षस-पक्षी के बच्चे बैठे थे। अभी उनके पंख नहीं निकले थे, मगर उनमें से प्रत्येक सांड के आकार का था और वे सभी भूख के मारे ज़ोर-ज़ोर से चीख रहे थे। बासिल ने आसपास देखा। उसे तांबे की चट्टान में एक बड़ी-सी दरार नज़र आई। वह घोड़े समेत वहीं छिप कर बैठ गया। कुछ देर बाद राक्षस-पक्षी लौटा। वह एक के बाद एक घोंसले में आकर अपने बच्चों को दूध पिलाने लगा। जब वह उस घोंसले में गया, जिसके क़रीब बासिल छिपा हुआ था, तो उसने अपनी हिम्मत बटोरकर बर्तन आगे बढ़ा दिया और पक्षी ने उसमें भी कुछ दूध गिरा दिया। तब वह उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और अपनी प्यारी जान को बचाकर घोड़े को सरपट उड़ा ले चला। तभी एक बच्चा फिर से चिल्लाया और राक्षस-पक्षी ने घूमकर देखा तो उसे बासिल दिखाई दे गया। वह शैतान की तरह उसकी ओर झपटा, मगर उसके बराबर नहीं पहुंच सका। कारण कि उसके तो दो ही पंख थे, जबकि बासिल के घोड़े के थे बारह। इसलिए वह कहीं अधिक तेज़ी से उड़ सकता था।

वह घोड़े पर चढ़ दूर चला।
पर्वत क्या रोकें राह भला!
लांघा खेतों-खलिहानों को।
नदियों औ' मैदानों को॥

आख़िर वह इल्याना कोसिन्स्काना के घर पहुंच गया। उसने बासिल का हार्दिक स्वागत किया। और उससे कुछ देर रुककर आराम करने को कहा।

सुन्दर बासिल खा-पीकर सो रहा। मगर इल्याना ने, जो मामले की तह तक पहुंची हुई थी, पक्षी का दूध छिपाकर बासिल के बर्तन में गाय का साधारण दूध डाल दिया।

बासिल कुछ देर बाद जागा और अपना बर्तन उठाते हुए बोला –

"तुम सचमुच ही बहुत मेहरबान हो, मेरी बहन! तुम्हारे यहां आराम करने में बड़ा मजा है, मगर मुझे घर जाना चाहिए क्योंकि बीमार मां मेरा इन्तजार कर रही है।"

"वीर युवक, मैं कामना करती हूं कि तुम हंसी-खुशी घर पहुंचो। हां, फिर भी कभी यहां जरूर आना।"

बासिल ने उसे नमस्कार किया, विदा ली और अपने घोड़े को उड़ा ले चला।

जब वह अपने महल तक पहुंचा तो क्लोअन्त्सा ने ऐसे कराहना और छटपटाना शुरू किया मानो दर्द के मारे उसकी जान निकली जा रही हो।

"हाय, मैं मरी। हाय मेरी जान गई!" वह चिल्लाने लगी।

मगर जब सुन्दर बासिल ने बहलीज सांधी तो वह बोली –

"प्यारे बेटे, तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है! कब से मैं तुम्हारी राह देख रही हूं! क्या तुम दूध ले आये?"

"हां, ले आया हूं," बासिल ने जवाब दिया और बर्तन उसकी ओर बढ़ा दिया।

क्लोअन्त्सा ने बर्तन को मुंह लगाया और सारा दूध पी गयी। "धन्यवाद, प्यारे बेटे! मेरी तबीयत तो सुधरने भी लगी है," उसने कहा।

वह लेट गई और उसने ऐसे जाहिर किया मानो सो रही हो। मगर वास्तव में उसकी पलक तक नहीं झपकी। वह सोचती रही कि सुन्दर बासिल को अब ऐसी किस जगह पर भेजे कि उसका नाम-निशान ही बाक़ी न रहे। वह सोचती रही, सोचती रही और फिर से छटपटाने, आहें भरने और कराहने लगी। उसने ऐसा ढोंग किया कि मानो अब तो उसे पहले से भी कहीं ज्यादा तकलीफ़ हो।

"ओह, बेटे, मेरे प्यारे बेटे!" वह चिल्लाई। "बीमारी ने मुझे फिर से घर दबाया है। पर मैंने सपने में देखा है कि अगर मैं अंगली सूअर के बच्चे का मांस खा लूं, तो स्वस्थ हो जाऊंगी।"

"तो मैं जाकर अंगली सूअर के बच्चे का मांस ले आता हूं, मां। मैं तो तुम्हें तन्दुरुस्त देखना चाहता हूं," सुन्दर बासिल ने कहा।

वह उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया। बहुत समय तक वह घोड़े को दौड़ाता रहा, दौड़ाता रहा और आखिर इल्याना कोसिन्स्काना के घर पहुंचा।

"मेहमान के आने से खुशी हुई?" उसने पूछा।

"बेशक," इल्याना ने जवाब दिया। "मैं तुम्हारा हार्दिक स्वागत करती हूं।"

तब सुन्दर बासिल आराम करने के लिए बैठ गया और उसने इल्याना को बताया कि मुझ पर कौनसी नई मुसीबत आ पड़ी है।

"क्या तुम्हें मालूम है कि मुझे जंगली सूअर का बच्चा कहां मिल सकता है?" उसने पूछा। "मेरी मां फिर से बीमार हो गई है। उसका कहना है कि केवल जंगली सूअर के बच्चे का मांस ही उसकी जान बचा सकता है।"

"नहीं, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती। मगर तुम यहां कुछ देर रुककर आराम करो और शाम होने पर मैं अपने भाई सूरज से इसकी जानकारी प्राप्त कर लूंगी। उसे तो अवश्य ही यह मालूम होगा, क्योंकि वह आकाश से सभी कुछ देख सकता है और कोई भी चीज उसकी नजर से छिपी नहीं रहती।"

सुन्दर बासिल इल्याना के घर में रात बिताने के लिए ठहर गया। जब शाम हुई तो इल्याना का भाई सूर्य भी अपनी किरणें एक ओर को रख कर आराम करने के लिए आ गया।

इल्याना ने अपने भाई से पूछा –

"मैंने किसी को जंगली सूअरों की चर्चा करते सुना है। तुम्हें मालूम है कि वे दुनिया के किस भाग में होते हैं?"

"बहुत दूर, बहुत दूर, उत्तर में होते हैं, मेरी बहन," सूर्य ने जवाब दिया। "वे फूले हुए चरागाहों के पार, घने जंगलों में होते हैं।"

"भूनने के लिए जंगली सूअर का बच्चा कैसे हासिल किया जा सकता है?"

"यह तो असम्भव है, मेरी बहन। इतने घने हैं वे जंगल कि इन्सान की बात दूर, वहां तो मेरी किरणें भी नहीं पहुंच पातीं। मैं भी उन्हें केवल दोपहर के समय देख पाता हूं जब वे दलदल में लोटने-पोटने के लिए जंगल के छोर पर आते हैं। उनके दांत बहुत तेज होते हैं और उनके नजदीक जाने का मतलब है अपने टुकड़े-टुकड़े करवाना।"

इल्याना कोसिन्त्याना ने बासिल को यह सभी कुछ कह सुनाया। अब बासिल को यह मालूम हो गया था कि उसकी मंजिल कहां है और उसे कैसे खतरे से दो-चार होना है, वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया। उसने पहाड़ लांघे और लांघीं घाटियां, उसने नदियां फांदीं और खड्ड पीछे छोड़े, वह खुले मैदानों में से गुजरा और आखिर एक बहुत बड़े और घने जंगल में पहुंचा। इस जंगल में जहन्नुम का सा अंधेरा था। बासिल का बारह पंखोंवाला घोड़ा सबसे ऊंचे वृक्ष से भी ऊपर उठ गया और तब बासिल को वह दलदल नजर आया जिसकी इल्याना ने चर्चा की थी। लगभग दोपहर का

वक़्त था। जंगल से सूअरों की खुर-खुर सुनाई दी। तभी सूअर कीचड़ में लोटने-पोटने के लिए भागकर बाहर आने लगे।

बासिल ने सूअर का एक अच्छा-सा बच्चा चुन लिया, उसे पकड़ा, उसके साथ घोड़े पर सवार हुआ और यह आ और वह जा। मगर सूअरों ने उसे देख लिया था और वे ज़मीन पर अपनी थूथनियां रगड़ते हुए उसके पीछे दौड़े। मगर बासिल का घोड़ा उनसे कहीं तेज़ था, वरना उसका काम तमाम हो जाता। ख़ैर, घोड़े की फुर्ती ने उसे भयानक दरिन्दों के तेज़ दांतों से बचा दिया। अब घोड़ा अठखेलियां करता और मस्ती में झूमता हुआ जाने लगा और ख़ुद बासिल भी ख़ुशी से गीत गुनगुनाने लगा। उसे इस बात की ख़ुशी थी कि उसका यह साहसी कारनामा भी सिरे चढ़ गया था।

वापसी पर वह पहले की भांति फिर इल्याना कोसिन्त्याना के घर ठहरा। बासिल जब खाने-पीने में मस्त था और मज़े में ऊंघ रहा था, इल्याना ने अंगली सूअर के बच्चे की जगह साधारण सूअर का बच्चा लाकर रख दिया। बासिल को तो किसी चीज़ का सान-गुमान भी नहीं हुआ और इल्याना ने उसे बहुत ही मैत्रीपूर्ण ढंग से विदा किया।

क्लोआन्त्सा ने जब बासिल को लौटते देखा तो ऐसे ज़ोर से दांत पीसे कि उसके मुंह से चिंगारियां फूट निकलीं। मगर उसे अपने ग़ुस्से को दबाना और यह दिखाना पड़ा कि वह बहुत सख़्त बीमार है। बासिल ने जब उसके कमरे में प्रवेश किया तो वह बोली –

"ओह, मेरे बेटे, मेरे प्यारे बेटे, शुक्र है भगवान का कि तुम लौट आये और मेरी आंखों को तुम्हें फिर से देखना नसीब हुआ! तुम अगर कुछ दिन और न आते, तो मुझे कभी ज़िन्दा न पाते। इस सूअर के बच्चे को जल्दी से मार कर मुझे उसका मांस खिलाओ।"

बासिल ने सूअर के बच्चे को मारकर उसे कोयलों पर भूना और जब उसका रंग गुलाबी हो गया तो उसे क्लोआन्त्सा को खाने को दिया।

"मेरी तबीयत अब बेहतर हो गई है," जादूगरनी ने कहा और ऐसे ज़ाहिर किया कि उसे सचमुच स्वास्थ्यलाभ हुआ है। "मेरी नज़र भी अब पहले की तरह धुंधली नहीं रही।"

मगर सारा मांस खा लेने के बाद वह फिर से कराहने और ज़ोर-ज़ोर से हाय-वाय करने लगी। उसने बड़ी दर्दभरी आवाज़ में कहा –

"ओह, मेरे प्यारे, मेरे बदक़िस्मत बेटे, बहुत दूर-दूर की यात्रायें कर तुमने बड़े दुख उठाये हैं। पर अगर तुम वास्तव में ही मुझे स्वस्थ देखना चाहते हो तो तुम्हें एक बार फिर सफ़र पर जाना होगा। मेरी तबीयत फिर से ख़राब हो गई है। अगर तुम मृत-अमृत जल नहीं लाओगे तो मैं ज़िन्दा नहीं रह सकूंगी।"

"तो मैं जरूर आऊंगा, मां," सुन्दर बासिल ने जवाब दिया और वह फिर से रवाना हो गया।

वह मंज़िल दर मंज़िल बढ़ता गया। उसका मन बहुत खिन्न और परेशान था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहां जाये और कैसे मृत-अमृत जल लाये। निराश और उदास वह इल्याना कोसिन्झाना के घर पहुंचा और बहुत दुखी होते हुए उसने अपनी व्यथा सुनाई –

"प्यारी बहन," उसने इल्याना से कहा, "मजबूरी मुझे फिर से अनजानी राहों की खाक छानने के लिए घर से निकाल लाई है। मां की बीमारी किसी तरह भी दूर नहीं हो रही। अब उसने मुझ से मृत-अमृत जल लाने को कहा है। क्या तुम्हें मालूम है कि वह कहां मिल सकता है और मैं उसे कैसे हासिल कर सकता हूं?"

"तुम कुछ देर यहां रुककर आराम करो। हो सकता है कि मैं इस बार भी तुम्हारी मदद कर सकूं," इल्याना ने जवाब दिया।

उस वक़्त मुटपुटा हो चुका था अब वह अपने भाई सूर्य के पास गई। वह उसी समय अपने सफ़र से लौटा था। "मेरे प्यारे भाई सूरज," उसने कहा, "तुम्हें तो आकाश से सभी कुछ नज़र आता है। क्या तुम नहीं जानते कि मृत-अमृत जल कहां मिल सकता है?"

"बहुत दूर, बहुत ही दूर, मेरी बहन," सूर्य ने जवाब दिया, "नौ तिया सत्ताईस देशों और नौ तिया सत्ताईस सागरों के पार खेतों की रानी के देश में। मगर जो भी मृत-अमृत लेने गये हैं, उनमें से कभी कोई लौटकर नहीं आया। कारण कि उस देश की सीमा पर एक भयानक अजगर पहरा देता है। वह लोगों को उस देश में दाखिल तो होने देता है, मगर बाहर नहीं निकलने देता। वह अमृत पीता है और जो वीर अमृत को खोजते हुए उस देश में पहुंचते हैं, उन्हें मार डालता है। बहुत अरसे से मैं उनकी हड्डियां सुखा रहा हूं।"

सुन्दर बासिल को अब यह मालूम था कि उसकी मंज़िल कहां है और किस मुसीबत से उसका पाला पड़नेवाला है। मगर वह डरा-घबराया नहीं। उसने अपनी पेटी में लगी हुई चौड़ी तलवार और भारी डंडे को ठीक किया, इल्याना से विदा ली, उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और अपने रास्ते चल दिया। उसका रास्ता बहुत लम्बा था और वह लगातार अपना घोड़ा दौड़ाता रहा। उसने मैदान और सीमायें पार कीं, नदियां और सागर लांघे। उसने नौ तिया सत्ताईस सागर और नौ तिया सत्ताईस देश पीछे छोड़े और एक ऐसे शानदार राज्य में पहुंचा जैसा कि उसने पहले कभी नहीं देखा था। इस राज्य का प्राकृतिक सौन्दर्य तो बाक़ी सभी राज्यों से कहीं बढ़-चढ़कर था। यहां न तो कोई टहनी

ही सूखी हुई थी और न घास की कोई पत्ती ही। सभी पेड़-पौधे बहुत तेज़ी से बढ़ते थे, उनपर खूब फूल आते थे और वे फलों से लद जाते थे।

बासिल सुन्दर स्वरूप ने उस देश का चक्कर लगाया। और जो कुछ उसने देखा, उससे उसका दिल बाग़-बाग़ हो गया। घूमते-घूमते वह ऐसी दो चट्टानों के पास पहुंचा जिनमें से दो झरने झरझर करते बह रहे थे।

"यही होगा अमृत," बासिल ने सोचा। पूरी तरह यक़ीन करने के लिए उसने एक तितली पकड़ी, उसके टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें एक निर्झर के पानी में डुबोया। उसके टुकड़े जुड़ गये और वह पहले की तरह पूरी तितली हो गई। फिर उसने उसे दूसरे निर्झर के जल में डुबोया तो वह ज़िन्दा हो गई।

बासिल तो खुशी से फूला न समाया। उसने दो मशकें मृत-अमृत जल से भरीं और घोड़े को घर की ओर मोड़ दिया। मगर वह इस राज्य की सीमा तक पहुंचा ही था कि उसके इर्दगिर्द के वृक्ष उसी भांति चटकने और सांय-सांय करने लगे जैसा कि आंधी-तूफ़ान के समय होता है। आकाश में अंधेरा छा गया और तभी बासिल ने गुस्से से अपनी दुम इधर-उधर पटकते हुए दस सिरोंवाले एक अजगर को अपने सामने खड़ा पाया।

बासिल ने अपने एक हाथ में डंडा संभाला और दूसरे में तलवार। जब अजगर ने अपनी एक गर्दन उसकी ओर बढ़ाई तो उसने उसके सिर पर भारी डंडे से ज़ोरदार प्रहार किया और तलवार से उसकी गर्दन काट डाली। उसने दूसरा और तीसरा सिर भी ऐसे ही काट डाला। अजगर ने अब यह महसूस किया कि उसके सिर पर मौत मंडरा रही है, इसलिए वह आकाश में ऊंचा उड़ चला। मगर बासिल का घोड़ा और भी अधिक ऊंचा उड़ा और बासिल ने अजगर के दस के दस सिर काटकर उसे ज़मीन पर गिरा दिया।

बासिल अब बिना किसी बाधा के अपना घोड़ा बढ़ाता गया और आख़िर वह इत्याना के घर पहुंचा। ज़ोरदार लड़ाई और लम्बे सफ़र के बाद वह बहुत थक गया था और इसलिए आराम करने के लिए लेट गया। इसी समय इत्याना ने उन दोनों मशकों की जगह साधारण पानी से भरी हुई दो मशकें रख दीं। ज़ाहिर है कि बासिल के दिमाग़ में तो भूलकर भी यह बात नहीं आई कि इत्याना भी, जिसने उसकी इतनी मदद की थी, कोई ऐसी गड़बड़ कर सकती है। उसने अच्छी तरह आराम किया, फिर अपने घोड़े पर सवार हुआ और घर की ओर चल दिया।

जब क्लोआन्त्सा ने उसे वापस आते देखा तो वह जल-भुनकर कोयला हो गई, उसका दिल ज़हर से भर गया। उसने थोड़ा-सा पानी पीकर यह ज़ाहिर किया कि उसकी

तबीयत बेहतर हो गई है और फिर वह यह सोचने लगी कि बासिल को कैसे दूसरी दुनिया में पहुंचाये।

लम्बे सफ़र से थके-हारे बासिल को उसने थोड़ा आराम करने दिया और फिर उसे अपने पास बुलाकर प्यार से चूमा और बोली –

"मेरे प्यारे बेटे, मेरे दिल के टुकड़े बासिल, तुमने बहुत लम्बे सफ़र किये हैं, बहुत-से रास्तों-राहों की धूल फांकी है। शायद तुम अपनी बहुत-सी ताक़त खर्च कर बैठे हो! आओ, देखें तो, तुम इस रेशमी रस्सी को तोड़ सकते हो या नहीं?"

इतना कहकर उसने रेशमी रस्सी निकाली और उसके गिर्द बांध दी।

"हां तो, मेरे लाड़ले," उसने कहा, "अपना पूरा ज़ोर लगाओ ताकि यह पता चल सके कि इतनी बड़ी दुनिया में घूमते और अनजाने रास्तों पर भटकते हुए तुम अपनी सारी ताक़त तो खो नहीं बैठे?"

बासिल ने अपना तन अकड़ाया और रस्सी पर ज़ोर डाला। वह कई जगह से टुकड़े-टुकड़े हो गई।

"अच्छा, अब मैं यह आज़मा कर देखती हूं कि तुम दो रस्सियां तोड़ सकते हो या नहीं?" चुड़ैल ने उसे दो रस्सियों से बांध दिया।

मगर बासिल ने पहले की भांति दो रस्सियां भी तोड़ डालीं।

"ओह, तुम में अभी तक एक वीर की शक्ति बाक़ी है। मगर अब हम यह देखेंगे कि तुम में कुछ शक्ति खोई भी है या नहीं?" चुड़ैल ने कहा और उसे तीन रेशमी रस्सियों से बांध दिया।

बासिल ने अपनी पेशियों को फुलाया, रस्सियों पर ज़ोर डाला, मगर वह उन्हें तोड़ नहीं पाया। उसने फिर से कोशिश की, फिर से पेशियां फुलाईं और रस्सियों पर ज़ोर डाला, मगर वे उसके तन में धुसती और उसे अधिक ज़ोर से कसती चली गईं। उसने तीसरी बार कोशिश की और अपना पूरा ज़ोर लगाया, रेशमी रस्सियां उसके मांस को चीरती हुई हड्डियों तक जा पहुंचीं, मगर टूटीं नहीं।

बलोआन्त्सा खुशी से एक टांग पर कूदने, लट्टू की तरह घूमने और शोर मचाने लगी –

"अजगर, तुम कहां छिपे हुए हो? आओ निकल कर। जल्दी से आकर बासिल का काम तमाम कर डालो!"

अजगर खुशी से सूं-सां करता हुआ उस जगह से बाहर निकला जहां वह छिपा हुआ था। उसने एक चौड़ी सी तलवार ली और करमकल्ले की तरह बासिल के टुकड़े-

टुकड़े कर डाले। फिर उसने टुकड़ों को इकट्ठा किया, उन्हें दो थैलों में भरा, काठी के साथ लटकाया और घोड़े को चाबुक मारते हुए वह चिल्लाया –

"ए गन्धे घोड़े! जहां से इसे खिम्बा लाया था, वहीं अब इसकी लाश ले जा!"

घोड़ा उड़ चला, बिल्कुल भूत-प्रेत की तरह। उसके सुमों के नीचे धरती बज रही थी। वह इल्याना के घर की ओर चल दिया। कारण कि यहीं तो उसने जन्म लिया था, यहीं पाला-पोसा गया था, बड़ा हुआ था और यहीं उसकी देख-भाल हुई थी। वह फाटक के सामने आकर रुक गया।

इल्याना बाहर आई। मगर वहां उसे लम्बे सफ़र के बाद आराम करने और पनाह पाने के लिए प्रार्थना करनेवाला कोई घुड़सवार नज़र नहीं आया। इसके बजाय उसने अपने घोड़े को खड़े पाया, पसीने से तर-ब-तर और खून के धब्बों से सना हुआ। इल्याना बहुत दुखी होकर घोड़े की ओर लपकी, उसने थैले नीचे उतारकर उन्हें खोला और उनमें से उसे बासिल सुन्दर स्वरूप के तन के टुकड़े मिले।

"ओह, बासिल, बेचारे बदक़िस्मत बासिल!" वह चिल्लाई। "तो उन्होंने तुम्हें मार डाला!"

इतना कहकर उसने बासिल के तन के टुकड़े जोड़ने शुरू किये और उन्होंने पहले जैसी शक्ल ले ली।

इतना करने के बाद वह अपने भण्डार में गई और वहां से मृत-अमृत जल, जंगली सूअर का बच्चा और पक्षी का दूध निकाल लाई। जहां से मांस के टुकड़े गायब थे, वहां उसने सूअर के मांस के टुकड़े जमा दिये। इसके बाद उसने उसके ऊपर मृत जल छिड़का। अलग-अलग टुकड़े आपस में जुड़ गये। फिर उसने उसे अमृत में स्नान कराया और वीर युवक खिम्बा हो गया। उसने गहरी सांस लेकर कहा –

"ओह, कितनी गहरी नींद सोया रहा हूं मैं!"

"अगर मैं यहां न होती तो तुम तो सदा के लिए सोये रहते और कभी पलक न खोलते," पक्षी के दूध का बर्तन उसके होठों से लगाते हुए वह बोली।

सुन्दर बासिल दूध पीने लगा और हर घूंट के साथ उसमें नई ताक़त आती गई। अब वह सारा दूध पी चुका तो पहले की तुलना में कहीं अधिक ताक़तवर हो गया। अब वह अपने डंडे के एक ही वार से चट्टान को चूर चूर कर सकता था।

वह ज़मीन से उठा, अपने को झकझोर कर उसने कमखोरी दूर की और यह याद आते ही कि अजगर ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया था, झटपट अपना डंडा उठाया और महल की ओर चल दिया।

मूसलधार बारिश के समान बासिल के दिल में बदले की भावना भी बहुत तेज़ थी। वह चलता गया, चलता गया; अपने पैरों पर उसने ज़रा भी तरस नहीं खाया। आखिर वह महल में जा पहुंचा। चुड़ैल और अजगर मेज़ पर बैठे दावत उड़ा रहे थे और बासिल की मां पास खड़ी हुई चीज़ें परोस रही थी।

जब उन्होंने बासिल को खाने के कमरे में आते देखा तो उन दोनों दुष्ट आत्माओं को अपने पैरों तले की ज़मीन खिसकती-सी लगी। मगर बासिल ने उन्हें भयभीत होने का भी अवसर नहीं दिया। उसने एक हाथ से चुड़ैल को और दूसरे से अजगर को पकड़ा और उन्हें घसीटता हुआ आंगन में ले गया। वहां उसने उनके टुकड़े टुकड़े कर डाले। फिर उसने तांबे का चूल्हा जलाया और उन्हें भून डाला ताकि न तो धरती पर, न जल में, न खुले मैदानों और मोतियों से भरे सागर में या नीलाकाश में ही जहां उकाब उड़ानें भरते हैं, कहीं उनका नाम-निशान बाक़ी न रहे।

ऐसा करने के बाद बासिल ने बड़े प्यार से अपनी मां को गले लगाया, उसे चूमा और तसल्ली दी।

बहुत जल्दी उन्हें और भी बड़ी खुशी नसीब हुई। बासिल सुन्दर स्वरूप ने इल्याना कोसिन्द्याना से अनुरोध किया कि वह उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर ले। इल्याना राज़ी हो गई।

मेहमान आये अनगिनत, जाने-पहचाने भी और अनजाने भी। खूब ही बढ़िया दावत उड़ाई उन्होंने। मेहमानों की आवभगत कर रहा था खुद इल्याना का भाई यानी सूरज। वह लगातार जाम खनखनाता हुआ सभी के लिए सुख-सौभाग्य की कामना कर रहा था, सभी के साथ अपनी खुशियां बांट रहा था।

शादी के बाद बासिल और इल्याना प्यार-मुहब्बत और सुख-शान्ति का जीवन बिताने लगे। अगर उनका देहान्त नहीं हुआ, तो वे आज भी जिन्दा होंगे और जीवन के मज़े लूट रहे होंगे।

समझदार ज़रनियार

आज़रबैजानी लोक-कथा

जानते हो मैं तुम्हें किसके बारे में कहानी सुनाऊंगा? एक सौदागर के बारे में, जिसका नाम था ममद। वह मिसार का रहनेवाला था, अनजाने देशों की यात्रा और सभी तरह के मालों का व्यापार किया करता था।

एक बार उसने बहुत ही दूर के किसी देश में जाने का इरादा बनाया। उसने सभी तरह के बहुत-से माल खरीदे, कई नौकर अपने साथ लिये, परिवार से विदा ली और अपना कारवां लेकर चल दिया।

वह एक जगह और फिर दूसरी जगह गया और आखिर एक ऐसे नगर में पहुंचा जिसका उसने पहले नाम तक नहीं सुना था।

ममद ने अपनी लम्बी यात्रा के बाद यहां आराम करने का इरादा किया और वह अपने नौकरों-चाकरों के साथ एक सराय में जाकर ठहर गया।

वह जब खा-पी रहा था तो एक अजनबी उसके पास आया और बोला –

"ए सौदागर, चूंकि तुम इस शहर के तौर-तरीक़े नहीं जानते, इसलिए ज़रूर बहुत दूर से यहां आये होगे।"

"क्या तौर-तरीक़े हैं इस शहर के?" ममद ने पूछा।

"मैं तुम्हें बताता हूं। यहां आनेवाला हर सौदागर हमारे शाह को कोई बढ़िया

तोहफ़ा पेश करता है। बदले में शाह सौदागर को अपने महल में बुलाकर उसके साथ शतरंज की बाज़ी खेलता है।"

अब क्या किया जाये? ममद सोच में पड़ गया। चाहे-अनचाहे उसे शाह के पास जाना ही होगा। चुनांचे सब से बढ़िया कपड़े चुनकर और उन्हें सोने के पास में सजाकर वह महल की ओर चल दिया।

शाह ने तोहफ़े लिये और सौदागर से पूछा कि वह किस नगर से आया है, किन चीज़ों का व्यापार करता है और कहां-कहां की यात्रा कर चुका है। ममद ने सब कुछ सच सच बताया। शाह ने सुनने के बाद कहा –

"आज रात को मेरे महल में आना, हम शतरंज की बाज़ी खेलेंगे।"

शाम को ममद महल में गया। शाह बिसात बिछाये हुए उसका इन्तज़ार कर रहा था।

"मेरी शर्तें ये हैं, सौदागर," शाह ने कहा, "मेरे पास सधी हुई एक बिल्ली है। वह शाम से सुबह तक यानी पूरी रात जलती हुई सात मोमबत्तियों को अपनी पूंछ पर टिकाये रह सकती है। अगर हमारी बाज़ी के दौरान वह उन्हें ज्यों का त्यों टिकाये रहेगी तो तुम्हारी सारी दौलत मेरी हो जायेगी और मैं अपने आदमियों को हुक्म दूंगा कि वे तुम्हें बन्दी बनाकर काल-कोठरी में डाल दें। अगर बिल्ली अपनी जगह से ज़रा भी हिल गई तो मेरा सारा खज़ाना तुम्हारा हो जायेगा और तुम मेरे साथ मनमाना बर्ताव कर सकोगे।"

अब बेचारा सौदागर क्या करता? भागना असम्भव था, विरोध करने का सवाल ही नहीं उठता था। शाह की शर्तें मानने के सिवा कोई चारा नहीं था। अब वहां बैठा हुआ अपने को कोस रहा था कि क्यों इस नगर में आ फंसा।

"धन-दौलत की बात तो एक तरफ़, यहां तो आदमी जान से भी हाथ धो सकता है," उसने सोचा।

शाह ने अपनी सधी हुई बिल्ली को बुलाया जो अपनी पूंछ फैलाकर शाह के सामने बैठ गई।

"चिराग़ लाये जायें!" शाह ने हुक्म दिया।

नौकर फ़ौरन सात मोमबत्तियां ले आये और वे बिल्ली की पूंछ पर रख दी गईं।

शाह ने मोहरे उठाये और खेल शुरू हुआ।

मोहरे चलता हुआ सौदागर बिल्ली पर नज़र डालता रहा। बिल्ली तो बिल्कुल बुत बनी बैठी थी, न हिलती थी, न डुलती थी।

इस तरह एक दिन और एक रात बीती, फिर दो दिन और दो रातें बीतीं और ममद शाह के साथ शतरंज खेलता रहा और बिल्ली पहले की तरह बुत बनी बैठी रही।

आखिर ममद बिल्कुल थक गया।

"मैं अब और नहीं खेल सकता!" वह चिल्लाया। "आप जीत गये, जहांपनाह!"

शाह तो इसी चीज का इन्तजार कर रहा था। उसने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—

"सौदागर का सारा माल और सोना मेरे पास ले आओ। रहा सौदागर, तो उसके हाथ-पैर बांधकर उसे काल-कोठरी में फेंक दो!"

सो शाह के नौकरों ने ममद को पकड़कर उसके साथ वही कुछ किया जैसा कि शाह ने हुक्म दिया था।

काल-कोठरी में पड़ा हुआ ममद अपने को भला बुरा कहता कि क्यों मैंने इस शहर के पास से ही गुजर जाने की अक्लमन्दी की। वह बड़ी जबान से शाह और उसकी सधी हुई बिल्ली को भी गालियां देता रहा।

मगर हम ममद को यहीं छोड़कर उसकी बीवी खरनियार की चर्चा करते हैं।

खरनियार घर बैठी अपने पति के लौटने का इन्तजार कर रही थी। मगर वह न तो आया और न उसके आने की कोई खबर ही मिली।

"शायद उस पर कोई मुसीबत आ गई है," उसने सोचा।

बहुत समय तक वह इसी तरह की चिन्ताओं में घुलती रही। आखिर एक दिन ममद का नौकर लौटा। उसका चेहरा धूल-मिट्टी से सना हुआ था और कपड़े तार-तार हुए पड़े थे। वह भागता हुआ आया और बोला—

"मालकिन, मालकिन! बहुत दूर-दराज देश के एक शाह ने मालिक को कैद कर लिया है और सारा माल-मता और सोना छीन लिया है। मैं अकेला बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर भाग आया हूं। अब हम क्या करें?"

खरनियार ने नौकर से कहा कि जो कुछ बीती है, उसका सारा हाल सुनाये। पूरा हाल सुनने के बाद उसने हुक्म दिया कि ढेर सारे चूहे पकड़कर एक बहुत बड़े बक्से में बन्द कर दिये जायें। तब उसने कुछ सोना-चांदी लिया, मर्दाना कपड़े पहने, फ़र की ऊंची टोपी के नीचे अपने लम्बे बाल छिपाये और कारवां का सरदार बनकर अपने पति को छुड़ाने चल दी।

वह रास्ते में न तो कहीं रुकी और न उसने किसी तरह की देर होने दी। आखिर वह उस शहर में पहुंच गई जहां उसका पति काल-कोठरी में पड़ा मुसीबत के दिन काट रहा था।

उसने अपने कुछ नौकरों को तो यह हुक्म दिया कि वे सराय में उसका इन्तज़ार करें और कुछ को उसने अपने साथ शाह के महल में चलने को कहा।

तब उसने ढाले हुए सोने का बड़ा-सा थाल लिया, उसमें बहुत-से बहुमूल्य उपहार रखे और महल की तरफ़ चल दी। उसके नौकर चूहों से भरा हुआ सन्दूक़ उठाये उसके पीछे-पीछे आये।

महल के क़रीब पहुंचने पर ज़रनियार ने अपने नौकरों से कहा –

"जब मैं शाह के साथ शतरंज खेलूंगी तो तुम एक-एक करके बैठक में चूहे छोड़ते जाना।"

नौकर सन्दूक़ के साथ बैठक के दरवाज़े पर रुक गये और ज़रनियार अन्दर गई। उसने शाह से कहा –

"शाहंशाह, आपकी उम्र दराज़ हो! आपके मुल्क के तौर-तरीक़ों के मुताबिक़ मैं आपकी ख़िदमत में क़ीमती तोहफ़े लेकर आया हूं।"

शाह ने उसे मर्द समझा, उसकी बड़ी इज़्ज़त की और तरह-तरह के बढ़िया पकवान उसके सामने पेश किये। फिर उसने ज़रनियार को शतरंज की बाज़ी खेलने के लिए कहा।

"शाहंशाह, आपकी शर्तें क्या हैं?" ज़रनियार ने पूछा।

शाह ने जवाब दिया –

"जब तक मेरी सधी हुई बिल्ली अपनी जगह से नहीं हिलती, हम खेलते रहेंगे।"

"और अगर आपकी सधी हुई बिल्ली अपनी जगह से हिल गई, तो?" ज़रनियार ने पूछा।

"तब मैं अपनी हार मान लूंगा और आप मेरे साथ मनमाना बर्ताव कर सकेंगे।"

"ठीक है," ज़रनियार ने कहा। "ऐसा ही सही!"

शाह ने अपनी सधी हुई बिल्ली बुलाई। बिल्ली आई और बड़ी शान से शाह के सामने क़ालीन पर बैठ गई। तब शाह के नौकर सात मोमबत्तियां लिए हुए आये और उन्हें बिल्ली की पूंछ पर टिका दिया।

अब शाह ने ज़रनियार के साथ शतरंज की बाज़ी शुरू की। शाह खेलता हुआ मुस्कराता रहा और इस बात का इन्तज़ार करता रहा कि जवान सौदागर कब अपनी हार मानता है।

ज़रनियार के नौकरों ने अब सन्दूक़ खोला और एक चूहा शाह की बैठक में भेज दिया।

बिल्ली ने जैसे ही चूहे को देखा वैसे ही उसकी आंखों में चमक आ गई और उसने

मानो अपनी जगह से हिलना चाहा। मगर शाह ने उस पर ऐसी कड़ी नज़र डाली कि वह जहां की तहां ही बैठी रह गई मानो पत्थर हो गई हो।

कुछ ही देर में ज़रनियार के नौकरों ने बैठक में बहुत-से चूहे छोड़ दिये। चूहे फ़र्श पर इधर-उधर दौड़ने और दीवारों के साथ उछलने-कूदने लगे। सधी हुई बिल्ली के लिए अब अपने को क़ाबू में रखना नामुमकिन हो गया। उसने ज़ोर से म्याऊं की और अचानक उछलकर खड़ी हो गई (जिससे सातों मोमबत्तियां फ़र्श पर गिर गयीं) और कमरे में इधर-उधर भागती हुई चूहों का पीछा करने लगी। शाह चीखता-चिल्लाता रहा, मगर उसकी सधी हुई बिल्ली ने उसकी कुछ परवाह न की।

अब ज़रनियार ने अपने नौकरों को आवाज़ दी। वे भागकर बैठक में आये। उन्होंने शाह की मुश्कें कस लीं और लगे उस पर तड़ातड़ कोड़े बरसाने। आख़िर शाह रहम की भीख मांगने लगा और बोला –

"मैं अपने सभी क़ैदियों को रिहा कर दूंगा और उनका सारा माल, सारी दौलत वापस कर दूंगा। आप लोग सिर्फ़ मेरी जान बख़्श दें!"

ज़रनियार के नौकर उसे कोड़े लगाते रहे और शाह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाता रहा। उसके नौकरों ने शाह की चीख-पुकार सुनी मगर वे उसकी मदद को नहीं आये। वे ख़ुद उसके ज़ुल्म और लालच से तंग आ चुके थे।

अब ज़रनियार ने अपने पति और अन्य सभी क़ैदियों को आज़ाद करने का हुक्म दिया और शाह को काल-कोठरी में डलवा दिया।

इसके बाद ज़रनियार और ममद अपने शहर मिसार लौट आये। वे अपने देश में रहते हुए हंसी-ख़ुशी का जीवन बिताते, मौज मनाते और खाते-पीते रहे। आपको भी ऐसा ही करना चाहिए।

आसमान से तीन सेब गिरे हैं। एक मेरे लिए है, दूसरा इस कहानी को सुनाने वाले और तीसरा सुननेवाले के लिए है।

कामचोर शहीदुल्ला

आज़रबैजानी लोक-कथा

बहुत पुराने ज़माने की बात है कि कहीं शहीदुल्ला नाम का एक आदमी रहता था, एकदम आलसी और कामचोर।

उसके बीवी-बच्चे अक्सर फ़ाक़े करते और नये कपड़े ख़रीदने का तो सपना तक न देख पाते।

शहीदुल्ला की बीवी जब कामचोरी के लिए उसे डांटती-फटकारती तो वह कहता—

"तुम कोई फ़िक्र, कोई ग़म न करो! बेशक हम आज ग़रीब हैं, मगर जल्द ही अमीर हो जायेंगे।"

"वह कैसे?" उसकी बीवी हैरान होकर पूछती। "यह हो ही कैसे सकता है जब तुम उंगली तक नहीं हिलाते और इसी तरह निठल्ले बैठे रहकर हर दिन गुज़ार देते हो?"

मगर शहीदुल्ला फिर यही दोहराता—

"थोड़ा सब्र करो! वह दिन ज़रूर आयेगा जब हम मालामाल हो जायेंगे।"

बीवी-बच्चे इन्तज़ार करते रहे, मगर कोई तब्दीली न हुई और वे ग़रीब के ग़रीब ही बने रहे।

"अब इन्तज़ार करना बिल्कुल बेकार है," बीवी ने कहा। "अगर यही हालत रही तो हम भूखों मर जायेंगे!"

चुनांचे शहीदुल्ला ने किसी अक़्लमन्द आदमी के पास जाकर यह पूछने का फ़ैसला किया कि मैं ग़रीबी से कैसे अपना पिंड छुड़ा सकता हूं। उसने सफ़र की तैयारी की और रवाना हो गया।

शहीदुल्ला तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। रास्ते में उसे एक भेड़िया मिला, दुबला-पतला, हड्डियां निकली हुई।

"कहां जा रहे हो, भले मानस?" भेड़िये ने पूछा।

"किसी अक़्लमन्द आदमी के पास यह जानने के लिए जा रहा हूं कि मैं अमीर कैसे बन सकता हूं," शहीदुल्ला ने जवाब दिया।

भेड़िये ने उसकी पूरी बात सुनने के बाद कहा—

"तुम जा तो रहे ही हो, मेहरबानी कर उस अक़्लमन्द आदमी से यह भी पूछ लेना कि मैं क्या करूं। बात यह है कि पिछले तीन साल से मेरे पेट में सख़्त दर्द रहता है। मैं दिन-रात इसी से परेशान रहता हूं। शायद वह यह बता सके कि कैसे मैं इससे निजात पा सकता हूं।"

"अच्छी बात है," शहीदुल्ला ने कहा, "मैं पूछ लूंगा।"

वह आगे चल दिया।

वह तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आख़िर उसे सड़क के किनारे सेब का एक पेड़ नज़र आया।

"कहां जा रहे हो, भले मानस?" सेब के पेड़ ने पूछा।

"किसी अक़्लमन्द आदमी के पास यह जानने के लिए कि कामकाज किये बिना भले की ज़िन्दगी कैसे गुज़ारी जा सकती है।"

"मेहरबानी कर उससे यह भी पूछ लेना कि मैं क्या करूं," सेब के पेड़ ने कहा। "हर बसन्त में मुझ पर फूल आते हैं, मगर वे फ़ौरन ही मुरझाकर गिर जाते हैं और मुझ पर फल कभी नहीं लगते। उस अक़्लमन्द आदमी से पूछना कि ऐसा क्यों होता है।"

"अच्छी बात है, मैं पूछ लूंगा," शहीदुल्ला ने जवाब दिया और वह आगे बढ़ चला। वह फिर तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आख़िर एक गहरी झील के तट पर पहुंचा।

अचानक एक बड़ी-सी मछली पानी में से सिर बाहर निकालकर बोली—

"भले मानस, कहां जा रहे हो?"

"किसी अक़्लमन्द आदमी के पास, उसकी सलाह और मदद लेने।"

"मेहरबानी कर मेरी ओर से भी कुछ पूछ लेना। पिछले सात साल से मेरे गले में सख्त दर्द रहता है। उससे कहना कि इसका इलाज बता दे।"

"अच्छी बात है, पूछ लूंगा," शहीबुल्ला ने कहा और आगे चल दिया।

वह तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आखिर गुलाब की झाड़ियों के एक झुरमुट के क़रीब पहुंचा। वहां उसे एक झाड़ी के नीचे सम्भी सफ़ेद दाढ़ी वाला एक बुजुर्ग बैठा दिखाई दिया।

शहीबुल्ला को देखते ही उसने पूछा –

"तुम क्या चाहते हो, शहीबुल्ला?"

शहीबुल्ला तो हक्का-बक्का रह गया।

"आप मेरा नाम कैसे जानते हैं?" उसने पूछा। "शायद आप ही वह अक़्लमन्द आदमी हैं मैं जिसकी तलाश में हूं?"

"हां, मैं ही हूं वह आदमी," बूढ़े ने जवाब दिया। "जल्दी से बताओ कि तुम मुझ से क्या चाहते हो?"

शहीबुल्ला ने उसे बताया कि वह क्यों आया है और क्या चाहता है।

"इसके अलावा तुम मुझसे और कुछ नहीं पूछना चाहते?" अक़्लमन्द आदमी ने पूछा।

"हां, पूछना तो है," शहीबुल्ला ने जवाब दिया और उसने भेड़िये, सेब के पेड़ और मछली की तकलीफ़ों का ज़िक्र किया।

तब अक़्लमन्द आदमी ने कहा –

"मछली के गले में एक बहुत बड़ा हीरा फंस गया है। हीरा निकाल लेने पर मछली का दर्द दूर हो जायेगा। सेब के पेड़ के नीचे चांदी से भरा एक बर्तन दबा हुआ है। इस बर्तन को जैसे ही वहां से निकाल लिया जायेगा, वैसे ही उस पेड़ के पत्ते मुरझाना बन्द कर देंगे और उसपर फल लगना शुरू हो जायेगा। जहां तक भेड़िये का सम्बन्ध है, तो उसे उस कामचोर को हड़प जाना चाहिए जो सबसे पहले उसके सामने आ जाये। उसके पेट का दर्द तभी दूर होगा।"

"और मेरी प्रार्थना?" शहीबुल्ला ने पूछा।

"सो तो स्वीकार की जा चुकी है। अब जाओ!" बुजुर्ग ने जवाब दिया।

शहीबुल्ला की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने अक़्लमन्द आदमी से और कुछ भी नहीं पूछा और घर की ओर चल दिया।

चलाचल, चलाचल वह उस झील के तट पर पहुंचा जहां वह मछली बेसब्री से उसका इन्तज़ार कर रही थी।

"तो अक़्लमन्द आदमी ने मेरे लिए क्या सलाह दी है?" उसने पूछा।

"तुम्हारे गले में एक बड़ा-सा हीरा फंसा हुआ है। उसके निकलते ही तुम्हारा दर्द दूर हो जायेगा," शहीदुल्ला इतना कहकर चलने को तैयार हुआ।

"भले मानस, मुझपर तरस खाओ," मछली चिल्लाई। "उस हीरे को मेरे गले से निकाल लो! इससे मेरा दर्द दूर हो जायेगा और तुम्हें हीरा मिल जायेगा!"

"ओह, मुझे क्या लेना है इस पचड़े में पड़कर!" शहीदुल्ला ने कहा। "मैं तो उंगली हिलाये बिना ही मालामाल हो जाऊंगा!" इतना कहकर वह अपनी राह चल दिया।

चलाचल, चलाचल वह सेब के पेड़ के पास पहुंचा। उसे देखते ही पेड़ की सभी शाखाएं झूलने लगीं, उसके पत्ते सरसराने लगे।

"कहो तो, अक़्लमन्द आदमी ने मेरी तकलीफ़ का क्या इलाज बताया है?" उसने पूछा।

"उसने कहा है कि तुम्हारी जड़ों के नीचे चांदी से भरा हुआ एक बड़ा-सा बर्तन दबा पड़ा है। उसे बाहर निकालना ज़रूरी है। तब तुम्हारे फूल नहीं मुरझायेंगे और तुम पर सेब लगने शुरू हो जायेंगे।"

इतना कहकर शहीदुल्ला ने आगे जाना चाहा।

तब सेब के पेड़ ने गिड़गिड़ाकर कहा—

"शहीदुल्ला, मेहरबानी कर मेरी जड़ों के नीचे से चांदी से भरी हुई हांड़ी निकाल लो। इस तरह तुम्हारा भी भला हो जायेगा, तुम्हें चांदी मिल जायेगी!"

"ओह नहीं, मैं यह मुसीबत उठाने को तैयार नहीं हूं। अक़्लमन्द ने कहा है कि मैं तो हर सूरत में अमीर हो जाऊंगा।" शहीदुल्ला इतना कहकर आगे चल दिया।

वह चलता गया, चलता गया और आख़िर हड़ीले भेड़िये से उसकी मुलाक़ात हुई। वह तो शहीदुल्ला को देखते ही बेसब्री से कांपने लगा।

"हां, तो अक़्लमन्द आदमी ने मेरे लिए क्या सलाह दी है? मुझे झटपट बता दो, इन्तज़ार न कराओ!.."

"जो कामचोर सब से पहले सामने आ जाये, उसे ही हड़प जाओ। तुम्हारे पेट का दर्द फ़ौरन ग़ायब हो जायेगा," शहीदुल्ला ने कहा।

भेड़िये ने शहीदुल्ला को धन्यवाद दिया और फिर यह पूछा कि रास्ते में उसने क्या कुछ देखा, क्या कुछ सुना। शहीदुल्ला ने मछली और सेब के पेड़ के साथ हुई अपनी मुलाक़ातों का ज़िक्र किया और यह बताया कि उन्होंने उससे क्या प्रार्थना की थी।

"मगर मैंने उनकी बातों पर कान नहीं दिया। कारण कि मैं तो हर सूरत अमीर हो जाऊंगा," उसने कहा।

भेड़िये ने यह सब सुना और बहुत खुश हुआ।

"अब मुझे कामचोर की तलाश करने की ज़रूरत नहीं," उसने कहा। "वह तो खुद ही मेरे पास आ गया है। दुनिया में शहीदुल्ला से बढ़कर बेवक़ूफ़ और कामचोर दूंढ़े नहीं मिलेगा।"

वह शहीदुल्ला पर झपटा और उसे पूरे का पूरा ही हड़प गया।

यों किस्सा तमाम हुआ कामचोर शहीदुल्ला का।

आकाश से तीन सेब गिरे हैं। एक है कहानी सुनानेवाले के लिए, दूसरा सुननेवाले के लिए और तीसरा बाक़ी सभी के लिए।

अनाहत

आर्मीनियाई लोक-कथा

१

वसन्त की एक सुहानी सुबह को राजा बाचे का इकलौता बेटा बाघाघान अपने छज्जे में खड़ा था। बगीचे में सभी तरह के पक्षी चहचहा और गा रहे थे, मगर बुलबुल तो बुलबुल ठहरी, कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर पा रहा था। जैसे ही उसने अपनी तान छेड़ी, बाक़ी सभी परिन्दे ख़ामोश हो गये। वे ध्यान से उसे सुनने लगे ताकि उसके गाने का राज़ जान सकें। कोई पक्षी उसकी चहक की नक़ल करता, कोई उसके तराने की और कोई उसके तीखेपन की। फिर वे तीनों सीखी हुई तानों को मिलकर दोहराते। मगर बाघाघान इनकी ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, क्योंकि उसका दिल बहुत परेशान था।

उसकी मां, राजा की बेगम अशखेन उसके पास आई और बोली –

"प्यारे बेटे, मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है कि तुम दुख-सागर में गहरे ग़ोते लगा रहे हो। तुम अपने दुख को हम से न छिपाओ और अपनी उदासी की वजह बताओ।"

"ज़िन्दगी की रंगीनियों में मुझे दिलचस्पी नहीं है, मां," वाचाघान ने जवाब दिया। "मैं तो अकेला ही किसी एकान्त जगह में जाना चाहता हूं जैसे, मिसाल के लिए, आल्तिक गांव।"

"सच? मगर क्या तुम इसलिए तो वहां नहीं जाना चाहते कि तुम्हारी समझदार अनाइत वहां रहती है?"

"आपको उसका नाम कैसे मालूम हुआ?"

"हमारे बगीचे में रहनेवाली बुलबुलों ने मुझे उसके बारे में बताया है। मेरे बेटे, मेरे प्यारे वाचाघान, तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि तुम एक अफ़ग़ान राजा के बेटे हो। राजा के बेटे की दुलहन भी किसी राजा की ही बेटी या कोई राजकुमारी होनी चाहिए, साधारण किसान की बेटी नहीं। आर्जिया के राजा की तीन बेटियां हैं, तुम उनमें से कोई एक चुन सकते हो। गूगर के राजकुमार की एक बहुत प्यारी बेटी है। वह अपने पिता की सारी उपजाऊ ज़मीन की भी वारिस होगी। सुनिक के राजकुमार की बेटी भी कुछ कम सुन्दर नहीं है। फिर हमारे सेनापति की बेटी वारसेनिक भी है जिसका पालन-पोषण राजा और मैंने किया है। क्या वह तुम्हारे प्यार के लायक़ नहीं है?"

"मां, मगर मुझे तो सिर्फ़ अनाइत ही चाहिए!"

इतना कहकर वाचाघान बगीचे में भाग गया।

२

वाचाघान अपने जीवन की बीस बहारें देख चुका था। वह ज़र्द चेहरेवाला नौजवान था, कमज़ोर-सा।

"वाचाघान, मेरे बेटे," उसके पिता उससे कहते, "मेरी तो सारी उम्मीदें तुम्हीं पर हैं। तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए, क्योंकि ऐसा ही ज़िन्दगी का तौर-तरीक़ा है।"

मगर वाचाघान राजा की बात पर कान न देता। वह भोर होते ही शिकार के लिए पहाड़ों में चला जाता और काफ़ी रात गये ही घर लौटता। बहुत-से राजकुमारों ने उसके साथ दोस्ती करनी चाही, मगर वह उनसे कन्नी काट जाता और शिकार पर जाते हुए सिर्फ़ अपने बहादुर और जांचे-परखे नौकर वाघीनाक और अपने वफ़ादार शिकारी कुत्ते ज़ांगी को ही साथ ले जाता। शिकार के वक़्त रास्ते में मिलनेवाला कोई भी आदमी यह नहीं बता सकता था कि उनमें से राजकुमार कौनसा है और नौकर कौनसा। कारण

कि वे दोनों ही शिकारी की साधारण पोशाक पहने होते, उनके एक कंधे पर तीर-कमान लटकता होता और पेटी के साथ चौड़ा खंजर।

जंगलों-पहाड़ों में इस तरह घूमना वाचाघान के लिए अच्छा रहा। वह अधिक ताक़तवर, हृष्ट-पुष्ट हो गया और उसमें मर्दों का सा बांकपन आ गया।

एक दिन वाचाघान और वाघीनाक आत्सिक गांव में घूम रहे थे। वे एक झरने के क़रीब आराम करने के लिए बैठ गये। उसी समय गांव की कुछ लड़कियां पानी भरने के लिए वहां आईं। वाचाघान को प्यास लगी थी और इसलिए उसने लड़कियों से पानी मांगा। उनमें से एक ने अपना बर्तन भर कर उसकी ओर बढ़ाया, मगर तभी एक दूसरी लड़की ने उसके हाथ से बर्तन छीनकर पानी गिरा दिया। उसने फिर से बर्तन में पानी भरा और फिर उसे गिरा दिया। वाचाघान का गला सूखा जा रहा था, उसे सख्त प्यास लगी थी, मगर वह लड़की तो जैसे उसे तंग करने पर तुली हुई थी। वह बर्तन में पानी भरती और फिर उसे उंडेल देती। केवल छठी बार उसे भरने पर ही उसने वह बर्तन वाचाघान की ओर बढ़ाया।

वाचाघान एक ही सांस में सारा पानी पी गया।

"तुमने पहली बार ही मुझे पानी क्यों नहीं दिया?" उसने लड़की से पूछा। "तुम मुझे तंग करना या खिझाना चाहती थीं?"

"हमारे यहां अजनबियों को तंग नहीं किया जाता," लड़की ने जवाब दिया। "मगर आप थके हुए थे और आपको पसीना आया हुआ था। ठंडे पानी से आपको नुक़सान हो सकता था। इसीलिए मैंने पानी देने से पहले कुछ समय बीत जाने दिया।"

लड़की के जवाब ने वाचाघान को आश्चर्यचकित और उसके रूप ने उस पर जादू कर दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है?" वाचाघान ने उससे पूछा।

"अनाइत," लड़की ने जवाब दिया।

"तुम्हारा पिता कौन है?"

"मेरा पिता गांव का चरवाहा है। उसका नाम अरान है। मगर आप यह क्यों पूछ रहे हैं?"

"क्या यह कोई गुनाह है?"

"अगर गुनाह नहीं, तो आप भी मुझे यह बतायें कि आप कौन हैं और कहां से आये हैं।"

"सच बोलूं या झूठ?"

"जैसा उचित समझें।"

"हां, केवल सच ही, और सच यह है कि मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता कि मैं कौन हूं। मगर मैं वादा करता हूं कि अल्द ही तुम्हें यह बता दूंगा।"

"अच्छी बात है। लाइये, मेरा बर्तन लौटा दीजिये।"

राजकुमार को नमस्ते कह और अपना बर्तन लेकर अनाइत चली गई।

शिकारी घर लौट आये। बाघीनाक ने, जो विश्वसनीय नौकर था, सारी घटना महारानी को कह सुनाई। इस तरह बाबाघान की मां को इस राज का पता चला।

३

बाबाघान अनाइत के सिवा किसी से भी शादी करने को राजी न हुआ। आखिर राजा और रानी मान गये और उन्होंने बाघीनाक तथा अपने दो दरबारियों को शादी तय करने के लिए भेजा।

चरवाहे अरान ने उनका हार्दिक स्वागत किया और उनके बैठने के लिए एक क़ालीन बिछा दिया।

"कितना सुन्दर क़ालीन है," बाघीनाक ने कहा। "घर की मालकिन ने इसे बुना होगा?"

"मेरी बीवी को मरे बस बरस हो चुके हैं," अरान ने कहा। "मेरी बेटी अनाइत ने ही इसे बुना है।"

"ऐसा खूबसूरत क़ालीन तो राजा के महल में भी नहीं है। हमें इस बात की बहुत खुशी है कि आपकी बेटी इतनी बढ़िया बुनकर है," दरबारियों ने कहा। "उसकी ख्याति तो राजा तक पहुंच गई है। हम राजा की ओर से विवाह का प्रस्ताव लेकर आये हैं। उनकी इच्छा है कि आप उनके इकलौते बेटे और राज सिंहासन के उत्तराधिकारी के साथ अपनी बेटी की शादी कर दें।"

दरबारियों को तो यह आशा थी कि अरान अविश्वास से अपना सिर हिलायेगा या फिर खुशी के मारे उछल पड़ेगा। मगर उसने ऐसा कुछ नहीं किया। उसने अपना सिर झुका लिया और उसकी तर्जनी क़ालीन के बेल-बूटों पर घूमने लगी।

तब बाघीनाक ने पूछा—

"मेरे भाई अरान, तुम उदास क्यों हो गये? हम तुम्हारे पास कोई बुरी खबर तो नहीं, शुभ समाचार ही लेकर आये हैं। हम जबर्दस्ती तो तुम्हारी बेटी तुम से नहीं लेना चाहते। उसकी शादी तुम्हारी इच्छा पर ही निर्भर करती है।"

"मेरे प्यारे मेहमानो," अरान ने जवाब दिया, "मैं अपनी बेटी को मजबूर नहीं करूंगा। अगर वह राजकुमार से शादी करने को राजी होगी तो मैं कोई आपत्ति नहीं करूंगा।"

इसी समय अनाइत मेहमानों के लिए रसीले फल लेकर आई। उसने मेहमानों को नमस्कार किया, थाली में फल रखकर उनके सामने पेश किये और फिर क़ालीन बुनने बैठ गई। दरबारी उसकी उंगलियों की फुर्ती देखकर आश्चर्यचकित होने लगे।

"अनाइत, तुम अकेली ही क्यों काम कर रही हो?" वाघीनाक ने पूछा। "मैंने सुना है कि तुम्हारी तो बहुत-सी सहेलियां हैं।"

"हां, सो तो हैं," अनाइत ने जवाब दिया। "मगर मैंने उन्हें अंगूर बटोरने के लिए भेज दिया है।"

"मैंने सुना है कि तुम अपनी शिष्याओं को लिखना-पढ़ना भी सिखाती हो।"

"हां, सिखाती हूं," अनाइत ने जवाब दिया। "अब तो हमारे चरवाहे भी रेवड़ चराते हुए एक दूसरे को लिखना-पढ़ना सिखाते हैं। हमारे जंगलों में सभी वृक्षों के तनों पर कुछ न कुछ लिखा हुआ है। मढ़ की दीवारों, चट्टानों और शिखरों पर कोयले से अक्षर लिखे हैं। एक आदमी पहले एक अक्षर लिखता है, उसके बाद दूसरा और इसी तरह यह क्रम चलता जाता है। हमारे सभी पहाड़ों और खड्डों में अक्षर ही अक्षर नज़र आते हैं।"

"हमारे यहां शिक्षा को इतना अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता," वाघीनाक ने कहा। "शहरी लोग सुस्त हैं। पर यदि तुम हमारे पास आकर रहने लगोगी, तो सभी को पढ़ा-लिखा कर समझदार बना दोगी। ज़रा क़ालीन बुनना बन्द करो, अनाइत, मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूं। देखो तो, राजा ने तुम्हारे लिए क्या उपहार भेजे हैं!"

इतना कहकर वाघीनाक ने बहुत-से क़ीमती हीरे और रेशमी कपड़े निकालकर सामने रख दिये।

अनाइत ने इन चीज़ों पर एक सरसरी नज़र डाली।

"राजा मुझ पर इतने मेहरबान क्यों हैं?" उसने पूछा।

"बात यह है कि किसी झरने के पास राजा के बेटे वाचाधान से तुम्हारी मुलाक़ात हुई थी और तुम ने उसे पानी पिलाया था। तुम उसे बहुत अच्छी लगीं। अब हम राजा के आदेशानुसार तुम से यह प्रार्थना करने आये हैं कि तुम वाचाधान से शादी कर लो। यह अंगूठी, यह गलहार, ये कंगन और बाक़ी सभी चीज़ें तुम्हारे लिए ही हैं।"

"तो जिस शिकारी से मेरी मुलाक़ात हुई थी, वह राजा का बेटा था?"

"हां।"

"वह अच्छा नौजवान है। मगर क्या उसे कोई हुनर भी आता है?"

"वह तो राजा का बेटा है, अनाइत। राजा की सारी प्रजा उसकी नौकर है। उसे हुनर सीखकर क्या लेना है?"

"यह सब सही है, मगर क़िस्मत के रंग बड़े निराले होते हैं। जो आज मालिक है, कल नौकर भी हो सकता है। हर आदमी को, चाहे वह राजा, राजकुमार या साधारण आदमी हो, कोई न कोई हुनर अवश्य आना चाहिए।"

दरबारियों को अनाइत के शब्द सुनकर हैरानी हुई, मगर चरवाहा अराम अपनी बेटी से बहुत खुश हुआ।

"तो आप राजकुमार से केवल इसीलिए शादी करने से इन्कार करती हैं कि उसे कोई हुनर नहीं आता?" दरबारियों ने पूछा।

"हां। ये सभी उपहार वापस ले जाइये। राजकुमार से कहिये कि वह मुझे पसन्द है, मगर मैं क्षमा चाहती हूं कि उससे शादी नहीं कर सकती। मैंने क़सम खाई है कि उस आदमी से शादी नहीं करूंगी जो कोई हुनर नहीं जानता।"

राजा के दूतों ने देखा कि अनाइत अपने फ़ैसले पर अटल है और इसलिए उन्होंने बहुत ज़ोर नहीं दिया।

अनाइत का फ़ैसला सुनकर राजा और रानी को बहुत खुशी हुई। अब बाचाधान उससे शादी करने की बात दिमाग़ से निकाल देगा। मगर बाचाधान ने कहा—

"अनाइत ठीक कहती है। अन्य सभी लोगों की भांति मुझे भी ज़रूर कोई हुनर सीखना चाहिए।"

राजा ने अपने दरबारियों की एक सभा बुलाई जिसमें विचार किया गया कि राजकुमार कौनसा हुनर सीखे। सभी ने एकमत से यह कहा कि राजकुमार के लिए कमख़ाब बनाने का हुनर सीखना ही सबसे अधिक उपयुक्त होगा।

चुनांचे ईरान से एक बढ़िया कारीगर फ़ौरन लाया गया। राजकुमार ने एक वर्ष में यह हुनर सीख लिया। बढ़िया सुनहरे तारों का उपयोग कर उसने बहुत क़ीमती कमख़ाब तैयार किया और बाचीनाक को यह कमख़ाब देकर अनाइत के पास भेजा।

कमख़ाब पाकर अनाइत ने कहा—

"कहावत है कि जिसके हाथ में हुनर, उसे ग़रीबी का क्या डर! राजकुमार से कहना कि मैं उससे शादी करने को तैयार हूं। यह क़ालीन उसे मेरी ओर से उपहार स्वरूप दे दीजिये।"

फ़ौरन शादी की तैयारियां शुरू हो गईं। सात दिन और सात रातों तक जश्न मनाया जाता रहा, खूब धूमधाम रही।

४

मगर शादी के फ़ौरन बाद वाचाघान का वफ़ादार दोस्त और नौकर वाधीनाक कहीं गायब हो गया। बहुत अरसे तक उसकी खोज की गई और आखिर उन्हें उसके मिलने की बिल्कुल उम्मीद न रही। इसी बीच राजा और उसकी रानी बूढ़े हो गये और परलोक सिधार गये। वाचाघान राजा बना।

एक दिन अनाइतन्ने अपने पति से कहा –

"मैं देखती हूं कि आपको अपने राज्य की बहुत कम जानकारी है। लोग आपको सचाई नहीं बताते। वे तो आपको यही विश्वास दिलाना चाहते हैं कि सब कुछ ठीक-ठाक है। मगर हो सकता है कि वास्तव में बिल्कुल ऐसा न हो। बहुत अच्छा हो कि अगर आप कभी तो भिखारी, कभी व्यापारी और कभी सौदागर के भेस में अपने देश का चक्कर लगाया करें।"

"तुम्हारी बात बिल्कुल सही है, अनाइत," वाचाघान ने जवाब दिया। "जब मैं शिकार के चक्कर में जंगलों और देहातों में फिरा करता था, तब लोगों के जीवन को कहीं अच्छी तरह जानता था। मगर अब भला मैं यह कैसे कर सकता हूं? मेरी गैरहाजिरी में राज का काम-काज कौन संभालेगा?"

"मैं संभालूंगी," अनाइत ने कहा और साथ में यह भी जोड़ा, "किसी को भी इस बात की कानों कान खबर नहीं होनी चाहिये कि आप यहां नहीं हैं।"

"ठीक है। तो मैं कल ही अपने सफ़र पर चल दूंगा। अगर मैं बीस दिन तक वापस न आऊं तो समझ लेना कि या तो मैं जिन्दा नहीं हूं या फिर किसी मुसीबत में फंस गया हूं।"

५

इस तरह राजा वाचाघान एक साधारण किसान का भेस बनाकर अपने राज्य में घूमने लगा। उसने बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ सुना और आखिर घूमता-घामता कुछ समय बाद पेरोज शहर में पहुंचा।

इस शहर के बीचोंबीच एक बड़ा-सा चौक और बाजार था जिसके चारों ओर शिल्पियों और सौदागरों की दूकानें थीं।

एक दिन वाचाघान चौक में बैठा था। तभी उसने एक बहुत ही बूढ़े व्यक्ति के पीछे-पीछे लोगों की भारी भीड़ आती देखी। बूढ़ा बहुत ही धीरे-धीरे चल रहा था।

उसके सामने का रास्ता साफ़ किया जा रहा था और उसके क़दम रखने के लिए ईंटें रख दी जाती थीं।

बाबाघान ने एक राहगीर से पूछा कि यह बूढ़ा कौन है।

"यह कैसे हो सकता है कि तुम इन्हें नहीं जानते!" राहगीर ने हैरानी ज़ाहिर की। "यह तो सबसे बड़े महंत हैं और ऐसे धर्मात्मा हैं कि इस डर से ज़मीन पर पैर तक नहीं रखते कि कहीं कोई कीड़ा-मकोड़ा इनके पैर तले आकर कुचला न जाये।"

तभी चौक में एक क़ालीन बिछाया गया और बड़ा महंत आराम करने के लिए उसपर बैठ गया। बाबाघान भीड़ को चीरकर आगे निकल गया ताकि बूढ़े के क़रीब हो सके और उसके शब्दों को सुन पाये। बड़े महंत की नज़र बड़ी पैनी थी। बाबाघान को देखते ही वह ताड़ गया कि यह कोई अजनबी है।

"तुम कौन हो और क्या काम करते हो?" बड़े महंत ने पूछा।

"मैं बहुत दूर का रहनेवाला एक मज़दूर हूं," बाबाघान ने जवाब दिया। "मैं काम की तलाश में यहां आया हूं।"

"तो चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें काम दूंगा और अच्छी मज़दूरी भी।"

बाबाघान ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। बड़े महंत ने अपने सहायकों, अपने जैसे महंतों के साथ कुछ कानाफूसी की। वे सभी फ़ौरन अलग-अलग दिशाओं में चले गये।

वे कुछ देर बाद सभी तरह की रसद उठाये हुए पल्लेदारों के साथ लौटे। इसके बाद बड़ा महंत क़ालीन से उठा और चौक से चल दिया। बाबाघान चुपचाप उसके पीछे-पीछे हो लिया। चलते-चलते वे नगर के फाटकों पर पहुंचे।

यहां बड़े महंत ने लोगों को आशीर्वाद दिया और वे अपने-अपने रास्ते चले गये। केवल महंत, पल्लेदार और बाबाघान ही बाक़ी रह गये।

शहर जब काफ़ी पीछे रह गया तो वे एक ऊंची दीवार के पास पहुंचे जिसमें एक फाटक था। बड़े महंत ने एक बड़ी-सी चाबी लगाकर फाटक खोला।

अन्दर एक बड़ा-सा मैदान था जिसके मध्य में एक मठ था और उसके इर्दगिर्द कोठरियां थीं। पल्लेदारों ने बंडल नीचे रख दिये। बड़ा महंत पल्लेदारों और बाबाघान को मठ के दूसरी ओर ले गया और लोहे का दरवाज़ा खोलकर बोला –

"भीतर चले जाओ, वहां तुम्हें काम मिल जायेगा।"

वे हतप्रभ से चुपचाप अन्दर चले गये। उन्होंने अपने को एकदम अंधेरे भूमिगत तहख़ाने में पाया, बड़े महंत ने पीछे से दरवाज़े में ताला लगा दिया। यह जान कर कि बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया गया है, वे आगे को चलते गये।

६

वे बहुत देर तक चलते रहे कि आखिर यकायक दूरी पर मद्धिम-सी रोशनी दिखाई दी। वे उसी तरफ़ बढ़े और कुछ ही देर बाद पत्थर की एक गुफा के पास जा पहुंचे जिसमें से आहें-कराहें और चीख-पुकार सुनाई दे रही थी। इन आवाज़ों की ओर कान लगाये और हैरान होते हुए उन्होंने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली। इसी समय इस गलियारे के अन्धेरे में एक छाया की सी झलक मिली। यह छाया जैसे-जैसे पास आती गई, वैसे वैसे एक ठोस शक्ल धारण करती गई। बाबाघान उसकी ओर बढ़ा –

"तुम कौन हो, इन्सान या शैतान?" उसने ऊंची आवाज़ में पूछा। "अगर इन्सान हो, तो यह बताओ कि हम कहां हैं।"

छाया नज़दीक आकर रुक गई, वह कांप रही थी। यह इन्सान ही था, मगर इतनी बुरी हालत में कि कल्पना से बाहर। वह तो चलती-फिरती लाश था, धंसी हुई आंखें, गालों की उभरी हुई हड्डियां और सारे जिस्म की हड्डी-हड्डी निकली हुई। उसने सिसकते हुए कहा –

"चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें सभी कुछ दिखा देता हूं।"

उसके पीछे-पीछे चलते हुए उन्होंने एक तंग-सा दालान लांघा और दूसरी गुफा में पहुंचे। वहां बहुत-से नंग-धड़ंग लोग भयानक यातनाओं से पीड़ित दिखाई दिये। तीसरी गुफा में बहुत बड़े-बड़े कड़ाहे रखे थे जिनमें खाना पकता लगता था। बाबाघान ने एक कड़ाहे पर झुककर देखा और भयभीत होकर फ़ौरन पीछे हट गया। उसने अपने साथियों से कुछ भी नहीं कहा। इसके बाद वे एक अन्य गलियारे में पहुंचे। यहां बहुत ही मद्धिम-सी रोशनी में सैकड़ों लोग काम कर रहे थे, पीले ज़र्द चेहरोंवाले। कुछ कढ़ाई कर रहे थे, कुछ बुनाई और कुछ सिलाई।

लाश से मिलते-जुलते इस व्यक्ति ने कहा –

"जो दुष्ट महंत चकमा देकर तुम्हें यहां लाया है, हमें भी वही इसी तरह से यहां लाया था। मालूम नहीं कि यहां रहते हुए मुझे कितने बरस हो गये। कारण कि यहां न तो दिन होता है, न रात, हमेशा और हर समय ऐसा ही झुटपुटा-सा रहता है। मैं तो सिर्फ़ इतना जानता हूं कि मेरे साथ आनेवाले सभी भगवान के घर जा चुके हैं। महंत लोग कारीगरों को भी यहां ले आते हैं और कोई विशेष धन्धा न जाननेवाले साधारण लोगों को भी। कारीगरों से तो काम करवा-करवाकर वे उनकी जान निकाल लेते हैं और बाक़ियों को काटकर उन भयानक कड़ाहों में, जो तुमने देखे हैं, उबलने के लिए

डाल देते हैं। वह शैतान का बच्चा बूढ़ा बड़ा महंत अकेला ही नहीं है, सभी महंत उसकी मदद करते हैं।"

वाचाघान ने इस व्यक्ति को अब बहुत ग़ौर से देखा। उसने पहचान लिया कि वह उसका वफ़ादार नौकर वाघीनाक ही है। मगर उसने वाघीनाक से कुछ नहीं कहा। उसे डर था कि उनके पुनर्मिलन की खुशी से कहीं वह पतला-सा धागा टूट न जाये जो वाघीनाक को ज़िन्दगी के साथ बांधे हुए था।

७

वाघीनाक के जाने के बाद वाचाघान ने अपने साथ आये लोगों से पूछा कि वे कौन हैं और क्या काम कर सकते हैं। एक ने बताया कि वह दर्ज़ी है और दूसरे ने कहा कि वह जुलाहा है। बाक़ी कोई हुनर नहीं जानते थे, मगर वाचाघान ने उन्हें अपने सहायक बताने का फ़ैसला कर लिया।

कुछ ही देर बाद उन्हें पैरों की आहट सुनाई दी। एक महंत सशस्त्र लोगों की भीड़ के साथ उनके सामने आया। महंत के चेहरे पर दुष्टता और जुल्म की छाप अंकित थी।

"तुम नये लोग हो?" महंत ने पूछा।

"हां, महाराज," वाचाघान ने जवाब दिया, "दयानिधि, हम आपके सेवक हैं।"

"तुम में से कौन ऐसे हैं जो कोई धंधा जानते हैं?"

"सभी!" वाचाघान ने जवाब दिया। "हम बहुत ही क़ीमती कमखाब बनाना जानते हैं जो सोने से सौ गुना ज्यादा क़ीमती होता है।"

"क्या यह मुमकिन है?"

"आप खुद अपनी आंखों से देख लेंगे।"

"अच्छी बात है, देख लूंगा अपनी आंखों से। अब यह बताओ कि तुम्हें किन औज़ारों और सामग्री की ज़रूरत है। चीजें पाते ही वहां जाकर काम शुरू कर देना जहां बाक़ी लोग काम करते हैं।"

"हम वहां काम नहीं कर सकेंगे। हम लोग यहां ज्यादा अच्छी तरह से काम कर सकेंगे। हमारी खुराक के सम्बन्ध में यह निवेदन है कि हम मांस नहीं खाते और अगर हमें मांस खाने के लिए मजबूर किया गया, तो हम जी न सकेंगे।"

"ख़ैर, कोई बात नहीं," महंत ने कहा। "तुम लोगों को रोटी और फल मिल जायेंगे। अगर तुम्हारा काम तुम जैसा कहते हो, उससे घटिया हुआ, तो मैं तुम लोगों के टुकड़े-टुकड़े करवा दूंगा और तुम्हारे मरने के पहले तुम्हें तरह-तरह की यातनायें भी दिलवाऊंगा।"

महंत ने उनके लिए कुछ फल और रोटी भिजवाई। उन्होंने बाघीनाक और कुछ अन्य लोगों को भी उनमें से हिस्सा दिया और इसके बाद बाबाघान काम करने बैठ गया। उसने बड़ी जल्दी बहुत ही शानदार कमख़ाब का एक टुकड़ा तैयार किया और उसमें इन भयानक गुफाओं के, जहां वह आ फंसा था, रोंगटे खड़े करनेवाले सभी दृश्य दिखा दिये, मगर ऐसे कि कोई जानकार ही उन्हें समझ सके।

महंत को बाबाघान की कारीगरी देखकर बहुत ख़ुशी हुई।

बाबाघान ने कहा—

"मैंने तो निवेदन किया था कि हम जो कमख़ाब तैयार करते हैं, वह सोने से सौ गुना अधिक मूल्यवान होता है। यह जान लीजिये कि वास्तव में यह उससे भी दुगुनी क़ीमत का है। कारण कि इसके नमूनों में कुछ तावीज़ बनाये गये हैं। दुख की बात है कि आम लोग उनका मूल्य नहीं आंक सकते। केवल बुद्धिमती महारानी अनाइत ही उनका मतलब समझ सकती है।"

लालची महंत दंग रह गया। उसने इस तरह चोरी-छिपे उस कमख़ाब को बेचना चाहा कि कोई अन्य व्यक्ति उसके नफ़े में हिस्सा न बंटा सके। इसलिए उसने बड़े महंत से इसकी चर्चा तक नहीं की, उसे दिखाया तक नहीं और कमख़ाब लेकर अनाइत के महल की ओर चल दिया।

८

अनाइत देश का शासन बहुत अच्छे ढंग से चला रही थी और सभी लोग सन्तुष्ट थे। किसी को इस बात का गुमान तक नहीं हुआ कि राजा कहीं दूर गया हुआ है। मगर ख़ुद अनाइत बहुत चिन्तित थी। बाबाघान के लौटने के निश्चित समय से दस दिन अधिक बीत चुके थे, मगर बाबाघान वापस नहीं आया था। अनाइत रात को सोती तो उसे भयानक सपने आते, दिन को उसे अजीब-सी परछाइयां दिखाई देतीं। बाबाघान का शिकारी कुत्ता खांगी लगातार भूंकता या हूंकता। उसका घोड़ा कुछ भी न खाता और उस बछेड़े की भांति दर्दभरी आवाज़ में हिनहिनाता जिसकी मां खो गयी हो। मुर्ग़ियां मुर्ग़ों की भांति कु-कु-डू-कूं करतीं और मुर्ग़े शाम के वक़्त तीतरों की तरह चीख़ते।

नदी का पानी धीरे-धीरे बड़ी-बड़ी आवाज से बहता, न उछल-कूद करता, न कल-छल की आवाज। आम तौर पर निडर रहनेवाली अनाइत अब डरी-सहमी रहती। उसे तो अपनी छाया से भी डर लगता।

एक सुबह अनाइत को सूचना दी गई कि एक सौदागर कोई बहुत क़ीमती माल लेकर आया है।

अनाइत ने अजनबी को अन्दर लाने का हुक्म दिया।

बड़ा ही भयानक चेहरा था इस अजनबी का। उसने झुककर महारानी को प्रणाम किया और चांदी की थाली उसकी ओर बढ़ाई। थाली में सुनहरे कमख़ाब का एक टुकड़ा रखा हुआ था। अनाइत ने कढ़ाई की ओर ध्यान दिये बिना ही उसे देखा।

"कितनी क़ीमत है इस कमख़ाब की?" उसने पूछा।

"महारानी जी, अगर सिर्फ़ कारीगरी और इसमें लगे माल को ही ध्यान में रखा जाये तो यह सोने से तीन सौ गुना अधिक महंगा है। इसके अलावा इसे यहां लाने के लिए मैंने जो मेहनत की, जो जोश दिखाया, उसकी क़ीमत आप ख़ुद ही लगा लें।"

"मगर यह इतना महंगा क्यों है?"

"दयालु महारानी, इस में ऐसी शक्ति छिपी है जिसकी कोई क़ीमत हो ही नहीं सकती। ज़रा इसकी कढ़ाई को ध्यान से देखिये। ये मामूली आकृतियां नहीं, तावीज़ हैं। इस कमख़ाब से सुसज्जित कपड़े पहननेवाला व्यक्ति कभी दुख-मुसीबत का शिकार नहीं होगा।"

"सच!" इतना कहकर अनाइत ने कमख़ाब को खोला। उसे उसमें कोई तावीज़ नहीं, मगर बड़ी ही बारीक कढ़ाई में कढ़े कुछ अक्षर नज़र आये। अनाइत ने चुपचाप उन अक्षरों को पढ़ा—

"मेरी अनुपमा अनाइत, मैं एक जहन्नुम में बन्दी बना हुआ हूं। इस कमख़ाब को तुम्हारे पास लानेवाला व्यक्ति इस जहन्नुम के शैतान पहरेदारों में से एक है। बाघीनाक यहां मेरे साथ है। पेरोज़ शहर के पूर्व में ऊंची दीवारों से घिरा हुआ एक मठ है। इसकी भूमिगत काल-कोठरियों में हमारी तलाश करो। तुम्हारी मदद के बिना हम ज़िन्दा न रह सकेंगे। बाचाघान।"

इस सन्देश को पढ़कर अनाइत का दिल बहुत उठा। उसने यह ज़ाहिर करते हुए कि मुझे यह कढ़ाई बहुत अच्छी लगी है, उस संदेश को दूसरी और तीसरी बार बहुत ध्यान से पढ़ा।

"आप सही कहते हैं," अनाइत ने कहा। "इन आकृतियों में दिल खुश करने की ताक़त छिपी है। आज सुबह ही से मैं बहुत उदास थी, मगर अब मेरा दिल बहुत

खुश है, चहक उठा है। आपका कमखाब वास्तव में ही अमूल्य है। मैं तो इसके लिए अपना आधा राज भी खुशी से दे सकती हूं। पर खैर यह तो आप जानते ही होंगे कि कोई भी कला-कृति खुद उसके रचयिता से बढ़-चढ़कर नहीं होती।"

"भगवान आपकी उम्र लम्बी करे, महारानी, बिल्कुल सही बात कही है आपने!"

"तो आप उस कारीगर को मेरे पास लाइये, जिसने यह कमखाब बनाया है। मैं उसे और आपको भी इनाम देना चाहती हूं।"

"दयालु महारानी," सासची महंत ने कहा, "मैं उसे नहीं जानता। मैंने तो हिन्दुस्तान में किसी यहूदी से इस कपड़े को खरीदा था और उसे किसी अरब ने बेचा था। कौन जाने उस अरब ने इसे कहां से खरीदा था!"

"मगर आपने तो अभी कुछ ही देर पहले यह बताया था कि इसमें लगी सामग्री और कारीगर की मेहनत का आपको कितना खर्च देना पड़ा था। इसका तो यह मतलब है कि आपने यह कमखाब खरीदा नहीं, बनवाया है।"

"बहुत ही रहमदिल महारानी, हिन्दुस्तान में मुझे ऐसा ही बताया गया था..."

"बको मत!" अनाइत गुस्से से चिल्लाई। "मुझे मालूम है कि तुम कौन हो। नौकरो, इसे पकड़कर काल-कोठरी में डाल दो!"

६

अब अनाइत का हुक्म बजा लाया गया तो उसने अपने बिगुल-वादकों को खतरे का बिगुल बजाने का हुक्म दिया। शहर के लोग चिन्तित-से और आपस में कानाफूसी करते हुए महल के बाहर जमा हो गये। कोई भी यह नहीं जानता था कि मामला क्या है।

सिर से पैर तक अस्त्रों-शस्त्रों से लैस अनाइत छज्जे में आई।

"नगर निवासियो!" उसने कहा। "आपके राजा की आन खतरे में है। जिन्हें उनकी जिन्दगी प्यारी है, जो उन को प्यार करते हैं, वे मेरे साथ चलें! दोपहर होने तक हमें पेरोज शहर में पहुंच जाना चाहिए।"

घंटे भर में सभी लोग शस्त्रों से लैस हो गये। अनाइत एक बढ़िया घोड़े पर सवार हुई और उसने पुकार कर लोगों से कहा—"आइये, मेरे पीछे!" उसने अपना घोड़ा पेरोज की ओर सरपट दौड़ाना शुरू किया। वह रास्ते में कहीं भी नहीं रुकी और उसने अपने हांफते हुए घोड़े को पेरोज के केन्द्रीय चौक में ही आकर रोका। पेरोज के लोगों ने उसे आकाश से उतरी देवी समझा और उसके सामने सिर झुका दिये।

"यहां का नगरपाल कहां है?" अनाइत ने बड़े रोब से पूछा।

"महारानी, मैं हूं यहां का नगरपाल, आपका सेवक," नगरपाल ने सामने आकर कहा।

"आप बहुत ही लापरवाह हैं। आपको इतना भी मालूम नहीं कि आपके देवताओं के मठ में क्या गुल खिल रहे हैं!"

"हां, महारानी, मुझे वास्तव में ही कुछ मालूम नहीं।" इतना कहकर उसने सिर झुकाया।

"मगर आपको इतना तो मालूम है कि मठ है कहां?"

"हां, मालूम है, महारानी!"

"तो मुझे वहां ले चलिये।"

नगरपाल अनाइत को मठ की ओर ले चला। शहर के लोगों की भीड़ उनके पीछे-पीछे हो ली।

महंतों ने यह समझते हुए कि तीर्थयात्री आये हैं, लोहे के प्रवेश-द्वार खोल दिये। अनाइत अपना घोड़ा बढ़ाती हुई मठ के चौक में आ पहुंची और उसने हुक्म दिया कि मठ के दरवाजे खोल दिये जायें। तभी मामला महंतों की समझ में आया। बड़ा महंत घोड़े पर सवार महारानी की ओर झपटा, मगर अनाइत के समझदार घोड़े ने उसे अपने सुमों से रौंद डाला।

इसी बीच अनाइत के सैनिक आ पहुंचे और उन्होंने बाकी महंतों को झटपट ठिकाने लगा दिया। पेरोज शहर के लोग डरे-सहमे और हतप्रभ-से यह सब कुछ देखते रहे।

"इधर आइये!" अनाइत ने उन्हें पुकारा। "देखिये तो आपके देवताओं के पवित्र स्थान में क्या कुछ छिपा हुआ है!"

मठ के दरवाजों को झटपट तोड़ डाला गया। बहुत ही भयानक दृश्य देखने को मिला लोगों को।

भूत-प्रेत जैसे नजर आनेवाले लोग काल-कोठरियों से बाहर आने लगे। उनमें से कुछ तो बिल्कुल मौत के किनारे पर थे और खड़े भी नहीं रह सकते थे। बाकियों की आंखें सूरज की रोशनी में चौंधिया गई थीं और वे लड़खड़ाते हुए कुचली चींटियों की तरह हिल-डुल रहे थे। सबसे बाद में बाचाघान और बाघीनाक बाहर आये। वे आंखें बन्द करके चल रहे थे ताकि तेज धूप से उनकी आंखें अंधी न हो जायें।

सैनिक काल-कोठरियों में घुस गये और लाशों तथा यातना देनेवाले यन्त्रों को निकाल लाये। शर्म से ज़मीन में गड़े जाते शहरी उनका हाथ बंटा रहे थे।

इसके बाद अनाइत उस तम्बू में गई जहां बाचाधान और बाघीनाक थे। यह तम्बू जल्दी-जल्दी उनके लिए खड़ा कर दिया गया था। पति-पत्नी पास बैठकर एक दूसरे को देर तक ताकते रहे। बाघीनाक ने रोते हुए अनाइत का हाथ चूमा।

"अनुपमा महारानी," वह रोते हुए बोला, "आज आपने हमारे प्राण बचा लिये हैं!"

"आज ही नहीं, बाघीनाक," बाचाधान बोला, "अनाइत ने तो बहुत पहले उस दिन ही हमारी जान की रक्षा की थी जब उसने यह पूछा था कि राजा का बेटा कोई हुनर जानता है या नहीं। तुम्हें याद है कि यह सुनकर तुम कैसे हंसे थे?"

१०

सभी नगरों और गांवों में राजा बाचाधान के भयानक जान जोखिम के कारनामे की खबर फैल गई। दूसरे देशों में भी इसकी खबर पहुंची। सभी ने बाचाधान और अनाइत की तारीफ़ की। लोक-कवियों और भाटों ने उनकी प्रशंसा में गाने रचे। दुख की बात है कि वे गीत तो खो गये, मगर खुशी की बात है कि बाचाधान और अनाइत के बारे में कहानी आज भी कही-सुनी जाती है।

राजा और जुलाहा

आर्मीनियाई लोक-कथा

किसी समय की बात है कि कहीं एक राजा राज करता था।

एक दिन वह अपने सिंहासन पर बैठा था कि किसी दूर देश के राजा का दूत वहां आया। दूत ने मुंह से कुछ भी नहीं कहा, बल्कि चुपचाप राजा के सिंहासन के गिर्द खड़िया से एक घेरा बना दिया और एक ओर हट गया।

राजा बहुत चक्कर में पड़ा।

"इसका क्या मतलब है?" उसने पूछा।

मगर दूत मौन साधे रहा।

राजा चिन्तित हो उठा। उसने अपने वजीरों और सलाहकारों को बुलाया और उनसे कहा कि वे इस घेरे का मतलब स्पष्ट करें।

वजीरों और सलाहकारों ने बहुत ध्यान से इस घेरे को देखा, मगर वे कुछ भी न कह पाये।

राजा को बहुत गुस्सा आया।

"डूब मरो शर्म से!" वह चिल्लाया। "शर्म करो! क्या मेरे देश में एक भी ऐसा आदमी नहीं है जो मेरे सिंहासन के गिर्द बनाये गये इस घेरे का मतलब बता सके?"

चुनांचे राजा ने हुक्म दिया कि उसके राज्य के सभी बुद्धिमान लोगों को एकबारगी बुलाया जाये ताकि वे उसे उस घेरे का मतलब बतायें। राजा ने अपने हुक्म में यह भी कहा कि बुद्धिमान लोग अगर ऐसा नहीं कर पायेंगे तो उनके सिर उड़ा दिये जायेंगे।

वज़ीर फ़ौरन बुद्धिमानों की खोज करने चल दिये। उन्होंने सभी नगरों और सभी गांवों को छान मारा और हर दरवाज़े पर दस्तक दी। आखिर वे एक छोटे से घर के सामने पहुंचे। वे अन्दर गये तो उन्होंने उसे खाली पाया और उन्हें वहां किसी की भी आवाज़ सुनाई न दी। वहां उन्हें केवल एक पालना लटका हुआ और अपने आप इधर-उधर झूलता दिखाई दिया।

"इसका क्या मतलब हो सकता है?" वज़ीरों ने हैरत में आकर पूछा। "पालना क्यों झूल रहा है? यहां तो कोई है नहीं।"

वे खड़े-खड़े अचंभा करते रहे और फिर दूसरे कमरे में गये। यहां भी एक पालना था और वह भी झूल रहा था, यद्यपि आसपास कोई भी नहीं था।

वज़ीरों को यह देखकर बहुत हैरानी हुई और वे मकान की छत पर चढ़ गये। छत पर गेहूं सूख रहा था और उसके ऊपर पक्षी उड़ रहे थे। वे गेहूं के दाने चुगना चाहते थे, मगर उनकी ऐसा करने की हिम्मत न पड़ती थी। कारण कि छत के साथ लगा हुआ सरकंडों का पंखा इधर-उधर घूमता हुआ उन्हें डराकर दूर भगाता जा रहा था।

राजा के दूतों को अब और भी अधिक हैरानी हुई। वे फिर से घर में गये और तीसरे यानी आखिरी कमरे में पहुंचे। वहां एक जुलाहा करघे पर बुनाई कर रहा था।

"तुम्हारे घर में यह कैसा चमत्कार हो रहा है?" राजा के दूतों ने पूछा। "खाली कमरों में पालने अपने आप कैसे झूल रहे हैं? यद्यपि हवा बिल्कुल नहीं है, फिर भी सरकंडों का पंखा क्यों घूमता जा रहा है?"

"यह कोई चमत्कार नहीं है," जुलाहे ने जवाब दिया। "मैं खुद ही यह सब कुछ कर रहा हूं।"

"तुम हमारा मज़ाक उड़ा रहे हो!" राजा के वज़ीरों ने बिगड़कर कहा। "यह भला कैसे हो सकता है जब तुम यहां बैठे हुए कपड़ा बुन रहे हो?"

"यह तो बड़ी सीधी-सादी बात है," जुलाहे ने जवाब दिया। "मैंने अपने करघे के साथ तीन रस्सियां बांध रखी हैं। एक रस्सी मैंने पहले पालने के साथ बांध दी है, दूसरी दूसरे पालने के साथ और तीसरी सरकंडों के पंखे के साथ। मेरे बुनाई करने से रस्सियां हिलती हैं और ये पालनों और छत के सरकंडों को भी हिला देती हैं।

राजा के दूतों ने ध्यान से देखा तो पाया कि वास्तव में ही करघे के साथ तीन रस्सियां बंधी हुई हैं। उनमें से दो पासनों की ओर जाती थीं और एक सरकंडों के पंखे की ओर।

"यह तो सचमुच कमाल की बात है!" वे चिल्लाये। "जुलाहा सचमुच ही बहुत बुद्धिमान है। हमें इसी आदमी की जरूरत है! जुलाहे, तुम हमारे साथ राजा के पास चलो। शायद तुम ही एक पहेली को सुलझा सकोगे।"

"पहले आप यह बतायें कि वह पहेली क्या है," जुलाहे ने कहा।

वजीर बोले –

"किसी अजनबी देश के राजा का एक दूत कुछ ही समय पहले हमारे राजा के पास आया। उसने कढ़िया से हमारे राजा के सिंहासन के गिर्द एक घेरा बना दिया। न तो खुद राजा, न उसके दरबारी और सलाहकार ही इसका मतलब समझ पा रहे हैं। अगर तुम ऐसा कर सकोगे, तो राजा तुम्हें बहुत-सा इनाम देंगे।"

राजा के दूतों की बात सुनकर जुलाहा गहरी सोच में डूब गया। फिर उसने दो पांसे लिये। इसके बाद वह एक मुर्गी पकड़ने के लिए आंगन में गया।

वजीरों के कुछ भी पल्ले न पड़ा और उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा।

"तुम मुर्गी का क्या करोगे?" उन्होंने पूछा।

"मुझे इसकी जरूरत पड़ेगी," जुलाहे ने जवाब दिया और उस मुर्गी को एक टोकरी में रख लिया।

इसके बाद वे राजा के महल की ओर चल दिये।

जुलाहा महल में गया, उसने राजा का अभिवादन किया, सिंहासन के गिर्द बने सफ़ेद घेरे, और फिर उस आदमी की ओर देखा जिसने वह घेरा बनाया था और दोनों पांसे उसके सामने फेंक दिये।

उस व्यक्ति ने चुपचाप अपनी जेब से मुट्ठी भर बाजरा निकाला और फ़र्श पर रख दिया।

जुलाहा हंसा। उसने टोकरी में से मुर्गी निकाली और बिखरे हुए दानों के सामने छोड़ दिया। मुर्गी जल्दी-जल्दी दाने चुगने लगी और कुछ ही देर बाद एक भी दाना बाक़ी न रहा।

अजनबी ने एक भी शब्द नहीं कहा और झटपट वहां से चलता बना।

राजा और उसके दरबारी अधिकाधिक हैरान होते हुए अजनबी और जुलाहे को देख रहे थे। कोई भी अनुमान न लगा पाया था कि यह क्या क़िस्सा हो रहा है।

"अजनबी का क्या मतलब था?" राजा ने पूछा।

"वह आप से यह कहना चाहता था कि उसके देश का राजा आपके विरुद्ध युद्ध की घोषणा करता है और आपको सभी ओर से घेरने का इरादा रखता है। वह यह भी जानना चाहता था कि आप लड़ेंगे या हथियार फेंकने को तैयार हैं। आपके सिंहासन के गिर्द बनाये गये घेरे का यही मतलब है।"

"हां, अब यह बात तो समझ में आ गई। मगर मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया कि तुमने पांसे उसके सामने क्यों फेंके थे।"

जुलाहे ने जवाब दिया –

"मैंने उसे यह बताने के लिए पांसे फेंके थे कि हम उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं और वे हम पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। अगर सीधे-सादे शब्दों में कहा जाये तो मैंने उसे यह समझाया कि हमारे मुक़ाबले में तुम बिल्कुल बच्चे हो। अच्छा यही है कि तुम हम से जंग करने के बजाय अपने घर बैठकर खेल खेलो।"

"हां, अब यह बात भी साफ़ हो गई," राजा ने कहा। "मगर मैं अब भी यह नहीं समझ पा रहा हूं कि अजनबी ने मुट्ठी भर बाजरा फ़र्श पर क्यों बिखेरा और तुमने टोकरी से मुर्ग़ी निकालकर क्यों छोड़ी।"

"यह बात भी बहुत आसानी से समझ में आ सकती है," जुलाहे ने कहा। "फ़र्श पर मुट्ठी भर बाजरा बिखराकर अजनबी यह बताना चाहता था कि उसके राजा की फ़ौज में अनगिनत सैनिक हैं। मैंने मुर्ग़ी को बाजरा चुगने के लिए छोड़कर यह ज़ाहिर किया कि अगर वे हम से जंग शुरू करेंगे तो उनका एक भी सैनिक बाक़ी नहीं बचेगा।"

"वह तुम्हारा मतलब समझ गया?"

"ज़रूर समझ गया होगा। इसीलिए तो वह झटपट यहां से चलता बना।"

राजा ने जुलाहे को बहुत बढ़िया और क़ीमती उपहार दिये और कहा –

"जुलाहे, तुम मेरे महल में मेरे पास ही रहो। मैं तुम्हें अपना बड़ा वज़ीर बना लूंगा।"

"नहीं," जुलाहे ने जवाब दिया। "मैं आपका वज़ीर नहीं बनना चाहता। मेरे पास अपने ही बहुत-से काम-काज हैं।"

इतना कहकर वह चला गया।

हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना

जार्जियाई लोक-कथा

हो सकता है कि यह सच हो, हो सकता है कि झूठ, मगर कहते हैं कि कभी कहीं एक बहुत ही अमीर राजा रहता था। एक दिन उसने अपने शिकारियों से कहा –

"जाओ, जो भी जानवर तुम्हें सबसे पहले मिल जाये, उसे मार लाओ।"

शिकारी जंगल में गये और उन्हें वन-पथ में सबसे पहले एक हिरनी दिखाई दी। उन्होंने निशाना साधा और वे राजा के आदेशानुसार उसे मारने ही वाले थे कि उन्हें उसके थन से दूध पीता हुआ एक लड़का दिखाई दिया। लड़के ने जब शिकारियों को देखा तो उसने दूध पीना बन्द कर दिया, हिरनी के गले में बाँहें डाल दीं और उसे चूमने और प्यार करने लगा।

शिकारियों को बड़ी हैरानी हुई।

वे लड़के को उठाकर राजा के पास ले गये और उसे सारा क़िस्सा कह सुनाया।

राजा का भी एक छोटा-सा बेटा था, शिकारियों द्वारा लाये गये लड़के का हमउम्र। राजा ने उन दोनों का एकसाथ ही नामकरण किया और जंगल में मिले बच्चे का नाम हिरन-बालक रखा।

हिरन-बालक का राजकुमार के साथ ही पालन-पोषण हुआ। वे दोनों एक ही कमरे में सोते और एक ही गाय का दूध पीते।

कुछ बालक साल-दर-साल बढ़ते हैं और वे दोनों बढ़ते थे दिन-प्रति-दिन और इसी तरह बारह वर्ष के हो गये। महल में बड़े होते हुए अपने दोनों बेटों को देखकर राजा को बहुत खुशी होती।

एक दिन दोनों लड़के तीर-कमान लेकर मैदानों में गये। राजकुमार ने एक तीर चलाया जो पानी लेकर जाती हुई एक बुढ़िया की गागर से जा लगा। गागर का हत्था टूट गया।

बुढ़िया उसकी ओर देखकर बोली—

"शाप तो मैं तुझे नहीं दूंगी, क्योंकि तू मां-बाप का इकलौता बेटा है। मगर यही कहूंगी कि तेरा दिल सुन्दरी येलेना के प्यार में तड़पा करे।"

हिरन-बालक बुढ़िया की बात सुनकर हैरान रह गया—

"क्या मतलब है इसका?"

मगर इसी दिन से राजकुमार को सुन्दरी येलेना के सिवा और किसी चीज़ की सुध-बुध ही न रही। कारण कि प्यार के बीज उसके दिल में अंकुरित हो गये थे और उसका सुख-चैन जाता रहा था।

अब क्या किया जाये? तीन सप्ताह बीत गये। राजकुमार तो अधमरा-सा घूमता रहता—एक ऐसी सुन्दरी का प्यार उसकी सेहत और शक्ति को चौपट किये जा रहा था जिसे उसने आंखों से भी कभी नहीं देखा था।

एक दिन हिरन-बालक ने राजकुमार से कहा—

"मैं तुम्हारा कोका-भाई क़सम खाकर कहता हूं कि या तो तुम्हें सुन्दरी येलेना लाकर दूंगा या फिर ज़िन्दा नहीं रहूंगा।"

फिर वह राजा के पास जाकर बोला—

"पिताजी सुहार को हुक्म दीजिये कि वह मेरे लिए लोहे के पाव-कवच और तीर-कमान बना दे क्योंकि मुझे सुन्दरी येलेना की तलाश में जाना है।"

राजा राज़ी हो गया। एक कमान और पांच पूड वजन के तीर और एक जोड़ा पाव-कवच हिरन-बालक के लिए बनाये गये और वह और राजकुमार एकसाथ चल दिये।

हिरन-बालक ने अपने धर्म-पिता से विदा लेते हुए कहा—

"पिताजी, आप बिल्कुल चिन्ता न करें। आप हिरन-बालक पर पूरा भरोसा कर सकते हैं। दो बरस तक हमारा इन्तज़ार करें और यह याद रखें कि या तो हम नाम पैदा करके आयेंगे या फिर लौटेंगे ही नहीं।"

इस तरह दोनों भाई वहां से चल दिये। चलाचल चलाचल, हर मंज़िल, हर कूच वे एक बहुत घने और दुर्गम जंगल में पहुंचे। वे किसी तरह उसमें घुसे और वहां उन्होंने एक ऊंचा-सा टीला और उसकी चोटी पर एक विराट मकान देखा जिसके सामने एक प्यारा-सा बगीचा था। इस मकान में पांच और नौ सिरोंवाले आदमखोर दानव रहते थे।

राजकुमार ने हिरन-बालक से कहा –

"मैं बहुत थक गया हूं, भैया। आओ, थोड़ा आराम कर लें।"

"ठीक है," हिरन-बालक राज़ी हो गया।

राजकुमार वहीं लेट गया और उसने आंखें मूंद लीं।

हिरन-बालक बोला – "तुम यहां लेटकर झपकी ले लो और मैं यहां बगीचे में से कुछ रसीले फल तोड़ लाता हूं।"

हिरन-बालक भाई की तरह नहीं, बल्कि पिता की तरह राजकुमार की चिन्ता करता था।

वह बगीचे में गया और सबसे बढ़िया सेबों का पेड़ चुनकर कुछ सेब तोड़ने लगा।

अचानक नौ सिरोंवाला एक दानव भागता हुआ बाहर आया।

"किसने इस बगीचे में पैर रखने की जुर्रत की है?" वह चिल्लाया। "मेरे डर के कारण इस बगीचे के ऊपर तो पक्षी भी पंख नहीं फड़फड़ाते और न ज़मीन पर चींटियां ही रेंगती हैं।"

"मैं हूं हिरन-बालक जिसने ऐसी जुर्रत की है," नौजवान ने ऊंची आवाज़ में जवाब दिया।

यह सुनकर दानव गुस्से और डर से बड़बड़ाता हुआ पीछे हट गया। कारण कि सभी दानवों की भांति उसे भी यह मालूम था कि हिरन-बालक के आने का मतलब है कि उनकी शामत आई है। वास्तव में दानव तो ऐसे डर गये कि कहीं छिप जाने के लिए सभी दिशाओं में भागने-दौड़ने लगे। मगर हिरन-बालक ने उन सभी को खोज-खोज कर मौत के घाट उतार दिया। केवल पांच सिरोंवाला एक दानव ही बच रहा जो बरसाती में जा छिपा था।

इसी बीच राजकुमार छाया में मीठी नींद सोया रहा।

सभी दानवों को ठिकाने लगाने के बाद ही हिरन-बालक लौटा और उसने अपने भाई को जगाया। अब वे ही दानवों के घर और उनकी दौलत के मालिक थे।

दोनों भाई बगीचे में घूमते और सैर करते हुए अपना मन बहला रहे थे। इसी समय पांच सिरोंवाला दानव आबाखानबोमी बरसाती में बैठा हुआ थरथर कांप रहा था।

आखिर किसी तरह उसने अपने डर पर काबू पाया, उस कोने से बाहर निकला जहां वह छिपा बैठा था, बरसाती से नीचे उतरा और उसने हिरन-बालक से प्रार्थना की –

"मुझे मारो नहीं," उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई बनकर रहूंगा। हमारी सारी दौलत आपकी होगी।"

हिरन-बालक मुस्कराया और पांच सिरोंवाले दानव ने अपनी बात जारी रखी –

"ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी है कि आप अपना घर-बार छोड़कर दुनिया भर में गांव-गांव और बस्ती-बस्ती की धूल छानते फिर रहे हैं?"

हिरन-बालक ने जवाब दिया –

"हमें एक काम पूरा करना है। अगर तुम्हारे सहायता न देने के कारण हम उसे पूरा करने में असफल रहे तो बाकी सभी दानवों की भांति मैं तुम्हें भी मार डालूंगा।"

उसने दानव को बताया –

"हम सुन्दरी येलेना की खोज कर रहे हैं। तुम्हें भी हमारे साथ उसकी खोज करनी होगी।"

बाबाखानजोमी के पास छोटा-सा एक ऐसा घर था जिसे वह जहां भी जाता पीठ पर लादकर अपने साथ ले जा सकता था।

दानव ने कहा –

"मेरे इस घर में बैठ जाइये। हम सुन्दरी येलेना की खोज करेंगे। मगर उसे पाना आसान नहीं होगा। बहुत से लोग उसे पाने के लिए बेकरार हैं।"

दोनों भाई उसके घर में जा बैठे। दानव घर को अपनी पीठ पर लाद कर ले चला।

इसी तरह उन्होंने तीन महीने या इससे अधिक समय तक यात्रा की और आखिर वे एक नदी के तट पर पहुंचे।

"मैं थक गया हूं," राजकुमार ने हिरन-बालक से कहा, "आओ, यहां थोड़ा आराम करें।"

जाहिर है कि बाबाखानजोमी तो और भी ज्यादा थका हुआ था। दोनों भाई उस छोटे-से घर से बाहर निकले और नदी के किनारे बैठकर आराम करने लगे। उन्हें बहुत जोर की प्यास लगी हुई थी। उन्होंने नदी का पानी पीना चाहा, मगर वह तो बहुत ही नमकीन था।

"यह पानी इतना खारा क्यों है?" हिरन-बालक ने हैरान होकर पूछा।

"यह पानी नहीं, आंसू हैं," बाबाखानजोमी ने जवाब दिया। "वहां ऊंचाई पर पांच सिरोंवाला एक दानव रहता है। वह भी सुन्दरी येलेना को बहुत चाहता है, मगर येलेना ने उसे ठुकरा दिया है। येलेना के प्रति दानव का प्रेम उसके दिल में आग बनकर बहकता है और वह रो-रोकर आंसुओं की नदी बहाता रहता है।"

हिरन-बालक ने आश्चर्यचकित होते हुए यह बात सुनी।

"अगर मैं सुन्दरी येलेना को अपने भाई के लिए हासिल न करूं तो मेरा नाम हिरन-बालक नहीं!"

वे नदी के ऊपर, ऊंचाई पर रहेनेवाले दानव के पास गये। हिरन-बालक ने उससे कहा –

"दानव, सच सच बताओ कि क्या तुम सुन्दरी येलेना को बहुत ही प्रेम करते हो?"

दानव ज़ार-ज़ार रोता रहा, उसके आंसू बहते रहे और उनसे नदी बन गई।

"उसे केवल एक बार देख पाने के लिए मैं तो खुशी से अपनी जान भी दे सकता हूं," उसने जवाब दिया।

"मैं तुम्हें वचन देता हूं कि तुम्हारी यह तमन्ना पूरी हो जायेगी। जब हम सुन्दरी येलेना को लेकर घर लौटेंगे, तो उस समय तुम उसे देख सकोगे।"

इतना कहकर वे आगे चल दिये।

चलाचल चलाचल, दर मंज़िल, दर कूच। इसी तरह कुछ महीने बीत गये। यद्यपि वे रास्ते में मिलनेवाले जंगली जानवरों का शिकार कर उन्हें खाते रहे, तथापि उनकी रसद खत्म होती जा रही थी। वे इसी तरह चलते गये, चलते गये और आखिर वृक्षों के एक छोटे-से झुरमुट के पास पहुंचे। सुन्दरी येलेना का अभी तक कोई अता-पता नहीं था।

हिरन-बालक ने कहा –

"सामने एक गांव है। मैं वहां जाकर पूछताछ करता हूं। हो सकता है कोई यह जानता हो कि हम सुन्दरी येलेना को कहां खोज करें।"

बाबाखानजोमी को, उसके छोटे-से घर और राजकुमार को उसके अन्दर छोड़कर हिरन-बालक गांव की ओर चल दिया। वहां उसे झोंपड़ी के पास खड़ी एक बुढ़िया दिखाई दी। हिरन-बालक ने उससे पूछा –

"दादी अम्मा, अपने बच्चों के प्रति सभी माताओं के प्रेम के नाम पर मुझे यह बताओ कि मैं सुन्दरी येलेना को कहां पा सकता हूं?"

बुढ़िया को यह प्रश्न सुनकर बड़ी हैरानी हुई। उसे मालूम था कि सुन्दरी येलेना

के पास पहुंचना कितना कठिन है। उसे आश्चर्य इस बात का था कि यह नौजवान इस विषय की कितने सरल ढंग से चर्चा कर रहा है।

"उसे ढूंढ़ पाना बहुत ही मुश्किल है, बेटा," बुढ़िया ने कहा। "ऐसा लगता है कि तुम उसके बारे में बहुत ही कम जानते हो। उसको तो महान पवन महाराज भी प्यार करता है और वह उसे हमेशा अपने साथ उड़ा ले जाने की घात में रहता है। इसीलिए उसे नौ तालों में बंद रखा जाता है और वह सूरज की किरण भी कभी नहीं देख पाती – उसके घरवालों को डर है कि उसे हर लिया जायेगा।"

बुढ़िया ने हिरन-बालक को सुन्दरी येलेना का अता-पता बताया।

"उसकी गढ़ी एक बहुत बड़े बाग़ के बीच में है। बाग़ के सभी ओर बहुत ऊंची दीवार है। सुन्दरी येलेना अपनी मां और भाइयों के साथ वहां रहती है।"

"मगर हम वहां कैसे पहुंच सकते हैं?" हिरन-बालक ने कहा। "मेरा भाई उससे शादी करना चाहता है।"

"यह कोई आसान काम नहीं है," बुढ़िया ने कहा। "सुन्दरी येलेना के बहुत-से प्रणयार्थी हैं। उसके परिजन यह नहीं चाहेंगे कि वह तुम्हारे भाई से शादी करे। वह अपने प्रणयार्थियों को तीन काम करने को कहती है। वह वचन देती है कि जो उन्हें पूरा कर देगा उसी से वह शादी कर लेगी। मगर जो उन कामों को पूरा नहीं कर पाते, येलेना के भाई उन्हें मार डालते हैं।"

हिरन-बालक मुस्कराया। उसने सोचा – सुन्दरी येलेना भला ऐसे किस काम की कल्पना कर सकती है जिसे मैं और मेरा भाई पूरा नहीं कर सकते? वह उसी अगह लौट आया जहां अपने भाई और बाबाखानजोमी को छोड़कर गया था।

हिरन-बालक और राजकुमार फिर से छोटे-से घर में जा बैठे। दानव ने घर को पीठ पर लाद लिया और वे फिर आगे बढ़ चले।

चलाचल, चलाचल, वे सुन्दरी येलेना की गढ़ी के पास जा पहुंचे। हिरन-बालक ने ही सबसे पहले अन्दर जाने की हिम्मत की।

सुन्दरी येलेना की मां जादूगरनी थी। वह आदमी को मार भी सकती थी और उसे जिन्दा भी कर सकती थी।

उसने हिरन-बालक पर जो नजर डाली तो उसपर से अपनी नजर न हटा सकी। इतना सुन्दर, ऐसा सम्बा-तड़ंगा और हृष्ट-पुष्ट जवान था वह।

"तुम कौन हो और यहां किस लिए आये हो?" उसने पूछा।

हिरन-बालक ने जवाब दिया –

"मैं दोस्त हूं, दुश्मन नहीं।"

"मगर क्या चाहते हो?"

"आपकी सुन्दरी येलेना को अपनी भाभी बनाना।"

सुन्दरी येलेना के तीन भाई थे, मगर इस समय वे तीनों शिकार के लिए जंगल में गये हुए थे।

"तुम यहीं ठहरो," सुन्दरी येलेना की मां ने कहा, "और मेरे बेटों की राह देखो। उनसे बातचीत कर लेना और तब सब कुछ तय हो जायेगा।"

चुनांचे हिरन-बालक बाग़ में बैठकर सुन्दरी येलेना के भाइयों के लौटने का इन्तज़ार करने लगा।

इसी बीच हिरन-बालक का इन्तज़ार करते हुए राजकुमार और बाबाख़ानजोमी को चिन्ता हुई कि कहीं पवन महाराज उससे न भिड़ जायें और उसकी हत्या न कर डालें। इसलिए उन्होंने ख़ुद वहां जाकर उसका हालचाल देखना चाहा।

सुन्दरी येलेना के भाई तो शाम होने पर ही घर लौटे। उनमें से एक अपने कंधे पर हिरन लादे हुए था, दूसरा हिरनी तथा तीसरा आग जलाने के लिए वृक्ष का तना।

उन्हें किसी अजनबी की गन्ध आई और उन्होंने अपनी मां से पूछा –

"मां, यहां कौन है?"

"वह जो दोस्त बनकर आया है, मेरे बेटो। तुम उसका बाल भी बांका मत करना," मां ने जवाब दिया।

इसी बीच बाबाख़ानजोमी राजकुमार को मढ़ी के पास ले आया था। राजकुमार वहां खड़ा होकर इस बात का इन्तज़ार करने लगा कि आगे क्या होता है।

सुन्दरी येलेना के भाई हिरन-हिरनी को साफ़ करने लगे। हिरन-बालक भी उनका हाथ बंटाने लगा। जितनी देर में उन्होंने एक टांग साफ़ की, हिरन-बालक ने बिजली की तेज़ी से बाक़ी सारा हिरन ही साफ़ कर डाला। तीनों भाई उसे आश्चर्य से देखने लगे।

फिर वे खाना खाने बैठे। हिरन-बालक मांस के बड़े-बड़े टुकड़े उठाकर हड़प गया। तीनों भाई फिर उसे आंखें फाड़-फाड़कर देखते रह गये।

वे खा-पीकर सो रहे। अगली सुबह को सुन्दरी येलेना ने कहा –

"अगर राजकुमार मेरे बताये हुए तीनों कामों को पूरा कर देगा, तो मैं उससे शादी कर लूंगी। अगर वह असफल रहा, तो नहीं।"

राजकुमार को सुन्दरी येलेना के सामने लाया गया। सुन्दरी येलेना ने उससे बातचीत की, मगर वह बुत बना खड़ा रहा। उसने मुंह से एक भी शब्द नहीं निकाला, उसकी

समझ में तो यही नहीं आ रहा था कि क़िस्सा क्या है। मगर हक़ीक़त यह थी कि सुन्दरी येलेना की मां ने उस पर जादू कर दिया था।

"जाओ यहां से!" सुन्दरी येलेना चिल्लाई और उसने राजकुमार को अपने कमरे से बाहर निकाल दिया।

राजकुमार एक शराबी की तरह लड़खड़ाता हुआ बाहर आया। हिरन-बालक ने झटपट उसके पास जाकर कहा –

"क्या पूछा था उसने तुम से?"

"मुझे कुछ मालूम नहीं, मेरे भाई। मैं तो बिल्कुल हतप्रभ हो गया था," राजकुमार ने जवाब दिया।

हिरन-बालक को बहुत बुरा लगा। उसने सुन्दरी येलेना से अनुरोध किया कि वह उसके भाई को एक और मौक़ा दे।

मगर दूसरी बार भी राजकुमार येलेना के सामने बुत बना खड़ा रहा और मानो सपना-सा देखता हुआ उसके कमरे से बाहर निकला।

हिरन-बालक ने बाबाखानजोमी से इसकी चर्चा की। उन्होंने मिलकर सलाह-मशविरा और यह तय किया कि उन्हें क्या करना है। तब हिरन-बालक फिर से सुन्दरी येलेना के पास गया और उससे प्रार्थना की कि वह राजकुमार को तीसरा मौक़ा दे।

राजकुमार सुन्दरी येलेना के सामने आकर फिर से बुत बन गया। येलेना की मां ने उसपर फिर से जादू कर दिया था। मगर बाबाखानजोमी ने वहां आकर जादू-टोने का असर खत्म करनेवाला एक तावीज़ निकालकर उस कमरे में फेंक दिया जहां सुन्दरी येलेना राजकुमार से बातें कर रही थी।

अचानक दीवारें झूम गईं और राजकुमार को होश आ गया। जादू टूटने पर उसने सुन्दरी येलेना को देखा, भागकर उसके पास गया और उसका हाथ थामकर बोला –

"तुम मेरी हो! तुम मेरी हो!"

हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना को भी बहुत ख़ुशी हुई क्योंकि उसे मालूम था कि उसकी मां उसके चाहनेवालों पर जादू-टोना कर देती है ताकि वह शादी न कर पाये। इस तरह वह और राजकुमार मुस्कराते और ख़ुश होते हुए इकट्ठे बाहर आये।

अगली सुबह को दूल्हा-दुल्हन बगीचे में टहलने लगे। हिरन-बालक निकट खड़ा हुआ उन्हें देखकर ख़ुश हो रहा था। अचानक महान पवन महाराज ने सुन्दरी येलेना को देखा और वह राजकुमार पर झपटा। उसने राजकुमार को ऊपर उठा लिया, उसे

कई चक्कर दिये और फिर ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा। इसके बाद उसने सुन्दरी येलेना को पकड़ा और उसे आकाश में बहुत ऊंचाई पर उड़ा ले गया।

हिरन-बालक ने जब अपने भाई को ज़मीन पर बेजान-सा पड़ा देखा तो उसका तो दिल ही बैठ गया और उसे सुन्दरी येलेना का बिल्कुल ध्यान ही न रहा। अब उसे याद आया कि गांव में जिस बुढ़िया से उसकी मुलाक़ात हुई थी, उसने उसे महान पवन महाराज के बारे में आगाह कर दिया था। मगर हाय, अब क्या हो सकता था, अब तो बात हाथ से जा चुकी थी!

हिरन-बालक बैठकर ज़ार-ज़ार रोने लगा। तब सुन्दरी येलेना की मां उसके पास आकर बोली –

"रोओ नहीं, मैं तुम्हारे भाई को अभी ज़िन्दा कर देती हूं। मगर महान पवन महाराज सुन्दरी येलेना को चुरा ले गया है। अब हम उसे कैसे हासिल करें, यह मैं नहीं जानती।"

येलेना की मां ने एक रूमाल निकालकर राजकुमार के मुंह पर फेरा और वह फ़ौरन ज़िन्दा हो गया। वह उठा और उसने आंखें मसलते हुए कहा –

"बहुत देर सोया रहा हूं मैं!"

मगर जब उसने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली तो सुन्दरी येलेना को ग़ायब पाया। वह रोने और सिसकियां भरने लगा, क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

तब हिरन-बालक बाबाखानजोमी के पास गया और बोला –

"महान पवन महाराज दुल्हन को उठा ले गया है। हमें हर क़ीमत पर उसे वापस लाना है।"

दानव ने कहा –

"अगर मैं तुम्हारी मदद न कर पाऊं, तो मुझे यहीं मौत आ जाये। तुम मेरे बायें कान में देखो, तुम्हें वहां एक ज़ीन नज़र आयेगा। मेरे बायें कान से तुम्हें एक लगाम और चाबुक मिलेगा। तुम उन्हें निकालकर मेरे मुंह में लगाम डालो और हम फ़ौरन यहां से चल देंगे।"

राजकुमार को सुन्दरी येलेना के घर में छोड़कर हिरन-बालक ने बाबाखानजोमी को लगाम पहनायी, उसकी पीठ पर ज़ीन रखकर उसके सौ बन्द कसे और उसके पांच मुंहों में लगाम की सौ कड़ियां डालीं।

"अब मेरी पीठ पर सवार हो जाओ," बाबाखानजोमी ने कहा, "और ऐसे कसकर

तीन बार मेरी पीठ पर चाबुक मारो कि मेरी पीठ पर से चमड़ी की नौ पट्टियां उतर जायें। उसके बाद जमकर बैठे रहो, जरा भी नहीं डरो और मैं हवा की तरह उड़ चलूंगा!"

बाबाजानओमी ने जो कुछ कहा था वह करने के पहले हिरन-बालक राजकुमार से, अपने भाई से विदा लेने गया।

"तुम यहीं हमारा इन्तजार करो," उसने कहा, "हम सुन्दरी येलेना को खोजने जा रहे हैं।"

इसके बाद वह दानव की पीठ पर सवार हुआ और उसने उसकी पीठ पर तीन बार कसकर चाबुक मारा। उसकी पीठ से चमड़ी की नौ पट्टियां उधड़ गईं। दानव हुंकारा और उसने जोर से सीटी बजाई, उसने अपने तन से जमीन पर जोर का आघात किया और तेजी से ऊपर को उड़ता हुआ बादलों को चीर गया। आकाश में उड़ते हुए वे बहुत दूर चले गये और जब उन्हें एक मैदान नजर आया, तभी नीचे उतरे। मैदान में एक बुढ़िया दिखाई दी। हिरन-बालक ने उससे पूछा कि क्या उसे महान पवन महाराज का कुछ अता-पता मालूम है।

बुढ़िया सिसकने और रोने लगी।

"मेरे बेटे, मेरे लाल," वह चिल्लाई, "तुम यहां किसलिए आये हो? तुम्हें यहां आने की हिम्मत ही कैसे हुई? महान पवन महाराज को अजनबी की गन्ध आ जाती है, उसे मालूम हो जायेगा कि तुम यहां हो और तब वह हम सभी को मार डालेगा! अभी कुछ ही देर पहले वह एक ऐसी सुन्दरी को यहां लाया है कि इस धरती पर उसका सानी ढूंढे नहीं मिल सकता। पवन महाराज इतने जोर से हुंकार रहा था और ऐसे सीटियां बजा रहा था कि बस केवल उसी की आवाज सुनाई दे रही थी और उसके इर्दगिर्द सभी चीजें तहस-नहस होकर पृथ्वी पर गिरती जा रही थीं।"

"मैं इसी सुन्दरी की खोज में यहां आया हूं," हिरन-बालक ने कहा। "तुम मुझे उसके पास पहुंचने का रास्ता बता दो।"

"अच्छी बात है," बुढ़िया राजी हो गई, मगर वह डर से थर-थर कांप रही थी और बड़ी मुश्किल से ही उसकी सांस आ-जा रही थी।

हिरन-बालक नीचे उतरा, उसने जीन, लगाम और चाबुक दानव के कानों में छिपा दिये और बुढ़िया के पीछे-पीछे चल दिया।

बाबाजानओमी पीछे रह गया। वह इधर-उधर टहलता, हर चीज को देखता-भालता और मनमानी करता रहा। वह तो पवन महाराज के सारे चूल्हे भी खा गया।

बुढ़िया हिरन-बालक को महान पवन महाराज के क़िले में पहुंचाकर वापस चली गई।

इसी सुबह को पवन महाराज शिकार के लिए बाहर चला गया था। इसलिए सुन्दरी येलेना क़िले में अकेली थी, रो-धो रही थी।

हिरन-बालक येलेना के कमरे के दरवाज़े पर पहुंचा, उसे ठोकर लगाकर खोला और उसके अन्दर गया।

"तुम यहां कैसे पहुंचे?" सुन्दरी येलेना ने पूछा। "और मेरे बेचारे बूल्हे का क्या हुआ?"

देवर-भाभी ने आलिंगन किया और चुम्बन लिया।

हिरन-बालक ने उसे सारा हाल कह सुनाया और बोला –

"अब मैं तुम्हें यहां से ले जाने को आया हूं।"

"ओह, तुम यह नहीं कर पाओगे!" येलेना ने दुखी होते हुए कहा। "बुरा हो इस दुष्ट पवन महाराज का, वह हम दोनों को मार डालेगा।"

हिरन-बालक उसी बुढ़िया के पास वापस गया जिसने उसे पवन महाराज के क़िले में पहुंचाया था और उससे सलाह ली कि वह सुन्दरी येलेना को कैसे वहां से ले जाये और पवन महाराज से कैसे पिंड छुड़ाये।

बुढ़िया ने कहा –

"अभी जाकर सुन्दरी येलेना से कहो कि अगली बार जब पवन महाराज शिकार को जाये, तो वह झटपट घर के एक कोने को फूलों से सजा दे। महाराज जब लौटे तो वह रोनी-सी सूरत बनाकर उसे यह दिखाये कि मैं तुम्हारे बिना बहुत उदास रही हूं।"

अगली सुबह को पवन महाराज जैसे ही शिकार को गया वैसे ही सुन्दरी येलेना बाग़ में गई, उसने कुछ फूल चुने और एक बालिका की भांति मकान का एक कोना सजाने के काम में जुट गई।

शाम को जब पवन महाराज घर लौटा तो येलेना को देखकर हैरान रह गया।

"तुम एक बच्चे की तरह फूलों से यह क्या खिलवाड़ कर रही हो?" उसने पूछा।

"तो मैं और क्या करूं?" उसने कहा। "जब तुम घर पर नहीं होते तो किसी तरह मुझे अपना दिल तो बहलाना ही होता है। अगर तुम मुझे केवल इतना बता देते कि तुम्हारी आत्मा किस जगह छिपी रहती है, तो मुझे इतनी ऊब और ऐसे एकाकीपन की अनुभूति न होती।"

"सुन्दरी, मेरी आत्मा का तुम्हें क्या करना है?" उसने पूछा।

"तुम भी कैसी अजीब बात कर रहे हो! अगर मुझे यह मालूम हो कि तुम्हारी आत्मा कहां है, तो मैं तुम्हारी राह देखते हुए उसे चूम और सहला तो सकती हूं। आखिर मैं तुम्हारी पत्नी हूं। बता दो न!"

"अच्छी बात है," महान पवन महाराज ने कहा। "तुम अगर ऐसा ही चाहती हो तो मैं बता देता हूं।"

वह येलेना को किले की छत पर से जाकर बोला –

"पेड़ों के बीच तुम्हें वह हिरन नजर आ रहा है न? तीन आदमी उसके लिए घास काट रहे हैं और वह अकेला ही उसे इतनी अल्दी-अल्दी खाता जाता है कि घास मुश्किल से ही पूरी हो पाती है। इसी हिरन के सिर में तीन छोटे-छोटे डिब्बे रखे हैं और मेरी आत्मा उन्हीं में छिपी हुई है।"

"मगर कोई उस हिरन को मार डालेगा तो?" सुन्दरी येलेना ने पूछा।

"नहीं, उसे तो केवल मेरे ही तीर-कमान से मारा जा सकता है," पवन महाराज ने कहा। "प्रत्येक डिब्बे में एक पक्षी बन्द है। अगर एक पक्षी को मार दिया जाता है तो मैं पैरों से घुटनों तक पथरा जाऊंगा, अगर दूसरे पक्षी की हत्या कर दी जाती है तो मैं कमर तक पत्थर हो जाऊंगा और तीसरे पक्षी के मरते ही मैं भी मर जाऊंगा। अब तुम समझ गईं कि मेरी आत्मा कहां है?"

अगली सुबह को महान पवन महाराज किसी काम के सिलसिले में बाहर चला गया। सुन्दरी येलेना ने उसका तीर-कमान लेकर हिरन-बालक को दे दिया और उसे यह भी समझा दिया कि पवन महाराज को कैसे मारा जा सकता है।

हिरन-बालक तो खुशी से फूला न समाया। उसने कमान और तीर लिये और जंगल में चला गया जहां हिरन चर रहा था। उसने एक तीर चलाकर हिरन को मार डाला, वह भागकर उसके करीब पहुंचा और उसके सिर के दो टुकड़े कर उसमें से तीनों डिब्बे निकाल लिये।

मगर जैसे ही हिरन मरा वैसे ही पवन महाराज को महसूस हुआ कि कोई मुसीबत आ गई है। वह हड़बड़ा कर घर की ओर भागा।

मगर इसी समय हिरन-बालक ने पहले छोटे-से पक्षी की गर्दन मरोड़ दी और पवन महाराज की टांगें पथरा गईं। तब उसने दूसरे पक्षी की गर्दन मरोड़ी और पवन महाराज का धड़ बेजान हो गया और मुश्किल से ही घिसटता हुआ वह बहलीज तक पहुंच पाया।

पवन महाराज ने सुन्दरी येलेना से कहा –

"तुमने मुझे धोखा दिया है, सुन्दरी येलेना!" और उसने सीढ़ियों पर चढ़ने की कोशिश की। तभी हिरन-बालक ने तीसरे पक्षी को अपने हाथों में पकड़ कर ऊंची आवाज में कहा –

"अब यह लो सजा अपनी काली करतूत की!" उसने तीसरे पक्षी की गर्दन भी मरोड़ दी।

पवन महाराज का दम निकल गया और वह जमीन पर गिर पड़ा। हिरन-बालक सुन्दरी येलेना के पास आकर बोला कि अब हमें यहां से चल देना चाहिए।

"तुम पहले सौ कमरे लांघकर दसवें कमरे में जाओ। वहां पवन महाराज का घोड़ा बंधा हुआ है। वह हवा की तरह उड़ता है, पलक झपकते ही हमें घर पहुंचा देगा।"

हिरन-बालक ने पवन महाराज का घोड़ा ढूंढ़ लिया और तब उसने बाबाखानजोमी को बुलाया। उसने दानव के कानों में से जीन और लगामें निकालीं, उसकी पीठ पर सवार हुआ, सुन्दरी येलेना को घोड़े पर चढ़ाया और वे उड़ चले।

इस तरह सुन्दरी येलेना और राजकुमार का पुनर्मिलन हुआ। बड़ी धूम-धाम से उनकी शादी हुई और हिरन-बालक को सभी ने हार्दिक धन्यवाद दिया।

अब राजकुमार के पिता और हिरन-बालक के धर्म-पिता यानी बूढ़े राजा का हाल सुनिये। उसने तो यह समझ लिया था कि उसके बेटे अब इस दुनिया में नहीं रहे। उसके दुख का पारावार नहीं था। उसने अपने सारे राज्य में मातम मनाने का हुक्म दे दिया और खुद भी रोते-रोते अपने दिन बिताता।

इसी बीच दुल्हन के परिवार में दावत उड़ाने के बाद राजकुमार, हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना बाबाखानजोमी की पीठ पर लदे छोटे-से घर में बैठे हुए अपने राज्य की ओर लौट रहे थे।

जब वे उस दानव के पास से गुजरे जिसने येलेना के प्रेम में आंसुओं की नदी बहा रखी थी तो हिरन-बालक ने उससे कहा –

"हां तो, दानव, तुम सुन्दरी येलेना को देखना चाहते हो?"

"आह, हिरन-बालक, कौन मुझे ऐसा करने देगा!" दानव ने कहा।

"वह यहीं है, तुम अगर चाहो तो उसे देख सकते हो!" हिरन-बालक ने जवाब दिया।

दानव सुन्दरी येलेना पर नजर डालते ही उसके रूप की चमक से अंधा हो गया, वह लड़खड़ाकर गिरा और देखते ही देखते उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

हिरन-बालक और उसके संगियों ने अपना सफ़र जारी रखा। उन्होंने नौ सिरोंवाले दानवों के घर में रात बिताई और आगे चल दिये।

अभी उनका पांच महीने का सफ़र बाक़ी था। तभी वे एक जंगल के सिरे पर आराम करने के लिए ठहरे।

रात के वक़्त तीन कबूतर अचानक उड़ते हुए आये और वृक्ष की शाखा पर जा बैठे। उनमें से एक ने कहा –

"जब बूढ़े राजा को यह खबर मिलेगी कि उसका बेटा सुन्दरी येलेना के साथ लौट रहा है, तो वह उसे एक बन्दूक उपहारस्वरूप भेजेगा। बन्दूक चल जायेगी और राजकुमार की जान जाती रहेगी। पर जो कोई भी हमारी यह बात सुनकर इसकी चर्चा करेगा, वह पत्थर बन जायेगा।"

"ऐसा ही होगा!" बाक़ी दो कबूतरों ने इसकी पुष्टि की।

दूसरे कबूतर ने कहा –

"जब बूढ़े राजा को पता चलेगा कि उसका बेटा निकट आ गया है तो वह राजकुमार के लिए एक घोड़ा लेकर उसका स्वागत करने आयेगा। घोड़ा राजकुमार को गिराकर मार डालेगा।"

"ऐसा ही होगा!" बाक़ी दो कबूतरों ने पुष्टि की और साथ में यह भी जोड़ा –

"पर जो कोई भी हमारी यह बात सुनकर इसकी चर्चा करेगा, वह पत्थर बन जायेगा।"

तीसरे कबूतर ने कहा –

"दूल्हा-दुल्हन जब घर पहुंच जायेंगे तो रात के वक़्त भयानक अजगर ग्वेलेशापी आयेगा और उन दोनों का गला घोंटकर उन्हें मार डालेगा। पर जो कोई भी हमारी यह बात सुनकर इसकी चर्चा करेगा, वह पत्थर बन जायेगा।"

इतना कहकर वे तीनों उड़ गये।

हिरन-बालक ने यह सब कुछ सुना, मगर किसी से इसकी चर्चा नहीं की।

सुबह हुई तो ये तीनों दानव के छोटे-से घर में जा बैठे। दानव उन्हें लेकर आगे चल दिया।

बूढ़े राजा को जब यह पता चला कि उसका बेटा ज़िन्दा और ठीक-ठाक है तथा सुन्दरी येलेना के साथ घर लौट रहा है, तो उसने उसे एक बन्दूक उपहारस्वरूप भेजी। मगर राजकुमार तो उसे छूने भी न पाया कि हिरन-बालक लपक कर आगे गया, उसने बन्दूक छीनी और बहुत दूर फेंक दी।

"मेरे पिता ने तोहफ़े में बन्दूक़ भेजकर मेरा सम्मान किया है मगर हिरन-बालक ने तो मुझे उसे हाथ भी नहीं लगाने दिया," बहुत ही निराश होते हुए राजकुमार ने मन ही मन सोचा।

वे फिर आगे चल दिये। बूढ़े राजा ने अपने बेटे के लिए घोड़ा भेजा, मगर हिरन-बालक ने उसे घोड़ा छूने भी नहीं दिया, उसे वापस भेज दिया। राजकुमार को इस बात से और भी अधिक दुख हुआ।

आख़िर वे घर पहुंचे। राजा ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया और शादी की ख़ुशी मनाने के लिए यहां भी बड़ी दावत की गई।

तब हिरन-बालक ने क़िले से बाहर आकर बाबाख़ानजोमी से कहा –

"तुम ने वफ़ादारी से सेवा की है, इसके लिए धन्यवाद। अब तुम जहां भी चाहो जा सकते हो और सुख-चैन का जीवन बिता सकते हो।"

दानव चल गया, और हिरन-बालक दबे पांव दूल्हे-दुलहन के कमरे की ओर गया। वह दरवाज़े पर खड़ा रहकर प्रतीक्षा करने लगा। दूल्हा-दुलहन सो रहे थे, पर हिरन-बालक जाग रहा था। वह अपनी तलवार तैयार किये हुए सावधान खड़ा था। वह जानता था कि अपने कोका-भाई की ज़िन्दगी को वही बचा सकता है।

आधी रात को म्वेलेझापी नमूदार हुआ। वह चुपके-चुपके दूल्हा-दुलहन के पलंग की ओर बढ़ा और अपने जबड़ों को खोलकर उनका गला घोंटने ही वाला था कि हिरन-बालक ने अपनी तलवार उठाई और एक ही वार में अजगर का सिर काट डाला। इसके बाद उसने अजगर के टुकड़े करके उन्हें पलंग के नीचे फेंक दिया।

सुबह होने पर दूल्हा-दुलहन जागे। उन्हें इस बात का आभास तक भी नहीं था कि रात को क्या घटना घटी थी।

मगर जब नौकर-चाकर नवदम्पति का कमरा साफ़ करने आये तो उन्हें पलंग के नीचे से अजगर की लाश के टुकड़े मिले। राजा यह ख़बर पाकर लाल-पीला हो गया। उसे लगा कि कोई उसका मज़ाक़ उड़ा रहा है।

अब इस मामले की चर्चा और इस बात पर बहस होने लगी कि किसने ऐसा किया है। सारा दोष हिरन-बालक के माथे मढ़ दिया गया। उसी ने राजा की भेजी बन्दूक़ फेंककर और घोड़ा लौटाकर राजकुमार का अपमान किया था। हिरन-बालक ने ही अब उसके पलंग के नीचे अजगर के टुकड़े फेंककर उसका मज़ाक़ उड़ाया है!

हिरन-बालक ने कहा –

"मैंने तो आप लोगों का भला ही किया है। अब ऐसा मत कीजिए कि आप लोग हंसी-खुशी का जीवन बितायें और मैं इस दुनिया से चल बसूं!"

मगर वे लोग उससे बहुत नाराज थे। उन्होंने यह बताने की मांग की कि यह क़िस्सा क्या है और अजगर के टुकड़े कहां से आये।

"अच्छी बात है," हिरन-बालक ने कहा, "मैं वह सब कुछ बता दूंगा जो आप जानना चाहते हैं। आशा करता हूं कि बाद में आपको इस बात का दुख नहीं होगा कि आपने उसी आदमी की जान ले ली है जिसने आपकी खुशी लौटाने के लिए कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। तो सुनिये। जब हमने जंगल के छोर पर डेरा डाला था तो उसी रात को तीन कबूतर आये और एक शाखा पर बैठकर उन्होंने यह कुछ कहा। पहला कबूतर बोला – 'दूल्हा-दुल्हन जब नजदीक आयेंगे तो बूढ़ा राजा अपने बेटे के लिए एक बन्दूक भेजेगा। बन्दूक चल जायेगी और राजकुमार मारा जायेगा। मगर जो कोई इसकी चर्चा करेगा, पत्थर हो जायेगा।'"

इतना कहते ही हिरन-बालक पैरों से घुटनों तक पथरा गया।

अब वे समझ गये थे कि क्यों उसने पहले यह चर्चा करना नहीं चाहा था। वे उसके चुप रहने के लिए उसकी मिन्नत-समाजत करने और यह कहने लगे –

"हिरन-बालक बस, तुम अब और कुछ मत कहो!"

मगर हिरन-बालक ने जवाब दिया –

"नहीं, अब मैंने कहना शुरू कर दिया है तो पूरी बात कहकर ही रहूंगा। तो आगे सुनिये ... दूसरे कबूतर ने कहा – 'बूढ़ा राजा अपने बेटे के लिए एक घोड़ा भेजेगा। राजकुमार उसकी पीठ से गिरकर मर जायेगा। मगर इस बात की चर्चा करनेवाला पत्थर हो जायेगा।'"

और हिरन-बालक कमर तक पथरा गया।

"बस करो! अब आगे कुछ नहीं कहो!" सभी गिड़गिड़ाये।

"नहीं," हिरन-बालक ने जवाब दिया। "पहले आप लोगों ने मुझ पर विश्वास नहीं किया और अब बहुत देर हो चुकी है। हां तो, तीसरा कबूतर बोला – 'रात के वक़्त जब दूल्हा-दुल्हन अपने कमरे में सोते होंगे, ग्वेलेशापी अजगर वहां आयेगा और उनके गले घोंटकर उन्हें मार डालेगा ...'"

वह इससे अधिक और कुछ न कह पाया और पूरी तरह पत्थर हो गया।

बूढ़ा राजा और राजकुमार फूट-फूट कर रोये, मगर इससे क्या हासिल हो सकता था?

सुन्दरी येलेना कुछ ही समय बाद बच्चे को जन्म देनेवाली थी। इस चीज़ से भी राजकुमार को कोई खुशी नहीं हो रही थी।

"चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, मैं हर हालत में अपने सच्चे दोस्त और भाई को ज़िन्दा करके रहूंगा!" राजकुमार ने मन ही मन सोचा।

उसने लोहे के पाद-कवच पहने और अपना लोहे का डंडा लेकर दुनिया का चक्कर लगाने को निकल पड़ा। वह जगह-जगह भटकता और रास्ते में मिलनेवाले हर आदमी से यह पूछता रहा कि किस तरह वह अपने कोका-भाई को फिर से ज़िन्दा कर सकता है। एक दिन वह बहुत ही थक-हारकर किसी जंगल के छोर पर आराम करने के लिए बैठ गया। अचानक एक बूढ़ा उस जंगल से बाहर निकला। राजकुमार ने उससे भी वही सवाल किया जो वह दूसरों से करता रहा था।

बूढ़े ने जवाब दिया –

"घर लौट जाओ। तुम्हारे कोका-भाई की जान बचानेवाला तो तुम्हारे घर ही में है।"

मगर राजकुमार के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। तब बूढ़े ने फिर से कहा –

"क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे घर में सुनहरे बालोंवाले बेटे ने जन्म लिया है? अगर अपने कोका-भाई की जान बचाना चाहते हो तो तुम्हें अपने बेटे की बलि देनी होगी। पालने में ही उसकी हत्या कर उसे उबालो और वह पानी अपने कोका-भाई पर डालो। वह ज़िन्दा हो जायेगा।"

बूढ़े की बात सुनकर राजकुमार अपने घर की ओर लौट चला।

उसने अपने-आप से कहा –

"बच्चे तो और भी हो जायेंगे, मगर हिरन-बालक जैसा दोस्त और भाई कभी नहीं मिलेगा।"

घर लौटने पर उसने पालने में अपना बेटा देखा। उसके सुनहरे घुंघराले बाल चमक-दमक रहे थे और वह आकाश में चमकनेवाले चांद के समान तेजस्वी था।

राजकुमार ने सुन्दरी येलेना को बूढ़े की कही हुई बात बताई। वह फ़ौरन बेटे की बलि देने को राज़ी हो गई।

"हिरन-बालक को ज़िन्दा करने के लिए हमें कोई कोर-कसर न उठा रखनी चाहिए। हर क़ीमत पर हमें दोस्तों के प्रति वफ़ादार रहना चाहिए।"

बूढ़े ने जो कुछ कहा था, उन्होंने बिल्कुल वैसा ही किया। हिरन-बालक हिला-डुला, उसने आंखें खोलीं और ज़िन्दा हो गया।

सुबह होने पर सुन्दरी मेलेगा अपने बेटे के पालने के पास गई। बेशक उसने दोस्त के लिए बेटे को कुर्बान किया था, मगर उसके सीने में मां का दिल था जो बेटे की याद में फटने लगा। अचानक उसे पालने में कुछ हिलता हुआ सा लगा। उसने चादर हटाई तो वहां अपने बेटे को जिन्दा, भला-चंगा और हुमकता हुआ पाया।

अब तो सभी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

उन्होंने पन्द्रह भेड़ें काटीं और उनका सीख-कबाब तैयार किया। चौदह दिन तक वे मौज मनाते और दावत उड़ाते रहे।

भालू ने पाठ पढ़ाया

जार्जियाई लोक-कथा

भालू, भेड़िया और लोमड़ी एक दिन जंगल में मिले। उन्होंने एक-दूसरे के आगे यह रोना रोया कि अक्सर और बहुत अर्से तक उन्हें भूखे ही घूमना पड़ता है और उनके पेट में चूहे कूदते रहते हैं। वे दुखड़ा रो चुके तो उन्होंने आपस में यह तय किया कि अब जो कुछ भी हासिल करेंगे उसे भाई-बन्दी के नाते आपस में बांट लिया करेंगे। इस तरह वे भाई-बहन बन गये, उन्होंने एक-दूसरे के प्रति वफ़ादारी की क़समें खाईं और इकट्ठे शिकार की खोज में चल दिये।

वे चले जा रहे थे शिकार खोजते हुए।

उन्हें एक घायल हिरन मिल गया। उन्होंने झटपट उसकी गर्दन मरोड़ी, उसे खींचकर छाया में घास पर ले गये और लगे उसका बंटवारा करने।

भालू ने भेड़िये से कहा, "लो, तुम इसका बंटवारा करो।"

भेड़िये का भूख के मारे बुरा हाल था और उसके दांत बज रहे थे।

भेड़िये ने ऐसे बंटवारा किया –

"भालू जी, आप हमारे सिरताज और अजेय हैं, इसलिए सिर हुआ आपका, धड़ मेरा और टांगें लोमड़ी की, क्योंकि उसे भागना बहुत पसन्द है।"

भेड़िये ने अपनी बात खत्म भी न की थी कि भालू ने भेड़िये के सिर पर पंजे से इतने जोर की धौल जमाई कि पहाड़ भी उसकी आवाज़ से गूंज गये। भेड़िया दर्द से चीख उठा और ढेर हो गया।

भालू ने अब लोमड़ी को सम्बोधित किया –

"हां, तो लोमड़ी, अब तुम बंटवारा करो।"

मक्कार लोमड़ी खड़ी हुई और चापलूसी करती हुई बोली –

"सिर आपके लिए क्योंकि आप हमारे सिरताज और राजा हैं, धड़ भी आपके लिए क्योंकि आप सदा पिता-तुल्य हमारी चिन्ता करते हैं और टांगे भी आप ही के लिए हैं क्योंकि आप सदा हमारी भलाई करते हैं।"

"शाबाश, मेरी लोमड़ी," भालू बोला, "तुम्हें ऐसी समझदारी से और इतना बढ़िया बटवारा करना किसने सिखाया?"

"श्रीमान जी, आपने भेड़िये का जो हाल किया है, उसे देखने के बाद भी क्या कोई बुद्धू रह सकता है?"

बबर और खरगोश

जार्जियाई लोक-कथा

किसी जंगल में अक्सर जानवर इकट्ठा होते थे। हर बार वहां एक बबर आता, किसी एक जानवर को दबोच लेता और वहीं चीर डालता। बदक़िस्मत जानवर हमेशा डरे-सहमे रहते।

एक दिन वे इकट्ठा होकर सोच-विचार करने लगे कि हर दिन और हर घड़ी के डर से कैसे पिंड छुड़ायें। बहुत देर तक उन्होंने सोच-विचार किया, हर पहलू पर ग़ौर किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि ख़ुद ही बबर को हर दिन एक बलि दे दिया करेंगे और उससे यह अनुरोध करेंगे कि वह हमें हर दिन के डर से निजात दे दे। वे बबर के पास गये और उसे अपना निर्णय बताया।

बबर इस शर्त पर राज़ी हो गया कि उसे बिल्कुल ठीक समय पर बलि मिल जाया करे।

"वरना मैं तुम सभी को मार डालूंगा!" उसने धमकी दी।

इस तरह उसी दिन से वे किसी न किसी जानवर को बबर के पास पहुंचा आते।

होते-होते एक खरगोश की बारी भी आ गई। वे उसे बबर के पास ले चलने को तैयार हुए। खरगोश बोला –

"अब मेरी बारी आ ही गई है, तो जाना तो होगा ही। पर मुझे अकेले ही जाने दो। मैं खुद वहां जाऊंगा और बबर से पिंड छुड़ाने की कोशिश करूंगा। हो सकता है कि मुझे अपनी जान बचाने और इस मुसीबत से तुम्हें छुटकारा दिलाने में कामयाबी मिल जाये।"

जानवर हंस दिये।

"छोटा मुंह बड़ी बात! कैसी खून की हांकी है इस भेंगे और डरपोक खरगोश ने!"

बबर बेहद भूखा था और खरगोश ने जान-बूझकर देर कर दी। गुस्से से बबर की आंखों से चिंगारियां निकल रही थीं और वह दांत पीस रहा था। वह बेसब्री से बलि का इन्तजार करता हुआ अब खुद जाकर सभी जानवरों को ठिकाने लगाने की सोच रहा था। ठीक इसी समय खरगोश नजर आया। बबर ने भयानक दृष्टि से उसे देखते हुए पूछा –

"तुम्हें इतनी देर करने की जुर्रत कैसे हुई?"

"जंगली जानवरों के महाराजा," खरगोश ने नम्रता से उत्तर दिया, "मुझे आपके पास एक खरगोश को पहुंचाने का काम सौंपा गया था। मैं उसे लेकर आ रहा था कि रास्ते में एक और बबर हम पर झपटा और वह खरगोश को एक गहरे गढ़े में घसीट ले गया।"

"कहां है वह, दिखाओ तो उसे मुझे!" बबर ने गरजकर कहा।

खरगोश उसे एक कुएं के पास ले गया और बोला –

"महाराज, वह यहां है। मगर इसमें अकेले झांकते हुए मुझे डर लगता है। आप मुझे अपने पंजों में उठा लें और तब मैं आपको उसे दिखा दूंगा।"

बबर ने उसे पंजों में उठा लिया और उन्होंने कुएं में झांका। पानी में उनकी परछाईं प्रकट हुई – पंजों में खरगोश को उठाये हुए बबर, जो नीचे से ऊपर को देख रहा था।

बबर आग-बबूला हो उठा। उसने खरगोश को एक ओर को फेंका और अपने प्रतिद्वन्द्वी को उसके किए की सजा देने और उससे अपनी बलि छीन लेने के लिए खुद कुएं में कूद पड़ा। मगर कुआं बहुत गहरा था और वह उसमें डूब गया।

यह समाचार सुनकर जानवरों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा – उन्हें ऐसे जालिम दुश्मन से निजात जो मिल गई थी! उन्होंने खरगोश को हार्दिक धन्यवाद दिया।

सोने की कौड़ीवाला अल्तीन-साका

बश्कीरी लोक-कथा

किसी वक़्त का ज़िक्र है कि एक बूढ़ा और एक बुढ़िया कहीं रहते थे। उनका इकलौता बेटा था जिसे सब कोई सोने की कौड़ीवाला अल्तीन-साका कहते थे। ऐसा इसलिए कि उसके पास सोने की एक कौड़ी थी। अल्तीन-साका दूसरे लड़कों से बढ़-चढ़कर कौड़ियां खेलता था, कोई भी उसे मात नहीं दे सकता था।

एक दिन क्या हुआ कि बूढ़ा अपने घोड़ों को पानी पिलाने के लिए झील पर ले गया। उसने अपने घोड़ों को पानी की ओर हांका, मगर उन्होंने अपने अयाल और पूंछें हिलाईं, सुम पटके, ज़ोर से हिनहिनाये और झील से पीछे हटने के लिए अड़ गये: कोई उनके अयाल खींच रहा था, उनकी थूथनियों को झटक रहा था और उन्हें पानी नहीं पीने दे रहा था।

"जाने वहां क्या है?" बूढ़े ने मन ही मन सोचा। "मैं खुद वहां जाकर देखता हूं।"

मगर उसके पानी पर झुकते ही किसी ने अचानक उसकी दाढ़ी पकड़ ली। बूढ़े ने अपनी दाढ़ी छुड़ाने की कोशिश की, मगर उसे कामयाबी न मिली।

उसने इधर-उधर नज़र डाली तो पाया कि बूढ़ी चुड़ैल उबीर उसकी दाढ़ी पकड़े हुए है।

"मेरी दाढ़ी छोड़ दो, मुझे जाने दो, उबीर!" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा। "तुम अगर मुझे छोड़ दोगी तो मैं तुम्हें मेढ़ों का रेवड़ भेंट कर दूंगा।"

"मुझे तुम्हारी भेड़ों का क्या करना है?" उबीर ने कहा।

"तो घोड़ों का झुंड दे दूंगा।"

"तुम्हारे घोड़ों का मैं क्या करूंगी?"

"तो मैं तुम्हें क्या दूं?"

"वही, जो तुम्हारे खेमे में सिर्फ़ एक ही है।"

बूढ़ा बेहद डरा हुआ था। इसलिए उसने यह सोचा तक भी नहीं कि उसके खेमे में क्या चीज़ सिर्फ़ एक ही है।

"अच्छी बात है," उसने कहा, "तुम्हें वही मिल जायेगी, तुम बस मुझे छोड़ दो।"

उबीर ने यह कहते हुए उसे छोड़ दिया—

"याद रखना, मैं तुम्हें कहीं भी जा ढूंढूंगी। मुझ से कोई नहीं छिप सकता!"

घर लौटने पर ही बूढ़े को इस बात का एहसास हुआ कि उबीर उससे क्या पाना चाहती है। उसका अभिप्राय उसके बेटे, उसके प्यारे अल्तीन-साका से था। कारण कि उसके घर में बेटा ही इकलौता था।

बूढ़े को बहुत दुख, बहुत अफ़सोस हुआ, मगर उसने अपनी बीवी या बेटे से इसकी बिल्कुल चर्चा न की।

"यहां की ज़मीन निकम्मी है, चलो हम किसी दूसरी जगह जाकर डेरा डालें," उसने केवल इतना ही कहा।

चुनांचे उन्होंने किसी दूसरी जगह जाकर खेमा गाड़ दिया। मगर अगले दिन अल्तीन-साका को अपनी सोने की कौड़ी न मिली।

"मेरी सोने की कौड़ी कहां गई?" उसने पूछा।

बूढ़े ने जवाब दिया—

"हम शायद वहीं छोड़ आये हैं जहां हमारा पुराना डेरा था। मगर तुम वहां हरगिज़ न जाना, क्योंकि उबीर तुम्हें पकड़ लेगी।"

बूढ़े ने अल्तीन-साका को जो कुछ बीती थी, सारी घटना कह सुनाई।

अल्तीन-साका ने बहुत ध्यान से अपने पिता की बात सुनकर कहा—

"मैं उबीर से नहीं डरता। वह मुझे कभी नहीं पकड़ पायेगी। मैं वहां वापस जा रहा हूं, मगर मुझे केवल इतना बता दें कि मैं किस घोड़े पर सवारी करूं।"

पिता ने उसे समझाने-बुझाने की कोशिश की, मगर अल्तीन-साका अपनी बात पर

अड़ा रहा। वह उबीर से नहीं डरता और इसलिए वह जायेगा और डरूर जायेगा। किसी तरह भी उसके इरादे को बदलना मुमकिन नहीं था।

सो पिता ने कहा –

"अगर तुम यही चाहते हो, तो ऐसा ही सही। अब घोड़ों के झुंड के पास जाओ, वहां अपना फंदा घुमाओ और लगाम हिलाओ। जो भी घोड़ा भागकर सबसे पहले तुम्हारे पास आये, तुम उसी पर सवार हो जाना।"

अल्तीन-साका घोड़ों के झुण्ड के क़रीब पहुंचा, उसने अपना फंदा घुमाया और लगाम हिलायी। तभी एक झबरीला और मोंडी-सी चमड़ीवाला बछेड़ा भागता हुआ उसके पास आया।

अल्तीन-साका ने उसे खदेड़ दिया और फिर पिता के पास आकर पूछा –

"पिताजी, मैं किस घोड़े पर सवारी करूं?"

"क्या मैंने तुम से कहा नहीं था कि अपना फंदा घुमाओ और लगाम हिलाओ!" पिता ने उत्तर दिया।

अल्तीन-साका फिर मैदान में गया जहां घोड़े चर रहे थे। उसने फंदा घुमाया और लगाम हिलायी। फिर से वही बछेड़ा भागता हुआ आया।

"लगता है कि मुझे इसी बछेड़े पर सवार होना पड़ेगा," अल्तीन-साका ने अपने मन में कहा।

उसने बछेड़े को हाथ लगाया तो उसकी गन्दी और झबरीली चमड़ी उतर कर गिर गई। अल्तीन-साका ने लगाम डाली तो बछेड़ा मजबूत और चुस्त बन गया। वह उसे बाड़े से बाहर ले गया तो वह एक हट्टे-कट्टे और शानदार घोड़े में बदल गया। वह उसपर सवार हुआ तो उसने झुण्ड में सभी घोड़ों से बढ़िया और सुन्दर घोड़े का रूप धारण कर लिया।

घोड़े ने अल्तीन-साका से पूछा –

"किधर जाने की ठानी है तुम ने, अल्तीन-साका?"

"अपने पुराने डेरे पर, अपनी सोने की कौड़ी लाने के लिए," अल्तीन-साका ने जवाब दिया।

"उबीर वहां तुम्हारा इन्तज़ार कर रही है," घोड़े ने कहा। "वह तुम से यह कहेगी कि तुम घोड़े से नीचे उतरकर अपनी कौड़ी उठा लो। मगर तुम उसकी बात पर कान नहीं देना। कारण कि अगर तुम मेरी पीठ से नीचे उतरोगे, तो वह तुम्हें खा जायेगी। तुम बाज़ की तरह जल्दी से नीचे को झुककर अपनी कौड़ी उठा लेना।"

अल्तीन-साका उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और उसने पुराने डेरे की ओर अपना घोड़ा बढ़ा दिया। वहां पहुंच कर उसने इधर-उधर देखा तो उबीर को अलाव के पास बैठी हुई हाथ तापते पाया।

अल्तीन-साका ने कहा –

"नानी, मुझे मेरी सोने की कौड़ी लौटा दो।"

"तुम्हारी कौड़ी नीचे जमीन पर पड़ी है, बेटे," उबीर ने जवाब दिया। "अपने घोड़े से उतरकर उसे उठा लो। मेरी पीठ में इतना दर्द है कि मैं उठ नहीं सकती।"

अल्तीन-साका का घोड़ा जमीन पर झुक गया, अल्तीन-साका ने अपनी सोने की कौड़ी उठाई और घोड़े को सरपट दौड़ा ले चला। उबीर गुस्से से चीखती हुई उठी। उसने एक बार थूका तो एक मोटा-सा काला घोड़ा उसकी बगल में आकर खड़ा हो गया, दूसरी बार थूका तो लगामें नमूदार हो गईं। उबीर उछलकर अपने घोड़े पर सवार हुई और अल्तीन-साका के पीछे अपना घोड़ा तेजी से दौड़ाने लगी।

अल्तीन-साका का कुम्मैत घोड़ा और उबीर का मजबूत काला घोड़ा दोनों ही हवा से बातें कर रहे थे। उबीर अल्तीन-साका के बहुत नजदीक पहुंच गई थी और उसे पकड़ ही लेनेवाली थी कि उसके घोड़े ने ठोकर खाई, वह जोर से हिनहिनाया और बुरी तरह लंगड़ाता हुआ पीछे रह गया।

उबीर ने लगामें खींचीं और अगल-बगल जोर की एड़ लगाई, मगर घोड़ा अधिकाधिक धीमा होता गया। उबीर तो आपे से बाहर हो गई। उसका पारा इतना चढ़ा कि वह अपने घोड़े को खा गई और पैदल अल्तीन-साका के पीछे दौड़ने लगी।

उबीर दौड़ती गई, दौड़ती गई, अपने अगल-बगल और पीठ पर मुक्के मारकर अपनी रफ्तार बढ़ाती गई। वह कुम्मैत घोड़े के बराबर आ पहुंची और उसने उसकी बायीं टांग को काट खाया। मगर कुम्मैत घोड़ा अपनी तीन टांगों पर ही सरपट दौड़ता रहा। उबीर भी पीछे न रही। वह फिर से कुम्मैत के बराबर आ पहुंची और उसने उसकी बायीं टांग काट खायी। घोड़े ने अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरी और अल्तीन-साका को उबीर से दूर रखने के लिए बढ़ता चला गया। मगर अब उसकी ताकत जवाब दे गई थी और एक झील के किनारे आकर उसने कहा –

"मैं अब और नहीं दौड़ सकता। मैं उबीर से बचने के लिए झील में जा छिपता हूं और तुम झटपट उस बलूत वृक्ष पर जा चढ़ो। जब मेरी टांगों के घाव ठीक हो जायेंगे तो मैं तुम्हें आगे ले चलूंगा।"

इतना कहकर घोड़ा झील में गोता लगा गया। अल्तीन-साका झटपट झील के तट

वाले बलूत पर चढ़ गया और उसने अपने को सबसे ऊपरवाली शाखाओं के बीच छिपा लिया।

उबीर दौड़ती हुई आई। अल्तीन-साका को बलूत वृक्ष पर छिपा देखकर वह चिल्लाई –

"बच्चू, अब तुम मुझ से बचकर कहां जाओगे! मैं तुम्हें नीचे घसीटकर हड़प जाऊंगी!"

उसने थूका तो एक कुल्हाड़ा उसके सामने आ गया। तब उसने अपना एक दांत उखाड़कर उस पर कुल्हाड़े को सान देना शुरू किया और उसे खूब अच्छी तरह से तेज़ कर लिया। अब वह लगी बलूत पर कुल्हाड़े बरसाने। वृक्ष के टुकड़े कट-कटकर इधर-उधर गिरने लगे।

एक लोमड़ी यह आवाज़ सुनकर भागती हुई आई।

"नानी, तुम बलूत का वृक्ष क्यों काट रही हो?" लोमड़ी ने पूछा।

"तुम्हें नज़र नहीं आ रहा कि वहां कौन बैठा है?" उबीर ने जवाब दिया। "मैं बलूत के वृक्ष को काटूंगी और सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका को पकड़कर खा जाऊंगी।

लोमड़ी ने ऊपर की ओर नज़र दौड़ाई और बलूत की चोटी पर एक सुन्दर नौजवान को बैठे हुए देखा। उसे नौजवान पर दया आ गई और वह बोली –

"नानी, तुम बूढ़ी हो! तुम्हें अपने आपको इस तरह थकाना नहीं चाहिए। लाओ, मैं काट दूं बलूत का वृक्ष।"

"नहीं, नहीं!" उबीर ने कहा। "मैं खुद इस वृक्ष को काटूंगी और अल्तीन-साका को खाऊंगी।"

मगर लोमड़ी भी आसानी से माननेवाली नहीं थी। वह बोली –

"मैं बलूत को काट दूंगी और तब उसे खा लेना।"

उबीर ने लोमड़ी को अपना कुल्हाड़ा दे दिया, बलूत के नीचे जा लेटी और लेटते ही सो गई। वह खर्राटे ले रही थी और उसकी नाक तथा मुंह से चिंगारियां और धुआं निकल रहा था।

उबीर सोई रही और इसी बीच लोमड़ी ने कुल्हाड़ा और वह दांत झील में फेंक दिया जिससे चुड़ैल ने कुल्हाड़ा तेज़ किया था। उसने वृक्ष के सभी टुकड़े उठाये, उन्हें उनकी जगह पर टिकाया, उन टुकड़ों पर थूका और उन्हें चाटा: वे टुकड़े फ़ौरन जहां के तहां अच्छी तरह चिपक गये और वृक्ष फिर पहले जैसा ही हो गया।

तब लोमड़ी ने अल्तीन-साका को नमस्कार किया और वहां से भाग गई।

उबीर जागी, उसने बलूत पर नजर डाली और बोली –

"यह क्या मामला है! बलूत तो फिर ऐसे पूरे का पूरा खड़ा है मानो मैंने इसे छुआ ही न हो!"

अब वह लोमड़ी को कोसने और तरह की गालियां देने लगी।

उसने फिर से चूका और एक कुल्हाड़ा तयार हो गया। अपने मुंह से एक और बांत उखाड़कर वह कुल्हाड़े को तेज करने लगी। कुल्हाड़ा तेज करते हुए वह ऊपर को देखती और अल्तीन-साका से कहती रही –

"मैं बलूत को काट गिराऊंगी, तुमको खा जाऊंगी!"

जब उसका कुल्हाड़ा तेज हो गया तो उबीर फिर से बलूत को काटने लगी। टुकड़े उड़-उड़कर सभी ओर गिरने लगे। वृक्ष कांपने और डोलने लगा। कुल्हाड़े का एक और वार पड़ेगा और वह नीचे आ गिरेगा!

तभी अचानक एक और लोमड़ी दौड़ी हुई आई।

"क्या कर रही हो, नानी?" उसने उबीर से पूछा।

"बलूत को काट रही हूं।"

"किसलिए?"

"सोने की कौड़ीवाले इस अल्तीन-साका को पकड़ना और खाना चाहती हूं।"

लोमड़ी ने कहा –

"तुम्हें अपने को इतना अधिक कष्ट नहीं देना चाहिए। लाओ, मैं काट दूं बलूत को।"

"नहीं, नहीं," उबीर बड़बड़ाई, "मैं खुद ही कर लूंगी यह काम। मैं स्वयं ही अल्तीन-साका को खाना चाहती हूं।"

"सो तो तुम खाओगी ही," लोमड़ी ने जवाब दिया। "मैं तो सिर्फ़ बलूत को काट दूंगी।"

"नहीं!" उबीर चिल्लाई। "मैं तुम्हें अपना कुल्हाड़ा नहीं दूंगी। यहां एक और लोमड़ी भी आई थी जिसने मदद करने का वचन दिया था, मगर धोखा देकर भाग गई।"

"किस रंग की थी वह लोमड़ी?" इस लोमड़ी ने पूछा।

"लाल रंग की।"

"तुम्हें लाल लोमड़ियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए, नानी," लोमड़ी

ने कहा। "सभी लाल लोमड़ियां झूठी होती हैं। सिर्फ़ हम काली लोमड़ियों पर ही एतबार किया जा सकता है।"

उबीर ने ध्यान से देखा। हां, वह वास्तव में ही काली लोमड़ी थी। चुनांचे उसने उसे अपना कुल्हाड़ा दे दिया और जाकर लेट रही। वह फ़ौरन खर्राटे लेने लगी और उसके मुंह तथा नाक से चिंगारियां और धुआं निकलने लगा।

काली लोमड़ी ने उबीर का कुल्हाड़ा और दांत झील में फेंक दिया, वृक्ष के टुकड़ों को उनकी जगह पर टिकाया, उनपर थूका और उन्हें चाटा। बस कमाल ही हो गया, वे वृक्ष के साथ चिपक गये और वृक्ष फिर से पहले जैसा हो गया।

इसके बाद लोमड़ी ने अल्तीन-साका को नमस्कार किया और भाग गई।

कुछ ही देर बाद उबीर जागी। वह बसूत को देखकर चिल्लाई –

"अरे, यह क्या मामला है? बसूत फिर से जैसे का तैसा हो गया!"

उबीर ने थूका और फिर से एक कुल्हाड़ा नमूदार हो गया। उसने अपने मुंह से तीसरा दांत निकाला और लगी कुल्हाड़े को तेज करने। जब कुल्हाड़ा अच्छी तरह से तेज हो गया तो वह फिर से बसूत को काटने लगी। काम करते हुए वह अल्तीन-साका और लोमड़ी को कोसती जाती थी, उन्हें गन्दी से गन्दी गालियां देती जाती थी।

आखिर बसूत आधा कट गया और अल्तीन-साका ने नीचे देखकर अपने आप से कहा।

"अब उबीर मुझे पकड़ लेगी।"

तभी अचानक एक सफ़ेद लोमड़ी भागती हुई बसूत के पास आई और उबीर से बोली –

"नानी, लाओ मैं बसूत को काटने में तुम्हारी मदद कर दूं।"

"अगर अपनी जान की खैर चाहती हो, तो भाग जाओ यहां से!" उबीर चिल्लाई। "लोमड़ियां मुझे पहले ही दो बार धोखा देकर भाग गई हैं।"

"वे किस रंग की थीं, नानी?" लोमड़ी ने पूछा।

"एक लाल थी और दूसरी काली," उबीर ने जवाब दिया।

"तुम्हें लाल और काली लोमड़ियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए, नानी," लोमड़ी ने कहा। "वे बहुत ही झूठी होती हैं। बस, हम सफ़ेद लोमड़ियों पर ही भरोसा किया जा सकता है। मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगी, तुम्हारी मदद करूंगी।"

उबीर ने लोमड़ी पर विश्वास किया और कुल्हाड़ा उसे पकड़ाकर खुद सो रही। लोमड़ी ने कुल्हाड़े और दांत को, जिससे चुड़ैल ने कुल्हाड़ा तेज किया था, झील में फेंक

दिया, झटपट वृक्ष के टुकड़े उठाये, उन्हें उसकी जगह पर टिकाया, उन पर थूका और उन्हें चाटा। वे वहां के तहां चिपक गये।

लोमड़ी ने अल्तीन-साका से कहा –

"सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका, मैं तीन बार तुम्हारी मदद कर चुकी हूं। मैंने अपनी खाल को पहले काले और फिर सफ़ेद रंग से रंगा ताकि उबीर मुझे पहचान न पाये। अब मैं तुम्हारे लिए और कुछ नहीं कर सकती।"

वह अल्तीन-साका को नमस्कार कर भाग गई।

उसके जाने के कुछ ही देर बाद उबीर जाग गई।

"यह मैं क्या देख रही हूं!" वह चिल्लाई। "यह तो ऐसे लगता है मानो मैंने वृक्ष को छुआ ही न हो!"

उसने थूका और एक कुल्हाड़ा नमूदार हुआ। उसने अपना आखिरी बांत उखाड़ा और कुल्हाड़े को तेज करने लगी। जब कुल्हाड़ा तेज हो गया तो वह बलूत को काटने और साथ ही साथ यह बड़बड़ाने लगी –

"अब मैं और किसी से मदद नहीं लूंगी! अब मैं खुद ही यह काम करूंगी!"

बलूत के टुकड़े इधर-उधर गिरने लगे, वह हिलने-डोलने और चूं-चर्र करने लगा। ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह गिरा, अब गिरा।

अल्तीन-साका वहां बैठा था। उसने महसूस किया कि अब उबीर उसे अवश्य ही पकड़ लेगी।

"अब मैं क्या करूं?" वह सोचने लगा।

इसी समय एक कौआ उड़ता हुआ आया और बलूत की चोटी पर आकर बैठ गया।

"मेरे प्यारे दोस्त, कौवे, मेरी एक बिनती मानो," अल्तीन-साका ने गिड़गिड़ाकर कहा। "तुम हर जगह उड़ा करते हो, हर जगह जाते हो। उड़कर हमारे नये डेरे में जाओ, मेरे दोनों कुत्तों – अक्कूसाक और अक्तिरनाक – से मिलो और उनसे कहो कि वे झटपट यहां पहुंचें क्योंकि मुझे उनकी मदद की बड़ी जरूरत है।"

"मैं नहीं जाने का!" कौवे ने जवाब दिया। "मैं तो इसी इन्तजार में हूं कि उबीर तुम्हें पकड़ ले और तब मुझे भी तुम्हारे तन का कुछ हिस्सा मिल जायेगा।"

और वह एक शाखा पर आराम से बैठकर प्रतीक्षा करने लगा।

अल्तीन-साका ने यह देखने के लिए सभी ओर नजर दौड़ाई कि उसे कहीं से मदद मिल सकती है या नहीं। उसी समय एक श्यामा उड़ती हुई आयी।

"श्यामा, मेरी प्यारी, मेरी एक बिनती मानो! तुम तो हर जगह उड़ा करती हो, हर जगह जाती हो। उड़कर हमारे नये डेरे में जाओ और मेरे कुत्तों – अक्कूलाक और अक्तिरनाक – से कहो कि वे जल्दी से यहां आ जायें, क्योंकि मुझे उनकी मदद की जरूरत है।"

"मैं नहीं जाने की," श्यामा ने जवाब दिया। "मैं तो यह चाहती हूं कि तुम उबीर के हत्थे चढ़ जाओ। तब मेरे पल्ले भी कुछ पड़ जायेगा।"

अल्तीन-साका बहुत उदास हो गया और उसका दिल बैठ गया।

"अब मेरी आखिरी घड़ी निकट है," उसने सोचा।

अचानक गौरैयों का एक दल सामने आया और उसके सिर के ऊपर से उड़ता हुआ गुजरने लगा।

अल्तीन-साका ने उनसे कहा –

"मेरी गौरैयो, मेरी प्यारी सखियो, तुम मेरी एक बिनती मानो! तुम उड़कर हमारे नये डेरे में जाओ, मेरे कुत्तों – अक्कूलाक और अक्तिरनाक – को ढूंढो और उन्हें बताओ कि बूढ़ी चुड़ैल उबीर तुम्हारे मालिक को खाना चाहती है।"

"हम उन्हें जरूर ढूंढेंगी! हम उन्हें अवश्य बतायेंगी! हम उन्हें अवश्य बतायेंगी!" गौरैयों ने अपनी चूं-चूं की भाषा में कहा और वे बहुत ही तेजी से अल्तीन-साका के डेरे की ओर उड़ गईं।

चिड़ियां डेरे में पहुंचीं और उन्होंने अल्तीन-साका के कुत्तों को बहुत गहरी नींद में सोये हुए पाया। वे अपने मालिक की खोज में इधर-उधर दौड़-धूप करते हुए बेहद थक गये थे और अब मुर्दों की तरह सोये पड़े थे। चिड़ियां कुत्तों को जगाने के लिए उनके कानों पर ठोंगें मारने लगीं। फिर उन्होंने जोरों से पंख फड़फड़ाये, चीं-चीं की।

"उठो अक्कूलाक, उठो अक्तिरनाक," वे शोर मचाने लगीं। "जल्दी से भागकर झील के किनारे वाले बसूत के पास पहुंचो और मालिक को बचाओ। उबीर उसे खाना चाहती है।"

अक्कूलाक और अक्तिरनाक चौंककर जागे और झील की ओर भागे।

चिड़ियां हवा में आगे-आगे उड़ रही थीं और कुत्ते धूल के बादल उड़ाते हुए उनके पीछे-पीछे भाग रहे थे।

उबीर ने धूल देखी तो अल्तीन-साका से बोली –

"सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका, जरा उधर तो देखो! रास्ते पर ये धूल के बादल कैसे हैं?"

"वे मेरे लिए खुशी और तुम्हारे लिए मुसीबत ला रहे हैं!" अल्तीन-साका ने जवाब दिया।

उबीर ने कुत्तों के पैरों की धप-धप सुनी तो बोली –

"तुम सुन रहे हो वह गड़गड़ाहट, सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका, यह क्या है?"

"वह मेरे लिए खुशी और तुम्हारे लिए मुसीबत ला रही है," अल्तीन-साका ने जवाब दिया।

इसी समय अक्कूलाक और अक्तिरनाक भागते हुए वहां पहुंच गये। वे उबीर पर झपटे और उसे काटने लगे।

उबीर डर गई। उसने अपना कुल्हाड़ा झील में फेंका और खुद भी पानी में कूद गई।

कुत्तों ने अल्तीन-साका से कहा –

"हम भी उबीर के पीछे झील में छलांग लगा रहे हैं। तुम यहीं बैठे रहकर पानी को देखो। अगर हम उबीर को मार डालेंगे तो झील का पानी काला हो जायेगा। अगर वह हमें मार डालेगी तो झील का पानी लाल हो जायेगा।"

इतना कहकर वे झील में कूद गये।

झील के पानी में भारी उथल-पुथल होने लगी, उसमें बड़ी-बड़ी लहरें उठने लगीं।

अल्तीन-साका देख रहा था। उसे पानी लाल होता दिखाई दिया।

"उबीर ने मेरे कुत्तों को मार डाला," उसने सोचा।

उसने फिर ध्यान से पानी की ओर देखा। अब वह काला हो गया था!

अल्तीन-साका खुशी से फूला न समाया। वह जोर से ठठाकर हंसा और बलूत से नीचे उतर आया। अक्कूलाक और अक्तिरनाक पानी से बाहर आ पानी झाड़ने लगे।

"झील का पानी पहले लाल क्यों हुआ था?" अल्तीन-साका ने पूछा।

अक्तिरनाक ने जवाब दिया –

"क्योंकि उबीर हम पर हावी होने लगी थी और उसने मेरा एक कान भी काट लिया था। मगर तभी हमने उसका क़िस्सा तमाम कर दिया।"

कुत्तों के बाद कुम्मैत घोड़ा बाहर आया।

"सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका," घोड़े ने कहा, "आओ, मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें घर ले चलता हूं।"

इस तरह अल्तीन-साका सही-सलामत डेरे में लौट आया। उसके मां-बाप को बेहद खुशी हुई। उन्होंने बहुत बड़ी दावत दी जिसमें अपने सभी सगे-सम्बन्धियों, यार-दोस्तों और जान-पहचानवालों को बुलाया। नौ दिन तक वे खाते-पीते और मौज मनाते रहे!

तीरंदाज़ और त्सारकिन-ख़ान

कालमिक लोक-कथा

पुराने ज़माने में त्सारकिन-ख़ान के राज्य में एक तीरंदाज़ रहता था, बहादुर, ख़ूबसूरत और मज़बूत काठी का। एक दिन वह किसी झील के तट पर जंगली परिन्दों का शिकार करने गया। वहां उसने सुनहरे सिरोंवाली तीन हंसिनियां देखीं। तीरंदाज़ फ़ौरन ज़मीन पर लेट गया, उसने झाड़-झंखाड़ के बीच अपने को छिपा लिया और आगे घटनेवाली घटना का इन्तज़ार करने लगा।

सुनहरे सिरोंवाली हंसिनियां तट पर उतरीं, उन्होंने अपने पंख उतारे और वे तीन सुन्दर युवतियों में बदल गयीं। ये युवतियां नहाने के लिए पानी में गईं। तीरंदाज़ पंखों के नज़दीक गया, उसने एक हंसिनी के पंख उठा लिये और फिर से झाड़-झंखाड़ के बीच जा छिपा।

हंस-कन्याओं ने स्नान किया, वे पानी से बाहर निकलीं और उनमें से दो ने फ़ौरन अपने पंख लगा लिये, मगर तीसरी को उसके पंख न मिले। पंखोंवाली दोनों हंसिनियां हवा में उड़ती हुई अपनी बहन के पंखों की तलाश करने लगीं, पर उन्हें वे कहीं नज़र नहीं आये।

"तुम्हारी क़िस्मत में ऐसा ही लिखा है, बहन!" वे उड़ती हुई चिल्लाईं और जिधर से आई थीं, उधर ही उड़ गईं।

हंस-कन्या अकेली रह गई। तट पर इधर-उधर दौड़ती हुई अपने पंखों की खोज करने और फूट-फूटकर रोने लगी।

"जो कोई मेरे पंख खोजकर उन्हें मुझे लौटा देगा, अगर वह ग़रीब होगा तो मैं उसे मालामाल कर दूंगी और अगर बदसूरत होगा तो उसे खूबसूरत बना दूंगी। मैं उसकी मुंहमांगी मुराद पूरी करूंगी... उसकी हर कामना पूरी करूंगी!" उसने कहा।

करुणाजनक सिसकियां लेते और तट पर इधर-उधर दौड़ते हुए वह यही दोहराती रही।

यह सुनकर तीरंदाज़ झाड़ियों के बीच से बाहर आया और बोला –

"रोओ-धोओ नहीं, हंस-कन्या! इधर आओ, मेरे पास हैं तुम्हारे पंख!"

सुन्दर तीरंदाज़ के हाथों में अपने पंख देखकर हंस-कन्या बहुत खुश हुई और झेंपती-शर्माती उसके पास गई।

"मेरे भाई," हंस-कन्या ने कहा, "तुमने मेरे पंखों को खोजकर मुझ पर बड़ी मेहरबानी की है। अब एक मेहरबानी और करो कि उन्हें मुझे लौटा दो। बदले में तुम जो भी चाहोगे, मैं तुम्हें वही दूंगी, तुम्हारी मुंहमांगी मुराद पूरी करूंगी!"

"मुझे तो तुम्हारी ही ज़रूरत है, मैं और कुछ नहीं चाहता," तीरंदाज़ ने जवाब दिया। "तुम मेरी पत्नी बनने को राज़ी हो?"

हंस-कन्या ने तीरंदाज़ की ओर देखा। वह जवान लम्बा-तड़ंगा और खूबसूरत था। वह धीरे से बोली –

"हां।"

तब तीरंदाज़ ने उसका हाथ पकड़ा, उसे खानाबदोशों के उस खेमे में ले गया जहां वह रहता था। वहां उसने उससे शादी कर ली। तीरंदाज़ के खेमे में बहुत ही ग़रीबी थी, मगर वे एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे, घड़ी भर के लिए भी एक-दूसरे की नज़र से ओझल होना या अलग होना सहन नहीं कर सकते थे।

कुछ समय बीता तो त्सारकिन-खान को पता चला कि उसके तीरंदाज़ की पत्नी बहुत ही सुन्दर है, चांद का टुकड़ा है। खान के मन में जिज्ञासा जगी। यह जानने के लिए कि सचमुच ही तीरंदाज़ की पत्नी इतनी सुन्दर है, वह खुद उसके खेमे में गया। वह उसे देखकर दंग रह गया और उसने यह मान लिया कि जिन लोगों ने उसकी खूबसूरती की चर्चा की थी, उन्होंने बात को बढ़ाया-चढ़ाया नहीं था। ऐसी सुन्दरी ने तो पहले कभी धरती पर जन्म ही नहीं लिया था। वह तो जैसे सूरज की बेटी लगती

थी! आंखें उसे देखते-देखते कभी थकती नहीं थीं, सारे राज्य में उसकी मिसाल खोजना मुमकिन नहीं था।

हूस-कन्या के रूप से अपनी आंखें सेंकने के बाद त्सारकिन-खान अपने महल में लौटा। उसने फ़ौरन अपने दारखानों यानी वज़ीरों और सलाहकारों को बुलाया, बढ़िया खान-पान से उनका खूब आदर-सत्कार किया और तब बोला –

"मेरे वज़ीरो और सलाहकारो, मैं आपको अपनी जिन्दगी की तरह प्यार करता हूं। मैं आप से एक सलाह लेना चाहता हूं।"

"हम खुशी से आपको सलाह देंगे, हमारे खान!" सभी वज़ीरों और सलाहकारों ने एक स्वर से कहा।

त्सारकिन-खान बोला –

"मेरे एक तीरंदाज़ की बीवी इतनी सुन्दर है कि पृथ्वी पर उसके समान खूबसूरत औरत कभी थी ही नहीं। उसकी मिसाल ढूंढ़ पाना मुमकिन नहीं, दुनिया में कहीं उसका अभाव नहीं है, वह सभी से बढ़-चढ़कर है।"

त्सारकिन-खान ने तीरंदाज़ की बीवी के अद्भुत रूप, उसके सुन्दर चेहरे-मोहरे, उसकी मतवाली चाल, प्यारी आंखों और चोटी में गुंथे हुए लम्बे बालों का बखान किया।

"और सूरज की किरणों के समान यह सुन्दर नारी एक मामूली-से तीरंदाज़ की बीवी है," उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा। "मुझे यह सलाह दें कि मैं उसे कैसे हासिल कर सकता हूं।"

कुछ वज़ीरों-सलाहकारों ने सोच-विचारकर कहा –

"उसे चुराकर चोरी-चोरी महल में रख लीजिए।"

दूसरों ने और भी ज्यादा दिमाग़ लड़ाया और सलाह दी –

"तीरंदाज़ को मारकर उससे शादी कर लीजिए।"

कुछ औरों ने सुझाव दिया –

"तीरंदाज़ की हत्या न करवाइये बल्कि उसे अपने राज्य से निकाल दीजिए। तब आप किसी तरह की परेशानी के बिना उसे अपनी पत्नी बना सकेंगे।"

जब वे सभी अपनी-अपनी बात कह चुके तो सब से बड़ा वज़ीर, जो खान के दायें हाथ बैठा था, खड़ा हुआ और बोला –

"इन सभी सलाहों में कोई समझदारी की बात नहीं है," उसने कहा। "किसी औरत को उसके घर से चुराकर चोरी-चोरी खान के महल में रखना सम्भव नहीं। कारण कि देरसबेर लोगों को इसका पता चल जायेगा। तीरंदाज़ को मारकर उसकी बीवी से

शादी करना खतरनाक होगा, क्योंकि लोग विद्रोह कर सकते हैं और तब इस मुसीबत का कोई अन्त नहीं होगा। तीरंदाज को देश से निकालने में कोई तुक नहीं, क्योंकि वह चोरी-छिपे आकर अपनी बीवी को ले जायेगा। नहीं, नहीं, हमें चालाकी से काम लेना चाहिए।"

"तो आप क्या सलाह देते हैं?" त्सारकिन-खान ने पूछा।

बड़े वजीर ने जवाब दिया –

"मैंने सुना है कि सूर्यास्त के देश में एक चौड़ी नदी के खड़े और चट्टोंवाले तट पर एक शेरनी अपने बच्चों के साथ रहती है। लोग कहते हैं कि वह शेरनी पृथ्वी पर पाये जानेवाले किसी भी वरिन्दे से ज्यादा हिंसक और भयानक है। हमारे खान, आप तीरंदाज को उसका कुछ दूध लाने का हुक्म दें। इस तरह वह लौटकर कभी नहीं आयेगा, क्योंकि शेरनी अवश्य ही उसके टुकड़े कर डालेगी। तब आप आसानी से उसकी बीवी हासिल कर सकेंगे। तीरंदाज को इस काम के लिए भेजना कुछ मुश्किल नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह अपने खान का हुक्म टालने की हिम्मत नहीं कर पायेगा।"

बड़े वजीर की यह चालाकी भरी सलाह त्सारकिन-खान को भी पसन्द आई और उसके सलाहकारों को भी।

"यह बड़ी अच्छी सलाह है!" उन्होंने कहा।

त्सारकिन-खान ने बड़े वजीर की सलाह पर पूरी तरह अमल किया। उसने अपनी सख्त बीमारी का ढोंग किया और तीरंदाज को बुलवा भेजा। तीरंदाज आया तो खान ने जोर से आहें भरते और कराहते हुए उससे कहा –

"जैसा कि तुम अपनी आंखों से देख रहे हो, एक बहुत ही घातक और खतरनाक बीमारी ने मुझे आ दबोचा है। मेरी बीमारी की दवा सूर्यास्त के देश में मिल सकती है। वहां एक चौड़ी नदी के खड़े और चट्टोंवाले तट पर एक बहुत बड़ी शेरनी अपने बच्चों के साथ रहती है। सिर्फ़ उसी शेरनी का दूध मेरा स्वास्थ्य और शक्ति लौटा सकता है। फ़ौरन जाकर मेरे लिए कुछ दूध लाओ।"

इतना कहकर त्सारकिन-खान और भी जोर से कराहने और ऐसे जाहिर करने लगा मानो दर्द के मारे उसकी जान निकली जा रही हो।

तीरंदाज अपने डेरे में लौटा और लम्बे सफ़र की तैयारी करने लगा। उसने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने और सबसे अच्छे हथियार सजा लिये।

"तुम कहां जा रहे हो?" उसकी पत्नी ने पूछा।

"खान बहुत सख्त बीमार है। वह सूर्यास्त के देश की एक चौड़ी नदी के खड़े

और खड्डोंवाले तट पर रहनेवाली शेरनी का दूध पीकर ही स्वस्थ हो सकता है। उसने मुझे फ़ौरन वहां जाने का हुक्म दिया है। मेरा मन तो जाने को बिल्कुल नहीं करता, मगर मैं उसका हुक्म टाल नहीं सकता।"

तीरंदाज़ की बीवी ताड़ गई कि त्सारकिन-ख़ान किसी छिपे हुए मक़सद से उसके पति को शेरनी का दूध लाने के लिए भेज रहा है और उसके मन में ज़रूर कोई बुराई छिपी हुई है। उसने पीले फूलोंवाला अपना रूमाल पति को देते हुए कहा –

"इस रूमाल को हमेशा अपने साथ रखना, क्योंकि यह तुम्हें मौत से बचायेगा। शेरनी जब तुम पर झपटने लगे तो तुम इसे निकालकर लहरा देना। वह फ़ौरन शांत हो जायेगी और तुम्हें दूध दुह लेने देगी। वह मुझे जानती है, क्योंकि मेरे घर में रह चुकी है।"

तीरंदाज़ ने पीले फूलोंवाला रूमाल लिया, घोड़े पर ज़ीन कसा और अपनी जवान बीवी से विदा ले घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ सूर्यास्त के देश की ओर चल दिया।

वह बादलों से नीचे मगर ख़ानाबदोशों के ख़ेमों से ऊपर अपने घोड़े को उड़ाये लिये जा रहा था, पहाड़ियों और खड्डों, खारी झीलों और भुरभुरी बालू के मैदानों को पीछे छोड़ता हुआ। वह ख़ान का आदेश पूरा कर अपनी पत्नी के पास लौटने को इतना उतावला था कि दिन को खाने-पीने और रात को सोने के लिए भी रास्ते में कहीं नहीं ठहरा और रात-दिनों का हिसाब तक भूल गया।

इस तरह बहुत दिनों तक उसका सफ़र जारी रहा, आख़िर वह सागर जैसी चौड़ी नदी के खड़े तट पर पहुंचा। वह भयानक शेरनी यहीं अपने बच्चों के साथ रहती थी।

शेरनी ने तीरंदाज़ को इतनी दूरी से देखा जो एक दिन के सफ़र द्वारा तय की जा सकती है। शेरनी ज़ोर से गरजी और तीरंदाज़ की ओर लपकी। उसने उसपर झपटना और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहा। मगर तीरंदाज़ ने बिजली की तेज़ी से पीले फूलोंवाला वह रूमाल निकाल कर लहराया जो उसे उसकी बीवी ने दिया था। शेरनी बुत बनी खड़ी रह गई और उसने फ़ौरन गरजना बन्द कर दिया।

"बहादुर तीरंदाज़, यह बताओ कि तुम्हें यह रूमाल कहां से मिला?" उसने पूछा।

"मेरी पत्नी ने दिया है," तीरंदाज़ ने जवाब दिया।

"अच्छा तो अब यह बताओ कि तुम यहां किसलिए आये हो?" शेरनी ने पूछा।

"मेरा ख़ान बहुत सख़्त बीमार हो गया है," तीरंदाज़ ने उसे बताया, "और उसने मुझे तुम्हारा थोड़ा-सा दूध लाने का हुक्म दिया है।"

"अगर ऐसी ही बात है तो झटपट अपने घोड़े से नीचे उतरो। मैं तुम्हें अपना दूध दुह लेने दूंगी। तुम अगर चाहो तो अपनी मश्क दूध से भर सकते हो।"

तीरंदाज घोड़े से नीचे उतरा और उसने शेरनी को दुह लिया। अब उसकी मश्क भर गयी तो उसने उसे ज़ीन के साथ अच्छी तरह कस लिया, शेरनी को धन्यवाद दिया और उसके स्वास्थ्य की कामना की।

"मैं तुम्हारे लिए भी ऐसी ही कामना करती हूं," शेरनी ने कहा। "तुम अपनी पत्नी के पास वापस जाओ, अपने खान को तन्दुरुस्ती दो। मैं तो यही चाहती हूं कि तुम्हारी क़िस्मत का सितारा हमेशा चमकता रहे!"

इतना कहकर शेरनी अपने बच्चों के पास लौट गई और तीरंदाज घोड़े पर सवार होकर घर की ओर चल दिया।

घर पहुंचते ही वह दूध भरी मश्क लेकर खान के पास गया।

त्सारकिन-खान अब करता तो क्या! उसने इस दूध का एक घूंट पिया और बोला –

"आह, मैं अब बिल्कुल स्वस्थ हो गया हूं!"

इसके बाद उसने तीरंदाज को विदा किया और फिर से अपने वज़ीरों-सलाहकारों को बुलवाया।

"मेरे बड़े वज़ीर ने सलाह तो बहुत अच्छी दी थी, मगर उससे काम नहीं बना," उसने कहा। "शेरनी ने तीरंदाज के टुकड़े नहीं किये। इसके विपरीत वह तो सही-सलामत घर लौट आया है। अब मैं उसे क्या काम करने के लिए भेजूं कि वह कभी लौट कर न आये?"

वज़ीर और सलाहकार लगे सोचने। उन्होंने बहुत देर तक अपनी अक़्ल लड़ाई, मगर कोई भी तरकीब उनके दिमाग़ में नहीं आई। वे तो अफ़सोस का एक भी शब्द नहीं कह पाये।

तब खान के बायीं ओर बैठा हुआ बड़ा वज़ीर उठा और बोला –

"हमने तीरंदाज को ऐसी जगह भेजा था जहां से हमने उसके कभी लौटने की उम्मीद नहीं की थी। मगर चूंकि ऐसा नहीं हुआ तो इसका सिर्फ़ यही मतलब है कि उससे पिंड छुड़ाने का हमें कोई उपाय मालूम नहीं है। मेरे ख़्याल में तो हमारे लिए अब एक ही रास्ता बाक़ी है – हम सभी गुंडों, शोहदों और बदमाशों को इकट्ठा करें, उन्हें ख़ूब खिलायें-पिलायें और फिर उनसे यह मालूम करें कि क्या वे तीरंदाज को मौत के घाट उतारने और खान को हमेशा के लिए उससे निजात दिलाने का कोई उपाय जानते हैं।"

"बड़े वज़ीर ने बढ़िया सलाह दी है, हमें ऐसा ही करना चाहिए," सभी ने सहमति प्रकट की।

पूर्वनिश्चित दिन पर त्सारकिन-खान और उसके वज़ीरों-सलाहकारों ने छंटे हुए गुंडों-बदमाशों, उठाईगीरों और मलकटों को चोरी-चोरी महल में बुलवाया। उन्होंने उन्हें खूब खिलाया-पिलाया और फिर यह जानने की कोशिश की कि क्या उनमें से कोई खान को तीरंदाज से निजात दिला सकता है।

"अगर तुम में से कोई भी ऐसा नहीं है जो खान की मदद कर सकता है," वे बोले, "तो मुमकिन है कि तुम ऐसे किसी को जानते हो जो चोरी-छिपे तीरंदाज से पिंड छुड़ाने का काम कर सकता हो?"

इतना कहकर त्सारकिन-खान और उसके वज़ीर-सलाहकार उन छंटे हुए लफ़ंगों के बीच टहलते हुए उनके जवाब का इन्तज़ार करने लगे। मगर उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। वे ऐसे चुप्पी साधे रहे मानो उनके मुंहों में वह मांस भरा हुआ हो जो वे खा रहे थे और इसलिए बोल न पाते हों। वज़ीरों-सलाहकारों ने अपना सवाल दोहराया, मगर गुंडे और लफ़ंगे पहले की तरह ही खामोश रहे। अचानक उनमें से एक आदमी अपनी जगह से उछलकर खड़ा हो गया। वह काना था और परले दर्जे का चालाक और मक्कार। उसने अपने चोगे के बटन खोले और छाती को ठोंकते हुए चिल्लाया –

"मैं जानता हूं इसका उपाय!"

त्सारकिन-खान बहुत खुश हुआ और उसने आदेश दिया –

"तो बताओ कि हमें क्या करना चाहिए?"

काने ने कहा –

"आप तीरंदाज को भेजिए – न जाने कहां और लाने को कहिए – न जाने क्या! वह ऐसी चीज़ की खोज करता फिरेगा जिसकी न कोई शक्ल है न आकार और न ही जिसके मिलने का कोई स्थान। वह इसे कभी नहीं खोज सकेगा और इसलिए यहां कभी भी अपनी सूरत नहीं दिखायेगा।"

त्सारकिन-खान और उसके वज़ीर-सलाहकार काने की इस तरकीब से बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे बहुत-सा इनाम देकर विदा किया।

अपना नया हुक्म देने का कोई बहाना बनाने के लिए त्सारकिन-खान ने फिर से अपनी सख्त बीमारी का नाटक खेला। उसने तीरंदाज को बुलवाया और आहें भरते तथा कराहते हुए कहा –

"मैं फिर से बहुत सख्त बीमार हो गया हूं और तभी स्वस्थ हो सकता हूं कि अगर तुम जाओ वहां, न जाने कहां और लाओ वह न जाने क्या। सिर्फ़ तुम ही यह काम पूरा कर सकते हो। इसलिए फ़ौरन जाओ और जिसकी न कोई शक्ल है, न मिलने का स्थान है, वह लेकर आओ।"

"मगर मैं कहां जाऊं और क्या लेकर आऊं?" तीरंदाज ने पूछा।

"यह मैं नहीं जानता, बिल्कुल नहीं जानता," त्सारकिन-खान ने कहा। "मुझे तो सिर्फ़ यह मालूम है कि तुम ही इस काम को पूरा कर सकते हो। अगर तुम उसे नहीं ला सकोगे तो मेरी मौत यक़ीनी है।"

इतना कहकर वह बहुत ही ज़ोर से कराहने और दर्द से बुरी तरह छटपटाने लगा।

तीरंदाज अपने खेमे में आकर सोचने लगा कि अब मैं क्या करूं! वह तीन दिन और तीन रातों तक सोचता रहा। दिन के वक़्त वह पहाड़ी की चोटी पर चढ़ जाता और रात को उसे नींद न आती। वह मखमल की मोटी चटाई पर लेटा-लेटा करवटें बदलता और परेशान होता रहता। उसने बहुत सोचा, बहुत दिमाग़ लड़ाया, मगर कुछ भी उसकी समझ में नहीं आया। फिर भी उसने अपनी पत्नी से इसकी चर्चा नहीं की, क्योंकि वह उसे चिन्तित नहीं करना चाहता था।

तीन दिन गुज़र गये। तब उसने यह सोचते हुए घोड़े पर ज़ीन कसा –

"अगर मैं अपनी नाक की सीध में चलता जाऊं, तो शायद वहीं पहुंच जाऊंगा जहां खान मुझे भेज रहा है।" वह उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और अपनी पत्नी से विदा लेने के लिए उसने उसे पास बुलाया।

"तुम कहां जा रहे हो?" बीवी ने पूछा।

"खान फिर से बीमार हो गया है," तीरंदाज ने जवाब दिया। "उसने मुझे न जाने कहां जाकर न जाने क्या लाने को कहा है।"

तीरंदाज की पत्नी ने यह सुनकर कहा –

"घोड़े पर तो तुम वहां नहीं पहुंच पाओगे, पैदल जाना ही बेहतर रहेगा। यह सूत का गोला ले लो। तीन क़दम चलने के बाद इसे अपने सामने फेंक देना। जिधर यह लुढ़कता जाये, तुम उधर ही बढ़ते जाना। यह सोने की कंघी भी लो। इसे अवश्य अपने साथ ले जाओ और हर सुबह तुम इससे अपने बाल संवारना।"

तीरंदाज ने अपनी बीवी से विदा ली, तीन क़दम बढ़ाये और फिर सूत का गोला अपने सामने फेंक दिया। सूत का गोला बहुत ही तेज़ी से लुढ़कने लगा और तीरंदाज उसके पीछे-पीछे चल दिया।

उसने इस गोले के पीछे-पीछे चलते हुए खारी दलदल और रेगिस्तान, ऊंची पहाड़ियां और गहरे खड्ड, झीलें और मैदान पार किये, वह घने झाड़-झंखाड़ में से गुज़रा। वह दिन को खाने-पीने के लिए न रुकता, रात को न सोता और दिनों, हफ़्तों तथा महीनों का हिसाब भी भूल गया। आखिर सूत का गोला एक बड़े और घने जंगल में पहुंचा। तीरंदाज़ ने भी जंगल में प्रवेश किया और गोले के पीछे-पीछे चलता गया। वह दिन-रात चलता गया, चलता गया, न उसने आराम किया न वह सोया। सूत का गोला आगे ही आगे लुढ़कता गया। आखिर वह नमदे के एक छोटे-से खेमे के पास जाकर ऐसे ग़ायब हो गया मानो पिघल गया हो।

"अब मैं क्या करूं?" तीरंदाज़ ने अपने आप से पूछा। "मेरे ख्याल में तो मुझे अन्दर जाना चाहिए।"

वह नमदे का मोटा-सा पर्दा उठाकर खेमे के अन्दर गया। वहां उसे एक दुइयां-सी नारी दिखाई दी, बहुत ही सुन्दर।

"तुम कौन हो, कहां से आये हो और किधर जा रहे हो?" उसने पूछा।

"मैं खान का तीरंदाज़ हूं," तीरंदाज़ ने जवाब दिया, "और मुझे न जाने कहां जाना है।"

उस नारी ने तीरंदाज़ से और कुछ नहीं पूछा, उसे खाना खिलाया और सोने के लिए बिस्तर बिछा दिया। तीरंदाज़ लेटते ही गहरी नींद सो गया।

सुबह होने पर वह उठा, उसने हाथ-मुंह धोया और सुनहरी कंघी से अपने बाल ठीक करने लगा। उस दुइयां-सी नारी, उस खेमे की मालकिन ने, उसे कंघी फेरते देखा तो पूछा –

"यह सुनहरी कंघी तुम्हारे पास कहां से आई?"

"मेरी पत्नी ने दी है," तीरंदाज़ ने जवाब दिया।

दुइयां-सी नारी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

"तब तो तुम मेरे बहनोई हो," वह बोली। "तुम्हारी पत्नी मेरी छोटी बहन है। तुमने कल ही मुझे यह क्यों नहीं बताया?"

सभी तरह के स्वादिष्ट खाने और पेय उसके सामने रखते हुए वह बोली –

"इतने लम्बे और कठिन सफ़र के बाद ज़रा अपने पैरों की थकान दूर करो और तीन दिन तक मेरे पास और ठहरो।"

तीरंदाज़ खुशी से राज़ी हो गया और दुइयां-सी नारी के खेमे में तीन दिन तक और ठहरा।

तीरंदाज जब आराम कर चुका तो टुइयां-सी नारी ने उससे कहा –

"अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम कहां और क्यों जा रहे हो?"

तीरंदाज ने अवाब दिया –

"मेरा खान सख्त बीमार है और उसने मुझे आदेश दिया है कि मैं न जाने कहां जाऊं और न जाने क्या लाऊं। यह क्या चीज है मुझे मालूम नहीं। मेरी पत्नी यानी आपकी छोटी बहन ने मुझे सूत का गोला देकर कहा था कि मैं उसके पीछे-पीछे चलता जाऊं। गोला मुझे यहां ले आया। मगर अब मैं कहां जाऊं, मुझे कुछ मालूम नहीं, क्योंकि सूत का गोला गायब हो गया है।"

यह सुनकर इस छोटे-से खेमे की मालकिन, इस टुइयां-सी नारी ने तीरंदाज को रेशमी धागे का एक गोला देकर कहा –

"इस गोले के पीछे-पीछे चलते जाना। यह तुम्हें मेरी बड़ी बहन के पास ले जायेगा। शायद वह तुम्हें यह बता सकेगी कि तुम उस चीज की खोज में कहां जाओ जिसकी न कोई शकल है और न मिलने का स्थान ही।"

चुनांचे तीरंदाज रेशमी गोले के पीछे-पीछे चल दिया। वह दिन को चलता, रात को चलता और आराम करने के लिए कहीं न रुकता। एक बड़े और घने जंगल को पीछे छोड़कर वह तीस दिनों और तीस रातों तक एक स्तेपी में चलता रहा और आखिर पहले जंगल के समान ही एक बड़े और अंधेरे जंगल में जा पहुंचा।

रेशमी सूत का गोला वृक्षों और झाड़ियों के बीच जाता और बाहर निकलता था तथा शाखाएं तीरंदाज के हाथों और शरीर को खरोंचती थीं, उसके चेहरे पर आकर लगती थीं। मगर वह रुका नहीं, आगे ही बढ़ता चला गया।

आखिर गोला नमदे के एक छोटे-से खेमे के प्रवेश द्वार पर आकर रुका और गायब हो गया। खेमा जंगल के मध्य में खड़ा था।

एक टुइयां-सी औरत जो बेहद खूबसूरत थी, खेमे से बाहर निकली।

"तुम कौन हो, कहां से आये हो और किधर जा रहे हो?" उसने तीरंदाज से पूछा।

"मैं राहगीर हूं," तीरंदाज ने अवाब दिया। "मैं बहुत दूर से आया हूं और बहुत ही दूर जा रहा हूं।"

छोटे से खेमे की मालकिन, इस टुइयां-सी नारी ने तीरंदाज से और कुछ नहीं पूछा, उसे खेमे के अन्दर आने को आमन्त्रित किया, खिलाया-पिलाया और फिर उसके सोने के लिए बिस्तर ठीक कर दिया।

सुबह होने पर तीरंदाज उठा, उसने हाथ-मुंह धोया और उसी सुनहरी कंघी से बाल संवारने लगा। छोटे-से खेमे की मालकिन, उस टुइयां-सी नारी ने तीरंदाज की ओर देखकर पूछा –

"तुम्हें यह सोने की कंघी कहां से मिली?"

"मेरी पत्नी ने मुझे दी थी," तीरंदाज ने जवाब दिया।

टुइयां-सी नारी का चेहरा खुशी से खिल उठा और उसने कहा –

"तब तो तुम मेरे बहनोई हो, क्योंकि तुम्हारी पत्नी मेरी छोटी बहन है। तुमने फ़ौरन ही मुझे यह क्यों नहीं बताया?"

इतना कहकर वह घर में उपलब्ध खान-पान की सभी बढ़िया चीजें निकाल लाई और तीरंदाज को खिलाने-पिलाने लगी।

जब वह पेट भर कर खा-पी चुका तो घर की मालकिन ने कहा –

"तुम अपने थके हुए पैरों की थकान अच्छी तरह से दूर करो, खूब आराम करो। कुछ समय तक मेरे पास ठहरो।"

तीरंदाज ने इस टुइयां-सी नारी के घर में तीन दिन और रातें बितायीं। चौथे दिन उसने कहा – "तुम मुझे यह बताओ कि कहां और किसलिए जा रहे हो। मुझसे कुछ भी मत छिपाना।"

तीरंदाज ने टुइयां-सी नारी को सभी कुछ बताया कि मैं कहां और किसलिए जा रहा हूं। नारी ने बहुत ध्यान से उसकी बात सुनी, फिर सिर हिलाया और बोली –

"तुम जहां जाना चाहते हो, मुझे उस जगह के बारे में कोई जानकारी नहीं। मैं अपने सहायकों से पूछती हूं।"

इतना कहकर उसने एक सुनहरा सींग लिया, खेमे से बाहर गई और उसे ज़ोर से बजाया।

सींग में से एक सौ आठ सुखद और बासठ सुखद स्वर गूंज उठे। उसी समय स्तेपियों और जंगलों के जानवर भागते, आकाश के पक्षी उड़ते, ज़मीन के नीचे से कीड़े-मकोड़े रेंगते और छोटे-छोटे जीव-जन्तु फुदकते हुए आने लगे। वे सभी छोटे से खेमे की टुइयां-सी नारी के गिर्द एक घेरे में जमा हो गये।

टुइयां-सी नारी ने कहा –

"हरिन्दो, पक्षियो और कीड़ो-मकोड़ो, तुम सभी जगह जाते हो, दूर-दूर तक दौड़ते, उड़ान करते और रेंगते हो, तुम सभी से परिचित हो और सभी कुछ सुनते हो, क्या तुम में से कोई ऐसा है जो यह जानता हो कि ऐसी चीज़ कहां मिल सकती है

जिसका न कोई आकार है और न कोई स्थान ही? तुम में से जो यह जानता है वह आगे बढ़कर कहे, 'मैं जानता हूं' और जो नहीं जानते वे कहें, 'हम नहीं जानते।' इसके बाद तुम लोग अपने स्थानों पर वापस जा सकते हो।"

पक्षियों ने कहा –

"हम नहीं जानते!" और फ़ौरन उड़ गये।

दरिन्दे बोले –

"हमें मालूम नहीं!" और फ़ौरन स्तेपियों तथा जंगलों में भाग गये।

कीड़ों-मकोड़ों ने कहा –

"हम नहीं जानते!" और फ़ौरन रेंगते हुए वापस चल दिये।

तब टुइयां-सी नारी ने अपना सींग उठाया और उसे फिर से बजाया। उस में से एक सौ आठ बर्फीली और बासठ खुशी की तानें निकलीं। इसके साथ ही पानी में रहने वाले सभी जन्तु – मछलियां, कछुए, मेढ़क, सांप और केकड़े उसके गिर्द जमा हो गये।

छोटे-से डेरे की टुइयां-सी मालकिन ने कहा –

"सांपो और मछलियो, तुम सभी जगह जाते हो, दूर-दूर के सागरों-महासागरों में तैरते हो, तुम सभी कुछ जानते और सुनते हो, तुम मुझे बताओ कि क्या तुम में से कोई यह जानता है कि वह चीज़ कहां मिल सकती है जिसका न कोई आकार है और न स्थान ही? जो यह जानता है आगे बढ़कर कहे, 'मैं जानता हूं', और जो नहीं जानते वे कहें, 'हम नहीं जानते', और फिर तुम सभी अपने-अपने स्थानों पर वापस जा सकते हो।"

"हमें कुछ मालूम नहीं! हमें कुछ मालूम नहीं! हम कुछ नहीं जानते!" मछलियां, कछुए, सांप, मेढ़क और केकड़े चिल्लाये और अपनी झीलों, नदियों और दलदलों में वापस चले गये।

केवल एक बड़ा केकड़ा वापस नहीं गया। वह रेंगकर पानी में गया, फिर डेरे में लौटा और फिर पानी में चला गया।

छोटे-से डेरे की मालकिन, उस टुइयां-सी नारी ने देखा कि केकड़ा असमंजस में है तो वह बोली –

"तुम सभी केकड़ों के ज्ञान हो, है न?"

"हां," केकड़े ने जवाब दिया।

"तुम्हें क्या मालूम है? तुमने क्या सुना है? तुम क्या कहना चाहते हो? बेशक वह सच हो या झूठ, मगर कह डालो!"

केकड़ा बोला –

"मैं नहीं जानता कि जो कुछ मुझे मालूम है वह सच है या नहीं।"

"वह झूठ हो या सच, मगर तुम जो कुछ कहना चाहते हो, वह कहो ज़रूर," छोटे से खेमे की मालकिन, उस टुइयां-सी नारी ने ज़ोर देकर कहा।

"तो जो कोई भी उस चीज़ की तलाश करना चाहता है, जिसका न कोई आकार है और न कोई स्थान ही, वह दक्षिण की ओर चलता जाये। एक महीने की यात्रा के बाद वह एक बड़े-से सागर के तट पर पहुंचेगा। अगर वह सागर को पार न कर सके तो पश्चिम को मुड़ जाये और एक महीने के सफ़र के बाद ऐसी जगह पहुंच जायेगा जहां सागर बहुत छिछला है। सागर पार कर अब वह दूसरे तट पर पहुंच जायेगा तो वहां उसे एक चौड़ी सड़क दिखाई देगी। यह सड़क दक्षिण को जाती है। अगर वह एक महीने तक इसी सड़क पर चलता जाये तो उसे पूरब में एक बड़ा और घना जंगल नज़र आयेगा। इस सड़क से दो पहियों के चिह्नोंवाला मार्ग जंगल की ओर जाता है। वहां जाकर रास्ता खत्म हो जाता है। इसके आगे क्या है, मुझे मालूम नहीं।"

इतना कहकर केकड़ा रेंगकर अपनी झील में चला गया।

"बहादुर तीरंदाज़, तुमने केकड़ों के ज्ञान के शब्द सुन लिये न?" टुइयां-सी नारी ने पूछा।

"हां, सुन लिये," तीरंदाज़ ने जवाब दिया।

"तो तुम अपने सफ़र पर चल दो। शायद तुम्हें वहां वह मिल जाये तुम जिसकी तलाश में हो। अन्य किसी को इसके बारे में कुछ मालूम नहीं। अब आगे तुम्हें खुद ही खोज करनी होगी!"

उसने तीरंदाज़ को रास्ते के लिए रसद दी और तैयार होने में उसकी मदद की। तब वह उससे विदा लेकर अपने सफ़र पर चल दिया।

चलाचल, चलाचल, दर मंज़िल दर कूच, वह दिन-रात चलता गया और घड़ी भर के लिए भी कहीं नहीं रुका। पूरे एक महीने बाद वह सागर-तट पर पहुंचा। उसने उसके आर-पार नज़र दौड़ाई और यह महसूस करते हुए कि वह उसे कभी नहीं लांघ सकेगा, पश्चिम की ओर मुड़ गया और तट के साथ-साथ चलने लगा। एक महीने तक सफ़र करने के बाद वह उस जगह पहुंचा जहां सागर छिछला था। वहां उसने सागर को पार किया। उसे दूसरे तट पर एक चौड़ी सड़क दिखाई दी। वह एक महीने तक उस पर चलता रहा। आखिर उसे पूरब में एक बड़ा और घना जंगल नज़र आया।

वह उसी दिशा में चल दिया, घड़ी भर के लिए भी कहीं नहीं रुका और आखिर वह चौड़े, दो-पहिया गाड़ी के चिह्नोंवाले मार्ग पर आ पहुंचा। वह सड़क छोड़ इस मार्ग पर चल दिया। तीन दिन और तीन रातों तक इसी मार्ग पर चलने के बाद वह आखिर जंगल में जा पहुंचा।

वह जंगल में घुसा और उसने देखा कि दो-पहिया मार्ग वृक्षों के बीच गायब होता है और फिर सामने आ जाता है। वह उसी मार्ग पर चलता गया जो एक अगम्य झुरमुट में जाकर अचानक गायब हो गया। तीरंदाज अब झुरमुट में से आगे बढ़ने लगा। वहां वृक्ष बहुत ऊंचे और घने थे, वे अपनी शाखाओं से आकाश को ऐसे छिपाये हुए थे कि सूरज की एक भी किरण उनके पार नहीं आ पाती थी, कहीं से रोशनी झांक ही नहीं सकती थी। कहीं भी कोई रास्ता नजर नहीं आता था, न सामने, न दायें और न बायें। तीरंदाज वहां रुककर अपने आप से बोला –

"अब मैं क्या करूं? मैं ऐसे ही लौट जाने के लिए तो इतनी दूर आया नहीं हूं।"

उसने अपने इर्दगिर्द नजर डाली तो अचानक उसे जमीन में एक सूराख दिखाई दिया। वह उस सूराख में घुसा तो उसने अपने को एक भूमिगत मार्ग में पाया। वह वहां अपना रास्ता टटोलता हुआ बढ़ने लगा। वह बढ़ता गया, बढ़ता गया और आखिर जमीन में बनाई गई एक झोंपड़ी के पास पहुंचा। वह झोंपड़ी के अन्दर गया और उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई, मगर उसे वहां कोई भी नजर न आया। उसने कान लगाये, मगर उसे वहां कोई आवाज सुनाई नहीं दी। फिर भी उसे यह साफ़ दिखाई दे रहा था कि कोई-न-कोई यहां अक्सर आता रहता है।

"जाने कौन यहां रहता है," तीरंदाज ने अपने आप से कहा, "मगर मुझे सावधान रहना चाहिए ताकि कोई मेरा अहित न कर सके।"

उसे दीवार में एक बड़ी दरार नजर आई। वह रेंगकर उसी में जा छिपा और फ़ौरन गहरी नींद सो गया।

नींद में ही उसे दो पहिया गाड़ी की गड़गड़ाहट सुनाई दी। उसकी आवाज इतनी ऊंची थी कि वह समझ गया कि यह मामूली गाड़ी नहीं है।

उसने अपने को बहुत ही अच्छी तरह से छिपा लिया और चूहे की तरह चुपचाप लेटे-लेटे सोचने लगा –

"जाने अब क्या होगा?"

दो पहिया गाड़ी झोंपड़ी के दरवाजे पर आकर रुकी और बहुत ही भयंकर शकल-सूरतवाले एक जवान देव ने झोंपड़ी में प्रवेश किया। वह बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने

था और उसकी पेटी के साथ क़ीमती हथियार लटक रहे थे। देव ने अपने हथियार उतारे और उन्हें दीवार पर टांग दिया। फिर उसने अपने कपड़े उतारे और सामनेवाली खूंटी पर टांग दिये। इसके बाद वह पालथी मारकर बैठ गया और बोला –

"मुर्ज़ा आओ, मुझे भूख लगी है!"

उसके मुंह से इन शब्दों के निकलते ही पीले फूलों वाला दस्तरख़ान बिछ गया और उस पर बहुत ही लज़ीज़ खाने और शराबें तथा चुने हुए फल रखे दिखाई दिये। हर चीज़ ऐसी थी कि देखकर तबियत खुश हो और खाकर खूब मज़ा आये।

देव ने खूब पेट भर कर खाया-पिया और फिर बोला –

"मुर्ज़ा आओ, यह सब कुछ उठा ले जाओ!"

देखते ही देखते पीले फूलोंवाला दस्तरख़ान और उस पर रखी हुई सभी तश्तरियां, सुराहियां और प्याले ऐसे ग़ायब हो गये मानो वे वहां कभी थे ही नहीं।

देव ने अपने कपड़े पहने, हथियार सजाये और भूमिगत झोंपड़ी से बाहर चला गया। फ़ौरन दूरी पर ग़ायब होती दो पहिया गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनाई दी। देव जा चुका था।

तीरंदाज़ बरार से बाहर निकला। उसने अपनी इर्दगिर्द नज़र डाली, मगर उसे वहां न तो कोई चीज़ दिखाई दी और न कोई प्राणी ही।

"यह देव कौन था जो दो पहिया गाड़ी में यहां आया? वह कौन था जिसने उसके सामने ऐसे बढ़िया-बढ़िया खाने परोसे? खाने की वे सभी चीज़ें कहां ग़ायब हो गईं जिन्हें उसने छुआ तक भी नहीं था? मेरे ख़्याल में तो मुझे भी वह सब कुछ करना चाहिए जो देव ने किया था।"

तीरंदाज़ ने तब अपने हथियार उतारे और उसी खूंटी पर टांग दिये जहां देव ने अपने हथियार टांगे थे और इसी तरह उसने अपने कपड़े दूसरी खूंटी पर टांग दिये। इसके बाद वह पालथी मारकर नमदे की चटाई पर बैठ गया और बोला –

"मुर्ज़ा आओ, मुझे भूख लगी है!"

ऐसा कहते ही उसके सामने दस्तरख़ान बिछ गया जिस पर खान-पान की बढ़िया-बढ़िया चीज़ें सज गईं। सभी चीज़ें ऐसी थीं कि देखकर जी खुश हो और खाकर मज़ा आये।

तीरंदाज़ ने खाया-पिया और फिर बोला –

"मुर्ज़ा, तुम कहां हो? आओ, आकर मेरे पास बैठो और जी भर कर खाओ-पियो।"

यह सुनकर मुर्ज़ा फ़ौरन सामने आ गया और तीरंदाज़ के पास बैठकर खाने लगा। जब खा-पी चुका तो बोला –

"मैं तीस वर्ष से उस देव को खिला-पिला रहा हूं जो अभी थोड़ी ही देर पहले यहां था। उसने एक बार भी मुझे अपने साथ खाने या पीने के लिए नहीं बुलाया। मगर तुमने मेरा ध्यान किया और मुझे अपने साथ खाने के लिए बुलाया है। बेहतर यही है कि मैं तुम्हारे साथ रहूं। मुझे अपने संग ले चलो।"

"बहुत खुशी से," तीरंदाज़ ने जवाब दिया। "अब यह बात मेरी समझ में आ रही है कि मैं तुम्हारी ही खोज करता हुआ यहां आया था और आखिर अप्रत्याशित तुम्हें यहां पा लिया।"

"तो ठीक है। आज से मैं तुम्हारा हूं और हर जगह तुम्हारे पीछे-पीछे जाऊंगा," मुर्ज़ा ने कहा।

"बहुत अच्छी बात है," तीरंदाज़ ने कहा, "ऐसा ही सही।"

वे भूमिगत झोंपड़ी से बाहर आये और साथ-साथ चल दिये। मुर्ज़ा हर क्षण तीरंदाज़ के साथ-साथ रहता, मगर किसी को नज़र नहीं आता।

वे बहुत देर तक चले या थोड़ी देर तक, यह कोई नहीं जानता। पर तभी अचानक पहियों की ज़ोरदार खड़खड़ाहट सुनाई दी।

मुर्ज़ा तीरंदाज़ से बोला –

"यह मेरा पहलेवाला मालिक है जो अपने आठ काले घोड़ोंवाली गाड़ी पर आ रहा है। वह बहुत भूखा होगा और खाना खिलाने के लिए मुझे आवाज़ देगा, मगर अब कोई भी उसकी पुकार का जवाब नहीं देगा।"

वे चलते गये और काफ़ी अंधेरा हो जाने पर एक ऐसी जगह पहुंचे जो वीरान-सुनसान प्रतीत होती थी। वहां धुएं से काला हुआ एक डेरा खड़ा था, उसकी नमदे की छत खस्ता हाल थी और उसमें बहुत से सूराख थे।

तीरंदाज़ डेरे के अन्दर गया और वहां उसे एक संन्यासी दिखाई दिया। वह सिर नवाये ध्यान कर रहा था और प्रार्थना में इतना खोया हुआ था कि तीरंदाज़ की ओर उसने आंख उठाकर भी नहीं देखा।

"ऐ पहुंचे हुए संन्यासी," तीरंदाज़ ने कहा, "मुझे आप से एक बिनती करनी है। मुझे अपने डेरे में रात बिता लेने दीजिये।"

संन्यासी ने अपनी प्रार्थना बन्द कर कहा –

"इन इलाक़ों में तो कभी कोई आदमी नहीं आया, तुम कहां से आये हो और किधर जा रहे हो?"

"मैंने अपने खान का हुक्म बजाते हुए बहुत दूर का सफ़र किया है और अब मैं अपने घर लौट रहा हूं," तीरंदाज़ ने जवाब दिया।

संन्यासी ने कहा –

"तुम खुशी से यहां रात बिता सकते हो, मगर तुम्हें खिलाने-पिलाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है, न नान, न सीख़ क़बाब और न चाय, कुछ भी नहीं। मेरे डेरे में तो कोई बर्तन या कोई तिपाई तक नहीं है।"

"मुझे किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है," तीरंदाज़ ने जवाब दिया। "मुझे तो सिर्फ़ रात बिताने के लिए जगह चाहिए।"

"तो तुम ठहर सकते हो!" संन्यासी ने कहा और फ़र्श पर घुटने टेक फिर से प्रार्थना करने लगा। मगर सोने से पहले उसने अपनी रसद निकाली और खाने बैठ गया। उसके भोजन में चट्टानों की दरारों के बीच से चुनी हुई जंगली रसभरियां और जंगली फल-फूल और कन्द-मूल शामिल थे।

संन्यासी ने इन्हें खाते हुए तीरंदाज़ से कहा –

"देखते हो न मैं क्या खा रहा हूं? तुम्हें ऐसी घटिया ख़ुराक देने की तो मैं हिम्मत भी नहीं कर सकता। इसके अलावा यह काफ़ी भी नहीं है। मेरे पास फल बटोरने के लिए बहुत थोड़ा वक़्त होता है, क्योंकि मुझे ख़ुदा की याद में वक़्त लगाना होता है।"

तीरंदाज़ के मन पर इस बात का असर नहीं हुआ।

"आप अपनी ख़ुराक खाइये," उसने कहा, "और मैं अपनी खाऊंगा।" इसके बाद उसने पुकार कर कहा –

"मुर्जा आओ, मुझे भूख लगी है!"

इन शब्दों के मुंह से निकलते ही उसके सामने पीले फूलोंवाला दस्तरख़ान बिछ गया। उस पर तश्तरियों में बढ़िया खाने सज गये और वहीं से भरे हुए मर्तबान आ गये। मतलब यह कि सभी ऐसी चीज़ें आ गईं कि देखकर जी खुश हो और खाकर ख़ूब मज़ा आये।

तीरंदाज़ खाने बैठ गया और उसने संन्यासी से कहा –

"ऐ पहुंचे हुए संन्यासी, आप अब मेरा साथ दें और इन चीज़ों को भी ज़रा चखकर देखें।"

हैरान होता हुआ संन्यासी भी उसका साथ देने और लज़ीज़ खानों को खाते हुए

उनकी तारीफ़ करने लगा। तीरंदाज़ ने मुर्ज़ा को बुलाया और उसे भी खाने में शामिल होने की दावत दी।

जब वे सभी पेट भर कर खा चुके तो उठे और तीरंदाज़ ने कहा –

"मुर्ज़ा, ये सारी चीज़ें ले जाओ!"

आन की आन में वे सभी चीज़ें ग़ायब हो गईं जो पीले फूलोंवाले दस्तरख़ान पर रखी थीं और उनके साथ दस्तरख़ान भी।

संन्यासी ने जो मज़ेदार खाने खाये थे उनसे उसका जी बेहद ख़ुश हुआ था। अब वह तीरंदाज़ की मिन्नत करने लगा कि मुझ से सौदा कर लो।

"बहादुर तीरंदाज़," वह बोला, "मेहरबानी कर, मुझे जादुई दस्तरख़ान के साथ अपना मुर्ज़ा दे दो! बदले में मैं तुम्हें बहुत ही बढ़िया चीज़ दूंगा।"

"नहीं, नहीं, ऐसा मैं हरगिज़ नहीं कर सकता," तीरंदाज़ ने जवाब दिया। "मैं किसी भी क़ीमत पर मुर्ज़ा को देने को तैयार नहीं हूं। मुझे तो ख़ुद उसकी ज़रूरत है।"

मगर संन्यासी भी माननेवाला नहीं था। वह रात भर तीरंदाज़ की मिन्नत-समाजत करता रहा।

"बहादुर तीरंदाज़, मेरी बात मान लो," वह बोला, "मैं तुम्हें बदले में तुम्हारे मुर्ज़ा से भी बढ़कर कोई कमाल की चीज़ दूंगा।"

"क्या देंगे आप मुझे?" तीरंदाज़ ने पूछा।

"मैं तुम्हें दिखाता हूं," संन्यासी बोला। इतना कहकर उसने एक लंबा रेशमी रूमाल निकाला और तीरंदाज़ को अपने साथ बाहर चलने को कहा। तीरंदाज़ बाहर गया। संन्यासी ने अपना रूमाल हिलाते हुए कहा –

"महल प्रकट हो!"

पलक झपकते ही एक शानदार महल उनके सामने प्रकट हो गया। उसकी छतें तो लगभग आकाश को छू रही थीं। ऐसा ख़ूबसूरत था कि जैसा किसी ने कभी देखा ही न हो, उसका मुहरा सोने-चांदी से सजा हुआ था और उसमें मूंगे, मोती और हीरे जड़े हुए थे। उसके अन्दर का साज़-सामान और दीवारों की सजावट तो आंखों को चका-चौंध करती थी। ऐसे ठाठ-बाठ और ऐसी शान-बान तो बड़े से बड़े ख़ानों के महलों में भी देखने को नहीं मिल सकती थी।

संन्यासी ने तीरंदाज़ से कहा –

"बहादुर तीरंदाज़, तुम जवान हो, तुम्हें महल की ज़रूरत होगी। रही मेरी बात, तो मुझे तो ज़बान का रस पूरा करने के लिए ही बस कुछ चाहिए। इसलिए तुम मेरा

जादुई रूमाल ले लो और बदले में पीले फूलोंवाले दस्तरख़ान के साथ मुर्ज़ा मुझे दे दो।"

मगर संन्यासी के बहुत गिड़गिड़ाने और मनाने पर भी तीरंदाज़ राज़ी नहीं हुआ।

"नहीं, नहीं," उसने कहा, "मैं अपना मुर्ज़ा नहीं दे सकता।"

मगर तभी मुर्ज़ा ने फुसफुसाकर उसके कान में कहा –

"कर लो इससे सौदा! महल भी तुम्हारा हो जायेगा और मैं भी तुम्हारा ही रहूंगा!"

तीरंदाज़ ने मुर्ज़ा की बात मान ली और संन्यासी से सौदा करने को राज़ी हो गया।

संन्यासी ने तब अपना जादुई रूमाल हिलाकर कहा –

"ग़ायब हो जाओ!" और महल फ़ौरन आंखों से ओझल हो गया।

संन्यासी से रूमाल लेकर तीरंदाज़ बोला –

"मुर्ज़ा अब आपका हुआ!"

संन्यासी को सलाम कहकर वह अपने रास्ते चल दिया।

वह एक पहाड़ी दर्रे में पहुंचा। उसने दर्रा पार किया और फिर अपने आप से कहा –

"मैंने बेवक़ूफ़ी की है। मुझे ऐसी अदला-बदली नहीं करनी चाहिए थी। अब मेरे पास यह शानदार महल तो है, मगर मुर्ज़ा नहीं है। जाने अब वह कहां है और क्या कर रहा है?"

अचानक उसे मुर्ज़ा की आवाज़ सुनाई दी। वह बोला –

"कोई ग़म न करो, बहादुर तीरंदाज़। मैं तुम्हारे साथ हूं, कभी तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊंगा!"

"और संन्यासी का क्या होगा?" तीरंदाज़ ने पूछा।

"होगा क्या, उसे ख़ुदा को याद करने दो," मुर्ज़ा ने जवाब दिया। "मैं उसकी नौकरी नहीं बजाऊंगा।"

तीरंदाज़ बहुत ही ख़ुश हुआ और आगे चलता गया। वह कभी चलता तो कभी दौड़ने लगता। इतना उत्सुक था वह अपनी जवान और ख़ूबसूरत बीवी के पास पहुंचने को। वह बिना रुके चलता गया, चलता गया, उसने बीतते हुए दिनों और रातों की कभी गिनती नहीं की और आख़िर सागर-तट पर पहुंचा।

"अगर मैं सागर के गिर्द चक्कर काटकर जाऊं तो मुझे एक महीने तक और सफ़र करना पड़ेगा," उसने अपने आप से कहा। "मगर हो सकता है कि यहां मुझे कोई मल्लाह मिल जाये।"

वह तट के साथ-साथ चलता गया और वहां उसने एक बहुत बड़े जहाज को लंगर डाले हुए खड़े देखा। जहाज पर बहुत-से सैनिक सवार थे और वे सभी उस पार जाने वाले थे। तीरंदाज ने उनके क़रीब जाकर कहा –

"वीर सैनिको, मैं बहुत ही दूर से आया हूं। मेहरबानी कर मुझे भी अपने साथ उस पार ले चलो!"

सेनापति ने कहा –

"ले चलेंगे। आ जाओ जहाज पर!"

तीरंदाज जहाज पर सवार हो गया और सैनिकों के साथ समुद्र पार करने लगा। कुछ देर बाद सैनिकों को भूख लगी और वे खाने-पीने लगे।

तीरंदाज ने कहा –

"मुझे भी कुछ खाने को मिल जायेगा?"

"यह भी खूब रही!" सैनिक चिल्लाये। "हमने तुम्हें अपने जहाज पर सवार हो जाने दिया और अब तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हें खिलायें-पिलायें भी! हमें तुम से क्या लेना-देना है? हमें तो हर आदमी के हिसाब से नपी-तुली खुराक दी जाती है, हम किसी के साथ उसे बांट नहीं सकते!"

तीरंदाज ने कहा –

"तुम्हारी खुराक नपी-तुली होती है, मगर मेरी नहीं। मैं अगर चाहूं तो तुम सभी को खूब खिला-पिला सकता हूं और फिर भी इतने ही लोगों के लिए इतनी ही खुराक और बच रहेगी!"

सैनिक यह सुनकर तिलमिला उठे।

"शेखीखोर! बेपर की उड़ानेवाले!" वे सभी ग़ुस्से से चिल्लाये। उन्होंने जाकर अपने सेनापति से सारी बात कही।

सेनापति ने फ़ौरन तीरंदाज को बुलाया और बोला –

"सुना है कि तुमने इस बात की डींग हांकी है कि तुम मेरे सभी सैनिकों को एक साथ ही खाना खिला सकते हो?"

"मैंने तो सिर्फ़ सच्ची बात कही है," तीरंदाज ने जवाब दिया।

"अगर ऐसी बात है तो करके दिखाओ। तब हम मान जायेंगे कि तुम ईमानदार और सच्चे हो। अगर तुम झूठे साबित हुए तो हमसे रहम की उम्मीद बिल्कुल न करना। हम बैल जितना बड़ा पत्थर तुम्हारी गर्दन से बांध कर तुम्हें समुद्र में फेंक देंगे!"

"अच्छी बात है," तीरंदाज ने जवाब दिया, "मैं साबित कर दूंगा कि मैंने जो

कुछ कहा था, वह सच था। आप सभी लोग दो पांतों में बैठ जायें, मगर ऐसे कि बीच में काफ़ी खुली जगह रहे।"

सैनिकों ने वैसा ही किया जैसा तीरंदाज ने कहा था। वे एक-दूसरे के सामने दो पांतों में बैठ गये। इतनी अधिक संख्या थी उनकी कि पांतें जहाज के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गईं।

"मुर्जा आओ," तीरंदाज ने कहा, "ये सैनिक भूखे हैं, इन्हें बढ़िया खाना खिलाओ!"

आन की आन में जहाज के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दोनों पांतों के बीच की खुली जगह में पीले फूलोंवाला एक दस्तरख़ान बिछ गया और उस पर तरह तरह की खाने-पीने की चीजें, रसभरियां और फल सज गये। थोड़े में यह कि ऐसी सभी चीजें जिन्हें देखकर तबियत खुश हो और खाकर मजा आ जाये।

सैनिकों ने खूब जी भर कर खाया-पिया, मगर खाने-पीने की चीजें बिल्कुल कम न हुईं। उतने ही और लोगों के खाने-पीने के लिए काफ़ी चीजें सामने बाक़ी दिखाई दीं।

"आप लोग जी भर कर खा-पी चुके?" तीरंदाज ने पूछा।

"हां!" सैनिकों ने जवाब दिया।

"बहुत अच्छी बात है!" तीरंदाज ने कहा। "मुर्जा आओ, यह सब ले जाओ!"

उसी समय सभी कुछ ग़ायब हो गया – दस्तरख़ान और तश्तरियां, सुराहियां और थाल।

सैनिक तो आश्चर्य से मुंह बाये रह गये।

"ऐसी अद्भुत चीज तो हमने जिन्दगी में पहले कभी देखी ही नहीं!" वे बोले।

वे आपस में सलाह-मशविरा करने लगे कि मुर्जा और उसका जादुई दस्तरख़ान कैसे हासिल करें।

"उसे हमें बेच दो," उन्होंने तीरंदाज से कहा।

"ओह नहीं," तीरंदाज ने जवाब दिया। "वह बिकाऊ नहीं है!"

उन्होंने तीरंदाज की बहुत मिन्नत-समाजत की और उसे बहुत-सा सोना देना चाहा, मगर वह राज़ी न हुआ।

"अच्छा, अगर तुम उसे बेचना नहीं चाहते," वे बोले, "तो आओ, सौदा ही कर लें। हम भी तुम्हें बदले में कोई ऐसी ही अद्भुत चीज देंगे!"

"आप मुझे क्या दे सकते हैं?" तीरंदाज ने पूछा। "मेरे लिए मुर्जा से ज्यादा क़ीमती चीज कोई नहीं हो सकती। मुझे उसी की सबसे ज्यादा जरूरत है!"

सैनिकों ने सोने की एक छड़ी निकाली जिसका एक सिरा पतला था और दूसरा मोटा। उन्होंने तीरंदाज को छड़ी दिखाकर कहा –

"हम तुम्हें यह जादुई छड़ी देंगे। अगर तुम इसके मोटे सिरे को ज़मीन पर मारोगे तो असंख्य घुड़सवार सैनिक सामने आ जायेंगे, चमकते-दमकते कवच पहने और इस्पाती तलवारें सजाये। अगर तुम इसका पतला सिरा ज़मीन पर मारोगे तो बेशुमार तीरंदाज सामने आ जायेंगे, तीर-कमानों से लैस।"

जादुई छड़ी देखकर मुर्ज़ा ने तीरंदाज के कान में फुसफुसाकर कहा –

"बहादुर तीरंदाज, इनसे सौदा कर लो। छड़ी भी तुम्हारी हो जायेगी और मैं भी तुम्हारा ही रहूंगा!"

तीरंदाज ने उसकी बात मान ली और मुर्ज़ा के बदले में सुनहरी छड़ी ले ली।

कुछ ही देर बाद वे सागर-पार पहुंच गये और जहाज से उतरकर अपने-अपने रास्ते चल दिये, सैनिक एक दिशा में और तीरंदाज दूसरी दिशा में।

तीरंदाज ने चलते-चलते कहा –

"जाने इस समय मुर्ज़ा कहां है?" मगर मुर्ज़ा ने कोई जवाब नहीं दिया।

तीरंदाज एक दिन और एक रात तक और चलता रहा। तब उसने फिर से कहा –

"मुर्ज़ा, तुम कहां हो, मेरे प्यारे दोस्त?"

मगर मुर्ज़ा ने कोई जवाब नहीं दिया।

तीरंदाज चलता गया। जब दो दिन और दो रातें और बीत गये तो उसने फिर अपने दोस्त को आवाज दी –

"तुम कहां हो, मुर्ज़ा? मुझे जवाब दो!"

मगर मुर्ज़ा ने जवाब नहीं दिया।

तीरंदाज को अब बहुत ही दुख हुआ।

"तो वह मुझे दगा दे गया," उसने अपने आप से कहा। "मुझे उन सैनिकों से हरगिज सौदा नहीं करना चाहिए था!"

पांचवें दिन की शाम आई तो तीरंदाज ने मन ही मन सोचा – "आखिरी बार उसे फिर आवाज देकर देखता हूं!"

उसने ऊंची आवाज में कहा – "मुर्ज़ा, जवाब दो! तुम कहां हो?"

और अचानक उसे मुर्ज़ा की आवाज सुनाई दी। वह बोला –

"दुखी न होओ, बहादुर तीरंदाज! तुम्हारा मुर्ज़ा तुम्हारे साथ है! मैं दोपहर को ही आया हूं!"

तीरंदाज की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह ज़मीन पर बैठकर बोला –

"भूख के मारे मेरी तो जान निकली जा रही है। लाओ, झटपट खाना खायें!"

फ़ौरन पीले फूलोंवाला दस्तरख़ान बिछ गया और सभी तरह के लज़ीज़ खाने सज गये। तीरंदाज़ और मुर्ज़ा ने भर पेट खाया-पिया और फिर आगे चल दिये। वे बहुत अर्से तक चलते रहे, उनके लिए दिन और रातें एक समान थे। आख़िर वे आधी रात को त्सारकिन-ख़ान के राज्य में पहुंचे।

तीरंदाज़ ने अपने डेरे में जाकर अपनी पत्नी को जगाया।

"जागो प्यारी," वह बोला। "मैं आ गया!"

उसकी बीवी की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह झटपट उठी और उसने आग जलाई।

"तुम राज़ी-ख़ुशी तो हो न?" बीवी ने पूछा।

उन्होंने एक-दूसरे को अपना-अपना हालचाल सुनाया और यह बताया कि जुदाई के इतने लम्बे अर्से में उनके साथ क्या कुछ बीती और उन्होंने किस तरह से समय बिताया।

"ख़ान का क्या हाल है?" तीरंदाज़ ने पूछा। "क्या वह अभी तक बीमार है?"

"तुम जिस दिन गये उसी दिन से ख़ान अच्छा भला है," बीवी ने जवाब दिया। "वह मुझे इस बात के लिए राज़ी करने को तीन बार मेरे पास आ चुका है कि मैं उसकी पत्नी बन जाऊं। मगर मैंने हर बार उससे यही कहा – 'मेरे लिए फिर से शादी करना उचित नहीं। मेरा पति वह दवाई खोजने के लिए गया है जो आपने उसे लाने के लिए कहा था। जहां तक मैं समझती हूं वह ज़िन्दा है, मैं कैसे आप से शादी कर सकती हूं?' मगर ख़ान यही राग अलापता रहा – 'तुम्हारा पति मर चुका है। उसे मरे एक अर्सा हो गया।' तब मैंने उससे कहा – 'अगर आप यह चाहते हैं कि मैं आपकी बात पर विश्वास कर लूं तो आप मुझे उसकी हड्डियां दिखायें। हड्डियां देखने के बाद मैं यह तय कर सकूंगी कि आपको क्या जवाब दूं।' यह सुनकर ख़ान आग-बबूला हो गया और उसने हुक्म दिया कि मेरे सभी रेवड़ और मेरा सारा माल-मता छीन लिया जाये। अब हमारे पास ख़ाली डेरे के सिवा कुछ भी नहीं है!"

अपनी बीवी की बातें सुनकर तीरंदाज़ ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया।

"चलो, ख़ान के पास चलें!" वह चिल्लाया। "मैं उसे उसकी धोखाधड़ी और अनाचार की सज़ा दूंगा!"

वे ख़ान के महल की तरफ़ गये। तीरंदाज़ महल से थोड़ी दूरी पर रुक गया और उसने अपना जादुई रूमाल हिलाकर कहा –

"यहां महल बन जाये!"

फ़ौरन वहां महल बन गया, इतना ऊंचा कि बादलों को छुए और इतना सुन्दर कि उसके सामने खान का महल झोंपड़ा-सा लगने लगा।

तीरंदाज और उसकी पत्नी महल में गये। तब तीरंदाज ने कहा –

"मुर्जा आओ, हमें भूख लगी है, खाना खिलाओ!"

उन्होंने खूब खाया-पिया। तब तीरंदाज महल से बाहर निकला और उसने अपनी सुनहरी छड़ी का पतला सिरा जमीन पर मारा। उसी समय तीर-कमानों से लैस अनगिनत सैनिक प्रकट हुए। वे महल के दरवाजों पर खड़े होकर तीरंदाज के हुक्म का इन्तजार करने लगे।

तीरंदाज ने कहा –

"जब तक मेरी आंख न खुले और मैं बिस्तर से न उठूं, किसी को अन्दर न आने देना!"

सुबह हुई तो खान के नौकरों-चाकरों ने खान के महल के क़रीब ही एक विराट और आलीशान महल सिर ऊंचा किये खड़ा देखा। इस महल को देखकर वे तो चकरा ही गये।

"यह क्या चमत्कार है?" वे बोले। "क्या खुद अल्लाह कुरखान ने रातोंरात यह महल खड़ा कर दिया है या शैतान ने इसे बनाया है?"

और वे त्सारकिन-खान को इसकी सूचना देने भागे।

त्सारकिन-खान ने बाहर आकर इस महल को देखा। वह सकते में ही आ गया।

"यह क्या क़िस्सा है?" उसने कहा। "जहां तक मुझे याद है, मैंने अपनी सारी जिन्दगी में न तो कभी ऐसा महल देखा है और न कभी इसकी चर्चा ही सुनी है। किसने इसे बनाया है और कौन यहां रहता है? जाओ, उसे मेरे पास लेकर आओ!"

खान के दूत उसका हुक्म बजाने गये।

वे तीरंदाज के महल के सामने पहुंचे। उन्होंने दरवाजे पर खड़े दोनों लम्बे-तड़ंगे और रोबीले-से दरबानों से पूछा –

"यह किसका महल है? कौन यहां रहता है? तुम पहरा देने वाले कौन हो? तुम आसमान से गिरे हो या जमीन फाड़कर निकले हो? फ़ौरन जवाब दो!"

मगर उल्टे दोनों पहरेदारों ने बिगड़ते हुए पूछा –

"तुम कौन होते हो हम से इतने सवाल पूछनेवाले?"

"हम महाबली त्सारकिन-खान के दूत हैं। तुम से पूछे गये इन सभी सवालों के जवाब हमें उसे आकर बताने हैं।"

"यह त्सारकिन-खान कौन है?" पहरेदारों ने पूछा "हमने तो कभी उसका नाम भी नहीं सुना और न हम सुनना ही चाहते हैं। हमारा तो अपना खान है। वह इस समय महल में सो रहा है। जाओ, भाग जाओ अपना सिर सही-सलामत लेकर!"

खान के दूतों का तो दम निकल गया। वे भागे-भागे त्सारकिन-खान के पास गये और जो कुछ उन्होंने देखा-सुना था, सब उसे कह सुनाया। खान गुस्से से लाल-पीला हो उठा और उसने अपने हरकारों को खूब डांटते-फटकारते हुए कहा –

"मैंने तुम्हें सन्तरियों से बातचीत करने के लिए वहां नहीं भेजा था। मैंने तो तुम्हें उनके मालिक, उनके स्वामी को यहां लाने के लिए भेजा था!"

उसने अपने इन दोनों हरकारों को बहुत सख्त सजा देने का हुक्म दिया और उसने अपने दो चुने हुए सैनिक बुलवाये। वे दोनों ही बड़े लम्बे-तड़ंगे और हट्टे-कट्टे थे। उसने उनसे कहा –

"उस महल के मालिक को पकड़कर मेरे पास घसीट लाओ!"

खान के दोनों सैनिक महल के सामने पहुंचे और उन्होंने दरवाजे खोलने की कोशिश की। मगर दरबानों ने उन्हें अलग धकेलते हुए चिल्लाकर कहा –

"कौन हो तुम? अगर तुम्हें अपनी जिन्दगी प्यारी है तो यहां से दूर रहो!"

त्सारकिन-खान के सैनिक बोले –

"हमें तुमसे बातें करने के लिए नहीं भेजा गया। हम तो इस महल के मालिक को पकड़कर अपने खान के पास ले जाने के लिए आये हैं!"

और उन्होंने फिर से महल में घुसने की कोशिश की।

मगर दरबानों ने उन्हें पकड़कर उनकी मरम्मत शुरू कर दी।

"हमें कुछ नहीं लेना-देना तुम्हारे खान से!" उन्होंने कहा। "हम न तो उसे जानते हैं और न ही जानना चाहते हैं!"

उन्होंने खान के सैनिकों की खूब अच्छी पिटाई कर उन्हें वहां से भगा दिया।

वे दोनों लंगड़ाते और कराहते हुए जैसे-तैसे त्सारकिन-खान के सामने पहुंचे।

"सन्तरियों ने हमें महल में नहीं घुसने दिया!" वे बोले। "हम उनसे टक्कर नहीं ले सके! हम में तो उनसे आधी भी ताकत नहीं!"

उनकी बात सुनकर त्सारकिन-खान ने अपने बहादुरों-सलाहकारों को सलाह-मशविरा करने के लिए बुलाया।

"जल्दी से बताइये कि हम क्या करें," वह बोला। "एक बहुत ही ताकतवर दुश्मन से पाला पड़ गया है जो उस महल में रह रहा है।"

वज़ीरों-सलाहकारों ने कहा –

"बहुत बड़ी सेना को हल्ला बोलने के लिए भेजिये।"

चुनांचे त्सारकिन-खान ने फ़ौरन एक भारी सेना को अपने सामने इकट्ठी करने का हुक्म दिया!

"हर उस आदमी तक को ले आओ जो सिर्फ़ घोड़े पर बैठ ही सकता हो!" उसने कहा। "जितनी जल्दी यह काम हो जाये उतना ही ज्यादा अच्छा है!"

त्सारकिन-खान के सेनापतियों ने उसकी फ़ौजें जमा कीं और उन्हें लेकर खान के सामने हाज़िर हुए। तैंतीस पलटनों ने, जो तैंतीस क़तारों में खड़ी थीं, तीरंदाज़ के महल को घेर लिया। त्सारकिन-खान का हुक्म पाकर उसके दूतों ने पुकारकर कहा –

"बाहर आओ और सूरज रहते तक हम से दो-दो हाथ करो!"

यह ललकार सुनकर तीरंदाज़ ने खिड़की खोली और कमर तक बाहर झुककर उनसे पूछा –

"तुम कौन हो और किस लिए यहां जमा हुए हो?"

सैनिकों ने जवाब दिया –

"हम महाबली त्सारकिन-खान के सैनिक हैं!"

तब तीरंदाज़ बोला –

"मैं त्सारकिन-खान का न तो दुश्मन हूं और न दोस्त ही। मैं अपने महल में रहता हूं और उससे मेरी कोई लड़ाई नहीं है। पर यदि त्सारकिन-खान लड़ना चाहता है तो ऐसा साफ़-साफ़ कहे। तब मैं जाकर उससे लड़ूंगा!"

"हां, मैं लड़ना चाहता हूं!" त्सारकिन-खान ने चिल्लाकर कहा।

इतना सुनकर तीरंदाज़ अपने महल से बाहर आया और उसने सुनहरी छड़ी का मोटा सिरा ज़मीन पर मारा। उसी समय इतनी बड़ी संख्या में घुड़सवार सैनिक सामने आ गये कि उन्हें न तो गिना जाये और न ही एक नज़र में देखा जाये। हर सैनिक कवच पहने और हाथ में तलवार लिये था। घुड़सवार सैनिक अपनी तलवारें ऊंची कर चिल्लाये –

"आपका क्या हुक्म है, तीरंदाज़?"

"त्सारकिन-खान की फ़ौजों से सोहा लो!" तीरंदाज़ ने कहा।

घुड़सवार आगे बढ़े और त्सारकिन-खान की फ़ौजों से भिड़ गये।

तब तीरंदाज़ ने सुनहरी छड़ी के पतले सिरे को ज़मीन पर मारा, उसी समय तीर-कमान लिए हुए बेशुमार तीरंदाज़ प्रकट हो गये। वे अपनी कमानें ऊंची कर बोले –

"आपका क्या हुक्म है, तीरंदाज़?"

"त्सारकिन-खान की फ़ौजों से उलझ जाओ!" तीरंदाज़ ने हुक्म दिया।

तीरंदाज़ दुश्मन पर टूट पड़े और घुड़सवारों की मदद करने लगे।

त्सारकिन-खान की फ़ौजें ऐसे ज़ोरदार हमले की ताब न ला सकीं। उनके पांव उखड़ गये और वे पीछे हटने लगीं। तीरंदाज़ के सैनिक मार-काट करते हुए आगे बढ़ने लगे। लड़ाई सुबह को शुरू हुई थी और शाम होने तक खान का एक भी सैनिक बाक़ी न बचा। तीरंदाज़ के सैनिक त्सारकिन-खान को पकड़ने ही वाले थे कि वह अपने घोड़े से नीचे कूदा और अपनी बची-बचायी ताक़त बटोर कर यह चिल्लाता हुआ तीरंदाज़ के महल की ओर भागा—

"रहम कीजिए! रहम कीजिए! मेरी जान बख़्श दीजिये!"

तीरंदाज़ ने अपने सैनिकों से कहा—

"इसकी जान मत लो। इसे ज़िन्दा ही मेरे पास लाओ! मैं इससे बातचीत करना चाहता हूं!"

सैनिक त्सारकिन-खान को बाहों-बाहों से पकड़कर घसीटते हुए तीरंदाज़ के पास ले गये। त्सारकिन-खान उसके सामने ज़मीन पर गिर पड़ा। डर के कारण वह तीरंदाज़ को पहचान भी नहीं पाया। उसने गिड़गिड़ाकर कहा कि मुझ पर रहम करो और मेरी जान बख़्श दो।

तीरंदाज़ ने ज़ोर का ठहाका लगाया।

"डरो नहीं," उसने कहा, "मैं तुम्हें नहीं मारूंगा! तुम लड़ना चाहते थे, इसीलिए मैं लड़ा। अब मैं यह चाहता हूं कि तुम मेरे साथ बैठकर खाना खाओ। मुर्ज़ा आओ, हमें भूख लगी है, हमें खिलाओ-पिलाओ!"

फ़ौरन पीले फूलोंवाला दस्तरख़ान बिछ गया और कमाल के लज़ीज़ खाने और शराबें सामने आ गयीं। तीरंदाज़ खान की आवभगत करने लगा। वह उसके सामने कभी एक चीज़ पेश करता और कभी दूसरी।

तीरंदाज़ ने कहा—

"मैंने सुना है कि तुम्हारे राज्य में एक तीरंदाज़ रहता है, जवान, ख़ूबसूरत, मज़बूत और बड़ा ही बहादुर। वह कहां है? मैं उससे मिलना चाहता हूं।"

"यह तो मुमकिन नहीं," त्सारकिन-खान ने जवाब दिया।

"मुमकिन नहीं? मगर क्यों?" तीरंदाज़ ने पूछा।

"क्योंकि वह मर चुका है।"

"क्या यह सच है? फिर भी मैंने सुना है कि वह ज़िन्दा है और ख़ूब मौज कर रहा है।"

"वह न जाने क्या की खोज में न जाने कहां गया था," त्सारकिन-ख़ान ने बात साफ़ की। "उसे तो बहुत ही पहले आ जाना चाहिये था। पर चूंकि वह नहीं आया, इसलिए ज़ाहिर है कि ज़रूर मर गया है।"

"मगर न जाने क्या की तलाश में न जाने कहां उसे भेजा किसने था?" तीरंदाज़ ने पूछा।

"किसी ने भी नहीं। वह अपनी ही मर्ज़ी से गया था, न जाने क्यों," त्सारकिन-ख़ान ने जवाब दिया।

यह सुनकर तीरंदाज़ जल-भुन गया।

"मैंने कहा था कि मैं तुम्हारी जान बख़्श दूंगा, मगर तुम्हारे जैसा बेशर्म और झूठा आदमी इस लायक़ नहीं है," उसने कहा। "तुम्हीं ने तीरंदाज़ को भेजा था। वह भी इसलिए कि तुम उससे उसकी पत्नी छीन लेना चाहते थे। शुरू में तुमने बीमारी का बहाना कर उसे शेरनी का दूध लाने के लिए भेजा। जब उसने यह कर दिया तो तुमने उसे न जाने कहां और न जाने क्या की तलाश में भेज दिया। ग़ौर से मुझे देखो! अगर डर के मारे तुम्हारी आंखें बिल्कुल अंधी नहीं हो गई हैं, तो तुम देख सकोगे कि मैं वही तीरंदाज़ हूं... मैं बहुत दूर दूर के देशों में घूमा और न जाने कहां पहुंच गया और वह चीज़ लेकर आया हूं जिसका न कोई आकार है और न मिलने का कोई स्थान। मैं ज़िन्दा और सही-सलामत हूं। तुम्हें अपने बुरे इरादों में कामयाबी नहीं मिली। अब इन्साफ़ का तक़ाज़ा तो यही है कि मैं तुम्हारी जान ले लूं।"

त्सारकिन-ख़ान डर से थर-थर कांपता हुआ तीरंदाज़ के पैरों पर गिर पड़ा और घुटनों के बल रेंगता हुआ जान बख़्श देने के लिए गिड़गिड़ाने लगा।

तीरंदाज़ ने ठोकर मारकर ख़ान को एक तरफ़ हटा दिया और बोला –

"तुमने बहुत बड़े-बड़े गुनाह किये हैं, फिर भी मैं तुम्हारी जान नहीं लूंगा। लेकिन मैं तुम्हें अपनी आंखों के सामने भी नहीं देख सकता। इसलिए इसी वक़्त यहां से चलते बनो और याद रखो कि इस राज्य में कभी तुम्हारी परछाईं भी नज़र न आये।"

"मैं इस मेहरबानी के लिए तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूं," ख़ान ने कहा और अपने बीवी-बच्चों को साथ लेकर हमेशा के लिए वहां से चला गया।

जहां तक तीरंदाज़ का ताल्लुक़ है, तो वह अपनी जवान बीवी के साथ ख़ानाबदोशों के उसी डेरे में रहने लगा। उन्होंने इसके बाद हमेशा हंसी-ख़ुशी की ज़िन्दगी गुज़ारी।

हीरे-मोती

तुर्कमानी लोक-कथा

किसी गांव में कभी एक विधवा रहती थी जिसका इकलौता बेटा था – मीराली। मां-बेटा बहुत ही ग़रीब थे। बूढ़ी औरत ऊन साफ़ करती, लोगों के कपड़े सीती, धोती और इस तरह अपना और अपने बेटे का पेट पालती।

मीराली जब बड़ा हो गया तो उसकी मां ने कहा –

"बेटे, अब मुझ में और काम करने की हिम्मत नहीं रही। तुम्हें जाकर कोई काम तलाश करना और इस तरह अपनी रोज़ी-रोटी कमानी चाहिए।"

"अच्छी बात है, मां," मीराली ने कहा और वह रोज़गार की तलाश में निकल पड़ा। वह जहां-तहां भटका, मगर कहीं भी उसे कोई काम नहीं मिला।

कुछ अर्से बाद वह एक बाई (अमीर) के घर पर पहुंचा।

"बाई, क्या आपको नौकर की ज़रूरत है?" मीराली ने पूछा।

"हां, ज़रूरत है," बाई ने जवाब दिया।

और उसने उसी समय मीराली को नौकर रख लिया।

एक दिन गुज़र गया, मगर बाई ने अपने नये नौकर से कुछ भी करने को नहीं कहा। दूसरा दिन भी गुज़र गया, मगर बाई ने उसे किसी तरह का कोई हुक्म नहीं दिया। तीसरा दिन भी गुज़र गया, मगर बाई ने उसकी तरफ़ बिल्कुल कोई ध्यान न दिया।

मीराली को यह सब कुछ बहुत अजीब लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बाई ने उसे किसलिए नौकर रखा है।

चुनांचे उसने बाई से आकर पूछा—

"मालिक, आप मुझे कोई काम करने को देंगे न?"

"हां, हां," बाई ने जवाब दिया, "कल तुम मेरे साथ चलना।"

अगले दिन बाई ने मीराली को एक बैल ज़िबह करके उसकी खाल उतारने और इसके बाद चार बड़े-बड़े बोरे लाने और सफ़र के लिए दो ऊंट तैयार करने का हुक्म दिया।

एक ऊंट पर बैल की खाल और बोरे लाद दिये गये। दूसरे पर बाई खुद सवार हुआ और वे चल दिये।

जब वे दूर-दराज़ के एक पहाड़ के दामन में पहुंच गये तो बाई ने ऊंट रोके और मीराली को बोरे और बैल की खाल उतारने का आदेश दिया। मीराली ने ऐसा ही किया। तब बाई ने कहा कि मीराली बैल की खाल को उलट कर उस पर लेट जाये। मीराली की समझ में न आया कि क़िस्सा क्या है, मगर उसे मालिक का हुक्म टालने की जुर्रत न हुई। उसने वैसा ही किया।

बाई ने मीराली को खाल में लपेटकर बंडल-सा बनाया, उसे अच्छी तरह कस दिया और एक चट्टान के पीछे आकर छिप गया।

कुछ देर बाद दो बड़े-बड़े पक्षी वहां आये। उन्होंने उस खाल को अपनी चोंचों से पकड़ लिया जिससे ताज़ा मांस की गन्ध आ रही थी और उसे एक अलंघ्य पहाड़ की चोटी पर उड़ा ले गये।

चोटी पर पहुंचकर पक्षी उस खाल को चोंचों और पंजों से नोचने और उसे इधर-उधर खींचने लगे। खाल फट गई और उसमें से मीराली लुढ़क कर बाहर आ गया। पक्षियों ने उसे देखा तो डरकर उड़ गये और खाल को भी अपने साथ उड़ा ले गये।

मीराली उठकर खड़ा हुआ और अपने इर्दगिर्द देखने लगा।

बाई ने उसे नीचे से देखा तो चिल्लाया –

"वहां बुत बने क्यों खड़े हो? तुम्हारे पैरों के आसपास जो रंगीन पत्थर पड़े हैं, उन्हें मेरे पास नीचे फेंक दो!"

मीराली ने नीचे की तरफ़ नज़र डाली। वहां उसे सचमुच ही बहुत-से हीरे इधर-उधर बिखरे पड़े दिखाई दिये। उनमें लाल, नीलम, पन्ने और फ़ीरोज़े थे ... हीरे बड़े-बड़े और ख़ूबसूरत थे और धूप में ख़ूब चमक रहे थे।

मीराली हीरे उठा-उठा कर नीचे खड़े बाई के पास फेंकने लगा। बाई उन्हें जल्दी-जल्दी उठाकर अपने बड़े-बड़े बोरे भरता गया।

मीराली बहुत देर तक काम करता रहा। अचानक उसके दिमाग़ में एक ख़्याल आया तो उसका ख़ून सूख गया।

"मालिक, मैं यहां से नीचे कैसे उतरूंगा?" उसने पुकार कर बाई से पूछा।

"कुछ और हीरे नीचे फेंक दो," बाई ने जवाब दिया, "मैं बाद में तुम्हें नीचे उतरने का तरीक़ा बताऊंगा।"

मीराली ने उसपर विश्वास किया और हीरे नीचे फेंकता रहा।

जब बोरे ऊपर तक भर गये तो बाई ने उन्हें ऊंटों पर लाद दिया।

"ए बेटे," उसने हंसते हुए मीराली को पुकार कर कहा। "अब तो तुम समझ गये न कि मैं अपने नौकरों से क्या काम लेता हूं। देखो तो वहां पहाड़ पर तुम्हारे जैसे कितने और हैं!"

इतना कहकर बाई अपने ऊंटों को हांक ले गया।

मीराली पहाड़ पर खड़ा रह गया। वह नीचे उतरने के रास्ते की तलाश करने लगा। मगर वहां तो सिर्फ़ खड्ड-खाइयां थीं और हर जगह इन्सानी हड्डियां बिखरी पड़ी थीं। ये उन लोगों की हड्डियां थीं जो मीराली की तरह ही बाई के नौकर रहे थे।

मीराली कांप उठा।

अचानक उसे अपने ऊपर पंखों की ज़ोरदार फड़फड़ाहट सुनाई दी और इस के पहले कि वह मुड़ भी सके, एक बड़ा-सा उक़ाब उस पर झपटा। वह मीराली के टुकड़े-टुकड़े करने ही वाला था, मगर मीराली ने अपने होश-हवास क़ायम रखे और अपने दोनों हाथों से उक़ाब के पंजे पकड़ लिए और उन्हें कसकर पकड़े रहा। उक़ाब ज़ोर से चीखा, उड़ा और मीराली को नीचे झटक देने के लिए चक्कर काटने लगा। आख़िर वह थककर ज़मीन पर जा गिरा और जब मीराली ने उसे छोड़ा तो वह उड़ गया।

इस तरह मीराली मौत के भयानक मुंह से सही-सलामत निकल आया।

वह बाज़ार में जाकर फिर से काम की तलाश करने लगा। अचानक उसने उसी बाई को, अपने पुराने मालिक को अपनी तरफ़ आते देखा।

"बाई, क्या आपको नौकर की ज़रूरत है?" मीराली ने पूछा।

बाई के दिमाग़ में तो भूलकर भी यह बात नहीं आ सकती थी कि उसका कोई नौकर ज़िन्दा भी लौटकर आ सकता है। ऐसा तो पहले कभी हुआ ही नहीं था। इसलिए उसने मीराली को कोई दूसरा ही समझा और उसे अपने साथ घर ले गया।

कुछ समय बाद बाई ने मीराली को एक बैल ज़िबह कर उसकी खाल उतारने और उसके बाद दो ऊंट तैयार करने और चार बोरे लाने का हुक्म दिया।

वे उसी पहाड़ के दामन की तरफ़ रवाना हो गये। वहां पहुंचकर बाई ने पहले की ही भांति मीराली को खाल पर लेटने और उसे अपने गिर्द लपेट लेने के लिए कहा।

"मुझे करके दिखाइये, मैं ठीक से समझा नहीं," मीराली ने कहा।

"इसमें समझने की बात ही क्या है? देखो, ऐसे करना चाहिए," बाई ने जवाब दिया और फैलाई हुई खाल पर लेट गया।

तब मीराली ने तुरंत बाई को लपेटकर खाल का बंडल बना दिया, उसे कसकर बांधा और एक ओर को छिपकर खड़ा हो गया।

"अरे मेरे बेटे," बाई चिल्लाया, "यह तुमने मेरे साथ क्या किया है?"

मगर इसी समय वही दो बड़े-बड़े पक्षी उड़ते हुए आये और बैल की खाल को उड़ाकर पहाड़ की चोटी पर ले गये। वहां पहुंच कर वे खाल को चोंचों और पंजों से फाड़ने लगे, मगर बीच में बाई को लिपटा देखकर डर गये और उड़ गये। बाई लड़खड़ाता हुआ उठकर खड़ा हो गया।

"बाई, वक़्त बरबाद मत करो। हीरे नीचे फेंको जैसे मैंने किया था," मीराली ने नीचे से पुकारकर कहा।

अब बाई उसे पहचान गया और डर और ग़ुस्से से थरथर कांपने लगा।

"तुम पहाड़ से नीचे कैसे उतरे?" बाई ने मीराली से पूछा। "जल्दी से मुझे जवाब दो!"

"कुछ हीरे नीचे फेंक दो। जब मेरे पास काफ़ी हो जायेंगे तो मैं तुम्हें बता दूंगा कि पहाड़ से नीचे कैसे उतरा जा सकता है," मीराली ने जवाब दिया।

बाई हीरे नीचे फेंकने लगा और मीरासी उन्हें जल्दी-जल्दी उठाने लगा। जब हीरे भर गये तो मीरासी ने उन्हें ऊंटों पर लाद दिया।

"बाई, अब जरा अपने इर्दगिर्द नजर डालो," मीरासी ने पुकारकर कहा। "जिन आदमियों को तुमने मौत के मुंह में धकेला था, उनकी हड्डियां सभी जगह बिखरी पड़ी हैं। तुम उनसे नीचे उतरने का रास्ता क्यों नहीं पूछते? जहां तक मेरा सवाल है, मैं तो अपने घर चला।"

इतना कहकर मीरासी ने ऊंटों का मुंह मोड़ा और अपनी मां के घर की ओर चल दिया।

बाई पहाड़ की चोटी पर इधर-उधर दौड़ता हुआ धमकियां देता और चीखता-चिल्लाता रहा, मगर बेसूद। वहां उसकी सुनने वाला ही कौन था?!

लालची क़ाज़ी

ताजिक लोक-कथा

आप यक़ीन करें या न करें, किसी ज़माने में एक ग़रीब आदमी था जो ख़ून-पसीना एक करके काम करता था, मगर फिर भी जैसे का तैसा ग़रीब ही रहता था। चुनांचे उसने अपना शहर छोड़ किसी दूर-दराज़ के शहर में जाकर रोज़ी कमाने का फ़ैसला किया। उसने अपने परिवार से विदा ली और चल दिया।

वह बहुत दिनों चला या थोड़े दिन, यह कोई नहीं जानता, पर आख़िर वह उस शहर में पहुंच गया जहां उसे पहुंचना था। वहां पहुंचते ही वह काम की तलाश में घर-घर, द्वार-द्वार चक्कर काटने लगा। वह कभी किसी काम से इंकार न करता और हर काम को बहुत अच्छी तरह और बहुत ध्यान से करता।

अपनी कमाई में से वह सिर्फ़ उतना ही ख़र्च करता जितना पेट भरने के लिए ज़रूरी होता और बाक़ी एक छोटी-सी थैली में यह सोचते हुए रख देता –

"मैं थोड़ी-सी मेहनत और करूंगा, थोड़ा पैसा और बचाऊंगा और फिर अपने बीवी-बच्चों के पास लौट जाऊंगा।"

इस तरह वह कई वर्षों तक लगातार कड़ी मेहनत करता रहा और उसने एक हज़ार तंगा बचा लिये। एक ग़रीब आदमी के लिए तो यह रक़म बहुत बड़ी थी, इसलिए वह इसके बारे में चिन्ता करने और यह सोचने लगा –

"अगर किसी कारण मेरी यह रक़म खो गई तो? इसे अपने साथ-साथ लिये फिरना तो बेवक़ूफ़ी होगी, क्योंकि मुझ से यह गुम हो सकती है। अगर किसी चोर को पता चल गया तो वह मुझे मारकर मेरी जमा-पूंजी लूट लेगा। घर में इसे छिपाना भी ठीक नहीं होगा, क्योंकि वहां से भी यह ग़ायब हो सकती है। हो सकता है कि कोई इसे छिपाते हुए मुझे देख ले। बहुत से बदमाश और बुरे लोग हैं इस दुनिया में। तब मैं अपने पैसों से हाथ धो बैठूंगा और मुझे खाली हाथ ही घर लौटना पड़ेगा ..."

उसके दिमाग़ में इसी तरह के ख़याल आते रहते और उसकी समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे। आख़िर उसने तय किया कि वह अपने एक हज़ार तंगा क़ाज़ी के पास रख देगा।

"लोग कहते हैं कि वह ईमानदार और नेक-पाक आदमी है," उसने मन ही मन सोचा। "मेरी रक़म उसके पास सुरक्षित रहेगी। जब मैं अपने घर लौटने की सोचूंगा तो उससे यह रक़म ले लूंगा।"

ग़रीब आदमी ने इस तरह अपने मन में तर्क-वितर्क किया और ऐसा ही सोचकर वह क़ाज़ी के पास गया। क़ाज़ी ने उससे पूछा कि तुम किसलिये आये हो। ग़रीब आदमी ने जवाब दिया –

"ऐ मुहतरम क़ाज़ी, मैं अपनी रक़म आपके पास अमानत के तौर पर रखना चाहता हूं। इससे बेहतर जगह मुझे कोई नहीं सूझती। जब तक मैं इस शहर में रहता और काम करता हूं, तब तक मेहरबानी कर यह रक़म अपने पास रख लें।"

क़ाज़ी ने थैली ले ली और बहुत गम्भीर होकर कहा –

"मैं ख़ुशी से ऐसा करने को तैयार हूं। अपनी रक़म महफ़ूज़ रखने के लिए तुम्हें इससे बेहतर जगह नहीं मिल सकती थी।"

ग़रीब आदमी चला गया और क़ाज़ी ने रक़म गिनकर एक बड़ी-सी तिजोरी में रख दी।

कुछ समय बाद ग़रीब आदमी ने अपने घर जाने की सोची। वह क़ाज़ी के पास गया और बोला –

"मुहतरम क़ाज़ी, मुझे मेरी रक़म लौटा दीजिये, क्योंकि कल मैं इस शहर से जा रहा हूं।"

क़ाज़ी ने उसे ग़ौर से देखकर पूछा –

"तुम किस रक़म की बात कर रहे हो?"

"मुहतरम क़ाज़ी, वही एक हज़ार तंगा जो मैंने आपके पास अमानत रखे थे।"

"तुम्हारा दिमाग़ चल निकला है!" क़ाज़ी चिल्लाया। "कब तुमने मुझे दी थी रक़म? वाह, यह भी ख़ूब रही! एक हज़ार तंगा! तुम्हारी सात पीढ़ियों में किसी ने एक सौ तंगा भी नहीं देखा होगा! तुम्हारे पास कहां से आयेगा एक हज़ार तंगा!"

ग़रीब आदमी ने क़ाज़ी को याद दिलाने की कोशिश की कि कब वह उसके पास रक़म लेकर आया था और उनके बीच क्या बातचीत हुई थी। मगर क़ाज़ी ने उसकी एक न सुनी। उसने ग़ुस्से से पैर पटके और अपने नौकरों को आवाज़ दी।

"यह कोई उठाईगीरा है," वह चिल्लाया। "इसे मार-पीटकर मेरे घर से निकाल दो!"

क़ाज़ी के नौकर ग़रीब आदमी पर पिल पड़े, उन्होंने बहुत निर्दयता से उसकी पिटाई की और उसे घर से बाहर निकाल दिया।

ग़रीब आदमी हाथ मलता और आंसू बहाता हुआ बाहर सड़क पर चल दिया।

"मेरी सारी मेहनत गई! मेरी सारी जमा-पूंजी लुट गई!" वह दुखी होता हुआ दोहराता रहा। "लालची क़ाज़ी ने मुझे लूट लिया!"

उसी समय एक औरत पास से गुज़री। इस ग़रीब आदमी को रोते और आहें भरते देखकर उसने उसे डांटते हुए कहा –

"क्या बात है, भाई? तुम अच्छे ख़ासे मर्द हो, दाढ़ी रखे हुए और पगड़ी पहने हो। तुम बच्चों की तरह क्यों रो रहे हो?"

ग़रीब आदमी ने दुखी स्वर में कहा –

"अरी मेरी बहन, काश तुम्हें मालूम होता कि मेरे साथ कैसे धोखा हुआ है! मैं कई बरसों से अपनी ताक़त से ज़्यादा काम कर रहा हूं। न कभी भर पेट खाया और न कभी पूरी नींद ली। बहुत ही मुश्किल से मैंने एक हज़ार तंगा बचाये थे। अब मैं वह सारी की सारी रक़म खो चुका हूं। अगर तुम्हें यह मालूम हो जाये कि ऐसा किस तरह हुआ, तो तुम मुझे इस तरह नहीं डांटोगी।"

"अच्छा बताओ, तुम्हारे साथ क्या हुआ है?" उस औरत ने कहा।

ग़रीब आदमी ने बताया कि उसे कैसे धोखा दिया गया है।

"और लोग कहते हैं कि क़ाज़ी नेक-पाक आदमी है!" उसने झल्लाते हुए यह भी जोड़ दिया।

उस औरत ने बहुत हमदर्दी से उसकी बात सुनी और बोली –

"इस तरह दुखी नहीं होओ। अभी बात हाथ से नहीं निकली है। तुम मेरे साथ चलो, मैं कोई तदबीर सोच लूंगी।"

वे उस औरत के घर गये। उसने घर में रखा हुआ एक बड़ा-सा डिब्बा हाथों में लिया और फिर अपने छोटे-से बेटे से बोली –

"मैं इस आदमी के साथ क़ाज़ी के पास जा रही हूं। थोड़ी दूरी पर तुम हमारे पीछे-पीछे आना और यह कोशिश करना कि तुम पर किसी की नज़र न पड़े। जब हम क़ाज़ी के घर पहुंच जायें तो तुम तब तक छिपकर इन्तज़ार करना जब तक क़ाज़ी इस आदमी की रक़म न सौंप दे। जब क़ाज़ी इस डिब्बे को लेने के लिए हाथ फैलाये तो तुम भागकर आना और कहना –

"पिताजी अपने ऊंटों और माल के साथ वापस आ गये हैं!"

"ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा," लड़के ने कहा।

औरत ने डिब्बा अपने सिर पर रखा और ग़रीब आदमी को साथ ले क़ाज़ी के घर की ओर चल दी। इस औरत का बेटा कुछ फ़ासले पर उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

वे क़ाज़ी के घर पहुंचे। उस औरत ने ग़रीब आदमी से कहा –

"मैं पहले जाऊंगी और तुम मेरे बाद अन्दर आना।"

वह घर में दाखिल हुई। क़ाज़ी ने उसकी ओर तथा उसके सिर पर रखे हुए बड़े-से बक्से को देखा और बोला –

"बहन, किस काम से यहां आई हो?"

औरत ने जवाब दिया –

"ऐ मुहतरम क़ाज़ी, शायद आप ने मेरा नाम सुना हो। मैं अमीर सौदागर रहीम की बीवी हूं। मेरा शौहर अपना कारवां लेकर दूर-दराज़ के देशों में गया है। जाने वह कब लौटे? मैं पिछली कई रातों से चैन की नींद नहीं सो पाई हूं। चोर हमारे घर के इर्दगिर्द चक्कर काटा करते हैं और यक़ीनन वे हमें लूट लेना चाहते हैं। इस डिब्बे में हमारा सारा रुपया, सोना और हीरे-जवाहरात हैं। यह बहुत भारी है और मैं इसे बड़ी मुश्किल से उठाकर यहां लाई हूं। मैं चाहती हूं कि आप इसे अपने पास हिफ़ाज़त से रख लें। जब मेरा शौहर लौट आयेगा तो वह खुद इसे लेने आ जायेगा।"

क़ाज़ी ने डिब्बे को उठाकर देखा। जब उसने उसे बहुत भारी पाया तो लालच से उसके हाथ कांपने लगे।

"इस डिब्बे में कम से कम चालीस या पचास हज़ार तंगा हैं," उसने सोचा, "इसके अलावा बहुत-से हीरे भी हैं। मैंने सुना है कि यह रहीम बहुत अमीर आदमी है ..." तब उसने उस औरत से कहा –

"अच्छी बात है, बहन, मैं तुम्हारी दौलत अपने पास अमानत रखूंगा। तुम यक़ीन मानो कि यहां वह बिल्कुल महफ़ूज़ रहेगी। तुम्हें अपना एक-एक तंगा ज्यों का त्यों मिल जायेगा।"

मगर औरत ने क़ाज़ी के हाथ से डिब्बा लेते हुए कहा –

"यह मुझे सचमुच ही वापस मिल जायेगा न?"

"इसमें तो शक की ज़रा भी गुंजाइश नहीं है!" क़ाज़ी ने कहा। "सारे शहर में मेरे ईमानदार और नेक-पाक होने की धाक है।"

इसी समय वह ग़रीब आदमी अन्दर आया। क़ाज़ी उसे देखकर बेहद खुश हुआ।

"अल्लाह ने जैसे खुद ही इसे यहां भेज दिया है," उसने अपने मन में कहा। "इस औरत के सामने अपनी ईमानदारी का सबूत पेश करने का यह सबसे बढ़िया मौक़ा हाथ लगा है। मैं इस भिखमंगे को उसका एक हज़ार तंगा लौटा दूंगा और इस औरत से रुपयों और हीरों से भरा डिब्बा ले लूंगा। इसके लिए एक हज़ार तंगा खुशी से क़ुर्बान किया जा सकता है, हा-हा!"

तब क़ाज़ी उस औरत से बोला –

"मेरी बहन, मैं फिर दोहराता हूं कि क़ाज़ी के घर से बढ़कर महफ़ूज़ और भरोसे की कोई दूसरी जगह नहीं है। तुम्हारे घर के मुक़ाबले में यह डिब्बा मेरे पास कहीं ज्यादा महफ़ूज़ रहेगा। जब तुम्हारा शौहर लौट आये या जब तुम खुद चाहो, आकर अपने इस डिब्बे को वापस ले सकती हो।"

क़ाज़ी के नौकरों और उसके दीवानखाने में हाज़िर सभी लोगों ने ऐसे सिर हिलाया मानो कह रहे हों कि क़ाज़ी बिल्कुल सच कह रहा है और उसके हर शब्द पर भरोसा किया जा सकता है।

क़ाज़ी ने ऐसा ढोंग किया कि जैसे ग़रीब आदमी पर उसकी नज़र अभी-अभी ही पड़ी है, वह बड़े उत्साह से बोला –

"अरे, यह देखो, यह रहा वह आदमी जिसने अपनी सारी जमा-पूंजी यानी एक हज़ार तंगा मेरे पास रख दिया था। इसने आज सुबह ही मेरे पास आकर अपनी रक़म

वापस मांगी थी। मगर मैं इसे पहचान न पाया। मैंने इसे चोर समझा और रक़म लौटाने से इन्कार कर दिया। अगर कोई इसे अच्छी तरह जानने-पहचाननेवाला आदमी इसकी शिनाख़्त कर दे तो मैं फ़ौरन इसे इसकी रक़म लौटा दूं।"

औरत बोली –

"ऐ मुहतरम क़ाज़ी, हम तो लगभग दो साल से इस ग़रीब आदमी को जानते हैं। यह बहुत दूर से इस शहर में आया था और तभी से बड़ी सख़्त मेहनत कर रहा है। कुछ वक़्त तक उसने हमारे घर में भी काम किया है। यक़ीन मानिये कि उसने बहुत ही मेहनत से पैसा कमाया है। इसीलिए तो उसके हाथों में घट्टे पड़ गये हैं।"

क़ाज़ी ने होंठों पर बहुत ही मधुर मुस्कान लाते हुए कहा –

"तो तुम इस आदमी को जानती हो! तब तो देर करने में कोई तुक ही नहीं। मेरे भाई, मेरे पास आकर अपने एक हज़ार तंगा ले लो। लो, जल्दी करो!"

क़ाज़ी ने अपनी तिजोरी खोली, उसमें से कुछ रक़म निकाली और एक हज़ार तंगा गिनकर बड़े दिखावे के साथ ग़रीब आदमी को पेश कर दिये।

"हां, तो बहन, अब तो तुम्हें यक़ीन हो गया होगा कि लोगों की दौलत मेरे पास कैसे महफ़ूज़ रहती है और कैसे मैं उसे उनके मालिकों को लौटा देता हूं," क़ाज़ी ने जल्दी से कहा। "अब तुम डिब्बा मेरे पास छोड़कर चैन से घर जा सकती हो!"

और उसने डिब्बे के लिए अपने हाथ फैला दिये।

इसी वक़्त इस औरत का बेटा गली में से दौड़ता हुआ आया।

"मां!" उसने पुकारकर कहा। "जल्दी से घर चलो! पिताजी अपने ऊंट और माल लेकर घर आ गये हैं और तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं!"

"यह बात है! अब जब मेरा शौहर लौट आया है तो मुझे चोरों का बिल्कुल डर नहीं," इस औरत ने हंसकर कहा। "यह नेक-पाक क़ाज़ी के बिना ही अपनी दौलत की देखभाल कर लेगा।"

इतना कहकर इस औरत ने अपना डिब्बा वापस लिया, उसे सिर पर रखा और ग़रीब आदमी के साथ क़ाज़ी के घर से बाहर आ गई।

"मेरे भाई, इन्सान को मायूस कभी नहीं होना चाहिए," उसने कहा। "याद रखो कि दुनिया में ऐसा कोई मक्कार और चालाक आदमी नहीं है जिसकी मक्कारी और चालाकी हमेशा कारगर हो सके। अपने घर आकर चैन की बंसी बजाओ। बहुत भटक लिये अजनबी इलाक़ों में। अपनी ख़ून-पसीने की कमाई को ख़र्च करो और मौज मारो।"

उन्होंने एक दूसरे से विदा ली और अपनी-अपनी राह चल दिये।

अब क़ाज़ी का हाल सुनिये। अकेला रह जाने पर वह ग़ुस्से से आग-बबूला हो उठा। वह अपनी दाढ़ी के बाल नोचने और पांव पटकने लगा। ग़ुस्से और निराशा के मारे उसका बहुत बुरा हाल था।

"उफ़, क़िस्मत फूट गई! हाय, बेड़ा ग़र्क़ हो गया!" वह ग़ुस्से में बार-बार यही दोहराता रहा। "बुरा हो कम्बख़्त रहीम सौदागर का! उसे भी इसी वक़्त आना था! एक घंटा, सिर्फ़ एक घंटा देर से आ जाता तो क्या उसे गोली लग जाती! तब सारा क़िस्सा ख़त्म हो गया होता! दौलत से भरा हुआ डिब्बा मेरा हो चुका होता! मेरी दौलत कई गुना बढ़ गई होती! मेरी तिजोरी ऊपर तक भर गई होती! हाय, मैं क्या करूं, मेरी क़िस्मत दग़ा दे गई! हाय, मेरी फूटी क़िस्मत!"

तीन अक़्लमन्द भाई

उज़्बेक लोक-कथा

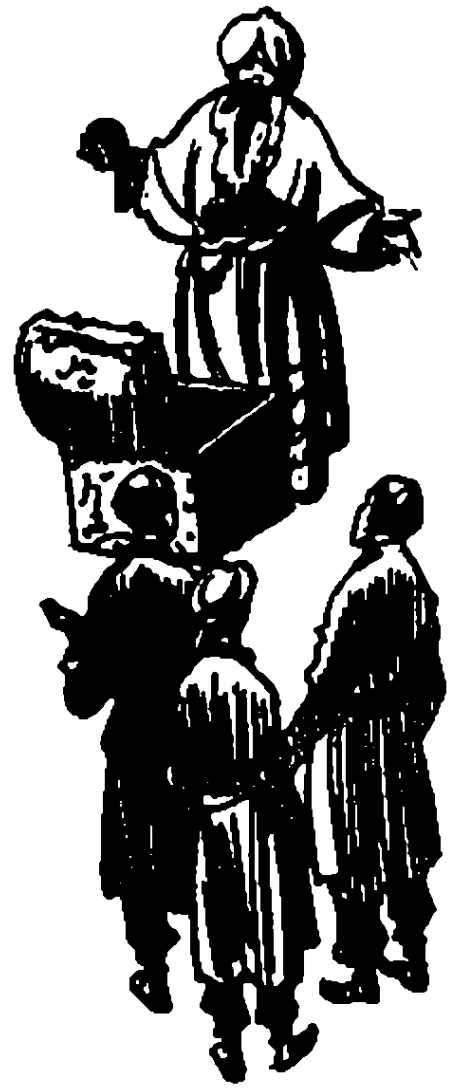

एक बार का ज़िक्र है कि कहीं एक ग़रीब आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। वह अक्सर अपने बेटों से कहता –

"मेरे बेटो! हमारे पास न तो रेवड़ हैं और न ही सोना, कुछ भी तो नहीं है। इसलिए तुम्हें एक दूसरी ही क़िस्म का ख़ज़ाना जमा करना चाहिए – अधिक समझने और जानने की कोशिश करो। कोई भी चीज़ तुम्हारी नज़र से न बच पाये। बड़े-बड़े रेवड़ों की जगह तुम्हारे पास पैनी नज़र होगी और सोने की जगह तेज़ दिमाग़ होगा। ऐसी दौलत जमा कर लेने पर तुम्हें कभी किसी चीज़ की कमी न रहेगी और तुम दूसरों के मुक़ाबले में उन्नीस नहीं रहोगे।"

वक़्त गुज़रा और इसके कुछ बाद बूढ़ा चल बसा। भाई मिल बैठे, उन्होंने सारी स्थिति पर विचार किया और फिर बोले –

"हमारे लिए यहां कुछ भी तो करने को नहीं। आओ, घूम-फिर कर दुनिया को देखें। ज़रूरत होने पर हम चरवाहों या खेत-मज़दूरों का काम कर लेंगे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।"

चुनांचे वे तैयार होकर सफ़र पर चल दिये।

उन्होंने सुनसान-वीरान घाटियां लांघीं और ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों को पार किया। इस तरह वे लगातार चालीस दिनों तक चलते रहे।

उनके पास जितनी खुराक थी, अब तक खत्म हो गई थी। वे थककर चूर हो गये थे और उनके पैरों में छाले पड़ गये थे, मगर सड़क थी कि खत्म होने को ही नहीं आ रही थी। वे आराम करने के लिए रुके और फिर आगे चल दिये।

आखिर उन्हें अपने सामने वृक्ष, बुर्ज और मकान नजर आये – वे एक बड़े शहर के नजदीक पहुंच गये थे।

तीनों भाई बहुत खुश हुए और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगे।

"जो कुछ बुरा था वह पीछे रह गया और आगे तो अच्छा ही अच्छा है," उन्होंने कहा।

जब वे शहर के बिल्कुल निकट पहुंच गये तो सबसे बड़ा भाई अचानक रुका, उसने जमीन पर नजर डाली और बोला –

"थोड़ी ही देर पहले यहां से एक बहुत बड़ा ऊंट गुजरा है।"

वे थोड़ा और आगे गये तो मंझला भाई रुका और सड़क के दोनों ओर नजर डालकर बोला –

"ऊंट काना था।"

वे कुछ और आगे गये तो सबसे छोटे भाई ने कहा –

"ऊंट पर एक औरत और एक बच्चा सवार थे।"

"बिल्कुल सही है," दोनों बड़े भाइयों ने कहा और वे तीनों फिर आगे बढ़ चले।

थोड़ी देर बाद एक घुड़सवार उनके पास से गुजरा। सबसे बड़े भाई ने उसकी ओर देखकर पूछा –

"घुड़सवार, तुम किसी खोई हुई चीज की तलाश कर रहे हो न?"

घुड़सवार ने घोड़ा रोककर जवाब दिया –

"हां।"

"तुम्हारा ऊंट खो गया है न?" सबसे बड़े भाई ने पूछा।

"हां।"

"बहुत बड़ा-सा?"

"हां।"

"वह काना है न?" मंझले भाई ने पूछा।

"हां।"

"एक छोटे-से बच्चे के साथ उस पर एक औरत सवार थी न?" सबसे छोटे भाई ने सवाल किया।

घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शक की नजर से देखा और बोला –

"आह, तो तुम्हारे पास है मेरा ऊंट! जल्दी बताओ, तुम ने उसका क्या किया?"

"हमने तुम्हारे ऊंट की शक्ल तक नहीं देखी," भाइयों ने जवाब दिया।

"तो तुम्हें उसके बारे में ये सभी बातें कैसे मालूम हुईं?"

"क्योंकि हम अपनी आंखों से और दिमाग से काम लेना जानते हैं," भाइयों ने जवाब दिया। "जल्दी से उस दिशा में अपना घोड़ा दौड़ाओ। वहां तुम्हें तुम्हारा ऊंट मिल जायेगा।"

"नहीं," ऊंट के मालिक ने जवाब दिया, "मैं उस दिशा में नहीं जाऊंगा। मेरा ऊंट तुम्हारे पास है और तुम्हें ही उसे मुझे लौटाना पड़ेगा।"

"हम ने तो तुम्हारे ऊंट को देखा तक नहीं," भाइयों ने परेशान होते हुए कहा।

मगर घुड़सवार उनकी एक भी सुनने को तैयार नहीं था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और उसे जोर से घुमाते हुए तीनों भाइयों को अपने आगे-आगे चलने का हुक्म दिया। इस तरह वह उन्हें सीधे अपने देश के बादशाह के महल में ले गया। इन तीनों भाइयों को सन्तरियों के सुपुर्द कर वह खुद बादशाह के पास गया।

"मैं अपने रेवड़ों को पहाड़ों पर लिये जा रहा था," उसने कहा, "और मेरी बीवी मेरे छोटे-से बेटे के साथ एक बड़े-से काने ऊंट पर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। किसी तरह उनका ऊंट पीछे रह गया और वे रास्ते से भटक गये। मैं उन्हें खोजने गया तो मुझे रास्ते में तीन आदमी मिले जो पैदल चले जा रहे थे। मुझे पूरा यकीन है कि इन्हींने मेरा ऊंट चुराया है और मेरी बीवी तथा बेटे को मार डाला है।"

"तुम ऐसा क्यों समझते हो?" जब वह आदमी अपनी बात कह चुका तो बादशाह ने पूछा।

"इसलिए कि मैंने इन लोगों से इस सम्बन्ध में एक भी शब्द नहीं कहा था, फिर भी उन्होंने मुझे यह बताया कि ऊंट बहुत बड़ा और काना है तथा उस पर एक औरत बच्चे के साथ सवार है।"

बादशाह ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और फिर बोला –

"जैसा कि तुम कहते हो तुम्हारे बताये बिना ही तुम्हारे ऊंट के बारे में उन्होंने सभी कुछ ऐसे अच्छे ढंग से बयान किया है, तो जरूर उन्होंने उसे चुराया होगा। जाओ, उन चोरों को यहां लाओ।"

ऊंट का मालिक बाहर गया और तीनों भाइयों को साथ लिये हुए झटपट अन्दर आया।

"चोरो, फ़ौरन बताओ!" पादशाह उन्हें धमकाते हुए चिल्लाया। "फ़ौरन जवाब दो, तुमने इस आदमी का ऊंट कहां ग़ायब किया है?"

"हम चोर नहीं हैं और हमने इसका ऊंट कभी नहीं देखा," भाइयों ने जवाब दिया।

तब पादशाह बोला –

"मालिक के कुछ भी बताये बिना तुमने ऊंट को बिल्कुल सही तौर पर बयान किया है। अब तुम यह कहने की कैसे जुर्रत करते हो कि तुमने उसे नहीं चुराया!"

"पादशाह, इसमें तो अचम्भे की कोई बात नहीं है।" भाइयों ने जवाब दिया। "बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम किसी चीज़ को अपनी नज़र से नहीं चूकने देते। हमने चीज़ों को पैनी नज़र से देखने और दिमाग़ से सोचने के काम में बहुत वक़्त लगाया है। इसीलिए ऊंट को देखे बिना ही हमने यह बता दिया कि वह कैसा है।"

पादशाह हंस दिया।

"किसी चीज़ को देखे बिना ही उसके बारे में क्या इतना कुछ जानना मुमकिन हो सकता है?" उसने पूछा।

"हां, मुमकिन है," भाइयों ने जवाब दिया।

"तो ठीक है, हम अभी तुम्हारी सचाई की जांच-पड़ताल करेंगे।"

पादशाह ने इसी समय अपने वज़ीर को बुलाया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया।

वज़ीर फ़ौरन महल से बाहर चला गया। मगर बहुत जल्दी ही वह दो नौकरों के साथ लौटा। नौकर एक टिकठी पर बहुत बड़ी-सी पेटी रखकर लाये थे। नौकरों ने पेटी को बहुत सावधानी से दरवाज़े के पास ऐसे रख दिया कि वह पादशाह को दिखाई दे सके और खुद एक तरफ़ को हट गये। तीनों भाई दूर से खड़े उन्हें देखते रहे। उन्होंने इस बात को बहुत ग़ौर से देखा कि पेटी कहां से और कैसे लाई गई थी, किस ढंग से फ़र्श पर रखी गयी थी।

"हां, तो चोरो, हमें बताओ कि उस पेटी में क्या है?" पादशाह ने कहा।

"पादशाह सलामत, हम तो पहले ही यह अर्ज़ कर चुके हैं कि हम चोर नहीं हैं," सबसे बड़े भाई ने कहा। "पर यदि आप चाहते हैं तो मैं आप को यह बता सकता हूं कि उस पेटी में क्या है। उसमें कोई छोटी-सी गोल चीज़ है।"

"उसमें अनार है," मंझला भाई बोला।

"हां, और वह अभी कच्चा है," सबसे छोटे भाई ने जोड़ा।

यह सुनकर पादशाह ने पेटी को नज़दीक लाने का हुक्म दिया। नौकरों ने फ़ौरन हुक्म पूरा किया। पादशाह ने नौकरों से पेटी खोलने के लिए कहा। पेटी खुल जाने पर उसने उसमें झांका। जब उसे उसमें कच्चा अनार दिखाई दिया तो उसकी हैरानी की कोई हद न रही!

आश्चर्यचकित पादशाह ने अनार निकालकर वहां हाज़िर सभी लोगों को दिखाया। तब उसने ऊंट के मालिक से कहा –

"इन लोगों ने यह साबित कर दिया है कि ये चोर नहीं हैं। वास्तव में ये बहुत ही समझदार लोग हैं। तुम कहीं और जाकर अपने ऊंट की तलाश करो।"

पादशाह के महल में उस समय हाज़िर सभी लोगों की हैरानी का कोई ठिकाना न था, मगर सबसे बढ़कर तो खुद पादशाह हैरान था। उसने सभी तरह के बढ़िया और लज़ीज़ खाने मंगवाये और लगा इन भाइयों की खातिरदारी करने।

"तुम लोग बिल्कुल बेक़ुसूर हो और जहां भी जाना चाहो जा सकते हो। मगर जाने के पहले तुम मुझे सारी बात तफ़सील के साथ बताओ। तुम्हें यह कैसे पता चला कि उस आदमी का ऊंट गुम हुआ है और तुमने यह कैसे जाना कि ऊंट कैसा था।"

सबसे बड़े भाई ने कहा –

"धूल पर उसके पैरों के निशानों से मुझे मालूम हुआ कि कोई बहुत बड़ा ऊंट वहां से गुज़रा है। जब मैंने अपने पास से गुज़रनेवाले घुड़सवार को अपने चारों ओर नज़र दौड़ाते देखा तो उसी वक़्त मेरी समझ में यह बात आ गई कि वह क्या खोज रहा है।"

"बहुत खूब!" पादशाह ने कहा। "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम में से किसने इस घुड़सवार को यह बताया था कि उसका ऊंट काना है? कानापन तो सड़क पर निशान नहीं छोड़ता।"

"मैंने इस बात का अनुमान इसलिये लगाया कि सड़क के दायीं ओर की घास तो ऊंट ने चरी थी, मगर बायीं ओर की घास ज्यों की त्यों थी," मंझले भाई ने जवाब दिया।

"बहुत खूब!" पादशाह ने कहा। "तुम में से यह अनुमान किसने लगाया था कि उसपर बच्चे के साथ एक औरत सवार थी?"

"मैंने," सबसे छोटे भाई ने जवाब दिया। "मैंने देखा कि एक जगह पर ऊंट के घुटने टेककर बैठने के निशान बने हुए थे। उनके क़रीब ही मुझे रेत पर एक औरत

के जूतों के चिह्न दिखाई दिये। साथ ही छोटे-छोटे पैरों के निशान थे जिससे मुझे पता चला कि औरत के साथ एक बच्चा भी था।"

"बहुत खूब! तुम ने बिल्कुल सही कहा है," पादशाह बोला। "मगर तुम लोगों को यह कैसे पता चला कि पेटी में एक कच्चा अनार है? यह बात तो मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रही।"

सबसे बड़े भाई ने कहा –

"जिस तरह दोनों नौकर उसे उठाकर लाये थे, उससे बिल्कुल ज़ाहिर था कि यह ज़रा भी भारी नहीं है। जब वे पेटी को फ़र्श पर टिका रहे थे तो मुझे उसके अन्दर किसी छोटी-सी गोल चीज़ के लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी।"

मंझला भाई बोला –

"मैंने ऐसा अनुमान लगाया कि चूंकि पेटी बगीचे की तरफ़ से लाई गई है और उसमें कोई छोटी-सी गोल चीज़ है, तो यह ज़रूर अनार ही होगा। कारण कि आपके महल के आसपास अनारों के बहुत से पेड़ लगे हुए हैं।"

"बहुत खूब!" पादशाह ने कहा और फिर उसने सबसे छोटे भाई से पूछा –

"मगर तुम्हें यह कैसे पता चला कि अनार कच्चा है?"

"इस वक़्त तक बगीचे में सभी अनार कच्चे हैं। यह तो आप खुद ही देख सकते हैं," उसने जवाब दिया और खुली हुई खिड़की की ओर संकेत किया।

पादशाह ने बाहर देखा तो पाया कि बगीचे में लगे अनार के सभी वृक्षों पर कच्चे अनार लटक रहे थे।

पादशाह इन भाइयों की असाधारण पैनी नज़र और तेज़ दिमाग़ से हैरान रह गया।

"धन-दौलत या दुनियावी चीज़ों के मुआयने से तो तुम बेशक अमीर नहीं हो, मगर तुम्हारे पास अक़्ल का बहुत बड़ा ख़ज़ाना ज़रूर है," उसने तारीफ़ करते हुए कहा।

सबसे बड़ा कौन ?

किर्गीज़ लोक-कथा

बहुत ही पुराने ज़माने की बात है कि किसी गांव में तीन भाई रहते थे। उनका एक साझा चितकबरा बैल था।

एक दिन भाइयों ने हिस्सेदारी ख़त्म कर अलग-अलग रहने का फ़ैसला किया। मगर तीन भाइयों के बीच एक बैल कैसे बांटा जाता ? पहले तो उन्होंने यह सोचा कि उसे बेच दें, मगर पास-पड़ोस में कोई ऐसा अमीर आदमी नहीं मिला जो उसे ख़रीदता। तब उन्होंने उसे ज़िबह करने और उसका मांस आपस में बांटने की बात सोची। मगर वे ऐसा भी न कर पाये, उन्हें बैल पर तरस आया। किसी एक भाई को बैल दें, वे इसके लिए भी राज़ी न हो सके।

चुनांचे उन्होंने किसी अक़्लमन्द आदमी के पास जाने का फ़ैसला किया ताकि वह उनका यह मामला निपटा दे।

"अक़्लमन्द आदमी जैसा कहेगा, हम वैसा ही करेंगे," उन्होंने कहा। वे बैल को लेकर अक़्लमन्द आदमी के गांव की ओर चल दिये। सबसे बड़ा भाई बैल के सिर के साथ-साथ चल रहा था, मंझला बैल की बग़ल में और सबसे छोटा बैल के पीछे-पीछे चलता हुआ उसे छड़ी से हांकता आ रहा था।

पौ फटने के समय एक घुड़सवार सबसे छोटे भाई के बराबर पहुंचा, उससे सलाम-दुआ की और पूछा कि वह बैल को कहां लिये जा रहा है। सबसे छोटे भाई ने उसे सारा क़िस्सा सुनाया और यह कहा—

"हम बैल को एक अक़्लमन्द आदमी के पास लिये जा रहे हैं जो हमारा मामला निपटा देगा। हम उसकी राय के मुताबिक़ काम करेंगे।"

घुड़सवार को अलविदा कहते हुए उसने कहा –

"तुम जल्दी ही मेरे मंझले भाई से जा मिलोगे। वह बैल की बग़ल में चल रहा है। उसे सलाम पहुंचाना और कहना कि वह बैल को ज़रा तेज़ी से बढ़ाता जाये। हमें रात होने से पहले अक़्लमन्द आदमी के गांव में पहुंचना है।"

"अच्छी बात है," घुड़सवार ने कहा। उसने अपने घोड़े को चुस्की पर डाला और आगे निकल गया।

घुड़सवार दोपहर के वक़्त मंझले भाई के बराबर जा पहुंचा जो चितकबरे बैल की बग़ल में चल रहा था।

घुड़सवार ने उससे सलाम-दुआ की और बोला –

"तुम्हारे छोटे भाई ने तुम्हें सलाम भेजा है और कहा है कि तुम बैल को तेज़ी से हांकते जाओ ताकि रात होने से पहले ही मंज़िल पर पहुंच जाये।"

मंझले भाई ने घुड़सवार का शुक्रिया अदा किया और बोला –

"जब तुम्हारा घोड़ा बैल के सिर के क़रीब जा पहुंचे तो तुम मेरे बड़े भाई को मेरा सलाम देना और कहना कि वह बैल को जल्दी-जल्दी हांकता चले। हम जल्दी से जल्दी अक़्लमन्द आदमी के गांव में पहुंचना चाहते हैं।"

घुड़सवार घोड़ा दौड़ाता रहा और शाम होने पर ही वह बैल के सिर के पास पहुंचा। उसने सबसे बड़े भाई को छोटे भाइयों का सलाम दिया और बताया कि उन दोनों ने क्या प्रार्थना की है।

"मैं तो अब कुछ भी नहीं कर सकता," सबसे बड़े भाई ने कहा। "अंधेरा तो हो भी गया है। हमें बैल को हांकना बन्द करके यहीं कहीं रात बितानी होगी।"

और उसने अपनी चाल धीमी कर दी।

मगर घुड़सवार नहीं रुका और घोड़ा बढ़ाता चला गया।

भाइयों ने स्तेपी में रात बिताई। अगली सुबह वे फिर से अपने बैल को हांकते हुए आगे चल दिये। तब, अचानक एक बहुत ही भयानक बात हुई। एक अतिकाय उक़ाब आकाश से नीचे झपटा, उसने बैल को अपने पंजों में पकड़ा, उसे ऊपर उठाया और ऊंचे आकाश में उड़ा ले गया।

भाई कुछ देर तक रोते-सिसकते और दुखी होते रहे और फिर खाली हाथ घर लौट गये।

इसी बीच उक़ाब बैल को पंजों में दबाये उड़ता रहा। अचानक उसे नीचे चरागाह में बकरियों का एक रेवड़ दिखाई दिया। उनमें से एक बकरे के बड़े ही लम्बे सींग थे। उक़ाब नीचे की ओर झपटा, बकरे के सींगों पर बैठ गया और बैल को नोच-नोचकर खाने तथा उसकी हड्डियां इधर-उधर बिखराने लगा।

अचानक मूसलधार बारिश होने लगी और गड़रिये तथा उसकी सभी बकरियों ने इसी लम्बे सींगोंवाले बकरे की दाढ़ी के नीचे पनाह ले ली।

सहसा गड़रिये की बाईं आंख में बहुत जोर का दर्द होने लगा।

"मेरी आंख में जरूर कोई किरकिरी पड़ गई होगी," उसने सोचा।

शाम होने पर गड़रिया अपने रेवड़ को गांव की ओर हांक ले चला। उसकी आंख का दर्द बढ़ गया था और वह गिड़गिड़ाते हुए लोगों को पुकारने लगा –

"गांववालो, हकीमों को बुला लाओ! उनसे कहो कि वे चालीस नावों में बैठकर मेरी आंख में तैरें और किरकिरी निकालें। वह मुझे जरा भी चैन नहीं लेने देती!"

सो गांववाले गये और चालीस हकीमों को ढूंढ़ कर लाये तथा उनसे बोले –

"आप हमारे गड़रिये की आंख में तैरें। किरकिरी खोजकर उसका दर्द दूर करें। मगर ध्यान रखिये कि उसकी आंख को किसी तरह की हानि न पहुंचने पाये।"

चालीस हकीम चालीस नावों में बैठकर गड़रिये की आंख में तैरने लगे। उन्होंने किरकिरी खोज ली जो वास्तव में किरकिरी नहीं, बल्कि बैल के कंधे की हड्डी थी। वह उस समय गड़रिये की आंख में जा गिरी थी जब उसने बारिश से बचने के लिए बकरे की दाढ़ी के नीचे पनाह ली थी।

इसके बाद गड़रिये की आंख में दर्द बन्द हो गया, सभी हकीम अपने घर चले गये और बैल के कंधे की हड्डी गांव से बहुत दूर ले जाकर फेंक दी गई।

कुछ देर बाद उसी जगह के क़रीब से कुछ खानाबदोश गुजरे जहां बैल के कंधे की हड्डी पड़ी थी। रात होनेवाली थी। बुजुर्गों ने आपस में सलाह की और वहीं ठहरने तथा आग जलाने का फ़ैसला किया।

"रात बिताने के लिए यह सफ़ेद जमीन ही सबसे अच्छी और सुरक्षित जगह लगती है," उन्होंने कहा।

मगर जब सभी खानाबदोशों ने डेरे जमा लिए और सोने की तैयारी करने लगे तो अचानक जमीन हिलने और कांपने लगी। खानाबदोश डर गये। उन्होंने झटपट अपनी चीजें ठेलों पर लादीं, घोड़े जोते और फ़ौरन वहां से रवाना हो गये।

सुबह होने पर ही उन्हें डर से निजात मिली और उन्होंने अपने डेरे गाड़े। इसके

बाद बुजुर्गों ने मूचालवाली जगह पर चालीस घुड़सवार यह जानने के लिए भेजे कि वहां क्या क़िस्सा हुआ था।

चालीस घुड़सवार वहां पहुंचे। उन्होंने देखा कि जिस को वे रात के वक़्त सफ़ेद ज़मीन समझ बैठे थे, वह वास्तव में एक अतिकाय हड्डी – बैल के कंधे की हड्डी थी जिसे इस समय भी एक लोमड़ी कुतर रही थी।

"तो इसलिए ज़मीन हिल रही थी!" घुड़सवार चिल्लाये। उन्होंने निशाना साधा, तीर छोड़े और लोमड़ी को मार डाला।

इसके बाद वे चालीस घुड़सवार इस लोमड़ी की खाल उतारने लगे। मगर वे उसकी एक तरफ़ की खाल ही उतार पाये और दूसरी तरफ़ वैसे ही छोड़ देनी पड़ी। कारण कि अपना पूरा ज़ोर लगाने पर भी वे लोमड़ी को उलट नहीं पाये।

घुड़सवार अपने डेरे में लौटे और उन्होंने बुजुर्गों से सारी बात कही। बुजुर्ग सोचने लगे कि क्या किया जाये।

इसी समय एक जवान औरत इनके पास आई और बोली –

"आपके घुड़सवार जो लोमड़ी की खाल का टुकड़ा लाये हैं, कृपया वह मुझे दे दीजिये। मैं उससे अपने नवजात शिशु की टोपी बनाऊंगी।"

"अच्छी बात है," बुजुर्गों ने कहा, "ले लो।"

इस जवान औरत ने अपने बच्चे का सिर मापा और उसके सिर के लिए लोमड़ी की खाल में से टोपी काटने लगी। मगर उसने पाया कि लोमड़ी की खाल बच्चे की टोपी का सिर्फ़ आधा हिस्सा बनाने के लिए काफ़ी है। इसलिए वह फिर से बुजुर्गों के पास गई और उसने उनसे बाक़ी आधा हिस्सा देने के लिए कहा।

तब चालीस घुड़सवारों ने यह माना कि वे लोमड़ी को उलटकर उसकी दूसरी तरफ़ की खाल नहीं उतार पाये थे।

"अगर तुम लोमड़ी की आधी खाल से अपने बच्चे की टोपी नहीं बना सकतीं तो बेहतर यही है कि खुद जाकर लोमड़ी के दूसरे हिस्से की खाल उतार लो," वे बोले।

औरत अपने बच्चे को लेकर वहां गई जहां घुड़सवार लोमड़ी को छोड़ आये थे। उसने बड़ी आसानी से लोमड़ी को उलटा, उसकी दूसरी तरफ़ की खाल उतारी और खाल के दोनों हिस्सों से अपने बच्चे की टोपी बना दी।

अच्छा अब हम आप से यह पूछना चाहते हैं कि आपके ख्याल में कौन सबसे बड़ा था –

बैल? यह मत भूलियेगा कि घुड़सवार को उसकी पूंछ से उसके सिर तक सफ़र करने में पूरा दिन लग गया था।

या फिर उक़ाब?

यह याद रहे कि वह बैल को आकाश में उड़ा ले गया था।

या फिर बकरा?

यह मत भूलियेगा कि उक़ाब ने उसी के सींगों पर बैठकर बैल को खाया था।

या फिर गड़रिया?

याद रखिये कि चालीस हकीम चालीस नावों पर सवार हो उसकी आंख में तैरे थे।

या सोमड़ी?

मत भूलियेगा कि जब वह बैल के कंधे की हड्डी को कुतर रही थी तो ज़मीन कांपने लगी थी।

या बच्चा?

याद रखिये कि उसकी टोपी बनाने के लिए सोमड़ी की पूरी खाल की ज़रूरत पड़ी थी।

या फिर वह औरत सबसे बड़ी थी जिसका बच्चा इतना बड़ा था?

अब आप सोचें, खूब सोचें। हो सकता है कि आप हमें इसका जवाब दे सकें।

अल्दार-कोसे और शिगाई-बाई

कज़ाख लोक-कथा

पुराने ज़माने की बात है कि स्तेपी में अल्दार-कोसे नाम का एक ग़रीब आदमी रहता था। जमा-पूंजी के नाम पर उसके पास सिर्फ़ एक घोड़ा ही था। मगर वह बड़ा ही समझदार आदमी था। हंसी-मज़ाक़ों और तरकीबों-तदबीरों का तो वह ख़ज़ाना ही था।

इसी स्तेपी में एक अमीर आदमी भी रहता जिसका नाम था शिगाई-बाई। बड़ा ही कंजूस-मक्खीचूस था वह। सच तो यह है कि वह धनी तो था लेकिन कंजूस इससे भी कहीं ज़्यादा। वह इस हद तक कंजूस था कि घर आये मेहमान को रोटी का टुकड़ा या पानी का गिलास तक भी न देता।

एक दिन इस समझदार और चतुर अल्दार-कोसे ने शिगाई-बाई को सबक़ सिखाने का इरादा बनाया।

वह अपने घोड़े पर सवार हो शिगाई-बाई के घर की ओर चल दिया। जब उसके दोस्तों और पड़ोसियों को यह पता चला कि अल्दार-कोसे कहां जा रहा है तो उन्होंने ज़ोर का ठहाका लगाया और बोले –

"हां, हां, जाओ अल्दार-कोसे, शिगाई-बाई तुम्हारी ठाठदार दावत करेगा! भेड़ के बढ़िया गोश्त और सफ़ीद वही से तुम्हारी ख़ातिर करेगा!"

"कोई बात नहीं," अल्दार-कोसे ने जवाब दिया, "देखा जायेगा।"

अल्वार-कोसे कई दिनों तक स्तेपी में सवारी करता और शिगाई-बाई के खेमे को खोजता रहा। मगर वह जहां भी गया, लोगों ने उससे यही कहा –

"शिगाई-बाई की यहां खोज करना बेकार है। वह तो हम सभी से दूर किसी जगह जा बसा है।"

अल्वार-कोसे के लिए घोड़े को बढ़ाते जाने के सिवा कोई चारा नहीं था। आखिर उसे स्तेपी में अलग-थलग खड़ा हुआ एक खेमा दिखाई दिया जिसके सभी ओर घने सरकंडे खड़े थे।

"बहुत सोच-समझकर ही शिगाई-बाई ने सरकंडों के बीच अपना खेमा खड़ा किया है," अल्वार-कोसे ने अपने आप से कहा।

वास्तव में ऐसा ही था भी। ऐसा इसलिए किया गया था कि घर के मालिक और उसके परिवार के लोगों को पहले से ही इस बात का पता चल जाये कि कोई अजनबी नजदीक ही है। सरकंडों की सरसराहट से उन्हें यह मालूम हो जाता था और तब वे घर में उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीजों को छिपाने की कोशिश करते थे ताकि मेहमान को कुछ खिलाना-पिलाना न पड़े।

हर चीज को तेजी से भांपनेवाले अल्वार-कोसे को यह बात समझने में देर न लगी। इसलिए वह सरकंडों के बीच से चुपचाप गुजरने और बड़े पास शिगाई-बाई के खेमे में पहुंचने की तरकीब सोचने लगा।

वह सोचता रहा, सोचता रहा, मगर उसे कुछ न सूझा। फिर कुछ देर बाद उसने एक बहुत ही बढ़िया तरकीब सोच ली।

अपने घोड़े को एक ओर को ले जाकर वह छोटे-छोटे कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगा। उसने काफ़ी सारे कंकड़ जमा कर लिये। इसके बाद उसने अंधेरा होने तक इन्तजार किया और फिर सरकंडों के बीच एक-एक कंकड़ फेंकने लगा।

उसने पहला कंकड़ फेंका तो सरकंडे हिले-डुले और सरसराये। शिगाई-बाई भागकर खेमे से बाहर आया। उसने इधर-उधर देखा और घड़ी भर को आहट ली।

"कौन है?" उसने आवाज दी।

उसे कोई जवाब नहीं मिला। शिगाई-बाई खेमे में वापस चला गया।

तब अल्वार-कोसे ने एक और कंकड़ फेंका। सरकंडे फिर से सरसराये और शिगाई-बाई पहले की तरह ही भागा हुआ बाहर आया। उसने अपने इर्दगिर्द नजर डाली, मगर उसे कोई भी नजर न आया।

"सरकंडे ज़रूर हवा से ही सरसरा रहे हैं," शिगाई-बाई ने अपने आप से कहा और उसने भागकर खेमे से बाहर आना बन्द कर दिया।

अल्बार-कोसे इसी के इन्तज़ार में था। उसने अपने घोड़े की लगाम पकड़ी और सरकंडों के बीच से सधे पांव कंजूस के खेमे की ओर बढ़ने लगा। वह एक क़दम बढ़ाता, रुकता और घोड़ा इन्तज़ार करता, फिर एक और क़दम बढ़ाता, फिर से रुकता और इन्तज़ार करता।

इस तरह वह खेमे तक पहुंच गया।

उसने मोटे नमदे का पर्दा उठाया और अन्दर झांका। खेमा तरह-तरह की चीज़ों से भरा पड़ा था – सभी जगह क़ालीन और गद्दे थे, मोटे लोहे से मढ़े हुए सन्दूक़ एक के ऊपर एक रखे थे। फ़र्श के बीचोंबीच शिगाई-बाई अपने परिवार के साथ आग के पास बैठा था। चूल्हे पर एक बड़े-से पतीले में भेड़ का मांस उबल रहा था। शिगाई-बाई उसे देख रहा था और यह जानने के लिए अब-तब चख लेता था कि वह पका या नहीं। साथ ही वह क़ीमे का गुलमा बना रहा था। शिगाई-बाई की बीवी आटा गूंध रही थी, उसकी बेटी बतख साफ़ कर रही थी और नौकर आग पर भेड़ का सिर भून रहा था।

इसी समय अल्बार-कोसे अचानक दाखिल हुआ।

"सलाम," वह बोला।

शिगाई-बाई ने झटपट पतीले का ढक्कन बन्द किया और गुलमे के ऊपर बैठ गया। उसकी बीवी आटे पर ही बैठ गई, बेटी ने अपने आंचल से बतख को ढक लिया और नौकर ने भेड़ के सिर को अपनी पीठ के पीछे छिपा लिया।

शिगाई-बाई ने अल्बार-कोसे से सलाम-दुआ की और फिर बोला –

"स्तेपी का क्या हालचाल है?"

अल्बार-कोसे ने जवाब दिया –

"स्तेपी के बारे में इतनी दिलचस्प और अचम्भे से भरी हुई ख़बरें हैं कि उन सभी को तुम्हें सुनाने में बहुत वक़्त लगेगा।"

"अगर तुम सभी ख़बरें नहीं सुना सकते तो कुछ तो सुनाओ।"

"अच्छी बात, मैं सुनाता हूं। जब मैं तुम्हारे खेमे की ओर घोड़ा बढ़ाये आ रहा था तो मैंने एक बहुत बड़ा और मोटा सांप रेंगता हुआ देखा। सच तो यह है कि वह उस गुलमे से भी बड़ा था जिस पर तुम मेरे अन्दर आते ही बैठ गये हो।"

शिगाई-बाई ने बुरा-सा मुंह बनाया, मगर कहा कुछ नहीं। अल्बार-कोसे ने अपनी बात जारी रखी –

"बाई, तुम यक़ीन करोगे कि इस सांप का सिर भेड़ के उस सिर जितना बड़ा और काला था जिसे तुम्हारा नौकर अभी-अभी आग पर भून रहा था और अब अपनी पीठ के पीछे छिपाये हुए है?"

शिगाई-बाई ने फिर बुरा-सा मुंह बनाया, मगर बोला कुछ नहीं। चालाक अल्दार-कोसे ने अपनी कहानी जारी रखी –

"यह सांप रेंगता हुआ ऐसे सी-सी कर रहा था जैसे तुम्हारा वह पतीला, जिसमें मांस उबल रहा है। मैं घोड़े से कूदा, एक भारी-सा पत्थर उठाया और अपनी पूरी ताक़त से सांप पर दे मारा। सांप का सिर कुचला गया और वह उस गुंधे हुए आटे के समान नज़र आने लगा जिस पर तुम्हारी बीवी बैठी है। ऐसे-ऐसे अजूबे देखे हैं मैंने स्तेपी में। अगर मैंने झूठ बोला हो तो मेरा उस वक़्त जैसा हाल हो जिसे तुम्हारी बेटी ने अभी-अभी साफ़ किया है।"

शिगाई-बाई ने फिर बुरा-सा मुंह बनाया, मगर कहा कुछ नहीं। हां, अल्दार-कोसे की खातिरदारी भी उसने नहीं की।

अल्दार-कोसे और शिगाई-बाई काफ़ी रात गये तक बातें करते रहे। पतीले में भेड़ का मांस उबलता रहा, उबलता रहा, खेमे में उसकी प्यारी-प्यारी गंध फैलती रही, फैलती रही।

अल्दार-कोसे को रास्ते में ही काफ़ी देर लग गई थी और उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। वह पतीले पर नज़र डालता तो उसके मुंह में पानी भर भर आता। शिगाई-बाई ने यह देखा तो बोला –

"उबलो मेरे पतीले, आधे बरस तक उबलो!"

यह सुनकर अल्दार-कोसे ने झटपट अपने बूते उतारे, लेट गया, जम्हाई ली और कहा –

"आराम करो मेरे जूतो, दो साल तक आराम करो!"

शिगाई-बाई ने जब यह देखा कि मेहमान जाने का नाम ही नहीं लेता तो उसने खुद भी खाना खाये बिना ही सोने का फ़ैसला कर लिया।

भेड़ के मांसवाला पतीला तिपाई पर रख दिया गया और हर कोई अपने-अपने क़ालीन पर लेट गया।

"जैसे ही अल्दार-कोसे सोयेगा," शिगाई-बाई ने मन ही मन सोचा, "वैसे ही मैं अपने घरवालों को जगा दूंगा और हम भेड़ का मांस खा लेंगे।"

"जैसे ही कंजूस शिगाई-बाई की आंख लगेगी," अल्दार-कोसे ने अपने आप से कहा,

"वैसे ही मैं पेट भरकर खाऊंगा। मेड़ का मांस जब पका हुआ है तो मुझे भूखा रहने की क्या पड़ी है!"

शिगाई-बाई को ही पहले नींद आई। वह कुछ देर तक लेटा रहा, फिर उसकी आंखें मुंदीं और उसके खर्राटे खेमे में गूंजने लगे।

अल्दार-कोसे उठा, उसने पतीले में से मांस निकाला, खाया और फिर शिगाई-बाई के पुराने जूते पतीले में डाल दिये। इसके बाद उसने पतीले को ढक दिया, फिर से लेट गया और इन्तज़ार करने लगा कि देखें आगे क्या होता है।

कुछ देर बाद शिगाई-बाई की आंख खुली, उसने घड़ी भर आहट ली, अल्दार-कोसे पर नज़र डाली और उसे सोया हुआ मानकर सावधानी से अपनी बीवी-बेटी को जगाने लगा।

"उठो, अब उठो!" उसने कहा। "जब तक अल्दार-कोसे सोया हुआ है, आओ, हम थोड़ा-सा मांस खा लें!"

शिगाई-बाई ने ढक्कन हटाया, पतीले में से अपने जूते निकाले और छुरी से उनके टुकड़े किये। वे खाने लगे। वे टुकड़ों को चबाते रहे, चबाते रहे, मगर वे जैसे के तैसे बने रहे, गले से नीचे न उतरे। यह क्या मामला है, मांस इतना सख्त क्यों है?

"यह सब उसी निकम्मे अल्दार-कोसे का क़ुसूर है," शिगाई-बाई ने अपनी बीवी से कहा। "उसी की वजह से मेड़ का मांस इतना सख्त हो गया है। पर ख़ैर, कोई बात नहीं। जब यह कम्बख्त यहां से चलता बनेगा तब हम इसे नर्म होने तक पकायेंगे और खा लेंगे। अब लाओ, इन टुकड़ों को फिर से पतीले में डाल दें।"

शिगाई-बाई की बीवी ने चमड़े के टुकड़े इकट्ठे किये और उन्हें पतीले में डाल दिया। इसके बाद शिगाई-बाई ने अपनी बीवी को हुक्म दिया कि वह आग जलाये और पिछले दिन के आटे के पराठे सेंक दे।

जब पराठे तैयार हो गये तो शिगाई-बाई ने उन्हें ठंडा भी न होने दिया और गर्म-गर्म ही अपने चोग़े में ठूंस लिया तथा अपने रेवड़ों की देखभाल करने के लिए स्तेपी में चल दिया।

कंजूस के खेमे से बाहर निकलते ही अल्दार-कोसे भागा हुआ उसके पीछे-पीछे गया और बोला –

"आह, शिगाई-बाई, कितनी अच्छी बात है कि मेरी आंख खुल गई वरना मुझे तुम्हें अलविदा कहे बिना ही जाना पड़ता। मैं आज अपने घर आ रहा हूं।"

उसने शिगाई-बाई को ज़ोर से बांहों में कस लिया। गर्म-गर्म पराठों ने कंजूस को बुरी तरह झुलसा दिया।

शिगाई-बाई ने शुरू में तो दर्द को बर्दाश्त किया, पर बाद को वह उसे सहन न कर पाया और चिल्ला उठा –

"ओह! ओह! वे मेरा तन झुलस रहे हैं! मुझे झुलस रहे हैं!"

उसने पराठों को चोले में से बाहर निकाला और चिल्लाया –

"इन्हें कुत्ते खा जायें!"

"ओह शिगाई-बाई," अल्दार-कोसे ने कहा, "तुम कुत्तों को पराठे खिलाने की क्यों सोच रहे हो? कुछ मुझे ही खिला दो!"

इतना कहकर उसने पराठे झपट लिये और खाने लगा।

"शिगाई-बाई, तुम्हारी बीवी बढ़िया पराठे बनाती है," अल्दार-कोसे ने कहा। "मैंने तो एक ज़माने से ऐसे मज़ेदार पराठे नहीं खाये।"

शिगाई-बाई ने कोई जवाब न दिया और भूखे पेट ही घोड़े पर सवार हो स्तेपी की ओर चल दिया।

वह शाम को घर लौटा तो अल्दार-कोसे को अपने डेरे में हाज़िर पाया।

"तुमने तो मुझ से अलविदा कही थी? मैं तो यही समझा था कि तुम अपने घर जा रहे हो," शिगाई-बाई ने कहा।

"मैं जाने को तैयार तो हुआ था, मगर बाद को मैंने अपना इरादा बदल लिया," अल्दार-कोसे ने जवाब दिया। "तुम्हारे डेरे में ज़्यादा मज़ा है।"

शिगाई-बाई ने नाक-भौं सिकोड़ी, मगर करता तो क्या! वह अपने मेहमान को घर से निकाल तो नहीं सकता था।

अगली सुबह को शिगाई-बाई फिर से स्तेपी में जाने को तैयार हुआ और अपनी बीवी से बोला –

"मुझे चमड़े की मशक में दही भर कर ला दो, मगर ध्यान रखना कि उस पर अल्दार-कोसे की नज़र न पड़ने पाये।"

शिगाई-बाई की बीवी ने चमड़े की मशक में दही डालकर अपने पति को दे दी। शिगाई-बाई ने इसे अपने चोले के नीचे छिपाया और डेरे से चल दिया।

"इस बार तो सब कुशल ही रहेगा," उसने मन ही मन सोचा।

मगर उसका ख़याल ग़लत था। कारण कि अल्दार-कोसे फ़ौरन भागता हुआ बाहर आया और उसने शिगाई-बाई को बांहों में कस लिया। उसने शिगाई-बाई को इतने ज़ोर

से कसा कि वही से भरी हुई मशक उलट गई और वही शिगाई-बाई के चोरी से नीचे बह चला।

शिगाई-बाई ने गुस्से से लाल-पीला होते और मशक अल्वार-कोसे के हाथों में ठूंसते हुए चिल्लाकर कहा –

"लो, पी लो! लो, पी लो!"

"अगर तुम कहते हो तो पी ही लूंगा," अल्वार-कोसे ने जवाब दिया। "मैं इन्कार करके तुम्हें नाराज़ नहीं करूंगा।"

और वह सारा दही पी गया।

शिगाई-बाई इस बार फिर स्तेपी में भूखा ही गया। चतुर अल्वार-कोसे खेमे में आकर उसकी बीवी और बेटी से गपशप करने लगा।

अल्वार-कोसे कई दिन तक कंजूस के घर में बना रहा। शिगाई-बाई ने चाहे कोई भी तरकीब या चालाकी क्यों न सोची, वह अपने मेहमान से बाज़ी न मार सका। चाहे-अनचाहे उसे अल्वार-कोसे को खिलाना-पिलाना ही पड़ा।

शिगाई-बाई सुबह से शाम तक अपने मेहमान को खेमे से निकालने और उससे बदला लेने की तरकीब सोचता रहता। वह सोचता रहा, सोचता रहा और आखिर उसे एक बात सूझ ही गई।

अल्वार-कोसे उसके पास जिस घोड़े पर सवार होकर आया था, उसके सिर पर सफ़ेद पदम था। शिगाई-बाई ने इस घोड़े को मार डालने का फ़ैसला कर लिया। वह जब भी इस घोड़े के पास से गुज़रता उसे घूरता और उसकी आंखों में दुर्भावना झलक उठती।

अल्वार-कोसे का ध्यान इस ओर गया। उसी शाम को उसने कुछ कालिख ली और अपने घोड़े के सफ़ेद पदम पर मल दी। साथ ही उसने कुछ खड़िया लेकर शिगाई-बाई के सबसे अच्छे घोड़े के सिर पर चिट्टी बना दी।

इसके बाद वह खेमे में आकर आराम से सो रहा।

रात को शिगाई-बाई बड़े पांव खेमे से बाहर आया, उसने अपने घोड़ों में से सिर पर सफ़ेद पदम वाला घोड़ा अलग किया, उसे मार डाला और ज़ोर से चिल्लाने लगा –

"ओह, अल्वार-कोसे, तुम्हारी तक़दीर फूट गई! देखो तुम्हारे घोड़े का क्या बुरा हाल हो गया है!"

मगर अल्वार-कोसे तो खेमे से बाहर भी नहीं निकला।

"ऐसे परेशान न होओ, शिगाई-बाई," वह बोला, "चिल्लाओ मत। यह तो बड़ी मामूली-सी बात है। घोड़े के टुकड़े कर डालो। तुम्हें और मुझे खाने को काफ़ी मांस मिल जायेगा।"

यह सुनकर शिगाई-बाई खूब खिलखिलाकर हंसा। वह बेहद खुश हुआ कि आखिर उसने अपने इस घृणित मेहमान से बदला ले लिया है।

सुबह को ही उसे पता चला कि उसने अपने सबसे अच्छे घोड़े को ज़िबह कर डाला है।

शिगाई-बाई का गुस्से के मारे बहुत बुरा हाल था। मगर वह करता तो क्या! उसे अपने घोड़े का मांस पकाना और अल्दार-कोसे के साथ बांटकर खाना पड़ा।

मगर आखिर अल्दार-कोसे ही शिगाई-बाई के घर में रहता-रहता तंग आ गया। उसने अपने गांव लौटने और शिगाई-बाई की बेटी को अपने साथ ले जाने का इरादा बना लिया।

"अगर मैं उसे अपनी बीवी बना लूं तो उसके लिए यह कहीं अधिक अच्छा होगा," उसने मन ही मन सोचा। "शिगाई-बाई जैसे बाप के घर में रहने पर तो वह भी ऐसी ही कंजूस बन जायेगी।"

शिगाई-बाई की बेटी का नाम था बिब-बुल्बुक। फक्कड़ और मस्त अल्दार-कोसे उसे पहली ही नज़र में पसन्द आ गया था। वह उसे कनखियों से देखती रहती थी।

एक सुबह को शिगाई-बाई सदा की भांति स्तेपी की ओर जाने को घोड़े पर सवार हो चुका था। उस समय अल्दार-कोसे ने उससे कहा –

"देखो, शिगाई-बाई, मैं बहुत दिनों से तुम्हारे घर में मेहमान हूं। अब मुझे घर जाना चाहिए। अब तुम शाम को घर लौटोगे तो अपने ख़ेमे को बहुत खुला-खुला पाओगे, उसमें बहुत-सी फ़ालतू जगह होगी।"

शिगाई-बाई ने यह सुना तो उसे अपने कानों पर यक़ीन न हुआ।

"सिर्फ़ मुझे बिज़ (सूआ) दे दो," अल्दार-कोसे ने अपनी बात जारी रखी। "मैं रवाना होने से पहले अपने जूतों की मरम्मत करना चाहता हूं।"

"ठीक है, ठीक है," शिगाई-बाई ने कहा। "बिज़ ले लो, अपने जूतों की मरम्मत करो और चलते बनो। अब तुम्हें जाना ही चाहिए।"

इतना कहकर उसने स्तेपी की ओर घोड़ा बढ़ा दिया।

अल्दार-कोसे ख़ेमे में लौटा और उसने शिगाई-बाई की बीवी से कहा –

"हां तो, मासकिन, बिल्ला को तैयार कर दो। मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा।"

"तुम्हारा दिमाग़ चल निकला है क्या?" शिगाई-बाई की बीवी ने हैरान होकर कहा। "क्या तुम जैसे भिखमंगे को शिगाई-बाई अपनी बिल्ला सौंप देगा?"

"वह तो मुझे सौंप भी चुका है। अगर यक़ीन नहीं, तो ख़ुद उससे पूछ लो।"

शिगाई-बाई की बीवी खेमे से बाहर भागी गई और उसने पुकार कर अपने पति से पूछा –

"शिगाई-बाई ! शिगाई-बाई ! क्या यह सच है कि तुमने अल्बार-कोसे को बिल्ला देने की हामी भरी है?"

"हां, हां!" शिगाई-बाई ने जवाब दिया। "दे दो उसे बिल्ला और हमारे घर से दफ़ा हो जाने दो!"

इतना कहकर शिगाई-बाई ने घोड़े को चाबुक लगाया और उसे सरपट दौड़ाता हुआ स्तेपी की ओर चला गया।

शिगाई-बाई की बीवी अपने पति का हुक्म टालने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। उसने अपनी बेटी को तैयार किया और खेमे से बाहर ले आई। अल्बार-कोसे ने सफ़ेद पशमवाले घोड़े पर लड़की को अपने साथ बिठाया और घोड़े को एड़ लगाई। शिगाई-बाई का खेमा बहुत पीछे रह गया।

वे जब घोड़ा दौड़ाते जा रहे थे तो अल्बार-कोसे ने लड़की से कहा –

"अच्छे लोगों के बीच रहोगी और ख़ुद भी अच्छी बन जाओगी।"

शाम को शिगाई-बाई अपने खेमे में लौटा। जब उसे यह मालूम हुआ कि उसकी ग़ैरहाज़िरी में क्या गुल खिला है, तो वह आग-बबूला हो उठा, फ़ौरन घोड़े पर सवार हुआ और उसे सरपट दौड़ाता हुआ उनकी खोज में निकला। उसने पूरी स्तेपी का चक्कर काट लिया, मगर उसे अल्बार-कोसे कहीं भी नज़र न आया। आख़िर वह ख़ाली हाथ घर लौट आया।

बोरोल्वोई-मेर्गेन और उसका बहादुर बेटा

अल्ताई लोक-कथा

बहुत पुराने ज़माने की बात है कि नीले अल्ताई पहाड़ों में एक नरभक्षी दानव रहता था। उसका नाम था अलमिस।

अलमिस की लम्बी-लम्बी काली मूंछें थीं जो उसके कंधों पर लगामों की तरह झूलती रहती थीं। उसकी दाढ़ी उसके घुटनों को छूती थी। उसकी आंखें खून से भरी थीं। उसके दांत लम्बे-लम्बे और पैने थे। उसकी उंगलियों पर नाखूनों की जगह तेज़ पंजे थे। उसके सारे जिस्म पर मोटे-मोटे काले बाल थे।

अलमिस बहुत भयानक, खूंखार और ज़ालिम था। वह जंगलों में शिकारियों पर हमले करता और गांवों में औरतों पर। वह न तो बूढ़ों को छोड़ता, न बच्चों को। वह अपने शिकारों पर झपटता और उन्हें खा जाता।

अलमिस इतना ताक़तवर और चालाक था कि कोई भी उससे जूझने की हिम्मत न करता। अलमिस को देखते ही लोग सिर पर पांव रखकर भागते और छिपने की कोशिश करते। उनकी समझ में नहीं आता था कि वे क्या करें।

"अलमिस हमसे ज़्यादा ताक़तवर और चालाक है," वे कहते। "न कोई उसे

जीत सकता है और न चकमा दे सकता है। हमें उसे बर्दाश्त करना और चुप ही रहना होगा।"

इस तरह वे अलमिस का जुल्म सहते और चुप रहते।

एक गांव में बोरोल्दोई-मेर्गेन नाम का एक शिकारी रहता था। वह बड़ा हृष्ट-पुष्ट, बहादुर और समझदार था। कुछ लोग शिकार पर जायें तो खाली हाथ भी लौट सकते हैं, मगर बोरोल्दोई-मेर्गेन के साथ ऐसा कभी नहीं होता था। वह हमेशा सफल ही लौटता – सोनड़ियां, सेबल, गिलहरियां और अन्य रोयेंदार जानवर मारकर लाता। वह सभी जंगलों में और सभी पहाड़ों पर घूम चुका था। कोई दरिन्दा कभी उसका बाल भी बांका नहीं कर पाया था, उसे कभी कोई हानि नहीं पहुंची थी, कारण कि उसकी अक़्ल बहुत तेज थी, नज़रें बहुत पैनी थीं और उसकी बांहों में बल था।

एक दिन अलमिस पहाड़ों से उतरकर बोरोल्दोई-मेर्गेन के गांव में जा पहुंचा। डरे-सहमे हुए लोग इधर-उधर दौड़ने लगे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे कहां छिपें। अलमिस एक बच्चे को उठाकर पहाड़ों में वापस चला गया।

जब तक वह नज़दीक था, गांव के लोग सिर्फ़ कानाफूसी ही करते रहे, उन्हें ऊंचा बोलने की भी हिम्मत न हुई। मगर उसके जाने के बाद वे ऊंची-ऊंची आवाज़ में चिल्लाने और रोने लगे।

"जाने अगली बार यह दानव किसका बच्चा उठा ले जायेगा?" मातायें सिसकती हुई चिल्ला रही थीं, बच्चे रीं-रीं, हं-हं कर रहे थे और मर्द नाक-भौंह सिकोड़कर चुप्पी साधे थे।

तब बोरोल्दोई-मेर्गेन चुप न रह सका और बोला –

"आंसू बहाने या छिपकर जान बचाने से काम नहीं चलेगा। हमें अलमिस को दूसरी दुनिया में पहुंचाना चाहिए। केवल तभी हम डर से छुटकारा पाकर चैन की ज़िन्दगी बिता सकेंगे।"

लोगों ने जवाब दिया –

"हम उसका क्या बिगाड़ सकते हैं या उससे कैसे छुटकारा पा सकते हैं? न तो हम पक्षी हैं कि आकाश में ऊंचे उड़ जायें और न मछलियां कि पानी में छिप जायें। हमें तो दुष्ट दानव के पंजों और जबड़ों का शिकार होना पड़ेगा।"

बोरोल्दोई-मेर्गेन को बहुत दुख और परेशानी हुई। उसने अपने बेटे की ओर देखते हुए मन ही मन सोचा –

"मेरे बेटे ने धरती पर इसलिए जन्म नहीं लिया है कि अलमिस उसे अपने तेज़-

तेज़ दांतों से फाड़ डाले। दूसरे बच्चे भी इसलिए दुनिया में नहीं आये हैं। अलमिस को अवश्य ही मौत के घाट उतारना और माताओं के दुख का अन्त करना होगा।"

मगर यह किया कैसे जाये?

अलमिस को लड़ाई के लिए ललकारने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था – एक आदमी की तो बात ही क्या, वह सभी का सफ़ाया कर सकता था। इसके अलावा गांव के लोग उससे लड़ने को तैयार भी नहीं होते। अलमिस ने उन सभी को डरा दिया था, उनका दम निकाल दिया था। उनमें न हौसला रहा था और न हिम्मत। अलमिस को चकमा देना भी असम्भव था। वह हमेशा खतरे को भांप लेता था, जहां भी कोई गड़बड़ होती उसे फ़ौरन ताड़ जाता था।

बोरोल्दोई-मेर्गेन लगातार यह सोचता रहा कि अलमिस से लोगों का पिंड कैसे छुड़ाये। वह सोचता रहा, सोचता रहा, बहुत वक़्त तक इसी ख्याल में डूबा रहा और आखिर उसने तय कर लिया कि उसे क्या करना है।

मगर उसने किसी से भी अपने इरादे की चर्चा नहीं की।

उसने अपने सबसे मजबूत धनुष और सबसे तेज़ तीर लिए और अपने बेटे से पूछा –

"तुम में हौसला है?"

"हां, है!" लड़के ने जवाब दिया।

"तुम्हारे दिल में लोगों के लिए दया है?"

"है!"

"तो चलो मेरे साथ। हमारा रास्ता लम्बा और काम जान-जोखिम का होगा। मगर हम जायेंगे ज़रूर। तुम मुझ से कुछ पूछना चाहते हो?"

मगर लड़के ने सिर हिला दिया। शिकारी और उसका बेटा पहाड़ों की ओर चल दिये जहां अलमिस रहता था।

उन्होंने एक घना जंगल पार किया, चट्टानी ढालों पर चढ़े और किसी पगडंडी के बिना ही चलते गये। आखिर वे जंगल के बीच एक खुली जगह में पहुंच गये।

वहां एक लम्बा-सा ठूंठ खड़ा था और उसकी बग़ल में कुछ झाड़ियां और वृक्ष उगे हुए थे। आसपास न कोई दरिन्दा था न परिन्दा।

बोरोल्दोई-मेर्गेन रुका, उसने अपनी शिकारियोंवाली पोशाक उतारी और ठूंठ को पहना दी। उसका बेटा चुपचाप खड़ा देखता रहा, पर उसने कोई सवाल न पूछा। बाप ने ठूंठ के क़रीब आग जला दी। लड़का फिर भी चुपचाप देखता रहा और उसने कुछ भी नहीं पूछा।

शिकारी ने बेटे से कहा –

"यहां आग के पास बैठ जाओ। चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, यहां से भागना नहीं।"

"मैं नहीं भागूंगा।"

"जो कुछ होगा उससे तुम्हारा दिल दहल उठेगा।"

"नहीं दहलेगा।"

"तो बैठकर इन्तज़ार करो।"

लड़का आग के पास बैठ गया। बाप ने अपने तीर-कमान लिये और झाड़ियों में जाकर छिप रहा। इन दोनों के अलावा इर्दगिर्द कोई नहीं था, एकदम ख़ामोशी थी, गहरा सन्नाटा था।

वे दोनों बहुत देर तक यहां बैठे रहे।

अचानक टहनियां तड़कीं, और शाखायें चटकीं तथा वृक्षों के बीच से खुद अलमिस नमूदार हुआ। उसकी काली मूंछें उसके कंधों पर झूल रही थीं, उसकी आंखें अंगारों की तरह जल रही थीं और वह अपने तेज़ दांतों को पीस रहा था। लड़के को आग के पास बैठे देखकर उसने ख़ुशी से ज़ोर का ठहाका लगाया।

"मैं तो शिकार की खोज में गांव जा रहा था और शिकार तो यहीं बैठा हुआ मेरा इन्तज़ार कर रहा है!"

फिर उसने ठूंठ पर नज़र डाली और उसे शिकारी समझ हंसकर बोला –

"हां, तो शिकारी, अब तुम मुझे अपने बेटे को खाते हुए देखोगे! तुम्हें उसकी रक्षा करने की हिम्मत नहीं होगी।"

इतना कहकर अलमिस आग की तरफ़ लपका।

वह जब दौड़ा तो उसकी दाढ़ी हवा में लहराई और उसके लम्बे फ़र कोट के छोर फड़फड़ाये। अलमिस ने लड़के को पकड़ने की कोशिश की, मगर वह ठूंठ के पीछे भाग गया। अलमिस उसके पीछे भागा, मगर लड़का ठूंठ के गिर्द चक्कर काटता रहा और दानव उसे पकड़ न पाया।

इसी बीच बोरोल्दोई-मेर्गेन ने निशाना साधा और तीर चलाया जो अलमिस की छाती के बीच जाकर लगा। अलमिस दर्द से चीख उठा। इतनी ऊंची थीं उसकी चीख़ें कि उनके शोर से वृक्ष झुक गये, चट्टानों में दरारें पड़ गईं और वे लुढ़ककर पहाड़ों से नीचे जा गिरीं।

और बोरोल्दोई-मेर्गेन दानव को एक के बाद एक तीर मारता गया।

अलमिस ग़ुस्से से आग-बबूला होकर ठूंठ पर झपटा जिसे शिकारी ने अपनी पोशाक पहना दी थी। वह उसे नोचने और काटने लगा। और अचानक ज़मीन पर ढेर हो गया। बोरोल्दोई-मेर्गेन उसके पास गया तो उसने अलमिस को मरा हुआ पाया।

बोरोल्दोई-मेर्गेन ने अपने बेटे से यह नहीं पूछा कि उसे डर महसूस हुआ था या नहीं। उसने तो सिर्फ़ इतना ही कहा –

"आओ चलें!"

वे दोनों गांव की ओर चल दिये। गांव में पहुंचकर बोरोल्दोई-मेर्गेन ने लोगों से कहा –

"हमारे बच्चे अब सुख-चैन के जीवन में फूलें-फलेंगे। उनकी माताओं को डर से निजात मिल गई है। अलमिस खत्म हुआ, वह मारा जा चुका है।"

"किसने उसे मारा है?" लोगों ने पूछा।

"मैंने।"

"तुम अपने छोटे-से बेटे को किसलिए साथ ले गये थे?"

"अलमिस को फांसने के लिए।"

"मगर अलमिस तो उसके टुकड़े-टुकड़े भी कर सकता था?"

"हां, कर सकता था।"

इसके बाद एक भी शब्द कहे-सुने बिना बोरोल्दोई-मेर्गेन अपने घर में चला गया।

इस तरह नीले अस्ताई पहाड़ों के लोगों को अपने पुराने और ज़ालिम दुश्मन से निजात मिली।

दूब-बाला

याकूतियाई लोक-कथा

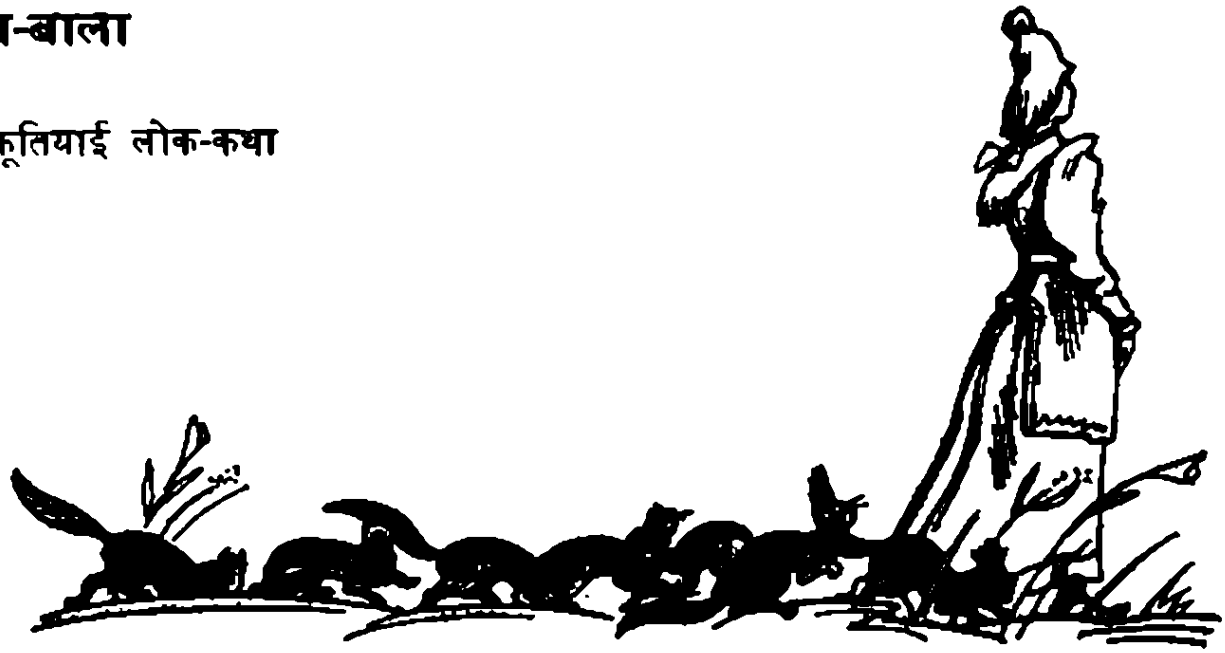

कहते हैं कि पांच गायों की मालकिन, एक नाटी बुढ़िया, किसी सुबह को उठी और खेत में गई।

बड़े और लम्बे-चौड़े खेत में उसे पांच पत्तियोंवाली लम्बी-सी दूब दिखाई दी। बुढ़िया ने उसे इस तरह उखाड़ा कि उसकी जड़ और पत्तियां न टूटें और घर लाकर अपने तकिये पर रख दिया। इसके बाद वह बाहर जाकर अपनी गायों को दुहने लगी।

बुढ़िया गायें दुह रही थी कि अचानक उसे अपने खेमे में घंटियों की टनटनाहट सुनाई दी। बुढ़िया हड़बड़ाकर उठी और उतावली में उससे दूध की बालटी गिर गयी और दूध बिखर गया। वह भागी-भागी खेमे में गई और उसने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली। उसे हर चीज़ पहले की तरह ही दिखाई दी – दूब तकिये पर पड़ी हुई थी। बुढ़िया फिर से बाहर गई और अपनी गायों को दुहने लगी। अचानक उसे फिर से घंटियों की टनटनाहट सुनाई दी। जल्दी में वह फिर दूध बहाकर खेमे में भागी गई और वहां उसने क्या देखा – एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसके बिस्तर पर बैठी हुई है। लड़की की आंखें हीरों की तरह चमकती थीं और उसकी भौंहें दो काले सेबलों जैसी थीं। दूब लड़की बन गई थी!

नाटी बुढ़िया की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

उसने लड़की से कहा –

"मेरे पास मेरी बेटी बनकर रहो!"

इस तरह वे इकट्ठी रहने लगीं।

एक दिन खरजीत-बेर्गेन नामक एक नौजवान शिकारी शिकार के लिए ताइगा में गया। उसे एक भूरी गिलहरी दिखाई दी और उसने उस पर तीर छोड़ा। वह सुबह से शाम तक तीर चलाता रहा, मगर एक बार भी गिलहरी को बींध नहीं पाया।

गिलहरी कूदकर एक फ़र वृक्ष पर चढ़ गई, वहां से बर्च वृक्ष और फिर श्रीदारु पर जा पहुंची। नाटी-सी बुढ़िया के खेमे के पास पहुंचकर वह चीड़ पर बैठ गई।

खरजीत-बेर्गेन भागा-भागा चीड़ के पास गया और उसने एक और तीर छोड़ा। मगर गिलहरी बचकर निकल गई और तीर नाटी बुढ़िया की चिमनी में जा गिरा।

"दादी, मुझे मेरा तीर लौटा दो!" खरजीत-बेर्गेन चिल्लाया, मगर नाटी बुढ़िया बाहर नहीं आई और उसने कोई जवाब नहीं दिया।

खरजीत-बेर्गेन चिढ़ा हुआ था, वह ग़ुस्से से लाल-पीला हो उठा और खेमे के अन्दर जा घुसा।

वहां उसने एक बहुत ही सुन्दर लड़की बैठी देखी। वह इतनी सुन्दर थी कि खरजीत-बेर्गेन दम साधे रह गया और उसका सिर चकराने लगा। उसके मुंह से बोल नहीं फूटा, वह भागकर बाहर गया, घोड़े पर सवार हुआ और उसे सरपट दौड़ाता घर पहुंचा।

"माता-पिता," वह बोला, "पांच गायों की मालकिन नाटी बुढ़िया के खेमे में बहुत ही सुन्दर लड़की है। आप शादी-ब्याह तय करनेवालों को फ़ौरन वहां भेजें। मैं उस लड़की से शादी करना चाहता हूं।"

खरजीत-बेर्गेन के पिता ने फ़ौरन नौ घुड़सवार लड़की के लिए भेजे।

ब्याह तय करनेवाले नाटी बुढ़िया के खेमे में पहुंचे। उन्होंने लड़की को देखा तो उनके होश हवा हो गये – इतनी सुन्दर थी वह। जब वे ज़रा संभले तो उनमें से सबसे अधिक सम्मानित और बुज़ुर्ग को छोड़कर बाक़ी सभी खेमे से बाहर आ गये।

"नाटी बुढ़िया," बुज़ुर्ग बोला, "क्या तुम खरजीत-बेर्गेन से इस युवती की शादी कर दोगी?"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं," नाटी बुढ़िया ने जवाब दिया।

तब उन्होंने लड़की से पूछा कि वह राज़ी है या नहीं। उसने भी सहमति प्रकट की।

"तुम्हें दुलहन के लिए काफ़ी धन देना पड़ेगा," नाटी बुढ़िया ने कहा। "तुम्हें इतनी गायें और घोड़े देने पड़ेंगे जितने मेरे खेत में समा सकें।"

कुछ ही समय बाद नाटी बुढ़िया के खेत में गायें और घोड़े भेज दिये गये। वे बेशुमार थे।

फिर उन्होंने लड़की को जल्दी-जल्दी और बड़ी अच्छी तरह नई पोशाक पहनाई। वे चितकबरा घोड़ा लाये, उन्होंने उसे चांदी की लगाम पहनाई, उस पर चांदी का जीन कसा और उसकी बग़ल में चांदी का चाबुक लटका दिया। खरजीत-बेर्गेन ने अपनी बुलहन का हाथ थामा, उसे बाहर ले गया, चितकबरे घोड़े पर बिठाया और खुद भी घोड़े पर सवार हो गया और वे घर की ओर चल दिये।

वे घोड़े बढ़ाये जा रहे थे कि खरजीत-बेर्गेन को सड़क पर अचानक एक लोमड़ी दिखाई दी।

लोमड़ी को सामने देख खरजीत-बेर्गेन को अपने पर क़ाबू न रहा। वह बोला—

"मैं लोमड़ी का पीछा करने जा रहा हूं, मगर जल्द ही लौट आऊंगा। तुम इसी सड़क पर घोड़ा बढ़ाती जाना। आख़िर एक दोराहा आयेगा। पूर्व की ओर सेबल की रोयेंदार खाल लटकी दिखाई देगी और पश्चिम की ओर सफ़ेद गलेवाले भालू की खाल नज़र आयेगी। तुम पश्चिम की ओर को नहीं मुड़ना, उस सड़क पर जाना जहां सेबल की खाल दिखाई दे।"

इतना कहकर उसने लोमड़ी के पीछे अपना घोड़ा सरपट दौड़ाना शुरू कर दिया।

लड़की अकेली ही घोड़ा दौड़ाती रही और आख़िर दोराहे पर पहुंच गई। मगर वहां पहुंचते ही उसे खरजीत-बेर्गेन की हिदायत का ख्याल न रहा। वह उस सड़क की ओर मुड़ गई जहां भालू की खाल लटकी हुई थी और जल्दी ही लोहे के एक बड़े-से खेमे के पास जा पहुंची।

उस खेमे में से शैतान की बेटी लोहे की पोशाक पहने हुए बाहर आई। उसकी एक टांग थी और सो भी टेढ़ी-मेढ़ी। उसकी एक बांह थी, टांग की तरह ही टेढ़ी-मेढ़ी। माथे के बीच में उसकी एक धुंधली आंख थी और उसकी लम्बी तथा काली ज़बान थी जो उसकी छाती तक लटकी हुई थी।

शैतान की बेटी ने लड़की को पकड़ लिया, उसे घोड़े से नीचे खींचा, उसके चेहरे की खाल उतार कर अपने चेहरे पर चढ़ा ली। इसके बाद उसने लड़की के सभी बढ़िया कपड़े उतारकर पहन लिये और लड़की को खेमे के ऊपर से दूर फेंक दिया। इसके बाद वह चितकबरे घोड़े पर सवार हुई और पूर्ववाली सड़क पर बढ़ चली।

जब वह खरजीत-बेर्गेन के पिता के खेमे के क़रीब पहुंचने वाली थी, तभी खरजीत-बेर्गेन उससे आ मिला। मगर उसे न तो कोई परिवर्तन दिखाई दिया और न वह कुछ अनुमान ही लगा पाया।

खरजीत-बेर्गेन के रिश्तेदार दुलहन का स्वागत करने के लिए जमा हुए। नौ सुन्दर नौजवान और आठ लड़कियां अस्तबल के दरवाज़े पर उससे मिलने के लिए आयीं।

लड़कियों ने आपस में बात करते हुए कहा –

"दुलहन जैसे मुंह खोलेगी और कुछ बोलेगी, वैसे ही सब से सुन्दर मोती उसके मुंह से झड़कर नीचे लुढ़कने लगेंगे।"

वे उन मोतियों को पिरोने के लिए धागे ले आईं।

नौजवानों ने आपस में बात करते हुए कहा –

"दुलहन के एक क़दम बढ़ाते ही उसके पीछे-पीछे काले सेबल चलने लगेंगे।"

उन्होंने सेबलों को बींधने के लिए अपने तीर-कमान तैयार कर लिये।

मगर दुलहन ने जब बोलना शुरू किया तो उसके मुंह से मेंढक गिरे और जब उसने क़दम बढ़ाया तो भद्दे भूरे मेंढले उसके पीछे-पीछे भागने लगे।

दुलहन का स्वागत करने के लिए जमा हुए सभी लोग मुंह बाये रह गये और उनके दिल को बड़ी ठेस लगी।

मगर उन्होंने अस्तबल से दुलहन के खेमे तक हरी घास का क़ालीन बिछा दिया और दुलहन का हाथ थामकर उसे वहां से ले गये।

दुलहन खेमे के अन्दर गई। उसने तीन नौउम्र श्रीदारु वृक्षों की फुनगियों को लेकर चूल्हे में आग जलाई।

इसके बाद शादी की बढ़िया दावत हुई। सभी ने खाया-पिया, खेल खेले और मौज मारी। कोई भी यह न भांप पाया कि यह असली दुलहन नहीं है।

कुछ ही समय बाद नाटी बुढ़िया अपनी गायें दुहने के लिए खेत में गई। उसने देखा कि उसी जगह पांच पत्तियोंवाली दूब फिर से उग आई है। यह पहली की तुलना में अधिक नाज़ुक और सीधी थी।

नाटी बुढ़िया ने दूब को जड़ समेत उखाड़ा, उसे अपने खेमे में ले गई और तकिये पर रख दिया। वह फिर से खेत में जाकर गायें दुहने लगी। अचानक उसे अपने खेमे में घंटियों की टनटन सुनाई दी। वह अन्दर गई तो दंग रह गई। वही लड़की वहां बैठी थी, पहले से भी अधिक सुन्दर नज़र आती हुई।

"तुम यहां कैसे आ गईं, किसलिए लौट आईं?" नाटी बुढ़िया ने पूछा।

"मां, जब मैं और खरजीत-बेर्गेन उसके खेमे की ओर जा रहे थे तो रास्ते में उसने मुझ से कहा कि मैं लोमड़ी का पीछा करने जा रहा हूं और तुम उस सड़क की ओर मुड़ जाना जहां सेबल की खाल लटकी हो। भूलकर भी उस सड़क की तरफ़ न मुड़ना

जहां भालू की खाल लटकी हुई हो। मगर मैं उसकी यह चेतावनी भूल गई, ग़लत सड़क की ओर मुड़ गई और शीघ्र ही लोहे के बने एक खेमे के पास जा पहुंची। शैतान की बेटी ने मुझे पकड़ लिया, मेरे चेहरे की खाल उतारकर उसने अपने चेहरे पर चढ़ा ली। तब उसने मेरे बढ़िया कपड़े उतारकर खुद पहन लिये और मुझे अपने लोहे के खेमे के ऊपर से फेंक दिया। इसके बाद वह मेरे चितकबरे घोड़े पर सवार होकर चली गई। कुछ भूरे कुत्तों ने मेरी लाश को अपने जबड़ों में दबाया और तुम्हारे खेमे के पासवाले चौड़े खेत में खींच लाये। दूब की शक्ल में मैंने फिर से जन्म लिया है। ओह मां, क्या मैं खरजीत-बेर्गेन से फिर कभी मिल भी पाऊंगी?"

नाटी बुढ़िया ने उसकी दास्तान सुनकर उसे दिलासा देते हुए कहा –

"दुखी न होओ, तुम उससे ज़रूर मिलोगी, उससे मुलाक़ात होने तक तुम पहले की ही तरह मेरी बेटी बनकर मेरे घर में रहो।"

इस तरह दूब-बाला फिर से नाटी बुढ़िया के खेमे में रहने लगी।

चितकबरे घोड़े को मालूम हो गया कि दूब-बाला फिर से जिन्दा हो गई है। उसने खरजीत-बेर्गेन के पिता से इन्सानी आवाज़ में कहा –

"आपको यह मालूम होना चाहिए कि खरजीत-बेर्गेन जब अपनी दुलहन को यहां ला रहा था, तो उसने रास्ते में उसे अकेले ही सफ़र जारी रखने के लिए छोड़ दिया था। जब वह दोराहे पर पहुंची तो उस तरफ़ को मुड़ गई जहां भालू की खाल लटकी हुई थी और लोहे के खेमे के क़रीब जा पहुंची। शैतान की बेटी लपक कर बाहर आई, उसने दुलहन के चेहरे की खाल उतारकर अपने चेहरे पर चढ़ा ली, उसके बढ़िया कपड़े उतारकर खुद पहन लिये और तब दुलहन को अपने लोहे के खेमे के ऊपर से फेंक दिया। अब वह शैतान की बेटी आपके खेमे में रहती है और आपकी बहू है। मेरी असली मालकिन फिर से जिन्दा हो गई है। आपको उसे अपने खेमे में लाकर अपने बेटे से ब्याह देना चाहिए वरना आप मुसीबत के शिकार हो जायेंगे। शैतान की बेटी आपका तन्दूर और खेमा गिरा देगी, आपका जीना दूभर कर देगी और आप सभी को मौत के घाट उतार देगी।"

घोड़े की बात सुनकर बूढ़ा बाप खेमे में भागा गया।

"मेरे बेटे, तुम अपनी बीवी कहां से लाये हो?" उसने खरजीत-बेर्गेन से पूछा। "यह कौन है?"

"वह पांच गायों की मालकिन, नाटी बुढ़िया की बेटी है," उसने जवाब दिया।

तब बाप बोला –

"चितकबरे घोड़े ने मुझ से शिकायत की है। उसने बताया है कि अपनी बीवी को यहां लाते हुए तुमने उसे रास्ते में अकेली छोड़ दिया था। दोराहे पर पहुंच कर वह ग़लत सड़क की तरफ़ मुड़ गई और लोहे के खेमे के पास जा पहुंची। शैतान की बेटी ने उसे घोड़े से नीचे घसीट लिया, उसके चेहरे की खाल उतारकर अपने चेहरे पर चढ़ा ली और उसके बढ़िया कपड़े पहन लिये। शैतान की बेटी ने हम सभी की आंखों में धूल झोंकी है और कुटिलता से यहां अपना घर बना लिया है... तुम नाटी बुढ़िया के घर जाओ और दुलहन को मनाकर यहां ले आओ। रही शैतान की बेटी, तो उसे किसी बिगड़ैल घोड़े की पूंछ के साथ बांधकर घोड़े को खेतों में खदेड़ दो। घोड़े को खेत में उसकी हड्डियां बिखरा देने दो वरना वह हम सभी को—लोगों और रेवड़ों को मौत के मुंह में धकेल देगी।"

शैतान की बेटी ने यह सारी बात सुन ली। वह डर से, ग़ुस्से से स्याह पड़ गई।

खरजीत-बेर्गेन अपने बाप की बात सुनकर ग़ुस्से से अंगारा हो गया।

उसने शैतान की बेटी को पकड़ा, उसे टांग से पकड़कर खेमे से बाहर घसीटा और एक बिगड़ैल घोड़े की पूंछ से बांध दिया।

घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ खुले मैदान में जा पहुंचा, उसने शैतान की बेटी को दुलत्तियां जमाईं और पैरों तले रौंदा। उसके जिस्म ने कीड़ों और सांपों के ढेर की शक्ल ले ली। खरजीत-बेर्गेन और उसके बाप ने उन्हें जला दिया।

इसके बाद खरजीत-बेर्गेन घोड़े पर सवार होकर नाटी बुढ़िया के खेमे की ओर चल दिया। वह अस्तबल के पास जाकर अपने घोड़े से नीचे उतरा। नाटी बुढ़िया ने उसे देखा तो झटपट खेमे से बाहर आई। वह इतनी खुश हुई मानो कोई खोया हुआ व्यक्ति मिल गया हो या मरा हुआ जिन्दा हो उठा हो। उसने अस्तबल से खेमे तक हरी घास का क़ालीन बिछा दिया, अपने सबसे बढ़िया और मोटे घोड़े को ज़िबह किया और शादी की दावत की तैयारी करने लगी।

जहां तक दूब-बाला का सम्बन्ध है तो वह तो खरजीत-बेर्गेन को देखते ही रो-रोकर यह कहने लगी—

"तुम मेरे पास क्यों आये हो? तुमने शैतान की बेटी को मेरा ख़ून बहाने और मेरी कोमल खाल उतारने दी, भूरे कुत्तों को मेरा तन नोचने दिया। अब तुम यहां किस लिए आये हो? दुनिया में पक्षियों से ज्यादा लड़कियां हैं और मछलियों से

ज्यादा औरतें। जाओ, उन्हीं में से जाकर अपनी बीवी चुनो। मैं तुम से शादी नहीं करूंगी!"

"मैंने तुम्हें शैतान की बेटी को कभी नहीं सौंपा था," खरजीत-बेर्गेन बोला। "न मैंने भूरे कुत्तों के सामने तुम्हें फेंका था। मैंने ताइगा में लोमड़ी के पीछे जाने से पहले तुम्हें रास्ता दिखा दिया था। मैंने तुम्हें मौत के मुंह में नहीं भेजा था।"

माटी बुढ़िया ने उसकी दाईं और बायीं आंख से आंसू पोंछे और दूध-बाला तथा खरजीत-बेर्गेन के बीच बैठ गई।

माटी बुढ़िया ने कहा –

"तुम जो मरकर फिर से जिन्दा हुई हो, तुम दो खोये हुए फिर मिले हो, तुम क्यों खुशी नहीं मनाते? तुम्हें पहले की तरह ही प्यार करना चाहिए, पहले की तरह ही घुल-मिलकर सुख की जिन्दगी बितानी चाहिए। तुम दोनों मेरी बात मानो और मैं जैसा कहती हूं वैसा ही करो।"

लड़की उसकी बात मानते हुए धीरे से बोली –

"अच्छी बात है। तुम जैसा चाहती हो मैं वैसा ही करूंगी। मैं बीती को भूल जाऊंगी, क्षमा कर दूंगी।"

खरजीत-बेर्गेन यह सुनकर खड़ा हो गया, नाचने और उछलने-कूदने तथा दूध-बाला को बांहों में कसने और चूमने लगा।

तब उन्होंने चितकबरे घोड़े पर चांदी का जीन कसा, उसे चांदी की लगाम पहनाई, उस पर चांदी का जीनपोश बिछाया और उसकी बगल में चांदी का चाबुक लटकाया। दूध-बाला ने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने और वे दोनों घोड़ों पर सवार हो अपनी राह चल दिये।

लम्बे समय तक वे घोड़े दौड़ाते रहे। बर्फ़ गिरी तो उन्हें जाड़े का, पानी बरसा तो गर्मी का और खेतों पर धुंध छाई तो पतझड़ का पता चला। वे घोड़े बढ़ाते गये, बढ़ाते गये और आखिर खरजीत-बेर्गेन के पिता के डेरे के पास पहुंच गये।

खरजीत-बेर्गेन के सभी रिश्तेदार, उसके नौ के नौ भाई दुलहन का स्वागत करने आये। उन्होंने अस्तबल से डेरे तक हरी घास का क़ालीन बिछा दिया।

"जब दुलहन यहां आयेगी, एक और फिर दूसरा क़दम बढ़ायेगी तो उसके पैरों के निशान सेबलों में बदलते जायेंगे," उन्होंने अपने आप से कहा।

ऐसा सोचकर वे तीर-कमान बनाने लगे। उन्होंने इतनी कड़ी मेहनत की कि उनकी हथेलियों से छाल उतर गयी।

खरजीत-बेर्गेन की आठों बहनें सूत कातने लगीं। उन्होंने इतनी मेहनत की कि उनकी उंगलियों से खाल उतर गई। वे दुलहन का इन्तज़ार करती हुई अपने आप से यह कह रही थीं –

"वह जब आयेगी तो गूंजती आवाज़ में बोलेगी और उसके मुंह से क़ीमती लाल गिरेंगे।"

खरजीत-बेर्गेन अपनी दुलहन के साथ आया। उसकी दो बहनों ने उनके घोड़ों को अस्तबल में बांध दिया। उन्होंने दुलहन को सहारा देकर नीचे उतारा। वह गूंजती आवाज़ में बोली, उसके मुंह से लाल झड़े और लड़कियां लाल समेटने और उन्हें धागों में पिरोने लगीं। दुलहन खेमे की तरफ़ बढ़ी तो उसके पद-चिह्न सेबलों में बदलने लगे। नौजवानों ने तीर-कमान संभाले और सेबलों को बींधने लगे।

दुलहन खेमे में आई, उसने तीन नौउम्र श्रीदारु के शिखर लेकर चूल्हे में आग जलाई।

शादी की बढ़िया दावत उड़ाई गई। सभी गांवों से मेहमान जमा हुए। उनमें गवैये भी थे और नर्तक भी, क़िस्सागो और पहलवान भी तथा नट और मदारी भी।

तीन दिन तक खूब बढ़िया दावत होती रही। मेहमान अपने-अपने घर चले गये, पैदल भी और घोड़ों पर भी।

खरजीत-बेर्गेन और उसकी बीवी ने मिलकर घर बनाया। वे प्यार-मुहब्बत से रहते और सुख-चैन की बंसी बजाते हुए बहुत लम्बे समय तक ज़िन्दा रहे। कहते हैं कि उनके पोते-पोती आज भी ज़िन्दा हैं।

सोने का प्याला

बुर्यात लोक-कथा

कहते हैं कि बहुत ही पुराने ज़माने में एक बड़ा ज़बर्दस्त ख़ान रहता था जिसका नाम सनद था।

एक दिन उसने अपने लोगों को एक नये इलाक़े में ले जाने का फ़ैसला किया जहां खेमे गाड़ने की जगह अच्छी थी और चरागाहें भी बेहतर थीं। मगर उन इलाक़ों तक पहुंचने का रास्ता बहुत लम्बा और मुश्किल था।

रवाना होने के पहले सनद ख़ान ने सभी बूढ़ों को मार डालने का हुक्म दिया।

"बूढ़े रास्ते में हमारे लिए बोझ बने रहेंगे," उसने कहा। "एक भी बूढ़ा या बूढ़ी हमारे साथ न रहे और न ही किसी को ज़िन्दा बाक़ी छोड़ा जाये। जो कोई मेरा हुक्म टालेगा उसे सख़्त सज़ा दी जायेगी।"

यह बड़ा अत्याचारपूर्ण आदेश था, लोगों के दिलों को इससे बहुत सदमा पहुंचा। मगर वे लाचार थे, उनके लिए ख़ान का हुक्म बजाने के सिवा कोई चारा न था। कारण कि वे सभी ख़ान से डरते थे और उनमें उसका हुक्म टालने की हिम्मत नहीं थी।

सनद ख़ान की प्रजा में से तिरेन नाम के एक नौजवान ने ही यह क़सम खाई कि वह अपने बूढ़े पिता की हत्या नहीं करेगा।

बाप-बेटे ने यह तय किया कि तिरेन अपने बूढ़े बाप को सनद ख़ान और अन्य सभी लोगों से चोरी-चोरी चमड़े के एक बड़े-से बोरे में छिपा देगा और उसे नये इलाक़ों में अपने साथ ले चलेगा। बाद में जो कुछ होगा, देखा जायेगा...

सनद खान पुरानी जगह को छोड़कर अपने लोगों और रेवड़ों के साथ तूर-बराख के उत्तरी इलाक़ों की ओर रवाना हो गया। इन्हीं लोगों के साथ तिसरेन के घोड़े की पीठ पर लदे हुए चमड़े के एक बोरे में बन्द तिसरेन का बाप भी जा रहा था। तिसरेन दूसरों की नज़र बचाकर अपने पिता को खिसा-पिसा देता और जब वे पड़ाव डालते तो वह अच्छी तरह अन्धेरा हो जाने तक इन्तज़ार करता, फिर बोरे को खोल कर अपने पिता को बाहर निकालता ताकि बूढ़ा आराम कर ले, अपने दर्द करते हुए अंगों को ज़रा सीधा कर ले।

इस तरह वे बहुत वक़्त तक सफ़र करते रहे और आख़िर एक बहुत बड़े समुद्र के किनारे पहुंच गये।

सनद खान ने अपने लोगों को पड़ाव डालने और रात भर आराम करने का हुक्म दिया।

खान का एक नौकर तट पर गया। उसे सागर के तल में कोई चमकती-दमकती चीज़ दिखाई दी। उसने बहुत ध्यान से देखा तो पाया कि वह ग़ैर मामूली शक्ल का सोने का एक बहुत बड़ा प्याला है। वह फ़ौरन भागा हुआ खान के पास गया और उसे बताया कि तट के क़रीब ही सागर के तल में सोने का एक क़ीमती प्याला पड़ा हुआ है।

सनद खान ने न कुछ सोचा, न विचारा और यह फ़रमान जारी कर दिया कि सोने का प्याला फ़ौरन उसे लाकर दिया जाये। पर चूंकि कोई भी समुद्र में गोता लगाने को तैयार न था, किसी को भी ऐसी हिम्मत न हो रही थी, इसलिए खान ने हुक्म दिया कि वे लोग अपने नामों की परचियां डाल लें।

खान के एक नौकर के नाम की ही परची निकली। उस आदमी ने गोता लगाया, मगर फिर कभी बाहर नहीं आया।

उन्होंने फिर से परचियां डालीं। इस बार जिस आदमी के नाम की परची निकली, उसने एक खड़ी चोटी पर से समुद्र में छलांग लगाई, मगर वह भी समुद्र में ही रह गया।

इस तरह खान के बहुत-से लोग अपनी जानों से हाथ धो बैठे।

मगर ज़ालिम खान ने एक बार भी इस ख़तरनाक इरादे को छोड़ने की बात नहीं सोची। उसके हुक्म के मुताबिक़ उसकी प्रजा में से एक के बाद एक आदमी बिना किसी हील-हुज्जत के समुद्र में कूदता और अपनी जान गंवाता गया।

आख़िर सोने के प्याले के लिए तिसरेन की समुद्र में कूदने की बारी आई। ऐसा करने से पहले तिसरेन अपने बाप से विदा लेने के लिए उस जगह गया जहां उसने उसे छिपा रखा था।

"अलविदा, अब्बा जान," तिसरेन बोला। "अब हम दोनों ही मौत के मुंह में जानेवाले हैं।"

"क्यों, क्या हुआ? तुम पर ऐसी क्या मुसीबत आ पड़ी है?" बूढ़े ने पूछा।

तब तिसरेन ने उसे बताया कि उसे प्याले के लिए समुद्र में गोता लगाना होगा क्योंकि उसके नाम की परची निकल आई है।

"मगर जितने भी लोगों ने गोता लगाया, उन में से एक भी बाहर नहीं आया," उसने कहा। "इसलिए मुझे खान के हुक्म के मुताबिक़ समुद्र में डूबकर मरना होगा और आपको यहां देखकर उसके नौकर आपकी हत्या कर डालेंगे।"

बूढ़े बाप ने बेटे की सारी बात सुनी और बोला –

"अगर यही सिलसिला जारी रहा तो तुम सभी लोग सोने का प्याला हासिल किये बिना ही समुद्र में डूब जाओगे। प्याला तो समुद्र के तल में है ही नहीं। तुम्हें समुद्र के क़रीबवाला वह पहाड़ दिखाई दे रहा है न? सोने का प्याला तो उसकी चोटी पर है। जिसे तुम सभी लोग प्याला समझ रहे हो, वह तो सिर्फ़ उसकी परछाईं है। अजीब बात है कि तुम में से किसी को भी यह बात नहीं सूझी!"

"तो मुझे क्या करना चाहिए?" तिसरेन ने पूछा।

"पहाड़ पर चढ़ो, प्याले को खोजो और लाकर खान को दे दो। उसे खोजने में कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए। वह चमकता है और इसलिए दूर से ही देखा जा सकता है। हां, यह मुमकिन है कि प्याला ऐसी खड़ी चट्टान पर हो जिस पर चढ़ना तुम्हारे लिये मुश्किल हो। उस हालत में तुम्हें पहाड़ी पर हिरनों के नज़र आने तक इन्तज़ार करना और उन्हें डराने का ढंग सोचना चाहिए। हिरन जब डरकर भागेंगे तो हड़बड़ी में प्याले को नीचे गिरा देंगे। तुम उस वक़्त उसे फ़ुर्ती से झपट लेना, वरना वह किसी गहरे और अंधेरे खड्ड में जा गिरेगा और फिर कभी नहीं मिलेगा।"

तिसरेन ने अपने पिता को धन्यवाद दिया और फ़ौरन पहाड़ की ओर चल दिया।

पहाड़ की चोटी पर चढ़ना कुछ आसान नहीं था। तिसरेन झाड़ियों, वृक्षों और नुकीली चट्टानों का सहारा लेते हुए ऊपर चढ़ने लगा, उसके चेहरे और हाथों पर खरोंचें आ गईं और खून बहने लगा। उसके कपड़े तार-तार हो गये। आख़िर चोटी के क़रीब पहुंचने पर तिसरेन को सोने का प्याला दिखाई दिया। वह बहुत ही ख़ूबसूरत था। वह एक ऊंची और अगम्य चट्टान पर रखा हुआ था और चमक रहा था।

तिसरेन ने महसूस किया कि वह चट्टान पर कभी नहीं चढ़ सकेगा। इसलिए अपने बाप की सीख पर अमल करते हुए वह हिरनों के नज़र आने का इन्तज़ार करने लगा।

उसे बहुत देर तक इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। कुछ ही देर बाद बहुत-से हिरन चोटी पर दिखाई दिये। वे नीचे देखते हुए वहां इत्मीनान से खड़े थे। तिरेन ज़ोर से चिल्लाया। हिरन डरकर इधर-उधर भागने लगे और उन्होंने सोने का प्याला नीचे गिरा दिया। प्याला लुढ़कता हुआ नीचे आया और तिरेन ने उसे फुर्ती से झपट लिया।

वह हाथों में प्याला लिये और बेहद खुश होता हुआ पहाड़ से नीचे उतरा। वह सनद खान के पास गया और प्याला उसके सामने रख दिया।

"समुद्र के तल से तुमने यह प्याला कैसे हासिल किया?" खान ने उसे पूछा।

"मुझे यह वहां नहीं मिला," तिरेन ने अवाब दिया। "मैं तो इसे उस पहाड़ पर से लाया हूं। समुद्र में तो हमें इसकी परछाईं ही नज़र आ रही थी।"

"तुम्हें किसने यह बात सुझाई?" खान ने पूछा।

"मैंने अपने ही दिमाग़ से यह सोचा," तिरेन ने अवाब दिया।

खान ने उससे और कुछ भी नहीं पूछा और उसे जाने दिया।

अगले दिन सनद खान और उसके लोग आगे चल दिये।

उन्होंने लम्बा सफ़र तय किया और आखिर वे एक बहुत बड़े रेगिस्तान में पहुंचे। यहां सूरज की गर्मी से धरती तपती थी और सारी घास झुलस कर रह गई थी। आस-पास कोई दरिया, या छोटा-सा नाला भी नहीं था। लोग और जानवर प्यास से बुरी तरह परेशान होने लगे। सनद खान ने पानी की तलाश में सभी दिशाओं में घुड़सवार भेजे, मगर बहुत कोशिश करने पर भी उन्हें पानी कहीं नहीं मिला क्योंकि सभी ओर खुश्क और झुलसी हुई ज़मीन थी। लोग हताश हो रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें या किधर जायें।

तिरेन चोरी-छिपे उस जगह गया जहां उसने अपने पिता को छोड़ा था।

"अब्बा जान, बताइये अब हम क्या करें?" उसने पूछा। "प्यास के मारे हम सब की और जानवरों की जान निकली जा रही है।"

बूढ़े ने अवाब दिया—

"तीन साल की एक गाय को खुला छोड़ दो और उस पर कड़ी नज़र रखो। जहां भी वह रुककर ज़मीन को सूंघने लगे, वहीं खुदाई करो।"

तिरेन भागा गया और उसने तीन साल की एक गाय खुली छोड़ दी। गाय अपना सिर नीचे किये हुए जहां-तहां घूमने लगी। आखिर वह एक जगह पर रुकी और गर्म धरती को सूंघने और ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने लगी।

"यहां खुदाई करो," त्सिरेन ने कहा।

लोग खोदने लगे और जल्द ही उन्हें एक बड़ा-सा ज़मीनदोज़ चश्मा मिल गया। ठंडा और साफ़ पानी ज़ोर से बाहर निकलने लगा। हर किसी ने जी भर कर पानी पिया और सभी का दिल बाग़-बाग़ हो गया।

सनद ख़ान ने त्सिरेन को अपने पास बुलाकर पूछा –

"इस ख़ुश्क ज़मीन में तुमने ज़मीनदोज़ चश्मा कैसे ढूंढ़ लिया?"

"कुछ अलामतों की मदद से मुझे पता लग गया कि चश्मा कहां है," त्सिरेन ने जवाब दिया।

लोगों ने कुछ और पानी पिया, आराम किया और फिर आगे चल दिये। बहुत दिनों तक उनका सफ़र जारी रहा, फिर वे रुके और उन्होंने पड़ाव डाला। अचानक रात को मूसलधार बारिश होने लगी और उनका अलाव बुझ गया। बहुत कोशिश करने पर भी लोग फिर से आग न जला पाये। वे पानी से तर-ब-तर हो गये और ठण्ड से उनकी कुलफ़ी जमने लगी। उनकी समझ में नहीं आता था कि वे क्या करें।

तभी किसी को दूर के पर्वत की चोटी पर एक अलाव जलता दिखाई दिया।

सनद ख़ान ने फ़ौरन हुक्म दिया कि पहाड़ से आग लाई जाये।

लोग ख़ान का हुक्म बजाने के लिए दौड़े। पहले एक, फिर दूसरा और फिर तीसरा आदमी पहाड़ पर चढ़ा। वे सनोबर की घनी शाखाओं के नीचे जलती हुई आग के पास जा पहुंचे और वहां उन्होंने एक शिकारी को आग तापते हुए देखा। उनमें से प्रत्येक अपने साथ एक लकड़ी का टुकड़ा जलाकर लाया, मगर कोई भी उसे जलता हुआ पड़ाव तक नहीं पहुंचा पाया। भारी बारिश के कारण आग रास्ते में ही बुझ गई।

सनद ख़ान को बहुत ग़ुस्सा आया। उसने हुक्म दिया कि जो लोग आग लाने के लिए गये थे और ख़ाली हाथ लौटे थे, उन्हें क़त्ल कर दिया जाये।

जब त्सिरेन की आग लाने की बारी आई तो वह चोरी-चोरी वहां पहुंचा जहां उसने अपने पिता को छिपा रखा था। उसने पूछा –

"अब्बा जान, अब क्या किया जाये? पहाड़ से पड़ाव तक आग कैसे लाई जाये?"

बूढ़े ने जवाब दिया –

"जलती हुई लकड़ी लाना ठीक नहीं रहेगा। वह रास्ते में बरसात से भीगकर बुझ जायेगी। अपने साथ एक बड़ा-सा बर्तन ले जाओ और उसमें अंगारे भर लाओ। सिर्फ़ इसी तरह तुम पड़ाव तक आग ला सकोगे।"

तिसरेन ने वैसा ही किया जैसा उसके बाप ने कहा था। वह पहाड़ से अंगारों से भरा हुआ एक बर्तन ले आया। लोगों ने आग जलाई, कपड़े सुखाये, अपने को गर्माया और खाना पकाया।

सनद खान को जब यह पता चला कि आग लानेवाला कौन है, तो उसने तिसरेन को अपने पास बुलवाया।

तिसरेन आया तो खान उस पर बरस पड़ा—

"जब तुम्हें मालूम था कि आग कैसे लाई जा सकती है तो तुम चुप क्यों बैठे रहे? तुमने फ़ौरन ही ऐसा क्यों नहीं बताया?"

"क्योंकि मुझे खुद भी यह मालूम नहीं था कि यह कैसे किया जाये," तिसरेन ने जवाब दिया।

"मगर फिर भी तुमने किया तो? सो कैसे?" खान ने ज़ोर देकर पूछा।

खान ने सवालों की ऐसी झड़ी लगा दी कि तिसरेन को यह मानना ही पड़ा कि अपने पिता की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह के फलस्वरूप ही वह उसके सभी हुक्म पूरे कर पाया।

"तुम्हारा बाप कहां है?" खान ने पूछा।

तिसरेन ने जवाब दिया—

"मैं उसे चमड़े के बोरे में यहां तक अपने साथ लाया हूं।"

तब सनद खान ने हुक्म दिया कि तिसरेन के बूढ़े बाप को उसके सामने लाया जाये। उसने बुजुर्ग से कहा—

"मैं अपना हुक्म रद्द करता हूं। बूढ़े जवानों के लिए भार नहीं हैं। उम्र का मतलब है अक़्लमन्दी। अब आपको छिपने की ज़रूरत नहीं। आप सभी के साथ आज़ादी से घोड़े पर सवार होकर चल सकते हैं।"

पवन-राज कोतूरा

नेनेत्स लोक-कथा

किसी जानाबदोश क़बीले में कभी एक बूढ़ा रहता था जिसकी तीन बेटियां थीं। सबसे छोटी बेटी ही सबसे दयालु और समझदार थी।

बूढ़ा बहुत ग़रीब था। उसका खालों का खेमा खस्ता हाल था और उसमें जहां-तहां सुराख थे। उनके पास पहनने को बहुत ही थोड़े गर्म कपड़े थे। जब ज़ोर का पाला पड़ता तो बूढ़ा अपनी तीनों बेटियों के साथ सिमट-सिमटा कर आग के पास बैठ जाता और इस तरह वे गर्म रहने की कोशिश करते। रात को सोने के समय वे आग बुझा देते और फिर सुबह होने तक ठिठुरते रहते।

एक बार जाड़े के ऐन बीच में बर्फ़ का एक बहुत ही भयानक तूफ़ान आया। बहुत ही तेज़ हवा एक दिन चलती रही, दूसरे दिन चली और तीसरे दिन भी चलती रही। ऐसा लगता था कि हवा खेमों को उड़ा ले जायेगी। लोगों को खेमों से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं होती थी और वे भूखे और ठिठुरते हुए भीतर ही बैठे रहते थे।

बूढ़े और उसकी तीन बेटियों का भी ऐसा ही हाल था। वे खेमे में बैठे हुए गरजते तूफ़ान की आवाज़ सुन रहे थे। तब बूढ़ा बोला –

"ऐसे बैठे रहकर तूफ़ान के ख़त्म होने का इन्तज़ार करना बेकार होगा। इसे तो पवन-राज कोतूरा ने भेजा है। वह ज़रूर नाराज़ है और इस बात के इन्तज़ार में है कि हम उसे अच्छी-सी बीवी भेजें। मेरी सबसे बड़ी बेटी, तुम कोतूरा के पास जाओ वरना हमारी सारी क़ौम ही तबाह हो जायेगी। तुम उसके पास जाकर उसकी मिन्नत करो कि वह तूफ़ान को बन्द कर दे।"

"मैं वहां जा ही कैसे सकती हूं?" लड़की बोली। "मुझे रास्ता नहीं आता।"

"मैं तुम्हें एक छोटी-सी स्लेज देता हूं। इसे हवा के रुख की सामनेवाली दिशा में रख कर धीरे से धकेल देना और इसके पीछे-पीछे चलती जाना। हवा से तुम्हारे कोट के बन्द खुल जायेंगे, मगर तुम उन्हें कसने के लिए हरगिज नहीं रुकना। तुम्हारे जूतों में बर्फ़ भर जायेगी, मगर तुम उसे निकालने के लिए नहीं ठहरना। एक ऊंचे पहाड़ तक पहुंचने के पहले तुम नहीं रुकना। उसपर चढ़ जाना और चोटी पर पहुंच कर ही अपने जूतों में से बर्फ़ निकालने और कोट के बन्द कसने के लिए रुकना। कुछ समय बाद एक छोटा-सा पक्षी उड़ता हुआ आयेगा और तुम्हारे कंधे पर बैठ जायेगा। उसे डराकर भगाना मत, उसके साथ मेहरबानी से पेश आना और उसे प्यार से सहला देना। तब अपनी स्लेज पर सवार होकर पहाड़ से नीचे उतर जाना। स्लेज तुम्हें कोतूरा के डेरे के दरवाजे के बिल्कुल सामने पहुंचा देगी। तुम डेरे में चली जाना, वहां किसी चीज को छूना मत, बस बैठकर इन्तजार करना। जब कोतूरा आये तो जो वह कहे, वही करना।"

सबसे बड़ी बेटी ने फ़र का कोट पहना, पिता की दी हुई स्लेज को हवा के रुख के सामने रखा और उसे धकेल दिया। स्लेज फिसलने लगी।

वह स्लेज के पीछे-पीछे थोड़ी दूर चली तो उसके कोट के बन्द खुल गये, उसके जूतों में बर्फ़ भर गई और उसे बहुत ही ज्यादा ठंड महसूस हुई। उसने अपने पिता की हिदायतों पर अमल नहीं किया। वह रुकी, उसने अपने कोट के बन्द बांधे और जूतों में से बर्फ़ निकाली। इसके बाद वह हवा के प्रतिकूल चलती रही। वह बहुत देर तक चली और आखिर उसे एक ऊंचा पहाड़ दिखाई दिया। जैसे ही वह उसकी चोटी पर पहुंची वैसे ही एक छोटा-सा पक्षी उड़ता हुआ आया। वह उसके कंधे पर बैठने ही वाला था कि लड़की ने अपने हाथ हिलाकर उसे दूर भगा दिया। पक्षी ने कुछ देर तक उसके सिर के ऊपर चक्कर काटे और फिर दूर उड़ गया। सबसे बड़ी बेटी स्लेज में बैठी और पहाड़ से नीचे उतरने लगी। स्लेज एक बड़े-से डेरे के सामने आकर रुक गई।

लड़की डेरे के अन्दर गई। उसने इधर-उधर नजर डाली तो सबसे पहले उसे हिरन के गोश्त का एक बहुत बड़ा भुना हुआ टुकड़ा दिखाई दिया। उसने आग जलाई, अपने को गर्माया और मांस के टुकड़े काटने लगी। वह एक टुकड़ा काटती और खा लेती, फिर दूसरा काटती और उसे भी खा जाती। वह पेट भर कर खा चुकी थी कि तभी अचानक उसे डेरे की तरफ़ किसी के आने की आवाज सुनाई दी। दरवाजे पर लटकी हुई खाल उठी और एक जवान देव अन्दर आया। यही था कोतूरा। उसने बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी पर नजर डाली और कहा—

"लड़की, तुम कहां से आई हो और तुम्हें यहां क्या काम है?"

"मेरे पिता ने मुझे भेजा है," लड़की ने जवाब दिया।

"किसलिए?"

"इसलिए कि तुम मुझे अपनी बीवी बना लो।"

"मैं अभी शिकार से लौटा हूं और कुछ मांस लाया हूं। तो तुम उठो और उसे पकाओ," कोतूरा ने कहा।

बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। जब मांस तैयार हो गया तो कोतूरा ने उसे बर्तन से निकालकर दो हिस्सों में बांट लेने को कहा।

"तुम और मैं एक हिस्सा खायेंगे," वह बोला। "दूसरा हिस्सा लकड़ी की तश्तरी में रखकर पासवाले खेमे में ले जाओ। खुद खेमे में मत जाना, दरवाजे पर इन्तजार करना। एक बुढ़िया तुम्हारे पास बाहर आयेगी। उसे मांस देना और उसके खाली तश्तरी लाने तक इन्तजार करना।"

बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी ने तश्तरी में मांस रखा और लेकर बाहर चली गई। हवा बहाड़ रही थी, बर्फ़ गिर रही थी और अंधेरा छाया हुआ था। ऐसे तूफ़ान में कुछ दिखाई ही कैसे दे सकता था... लड़की थोड़ी दूर गई, रुकी और फिर उसने मांस बर्फ़ पर फेंक दिया। इसके बाद वह खाली तश्तरी लिये हुए कोतूरा के पास आ गई।

कोतूरा ने उसे देखा और पूछा –

"तुम मांस दे आई?"

"हां, दे आई," लड़की ने जवाब दिया।

"मुझे तश्तरी दिखाओ तो। मैं देखना चाहता हूं कि उन्होंने मांस के बदले में तुम्हें क्या दिया है," उसने कहा।

सबसे बड़ी बेटी ने उसे खाली तश्तरी दिखाई, कोतूरा चुप रहा। उसने अपने हिस्से का मांस खाया और जाकर सो रहा।

सुबह हुई तो वह उठा और कुछ ताजी खालें खेमे में लाकर बोला –

"जब तक मैं शिकार से लौटता हूं, तुम इन खालों से मुझे एक नया कोट, नये जूते और दस्ताने बना दो। मैं लौटने पर उन्हें पहन कर देखूंगा कि तुम काम करने में होशियार हो या नहीं।"

इतना कहकर कोतूरा शिकार के लिए टुंड्रा में चला गया। बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी

काम में जुट गई। अचानक दरवाजे पर लटकी हुई खाल ऊपर को उठी और पके बालों वाली एक बुढ़िया अन्दर आई।

"बेटी, मेरी आंख में कोई किरकिरी पड़ गई है," वह बोली। "देखो तो, शायद तुम उसे निकाल सको।"

"मेरे पास तुम्हारे साथ मत्थापच्ची करने का वक़्त नहीं है," सबसे बड़ी लड़की ने जवाब दिया। "मैं काम कर रही हूं।"

बुढ़िया कुछ नहीं बोली, मुड़ी और खेमे से बाहर चली गई। सबसे बड़ी बेटी अकेली रह गई। उसने खालों को जल्दी से कमाया और उन्हें छुरी से काटने लगी। वह शाम तक जल्दी से काम खत्म कर देना चाहती थी। वह इतनी उतावली में थी कि उसने ढंग से कपड़े बनाने की कोशिश नहीं की, मगर जैसे-तैसे उन्हें खत्म कर देना चाहा। उसके पास सीने को सुई नहीं थी और उसे एक दिन में ही काम खत्म करना था।

शाम को कोतूरा शिकार से लौटा –

"मेरे कपड़े तैयार हैं?" उसने पूछा।

"हां," सबसे बड़ी बेटी ने जवाब दिया।

कोतूरा ने कपड़े लेकर उन पर हाथ फेरा। उसे खाल खुरदरी-सी महसूस हुई। ऐसे बुरी तरह उन्हें कमाया गया था। उसने देखा तो पाया कि कपड़ों को बुरी तरह काटा गया था, उनकी लापरवाही से सिलाई की गई थी और वे उसके लिए बहुत छोटे थे।

ऐसा देखकर वह बेहद झल्ला उठा और उसने सबसे बड़ी लड़की को खेमे से बाहर फेंक दिया। उसने उसे बहुत ही दूर फेंका और वह बर्फ़ के एक ढेर पर जा गिरी। वह वहां पड़ी रही, पड़ी रही और आखिर ठंड से अकड़कर मर गई।

हवा का शोर, उसकी दहाड़ और ऊंची हो गई।

बूढ़ा अपने खेमे में बैठा हुआ दिन-रात हवा को दहाड़ते और तूफ़ान को गरजते हुए सुनता रहा। फिर वह बोला –

"सबसे बड़ी बेटी ने मेरी बात नहीं मानी, उसने मेरी हिदायतों पर अमल नहीं किया, इसीलिए हवा गरजती जा रही है। कोतूरा नाराज़ है। मेरी मंझली बेटी, तुम उसके पास जाओ।"

बूढ़े ने स्लेज बनाई और अपनी मंझली बेटी से वही कुछ कहा जो उसने अपनी सबसे बड़ी बेटी से कहा था और उसे कोतूरा के पास भेज दिया। वह खुद अपनी सबसे छोटी बेटी के साथ खेमे में बैठा तूफ़ान के रुकने का इन्तज़ार करने लगा।

मंझली बेटी ने हवा के रुख के सामने स्लेज को रखा, उसे धकेला और उसके पीछे-पीछे चल दी। रास्ते में उसके कोट के तस्मे खुल गये और उसके जूतों में बर्फ़ भर गई। उसे बेहद ठंड लगी और अपने पिता की हिदायतें भूलकर उसने अपने जूतों में से बर्फ़ निकाली और अपने कोट के तस्मे समय से पहले ही बांध लिए।

वह पहाड़ के पास पहुंची और उस पर चढ़ी। वहां छोटा-सा पक्षी देखकर उसने अपने हाथ हिलाये और उसे खदेड़ दिया। फिर वह अपनी स्लेज में सवार हुई और पहाड़ से नीचे उतरकर सीधी कोतूरा के खेमे के सामने जा पहुंची।

वह खेमे में दाखिल हुई, उसने आग जलाई, पेट भर कर हिरन का मांस खाया और कोतूरा का इन्तज़ार करने लगी।

कोतूरा शिकार से लौटा तो उसने मंझली बेटी को देखा और पूछा –

"तुम किसलिए यहां आई हो?"

"मेरे पिता ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है," मंझली बेटी ने जवाब दिया।

"किसलिए?"

"तुम्हारी बीवी बनने के लिए।"

"तो बैठी क्यों हो? मैं भूखा हूं, जल्दी से मेरे लिए कुछ मांस पकाओ।"

मांस जब तैयार हो गया तो कोतूरा ने उसे बर्तन से निकालने और दो हिस्सों में बांटने का हुक्म दिया।

"आधा मांस हम दोनों खायेंगे," वह बोला। "बाक़ी आधे हिस्से को लकड़ी की उस तश्तरी में डालकर पड़ोस के खेमे में ले जाओ। तुम खुद खेमे में नहीं जाना, उसके पास खड़ी रहकर तश्तरी के वापस लाये जाने का इन्तज़ार करना।"

मंझली बेटी मांस लेकर बाहर गई। हवा बहाड़ रही थी, बर्फ़ चक्रवात बना रही थी और कुछ भी देख पाना कठिन था। इसलिए आगे जाना न पसन्द करते हुए उसने मांस को बर्फ़ में फेंक दिया, घड़ी भर को वहां खड़ी रही और फिर कोतूरा के पास वापस आ गई।

"तुम उन्हें मांस दे आईं?" कोतूरा ने पूछा।

"हां, दे आई," मंझली बेटी ने जवाब दिया।

"तुम बहुत जल्दी आ गई हो। मुझे तश्तरी दिखाओ तो! मैं देखना चाहता हूं कि उन्होंने तुम्हें बदले में क्या दिया है।"

मंझली बेटी ने तश्तरी दिखाई। कोतूरा ने खाली तश्तरी देखी तो मुंह से एक शब्द भी नहीं कहा और जाकर सो रहा। सुबह वह हिरन की कुछ खालें लाया और

दूसरी लड़की से उसकी बहन की ही तरह शाम तक नये कपड़े तैयार करने के लिए कहा।

"काम शुरू कर दो," वह बोला। "शाम को मैं देखूंगा कि तुम कैसी सिलाई करती हो।"

यह कहकर कोतूरा शिकार पर निकल गया और दूसरी बेटी काम लेकर बैठ गई। वह बड़ी जल्दी में थी, क्योंकि उसे किसी तरह शाम तक सभी काम खत्म कर लेना था। अचानक एक सफ़ेद बालोंवाली बुढ़िया खेमे में आई।

"मेरी आंख में कुछ पड़ गया है, बच्ची," उसने कहा। "ज़रा इसे निकाल तो दो। मैं खुद इसे नहीं निकाल सकती।"

"मेरे पास तुम्हारी आंख से मत्थापच्ची करने का वक़्त नहीं है," दूसरी बेटी ने जवाब दिया। "जाओ और मुझे काम करने दो।"

बुढ़िया ने कोई जवाब न दिया और एक भी शब्द और कहे बिना वहां से चली गई। जब रात हुई, तो कोतूरा अपने शिकार से वापस आया।

"मेरे नये कपड़े तैयार हैं?" उसने पूछा।

"हां, ये रहे," दूसरी बेटी ने जवाब दिया।

"तो देखूं मैं ज़रा इन्हें पहनकर।"

कोतूरा ने कपड़े पहने और उसने देखा कि उनकी कटाई खराब है, वे उसके लिए बहुत छोटे हैं और तमाम सीवनें टेढ़ी-तिरछी हैं। कोतूरा ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया। उसने दूसरी बेटी को वहीं फेंक दिया, जहां उसने उसकी बहन को फेंका था और वह भी ठंड से मर गई।

और बूढ़ा अपनी सबसे छोटी बेटी के साथ खेमे में बैठा रहा और तूफ़ान के शांत होने की व्यर्थ प्रतीक्षा करता रहा। हवा पहले से भी ज्यादा तेज़ थी और लगता था कि किसी भी घड़ी खेमा उड़ जायेगा।

"मेरी बेटियों ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया," बूढ़े ने कहा। "उन्होंने बात और बिगाड़ दी है, उन्होंने कोतूरा को नाराज़ कर दिया है। अब तुम ही छिंदा बची हो, लेकिन फिर भी मैं तुम्हें इस आशा के साथ कोतूरा के पास भेज रहा हूं कि वह तुम्हें अपनी पत्नी बना लेगा। अगर वह ऐसा नहीं करता, तो हमारी सारी क़ौम भूखों मर जायेगी। इसलिए छिंदिया, तैयारी करो और चल पड़ो।"

और उसने उसे बता दिया कि उसे कहां जाना है और क्या करना है।

सबसे छोटी बेटी डेरे के बाहर आई। उसने स्लेज को हवा की प्रतिकूल दिशा में रखा और धक्के से उसे चलता कर दिया। सांय-सांय करती और गरजती हवा सबसे छोटी बेटी को गिराने की कोशिश कर रही थी और बर्फ़ उसकी आंखों को अंधा किये दे रही थी, जिससे वह कुछ भी न देख पा रही थी।

मगर छोटी बेटी अपने पिता के आदेश के एक शब्द को भी बिन भूले और बिलकुल उसी के कहे मुताबिक़ हर बात करती अंधड़ में क़दम-पर-क़दम बढ़ाती चली गई। उसके कोट के बन्द खुल गये, मगर वह उन्हें बांधने के लिए नहीं रुकी। उसके जूतों में बर्फ़ भर गई, मगर वह उसे निकालने के लिए नहीं रुकी। सर्दी बहुत ही ज्यादा थी और हवा बड़ी तेज थी, मगर वह जरा भी न रुकी और चलती ही चली गई। पहाड़ पर चढ़ जाने के बाद ही वह रुकी और उसने बर्फ़ को अपने जूतों से निकालना और अपने कोट के बन्दों को बांधना शुरू किया। तभी एक छोटी चिड़िया उड़ती हुई आई और उसके कंधे पर आकर बैठ गई। लेकिन छोटी बेटी ने चिड़िया को भगाया नहीं। इसके बजाय उसने उसे नरमी से सहलाया और दुलराया। जब चिड़िया उड़कर चली गई, तो छोटी बेटी स्लेज पर सवार हुई और ढाल पर से फिसलती हुई सीधे कोतूरा के डेरे के सामने पहुंच गई।

वह डेरे के भीतर गई और इंतजार करने लगी। अचानक दरवाजे पर लटकी खाल उठी और एक जवान दैत्याकार पुरुष भीतर आया। जब उसने छोटी बेटी को देखा, तो वह हंस पड़ा और बोला –

"तुम मेरे पास क्यों आई हो?"

"मेरे पिता ने मुझे भेजा है," सबसे छोटी बेटी ने जवाब दिया।

"किसलिए?"

"आपसे यह निवेदन करने के लिए कि तूफ़ान को रोक दीजिए, क्योंकि अगर आपने ऐसा नहीं किया, तो हमारी सारी क़ौम खत्म हो जायेगी।"

"तुम वहां क्यों बैठी हो? तुम आग जलाकर कुछ गोश्त क्यों नहीं पका लेतीं?" कोतूरा ने कहा। "मुझे भूख लगी है और भूखी तुम भी होगी ही, क्योंकि मैं देखता हूं कि जब से तुम आई हो, तुमने कुछ नहीं खाया है।"

छोटी बेटी ने जल्दी से गोश्त पकाया और बर्तन से निकालकर कुछ गोश्त कोतूरा को दिया। कोतूरा ने उसमें से कुछ खाया और फिर उससे आधा गोश्त पड़ोस के डेरे को ले जाने के लिए कहा।

छोटी बेटी ने गोश्त की तश्तरी को उठाया और बाहर चली गई। हवा ज़ोरों से गरज रही थी और चक्करों में घूम और नाच रही थी। वह आये, तो कहां? पड़ोसियों का खेमा कहां है? वह ज़रा देर खड़ी सोचती रही और फिर खुद बिना यह जाने कि कहां जा रही है, वह तूफ़ान में ही चल पड़ी।

अचानक उसके सामने वही चिड़िया आ गई, जो पहाड़ पर उसके पास उड़कर आई थी। अब उसने उसके चेहरे के पास फुदकना शुरू किया। छोटी बेटी ने चिड़िया के ही पीछे चलने की सोच ली। जिधर-जिधर चिड़िया उड़ती थी, उधर-उधर ही वह जाती थी। वह चलती चली गई और आखिर, एक तरफ़ कुछ हटकर, कुछ दूरी पर, उसे दमकती हुई चिंगारी जैसा कुछ दिखाई दिया। छोटी बेटी की खुशी का पारावार न रहा और वह यह सोचती हुई उसी तरफ़ चली गई कि खेमा वहीं होगा। मगर पास आने पर उसने देखा कि जिसे उसने खेमा समझा था, वह असल में एक बड़ा टीला है, जिस से बल खाता धुआं उठ रहा है। छोटी बेटी ने टीले का चक्कर लगाया और उसे अपने पैरों से टटोला। अचानक उसके आगे एक दरवाज़ा आ गया। सफ़ेद बालोंवाली एक बुढ़िया ने दरवाज़े से झांका और कहा –

"कौन हो तुम? किसलिए आई हो?"

"मैं तुम्हारे लिए कुछ गोश्त लाई हूं, दादी," छोटी बेटी ने जवाब दिया। "कोतूरा ने मुझसे इसे तुम्हें देने को कहा था।"

"किसने, कोतूरा ने? तो ठीक है, मैं ले लेती हूं। तुम यहीं, बाहर ही इंतज़ार करो।"

छोटी बेटी टीले के पास खड़ी इंतज़ार करती रही। उसने काफ़ी देर इंतज़ार किया। आखिर दरवाज़ा फिर खुला, बुढ़िया ने बाहर झांका और उसे लकड़ी की तश्तरी दे दी। उस पर कुछ रखा हुआ था, मगर लड़की यह न समझ सकी कि वह क्या है। उसने तश्तरी ली और उसे लेकर कोतूरा के पास लौट आई।

"तुमने इतनी देर क्यों लगाई?" कोतूरा ने पूछा। "तुम्हें वह खेमा मिला?"

"हां।"

"तुमने उन्हें गोश्त दे दिया?"

"हां।"

"मुझे तश्तरी दो। मैं देखना चाहता हूं कि इसमें क्या है।"

कोतूरा ने देखा और पाया कि तश्तरी में कई छुरियां, लोहे के सूए और खालों को कमाने की खुरचनियां और भुंगरियां थीं। कोतूरा ज़ोरों से हंस पड़ा और बोला –

"तुम्हें कई बढ़िया चीजें मिली हैं, जो तुम्हारे लिए बड़े काम की साबित होंगी।"

सुबह कोतूरा सोकर उठा और वह खेमे में हिरन की कुछ खालें ले आया और उसने छोटी बेटी को शाम तक एक नया कोट, जूते और दस्ताने तैयार करके देने के लिए कहा।

"अगर तुमने अच्छे बनाये," उसने कहा, "तो मैं तुम्हें अपनी बीवी बना लूंगा।"

कोतूरा चला गया और छोटी बेटी काम में लग गई। बुढ़िया के उपहार बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। कपड़े बनाने के लिए छोटी बेटी को जितनी भी चीजों की दरकार थी, वे सभी उसके पास थीं। लेकिन एक दिन के भीतर कोई कितना कर सकता है? छोटी बेटी ने इसकी चिंता में जरा भी वक़्त नहीं लगाया, बल्कि जितना वह कर सकती थी, करने की कोशिश की। उसने खालों को साफ़ और चिकना किया, उन्हें काटा और सीना शुरू किया। अचानक दरवाजे पर लटकी खाल उठी और सफ़ेद बालोंवाली एक बुढ़िया भीतर आई। छोटी लड़की उसे तुरंत पहचान गई – यह वही बुढ़िया थी, जिसके पास वह गोश्त ले गई थी।

"मेरी मदद कर, बच्ची," बुढ़िया बोली। "मेरी आंख में कुछ गिर गया है। जरा इसे निकाल दे, मैं खुद इसे नहीं निकाल सकती।"

छोटी बेटी ने मना नहीं किया। उसने अपना काम अलग रख दिया और जल्दी ही बुढ़िया की आंख से किरकिरी को निकाल दिया।

"बहुत अच्छा," बुढ़िया ने कहा। "मेरी आंख में अब तकलीफ़ नहीं है। अब जरा मेरे दायें कान में तो देख।"

छोटी बेटी ने बुढ़िया के कान में देखा और चौंक पड़ी।

"क्या दिख रहा है?" बुढ़िया ने पूछा।

"तुम्हारे कान में एक लड़की बैठी हुई है," छोटी बेटी ने जवाब दिया।

"तू उसे बुला क्यों नहीं लेती? वह कोतूरा के कपड़े तैयार करने में तेरी मदद करेगी।"

छोटी बेटी बहुत ही खुश हुई और उसने लड़की को आवाज दी। उसकी पुकार पर एक नहीं, बल्कि चार लड़कियां बुढ़िया के कान से कूद पड़ीं और चारों तुरंत काम में जुट गईं। उन्होंने खालों को रंगाया और चिकना किया, काटा और सिया। कपड़े जल्दी ही तैयार हो गये। उसके बाद बुढ़िया ने चारों लड़कियों को फिर अपने कान में छिपा लिया और वहां से चली गई।

शाम को कोतूरा अपने शिकार से लौटकर आया।

"तुमने मेरा कहा सब कर लिया?" उसने पूछा।

"हां," छोटी बेटी ने जवाब दिया।

"दिखाओ मुझे मेरे नये कपड़े, मैं उन्हें पहनकर देखूंगा।"

छोटी बेटी ने उसे कपड़े दिये, कोतूरा ने उन्हें लेकर उनपर अपना हाथ फेरा – खालें गरम और छूने में अच्छी लगती थीं। उसने कपड़े पहने – वे न बहुत छोटे थे, न बहुत बड़े, बल्कि उस पर फबते थे और टिकाऊ थे। कोतूरा मुस्कराया और बोला –

"तुम मुझे पसंद हो और मेरी मां और मेरी चारों बहनों को भी तुम अच्छी लगती हो। तुम काम अच्छा करती हो और हिम्मतवाली हो। अपनी फ़ौम को बचाने के लिए तुमने एक खतरनाक तूफ़ान का सामना किया। मेरी बीवी बनो और मेरे साथ मेरे डेरे में रहो।"

उसके मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि टुंड्रा में तूफ़ान शांत हो गया। लोग अब हवा से बचने की कोशिश नहीं करते थे, ठंड के मारे जमते नहीं थे। दिन की रोशनी में सब के सब अपने-अपने डेरों से निकल आये!

लड़की और चन्द्रमा

चुक्ची जाति की लोक-कथा

चुक्ची जाति में कभी एक आदमी रहता था जिसकी सिर्फ़ एक ही संतान, इकलौती बेटी थी। लड़की अपने बाप की सबसे अच्छी मददगार थी। वह हर गर्मी अपने डेरे से बहुत दूर गुज़ारती, अपने पिता के बारहसिंगों के झुण्ड की देखभाल करती। जाड़े में वह झुण्ड को और भी दूर ले जाती। कभी-कभार ही वह खुराक के लिए अपने सवारी के बारहसिंगे पर घर आती।

एक रात को जब वे डेरे की ओर जा रहे थे तो बारहसिंगे ने अपना सिर ऊपर उठाया और आकाश की ओर देखा।

"उधर देखो! उधर देखो!" वह चिल्लाया।

लड़की ने ऊपर को देखा तो पाया कि चंद्रमा एक स्लेज में नीचे आ रहा है। उसकी स्लेज में दो बारहसिंगे जुते हुए थे।

"वह कहां और किसलिए आ रहा है?" लड़की ने पूछा।

"वह तुम्हें उठा ले जाना चाहता है," बारहसिंगे ने जवाब दिया।

लड़की को बड़ी चिन्ता हुई।

"अब मैं क्या करूं? बहुत मुमकिन है कि वह मुझे अपने साथ उठा ही ले जाये!" वह चिल्लाई।

बारहसिंगे ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। वह अपने सुम से बर्फ़ हटाने लगा और इस तरह उसने एक गढ़ा बना लिया।

"जल्दी करो, इस गढ़े में छिप जाओ!" वह बोला।

लड़की गढ़े में जा बैठी और बारहसिंगा उसके ऊपर बर्फ़ जमाने लगा। कुछ ही देर में लड़की ग़ायब हो गई और वहां बर्फ़ का टीला ही बाक़ी रह गया जो यह ज़ाहिर करता था कि लड़की कहां छिपी हुई है।

चन्द्रमा आकाश से नीचे आया, उसने अपने बारहसिंगे रोके और स्लेज से उतरा। उसने अपने इर्दगिर्द, इधर-उधर देखा और लड़की की तलाश की। मगर वह उसे नहीं मिली। चन्द्रमा बर्फ़ के टीले के पास भी गया, उसके शिखर को भी देखा, मगर यह न भांप सका कि वहां क्या है।

"बड़ी अजीब बात है!" चन्द्रमा ने कहा। "जाने वह लड़की कहां ग़ायब हो गई? वह तो मुझे कहीं दिखाई ही नहीं देती। अच्छा, मैं अब जाता हूं और कुछ देर बाद फिर नीचे आऊंगा। तब मैं उसे ढूंढ़ खोज लूंगा और अपने साथ ले जाऊंगा।"

ऐसा सोचकर वह स्लेज में सवार हो गया और उसके बारहसिंगे उसे आकाश में उड़ा ले गये।

उसके जाते ही बारहसिंगे ने बर्फ़ हटा दी और लड़की गढ़े से बाहर निकल आई।

"हमें जल्दी से डेरे में पहुंच जाना चाहिए," वह बोली। "वरना चन्द्रमा मुझे फिर से देख लेगा और नीचे आ जायेगा। दूसरी बार मैं उससे छिप नहीं सकूंगी।"

वह स्लेज पर सवार हुई और बारहसिंगा हवा से बातें करने लगा। वे बहुत जल्दी ही अपने डेरे पर पहुंच गये और लड़की अपने पिता के डेरे में भाग गई। मगर उसका पिता वहां नहीं था। अब कौन मदद करेगा?

बारहसिंगा बोला—

"तुम्हें अवश्य छिप जाना चाहिए क्योंकि चन्द्रमा हमारा पीछा कर रहा होगा।"

"मगर मैं कहां छिपूं?" लड़की ने पूछा।

"मैं तुम्हें बड़े-से पत्थर में बदल दूं तो कैसा रहे?" बारहसिंगा बोला।

"नहीं, इससे फ़ायदा नहीं होगा। उसे पता चल जायेगा।"

"अगर हथौड़े में बदल दूं?"

"नहीं, यह भी ठीक नहीं होगा।"

"बांस?"

"नहीं।"

"दरवाज़े पर लटकनेवाली घास का एक घास?"

"नहीं, नहीं।"

"तब क्या बनाऊं? हां, अब सूझा—चिराग़ बना दूं?"

"ठीक है।"

"तो झुक जाओ।"

लड़की झुक गई। बारहसिंगे ने जमीन पर अपना सुम मारा और लड़की चिराग बन गई। उसकी तेज रोशनी से सारा खेमा जगमग कर उठा।

इसी बीच चन्द्रमा लड़की के बारहसिंगों के बीच उसकी खोज करता रहा था। अब वह तेजी से डेरे की ओर आया।

उसने अपने बारहसिंगों को एक खम्भे के साथ बांधा, खेमे के अन्दर गया और फिर से लड़की की तलाश करने लगा। उसने उसे सभी जगह खोजा, मगर वह उसे नहीं मिली। उसने लड़की को खेमे की छत को सहारा देनेवाले खम्भों के बीच खोजा, हर बर्तन की जांच-पड़ताल की, खालों का हर बाल, बिस्तर के नीचे की हर टहनी, फ़र्श की मिट्टी के हर कण को बहुत ध्यान से देखा, मगर लड़की कहीं भी नहीं मिली।

जहां तक चिराग का ताल्लुक है, उसे वह दिखाई ही नहीं दिया। बेशक वह खूब चमकता था, मगर चन्द्रमा की भी उतनी ही चमक-दमक थी।

"अजीब बात है," चन्द्रमा बोला। "कहां चली गई वह ? मुझे फिर से आकाश में वापस जाना पड़ेगा।"

वह खेमे से बाहर गया और बारहसिंगों को खोलने लगा। वह अपनी स्लेज पर सवार हो गया और जाने ही वाला था कि लड़की दरवाजे पर लटकते हुए खाल के पर्दे के पास आई और कमर तक बाहर झुककर जोर से हंसी और उसने पुकारते हुए चन्द्रमा से कहा –

"यह रही मैं! यह रही मैं!"

चन्द्रमा अपने बारहसिंगे वहीं छोड़कर तेजी से खेमे की ओर भागा आया। मगर लड़की फिर से चिराग बन गई थी।

चन्द्रमा उसकी खोज करने लगा। उसने हर टहनी और हर पत्ते को देखा, खालों के हर बाल और मिट्टी के कण-कण की जांच की, मगर लड़की उसे नहीं मिली।

"बड़ी अजीब बात है यह! कहां चली गई वह? कहां गायब हो गई? लगता है कि मुझे लड़की के बिना ही लौटना पड़ेगा।"

मगर जैसे ही वह खेमे से बाहर गया और उसने अपने बारहसिंगे खोलना शुरू किये, वैसे ही लड़की ने पर्दे से बाहर झांका और हंसकर कहा –

"यह रही मैं! यह रही मैं!"

चन्द्रमा भागकर खेमे में गया और फिर से खोज करने लगा। उससे बहुत देर तक तलाश की, हर चीज को उलट-पलट कर देखा, मगर लड़की उसे नहीं मिली।

वह तो खोज-खोज कर बहुत ही थक गया, सुस्त और कमजोर हो गया। टांगें हिलाते या बांहें ऊपर उठाते हुए भी उसे तकलीफ़ होती।

लड़की अब उससे डरती नहीं थी। वह अपनी असली शक्ल में सामने आ गई, डेरे से बाहर निकलकर उसने चन्नमा को चित गिराया और रस्सी से उसके हाथ-पैर बांध दिये।

"ओह!" चन्नमा कराह उठा। "मैं जानता हूं कि तुम मेरी जान ले लोगी! तो मुझे मार ही डालो! ठीक है, मेरे साथ ऐसा ही होना चाहिए, यह मेरा अपना ही दोष है। मैं तुम्हें धरती से उठा ले जाना चाहता था। मगर मरने से पहले मुझे डालों से ढक दो, मुझे अपना तन गर्मा लेने दो, मैं तो बिल्कुल ठिठुर गया हूं..."

लड़की को बड़ी हैरानी हुई।

"तुम ठिठुर गये हो?" वह बोली। "तुम तो खुले में रहते हो, बेघर हो, तुम्हारा तो कोई डेरा नहीं है। तुम खुले में रहते हो और तुम्हें वहीं रहना चाहिए। तुम्हें डालों का क्या करना है!"

तब चन्नमा लड़की के सामने गिड़गिड़ाने लगा और उसने कहा—

"चूंकि मैं बेघर हूं और मेरी किस्मत में सदा ऐसे ही रहना बदा है, इसलिए तुम मुझे आकाश में घूमने के लिए आजाद कर दो। मैं तुम्हारे लोगों के लिए वर्षानीय रहूंगा, उन्हें खुशी दूंगा। तुम मुझे आजाद कर दो और मैं तुम्हारे लोगों के लिए आकाश-दीप बन जाऊंगा और टुंड्रा में से उन्हें राह दिखाऊंगा। तुम मुझे आजाद कर दो और मैं रात को दिन में बदल दूंगा! मुझे आजाद कर दो और मैं तुम्हारे लोगों के लिए साल भर का हिसाब बन जाऊंगा। शुरू में मैं बूढ़े सांड़ का चांद बनूंगा, फिर बछड़ों के जन्म का, फिर जल का, फिर पत्तों का, उसके बाद गर्माहट का, फिर मृग-शृंग झड़ने का, फिर जंगली बारहसिंगों के प्यार का, फिर प्रथम जाड़े और उसके बाद छोटे होते हुए दिनों का चांद बन जाऊंगा।"

"अगर मैं तुम्हें आजाद कर दूं, तो फिर से ताकतवर हो जाने और अपने हाथों-पैरों की शक्ति लौट आने पर तुम मुझे उठा ले जाने के लिए आकाश से नीचे तो नहीं उतरोगे?"

"ओह नहीं, कभी नहीं! मैं तो तुम्हारा रास्ता ही भूल जाने की कोशिश करूंगा! तुम मुझ से कहीं अधिक समझदार हो! मैं फिर कभी आकाश से नीचे नहीं आऊंगा! तुम सिर्फ़ मुझे आजाद कर दो और मैं धरती तथा आकाश को जगमग कर दूंगा।"

इस तरह लड़की ने चन्नमा को आजाद कर दिया। वह आकाश में ऊपर उठा और धरती उसकी रोशनी में नहा गई।

बूढ़ा और जवान पाला

लिथुआनियाई लोक-कथा

कभी कहीं एक बूढ़ा पाला रहता था और उसका एक बेटा था जवान पाला। ऐसा शेखीखोर था वह कि बयान से बाहर। वह अपनी डींग हांकता हुआ यही कहता फिरता था कि उस जैसा समझदार और शक्तिशाली दुनिया में दूसरा कोई है ही नहीं।

एक दिन जवान पाले ने अपने मन में कहा –

"मेरा बाप बूढ़ा हो गया है और अपना काम ढंग से नहीं करता। मैं जवान और ताक़तवर हूं। मैं लोगों को ठंड से कहीं अधिक अकड़ा सकता हूं। मुझ से न तो कोई बच सकता है और न ही मुझ पर कोई क़ाबू पा सकता है। मैं हरेक को मज़ा चखा सकता हूं।"

बस, जवान पाला किसी को ठंड से अकड़ाने के लिए चल दिया। सड़क पर पहुंच कर उसने देखा कि एक जागीरदार बग्घी में बैठा आ रहा है जिसके आगे मोटा-ताज़ा और तेज़ घोड़ा जुता हुआ है। जागीरदार ख़ुद भी हट्टा-कट्टा था, फ़र का गर्म कोट पहने हुए और उसके पैर नमदे से ढके हुए थे।

जवान पाले ने जागीरदार को देखा तो हंसा।

"वाह!" उसने कहा। "ढक लो, ख़ूब ढक लो अपने को! मगर फिर भी मुझ से न बच पाओगे! हो सकता है कि मेरा बूढ़ा बाप तुम से न निपट पाता, मगर मैं तो

तुम्हें वह मजा चखाऊंगा कि याद करोगे! न फ़र का कोट तुम्हें बचा पायेगा और न तुम्हारा नमदा!"

जवान पाला उड़कर जागीरदार के पास पहुंचा और लगा उसे सताने, परेशान करने। वह नमदे के भीतर जा घुसा, आस्तीन में गया, कालर के नीचे घुसड़ गया और उसकी नाक पर चुटकियां-सी काटने लगा।

जागीरदार ने अपने कोचवान को हुक्म दिया कि वह घोड़े को और तेज कर दे।

"वरना मेरी तो फ़ुलफ़ी जम जायेगी," वह चिल्लाया।

जवान पाला उसे और अधिक तंग करने लगा, नाक पर अधिक जोर से चुटकियां काटने और हाथों-पैरों को बर्फ़ बनाने लगा। जागीरदार को सांस लेने में भी तकलीफ़ होने लगी।

जागीरदार इधर-उधर हिला-डुला, सीट पर बायें-बायें हुआ, उसे मुरझुरी आई और वह और ज्यादा सिकुड़-सिमट गया।

"और तेज चलाओ," वह चिल्लाया। "और तेज कर दो घोड़े को!"

मगर कुछ ही देर बाद उसने चिल्लाना भी बन्द कर दिया। उसकी आवाज ही जाती रही थी।

जागीरदार जब घर पहुंचा और उसे बग्घी में से निकाला गया तो मुश्किल से ही उसकी सांस आ-जा रही थी।

जवान पाला अब उड़कर अपने पिता, बूढ़े पाले के पास पहुंचा और लगा अपनी डींग हांकने, शेखी बघारने।

"देखी पिताजी, देखी आपने मेरी ताक़त! मेरी बराबरी आप क्या करेंगे! देखा कैसे हट्टे-कट्टे जागीरदार की मैंने फ़ुलफ़ी जमा दी! कैसे मैं फ़र के गर्म कोट के नीचे जा छिपा! आपसे यह कभी न हो पाता! ऐसे मजबूत और हट्टे-कट्टे आदमी का आप कभी ऐसा बुरा हाल न कर पाते!"

बूढ़ा पाला मुस्कराया।

"अरे शेखीखोर!" उसने कहा। "बहुत बढ़-चढ़कर डींग न हांक अपनी ताक़त और बहादुरी की! यह सही है कि तूने मोटे जागीरदार का ठंड से बुरा हाल कर दिया और तू उसके फ़र कोट के नीचे जा घुसा। मगर यह तो कोई मार्के की बात नहीं। वह देखो, वह हड़ीला-सा किसान मरियल-से घोड़े की स्लेज पर तार-तार हुआ कोट पहने जा रहा है। देख रहा है न?"

"हां, देख रहा हूं।"

"वह लकड़ियां काटने के लिए जंगल की ओर जा रहा है। तू जाकर ज़रा उसकी क़ुलफ़ी बनाने की कोशिश कर देख। अगर तुझे ऐसा करने में कामयाबी मिल जाये तब मैं मान जाऊंगा कि तू बहुत ताक़तवर है।"

"वाह! यह भी कौन-सी बड़ी बात है!" जवान पाला चिल्लाया। "मिनट भर में उसे जमाये देता हूं!"

जवान पाला हवा में उड़ता हुआ किसान की ओर चल दिया। उसके क़रीब पहुंचकर उसने उस पर हल्ला बोल दिया और लगा उसे परेशान करने। वह उसपर एक ओर से झपटा फिर दूसरी ओर से, मगर किसान अपना घोड़ा बढ़ाता गया, रुका नहीं। तब जवान पाले ने किसान के पैरों पर चुटकियां काटनी शुरू कीं, मगर किसान अपनी स्लेज से उतर गया और अपने घोड़े के साथ-साथ दौड़ने लगा।

"ज़रा ठहरो तो," जवान पाले ने सोचा। "जंगल में पहुंचने पर मैं तुम्हारी क़ुलफ़ी बनाऊंगा!"

देहाती जंगल में पहुंचा, उसने कुल्हाड़ी निकाली और लगा ज़ोर-ज़ोर से फ़र और भूर्ज वृक्षों पर चलाने। खपच्चियां कट-कटकर सभी दिशाओं में गिरने लगीं।

मगर जवान पाले ने उसे चैन न लेने दिया। उसने देहाती के हाथ-पैर ठंड से जकड़ लिये और उसके कालर के नीचे जा घुसा।

किन्तु जवान पाले ने उसे ठंड से जितना ही ज्यादा परेशान करने की कोशिश की, देहाती ने उतने ही ज्यादा ज़ोर-शोर से कुल्हाड़ी चलाई और उतने ही ज्यादा वृक्ष काट डाले। आखिर वह पसीने-पसीने हो गया और उसने अपने दस्ताने भी उतार दिये।

जवान पाला बहुत देर तक किसान को परेशान करता रहा और आखिर थक गया।

"खैर, कोई बात नहीं," उसने अपने आप से कहा। "तुम्हारे छक्के तो मैं छुड़ाकर ही रहूंगा। जब तुम घर की ओर जाओगे, तब मैं तुम्हें बर्फ़ कर दूंगा।"

वह स्लेज की ओर भागा और किसान के दस्ताने पड़े देखकर उनमें जा घुसा। वह वहां बैठा था और अपने आप से यह कहता हुआ हंस रहा था –

"अब मैं भी देखूंगा कि किसान अपने दस्ताने कैसे पहनता है! मैंने उन्हें ऐसे अकड़ा दिया है कि कोई उनमें अपनी उंगलियां तक नहीं घुसेड़ सकता!"

जवान पाला बैठा था किसान के दस्तानों में और किसान किसी भी और चीज़ की ओर ध्यान दिये बिना लकड़ियां काटता जाता था। वह लकड़ियां काटता गया, काटता गया और आखिर उसने इतनी लकड़ियां काट लीं कि स्लेज भर जाये।

"अब मुझे घर चलना चाहिए," किसान ने सोचा।

उसने अपने दस्ताने लिये और उन्हें पहनने की कोशिश की, मगर वे पत्थर की तरह सख्त थे।

"हां, अब बताओ, तुम क्या करोगे?" जवान पासे ने हंसते हुए अपने मन में पूछा।

मगर किसान ने जब यह देखा कि दस्ताने ठंड से अकड़ गये हैं तो उसने कुल्हाड़ी लेकर उन पर लगातार चोट करना शुरू की।

किसान कुल्हाड़ी से दस्तानों की करता था धुनाई और उसके भीतर बैठे पासे को आती थी रुलाई।

किसान ने जवान पासे की वह पिटाई की कि मुश्किल से ही उसकी जान बची।

किसान अपने घोड़े को तेजी से दौड़ाता हुआ लकड़ी लेकर अपने घर चला गया। जवान पासा लड़खड़ाता और कराहता हुआ अपने पिता के पास पहुंचा।

बूढ़े पासे ने जवान पासे को आते देखा तो जोर का ठहाका लगाया।

"क्या बात है बेटा," उसने पूछा। "तुम ऐसे लड़खड़ा क्यों रहे हो?"

"किसान की कुल्फी बनाते-बनाते बिल्कुल दम निकल गया।"

"तुम ऐसे दर्दनाक ढंग से कराह क्यों रहे हो?"

"किसान ने मार-मारकर भुरकस निकाल दिया है।"

"तो मेरे बेटे, तुम्हारे लिये यह अच्छा सबक है। हरामखोर जागीरदारों से निपटना तो कुछ मुश्किल नहीं, मगर किसान के सामने कभी किसी की दाल नहीं गलती! यह अब कभी न भूलना!"

एक नवाब कैसे घोड़ा बना

लाटवियाई लोक-कथा

किसी जमाने में कहीं एक नवाब रहता था, बहुत ही जालिम। उसे अपने मजदूरों पर जरा भी दया न आती और उनसे ऐसे कसकर काम लेता कि उनकी जान लबों पर आ जाती। त्योहारों-समारोहों पर भी वह उन्हें चैन न लेने देता।

एक बार क्या हुआ कि एक बड़े त्योहार के दिन भी, जब अधिकतर लोग मेहनत करने के बाद आराम कर रहे थे, उसने अपने मजदूरों को अनाज गाहने के लिए खलिहान में भेज दिया।

इसके पहले बेचारे मजदूर सारा दिन और सारी रात अनाज गाहते रहे थे। वे इतने थक गये थे कि उनसे खड़ा भी न हुआ जाता था।

उन्होंने खलिहान में आकर काम शुरू ही किया था कि नवाब हाथ में डंडा लिये हुए खुद वहां आ पहुंचा। उसे लगा कि उसके मजदूर बहुत धीरे-धीरे काम कर रहे हैं। वह उन्हें डांटने-फटकारने और गालियां देने लगा। अपना डंडा दिखाता हुआ वह चिल्लाया –

"ए कामचोरो! जब तक सारा अनाज नहीं गाह दोगे, तुम्हें यहां से बाहर नहीं जाने दूंगा।"

मजदूरों ने नवाब से यह प्रार्थना की कि वह उन्हें गाहनी में जोतने के लिए एक घोड़ा दे दे ताकि काम जरा जल्दी से हो जाये।

"क्या कहा, तुम्हें घोड़ा दे दूं!?" वह चिल्ला उठा। "अगर तुमने फिर कभी घोड़े का नाम लेने की भी जुर्रत की तो मैं अपने हाथों से तुम सब के गले घोंटकर तुम्हें मार डालूंगा! कोई घोड़ा-थोड़ा नहीं मिलेगा तुम्हें! घोड़े के लिए आराम करना ज़रूरी है। तुम लोग खुद ही यह काम करो!"

नवाब डांट-फटकारकर झटपट खलिहान से बाहर चला गया। धूल फांकना भला किसे अच्छा लगेगा!

वह बाहर गया ही था कि मजदूरों ने किसी को पुकारते हुए सुना –

"ए रुक जाओ! रुक जाओ!"

तभी एक घोड़ा हिनहिनाया और लगाम की घंटी बजी। ज़ाहिर था कि कोई घोड़े को लगामें पहना रहा था।

कौन हो सकता है यह?

अचानक एक वृद्ध खलिहान में आया। बहुत ही बूढ़ा था वह। उसकी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी और बिजली की तरह चमकती हुई आंखें थीं। वह अपने पीछे-पीछे एक जानदार मुश्की घोड़े को कसकर लगामों से पकड़े लिये आ रहा था।

उसने मजदूरों को नमस्कार किया और बोला –

"यह रहा तुम्हारे लिये घोड़ा। इसे गाहनी के साथ जोतो और इससे खूब कसकर काम लो। जब जंगल जाओ तो छकड़े पर लकड़ी लादकर लाने की ज़रूरत नहीं। तुम बस वृक्ष गिराकर उसी के सिरे पर इस घोड़े को जोत देना। वह तनों-शाखाओं समेत उसे घसीटकर नवाब के घर पहुंचा आयेगा। अगर यह अड़े और काम करने से इन्कार करे तो इस पर बड़ी बेरहमी से चाबुक बरसाना, ज़रा भी दया नहीं करना। इसके पहलुओं और पीठ पर चाहे कितने भी चाबुक मारना, मगर इसके सिर को भूलकर भी नहीं छूना। इसे खाने के लिए भी कुछ नहीं देना। शाम को इसे अस्तबल में ले जाकर पट्टों के सहारे छत से टांग देना। सारा दिन काम करने के बाद उसे रात भर छत से लटके रहने देना। इससे केवल लाभ ही होगा।"

बूढ़ा इतना कहकर ग़ायब हो गया।

घोड़ा ज़ोर से हिनहिनाया। उसकी आवाज़ नवाब की कावाज़ से इतनी मिलती-जुलती थी कि मजदूरों को यह पहचानने में देर न लगी कि यह कैसा घोड़ा हो सकता है।

"शायद यह बिजली का देवता पेर्कोन ही था जो हमारे लिये यह घोड़ा लेकर आया था," उन्होंने कहा। "पेर्कोन देव की आज्ञा का तो अवश्य ही पालन किया जाना चाहिए। उसने हमें जैसा हुक्म दिया है, हम वैसा ही करेंगे।"

उन्होंने मुश्की घोड़े को गाहनी के साथ जोत दिया और फ़ौरन काम में जुट गये। घोड़ा बड़ा अड़ियल था। वह ज़ोर-ज़ोर से हिनहिनाने, पैर पटकने और गर्दन झटकने लगा। ज़ाहिर था कि वह काम से जी चुराता था। मगर उन्होंने इसकी कुछ परवाह न करते हुए उसकी ख़ूब पिटाई की ताकि वह अड़े नहीं।

उस दिन के बाद यही सिलसिला चलता रहा। जब कभी कोई कठिन काम करना होता तो वे मुश्की घोड़े को ही जोत लेते। अगर वह अड़ता तो वे चाबुकों और डंडों से उसकी ख़ूब मरम्मत करते।

घोड़ा आराम किये बिना दिन भर काम में जुटा रहता। जब रात होती तो वे उसे अस्तबल में ले जाकर पट्टों के सहारे छत से टांग देते जहां वह सुबह होने तक लटका रहता।

उसे खाने के लिये भी कुछ न दिया जाता। काम के अपने सारे समय में वह जाड़े के दिनों में छकड़े से चोरी-चोरी घोड़ा-सा भूसा और गर्मियों में कुछ बिछुआ ही खा पाता।

जिस दिन से घोड़ा आया था, उसी दिन से ज़ालिम नवाब का कहीं अता-पता न था। उसकी बीवी ने उसकी बहुत तलाश की, बहुत खोज की, मगर बेसूद।

पूरा एक साल गुज़र गया। शुरू में तो घोड़ा बड़ा जानदार, चुस्त और तेज़ था, मगर साल के अन्त में वह बिल्कुल खत्म गया। उसकी आंखें धंस गईं, होंठ लटक गये, अगल-बगल हड्डियां निकल आईं, पीठ टेढ़ी-मेढ़ी हो गई और उसके बाल इधर-उधर लुलक गये।

नवाब की बीवी ने इस घोड़े को एक दिन आंगन में देखा तो साईस से कहा—

"इस बूढ़े और बेकार के घोड़े को तो अब जंगल में ले जाकर गोली मार देनी चाहिए। इसे देखकर तो मेरी तबीयत परेशान होने लगती है!"

मगर साईस ने भी सम्भवतः यह अनुमान लगा लिया था कि यह घोड़ा किस तरह का है और इसलिए उसने उसे ले जाकर गोली नहीं मारी।

एक बड़े त्योहार की सुबह को, जब सभी लोग आराम कर रहे थे, मुश्की घोड़ा चुपचाप अपने अस्तबल से बाहर निकला। वह नवाब के सब्ज़ी के बगीचे में जाकर पत्ता गोभी खाने लगा।

नवाब की बीवी घूमने के लिए बाहर आई और बगीचे में टहलने लगी। यहां उसने क्या देखा कि वही कम्बख़्त घोड़ा जल्दी-जल्दी पत्ता गोभी के पत्ते तोड़ता और हड़पता जाता है।

मालकिन आग-बबूला हो उठी।

"ओह, कम्बख्त, जरा ठहर तो! मैं अभी तुझे मजा चखाती हूं!"

इतना कहकर उसने मोटा-सा डंडा उठाया और घोड़े के सिर पर दे मारा। उसने डंडा मारा ही था कि उसे अपने सामने अपना पति खड़ा दिखाई दिया।

नवाब ने बड़ी दयनीय और मरी-मरी-सी आवाज में कहा –

"प्यारी बीवी, तुम मुझे क्यों पीटती हो? क्या तुम मुझे गोभी के पत्ते खाते भी नहीं देख सकतीं? साल भर भूखा रहने के बाद तो मुझे ये बढ़िया से बढ़िया पकवानों से भी ज्यादा मजेदार लग रहे हैं!"

बीवी ने अब उसे पहचान लिया और लगी हाय-हाय करने। नवाब तो अब बिल्कुल नवाब जैसा न रहा था। वह सूखकर कांटा हो गया था और उसके चेहरे का रंग स्याह पड़ गया था। उसकी दाढ़ी और नाखून लम्बे-लम्बे हो गये थे। उसके सारे जिस्म पर खरोंचें और खराशें ही नजर आ रही थीं। उसके कपड़े बिल्कुल चीथड़े होकर रह गये थे।

उसकी बीवी ने उसका हाथ थामा और चुपचाप भीतर ले गई ताकि किसी की नजर न पड़े।

उस दिन के बाद नवाब बहुत शान्त और दयालु हो गया।

जैसी करनी वैसी भरनी

एस्तोनियाई लोक-कथा

एक बार का जिक्र है कि एक बूढ़ा राहगीर सड़क पर चला जा रहा था। झुटपुटा हो गया था और रात का अन्धेरा छानेवाला था।

बूढ़े ने किसी जगह रात बिताने के लिए पनाह लेने की सोची। उसने एक बड़े-से घर की खिड़की पर दस्तक दी।

"मुझे अपने घर में रात बिता लेने दीजिये," उसने कहा।

उसकी आवाज सुनकर घर की अमीर मालकिन बाहर निकली और लगी अजनबी को डांटने-फटकारने और उसे भला-बुरा कहने।

"अभी तुम पर कुत्ते छोड़ दूंगी!" वह चिल्लाई। "तब तुम्हें मजा आयेगा मेरे घर में रात गुजारने की इच्छा प्रकट करने का! चलता बन यहां से!"

बूढ़ा आगे चल दिया। उसे किसी गरीब का छोटा-सा घर दिखाई दिया। उसने खिड़की खटखटाई।

"भले लोगो, मुझे अपने घर में एक रात के लिए पनाह दे दो!"

"चले आओ, अन्दर चले आओ," मालकिन ने तपाक से कहा। "तुम खुशी से हमारे घर में रात बिता सकते हो, मगर यहां जगह की तंगी है और शोर-गुल बहुत है।"

अजनबी घर के अन्दर गया। उसने देखा कि घर में बहुत ग़रीबी है। वहां उसे बहुत-से बच्चे दिखाई दिये और उनकी क़मीज़ें फटी-पुरानी थीं, तार-तार हुई पड़ी थीं।

"तुम्हारे बच्चे ऐसे फटेहाल क्यों हैं?" अजनबी ने पूछा। "तुम उन्हें नई क़मीज़ें क्यों नहीं बनवा देतीं?"

"कहां से बनवा दूं नई क़मीज़ें?" औरत ने जवाब दिया। "मेरे पति का देहान्त हो चुका है और बच्चों के पालन-पोषण का भार मुझे अकेले ही उठाना पड़ता है... कपड़ों-लत्तों की तो बात ही दूर रही, हमारे पास तो खाने भर के लिए भी काफ़ी पैसे नहीं हैं।"

अजनबी यह सब कुछ सुनकर मौन रहा। घर की मालकिन ने रात का खाना मेज़ पर लगाया और उससे खाने में शामिल होने के लिए कहा।

"नहीं, धन्यवाद," बूढ़े ने जवाब दिया। "मुझे भूख नहीं है। मैंने अभी थोड़ी देर पहले ही खाना खाया है।"

उसने अपना थैला खोला और उसमें से खाने की सभी चीज़ें निकालकर बच्चों को खिलाईं। इसके बाद वह लेट गया और लेटते ही खर्राटे लेने लगा।

सुबह हुई तो बूढ़ा उठा, उसने मेहमाननेवाली के लिए घर की मालकिन का शुक्रिया अदा किया और वहां से रवाना होते समय कहा –

"जो काम सुबह ही शुरू करोगी, शाम तक उसे ही आरी रखोगी।"

औरत अजनबी के इन शब्दों का अर्थ नहीं समझी और उसने इनकी ओर खास ध्यान भी नहीं दिया। वह बूढ़े को फाटक तक छोड़कर घर में लौटी।

"अगर इस ग़रीब आदमी ने भी यह कहा कि मेरे बच्चे बिघड़े पहने हुए हैं, तो बाक़ी लोग जाने क्या कहेंगे!" उसने सोचा।

चुनांचे उसने घर में पड़े हुए कपड़े के आख़िरी टुकड़े से क़मीज़ सीने का इरादा किया। इसलिए वह अपनी धनी पड़ोसिन के घर से गज़ लेने गई ताकि उस कपड़े को नापे और यह देखे कि वह एक क़मीज़ के लिए भी काफ़ी है या नहीं।

ग़रीब औरत अपनी पड़ोसिन के घर से लौटकर सीधे माल-सामान की अपनी कोठरी में गई। उसने ताक़ से कपड़ा लिया और उसे मापने लगी। वह मापती जाती थी और कपड़ा अधिकाधिक लम्बा होता जाता था। उसका तो अन्त ही नज़र नहीं आता था। वह दिन भर उसे मापती रही और केवल शाम होने पर ही ख़त्म कर पाई।

इतना कपड़ा तो उसकी और उसके बच्चों की क़मीज़ों के लिए आजीवन काफ़ी होगा।

"तो यह मतलब था अजनबी के शब्दों का!" उसने सोचा।

उसी शाम को वह अपनी धनी पड़ोसिन को गद्दा वापस देने गई। उसने अपनी पड़ोसिन को सारा क़िस्सा सच सच कह सुनाया और बताया कि अब उसने कपड़े से कोठरी भर ली है।

"हाय, राम! मैंने उसे अपने घर में रात क्यों नहीं बिताने दी!" धनी औरत ने मन ही मन सोचा। उसने फ़ौरन अपने नौकर को बुलाकर कहा –

"ए नौकर! जल्दी से गाड़ी में घोड़ा जोतो और उस भिखारी के पीछे जाओ! जैसे भी हो उसे वापस लेकर आओ! ग़रीबों की खुले दिल से मदद करनी चाहिये। मैं तो हमेशा ऐसा ही कहती आई हूं!"

नौकर सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ उस भिखारी की तलाश में चल दिया। अगले दिन वह उस से जा मिला। मगर बूढ़े ने वापस चलने से इन्कार कर दिया।

नौकर ने बहुत दुखी होते हुए कहा –

"मेरी जान मुसीबत में पड़ गई! अगर तुम्हें लेकर वापस नहीं जाता हूं, तो मालकिन पगार दिये बिना ही मुझे चलता कर देगी।"

"दुखी न होओ, नौजवान," बूढ़े ने कहा। "चलो, ऐसा ही सही! मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।"

बूढ़ा घोड़ा-गाड़ी में सवार होकर नौकर के साथ चल दिया।

धनी औरत अपने फाटक पर खड़ी हुई बड़ी बेसब्री से उनके लौटने का इन्तज़ार कर रही थी।

मालकिन ने सिर झुकाकर और मुस्कानें बिखराते हुए बूढ़े का स्वागत किया। उसने उसे खिलाया-पिलाया और सोने के लिए नर्म बिस्तर बिछा कर कहा –

"प्यारे बाबा, लेट कर आराम करो!"

बूढ़ा धनी औरत के घर में एक दिन, दूसरे दिन और फिर तीसरे दिन रहा। वह खाता-पीता, आराम करता और पाइप के कश लगाता रहा। मालकिन उसे खाने-पीने को देती रही, मीठी-मीठी बातें करती रही, मगर मन ही मन ग़ुस्से से उबलती रही।

"जाने यह बूढ़ा-खूसट कब यहां से चलता बनेगा?"

मगर वह बूढ़े को निकालने की हिम्मत न कर पाती। ऐसा करने से उसकी सारी मेहनत, सारी दौड़-धूप पर पानी फिर जाता।

चौथे दिन सुबह ही सुबह बूढ़े ने चलने की तैयारी शुरू की। मालकिन की ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। वह उसे विदा करने के लिए घर से बाहर निकली। बूढ़ा

चुपचाप फाटक तक गया और ऐसे ही बाहर निकल गया। तब धनी मालकिन अपने को वश में न रखकर बोली –

"मैं आज क्या करूं, मुझे यह तो बताते जाओ।"

बूढ़े ने उसकी ओर देखा और कहा –

"जो तुम सुबह करोगी, वही शाम तक करती जाओगी।"

धनी औरत भाग कर मकान के अन्दर गई और उसने कपड़ा मापने के लिए गज उठाया।

मगर तभी उसे जोर की छींक आई, इतने जोर की कि आंगन में जमा मुर्गियां डर कर पंख फड़फड़ाती हुई इधर-उधर भागने लगीं।

इसके बाद वह रुके बिना दिन भर छींकती रही –

"आं-छी! आं-छी! आं-छी!"

वह न तो खा-पी पाई और न प्रश्नों के उत्तर दे सकी। उस से केवल यही सुनाई दे रहा था –

"आं-छी! आं-छी! आं-छी!"

और केवल सूर्यास्त होने और अन्धेरा छा जाने पर ही उसने छींकना बन्द किया।

हमारे अन्य प्रकाशन

भलाई कर बुराई से डर	....	180.00
जहाँ चाह वहाँ राह	....	170.00
रूसी लोक कथाएं	....	150.00
पापा जब बच्चे थे	....	75.00
बच्चों सुनो कहानी	....	110.00
सोने की चाबी	....	60.00
कहानियाँ धातुओं की	....	60.00
तीन मोटे	....	60.00
रामानुजन, निराला, कॉपर्निकस, शरतचंद – प्रत्येक	....	12.00

आर्डर हेतु सम्पर्क करें
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
5–ई, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली – 110 055
दूरभाष : 011–23523349, 23529823
ईमेल : pph5e@bol.net.in